Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN 2454-9797

संगीत नाटक अकादेमी की छमाही पत्रिका

रंगभाषा रूपान्तरण

अक्टूबर 2015
मार्च 2016
अंक-8

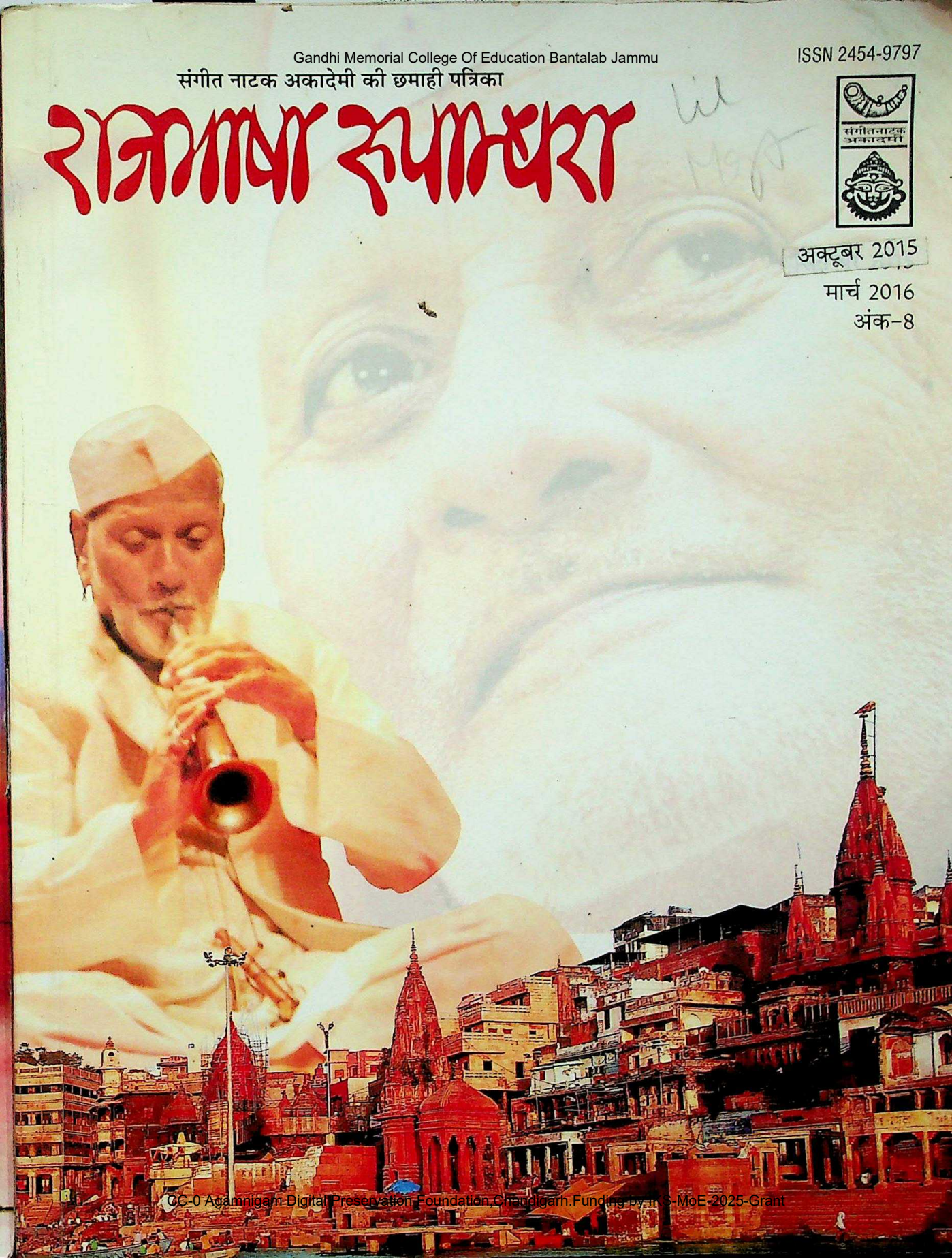

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by: IKS-MoE-2025-Grant

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN 2454-9797

रंगभाषा रूपान्तरा

संगीत नाटक अकादेमी की छमाही पत्रिका

अक्टूबर 2015—मार्च 2016

अंक - 8

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

प्रकाशक
ऋता स्वामी चौधरी

संपादक
तेजस्वरूप त्रिवेदी

M. Gandhi College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 3763
Dated 7.12.2023

संगीत नाटक अकादेमी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISSN : 2454-9797

संगीत नाटक अकादेमी की छमाही पत्रिका— राजभाषा रूपान्तरा

अक्टूबर 2015—मार्च 2016
अंक 8

प्रकाशक
ऋता स्वामी चौधरी
सचिव, संगीत नाटक अकादेमी
नई दिल्ली-110001

संपादकीय कार्यालय
संगीत नाटक अकादेमी
राजभाषा अनुभाग
रवीन्द्र भवन, 35 फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली-110001
टेलीफ़ोन : 23387246, 23387247, 23382495
एक्सटेंशन : 122
फ़ैक्स : 23382659
ई-मेल : rajbhasha@sangeetnatak.gov.in
वेबसाइट : http://www.sangeetnatak.gov.in

आवरण का मुख पृष्ठ : बनारस के घाट और उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ के चित्र
आवरण का अंतिम पृष्ठ : राष्ट्रपति भवन में आयोजित अकादेमी पुरस्कार एवं अकादेमी रत्न सदस्यता समारोह में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा के साथ उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ और संगीत नाटक अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोह (2003) में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब को सम्मानित करते तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

पत्रिका में प्रस्तुत सभी लेखों, छायांकनों, और रेखाचित्रों का अन्यत्र उपयोग अकादेमी की अनुमति से ही किया जा सकेगा। रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और अकादेमी का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
ई-मेल : vikascprint@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

संपादकीय 5

आलेख

शहनाई के सरताज : बिस्मिल्लाह खाँ
सुनीता बुद्धिराजा 7

बिस्मिल्लाह-ए-शहनाई
मुरली मनोहर श्रीवास्तव 30

सुर बनारस
पं. विजय शंकर मिश्र 37

संस्कृति की यात्रा में नाट्य समागम
अकबर रिजवी 40

मेघदूत के आँगन में नाट्य समागम
सुशील जैन 45

अमूर्त धरोहर
अमित सक्सेना 54

पुतुल परंपरा-गंगटोक
शुभा सक्सेना 57

जिक्र उस परीवश का
डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा 60

बातचीत

अम्मी ने ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल को प्रतिष्ठा दिलायी
बेगम अख़्तर की शिष्या शान्ति हीरानन्द से रघुवीर की बातचीत 62

आलेख

किस्सा-ए-नौटंकी
विजय सिंह 67

स्पर्श उत्तर पूर्व
डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा 71

उत्तर पूर्व संस्कृति संगम
मोहन सिंह 73

बसन्त उन्माद
शशीबाला बुद्धिराजा 76

गीत / कविता / छन्द

हरसिंगार
सरला जसवाल 78

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सच है एक
सुशांत सुप्रिय 79

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की कविताएं 80

बारिश
शुभा सक्सेना 81

ब्रजभाषा के छंद
डॉ. प्रकाश द्विवेदी 82

स्मरण

जो रास्ता पार कराते हैं
प्रयाग शुक्ल 83

हंसकुमार तिवारी : सन्दर्भ और साधना
डॉ. वरुण कुमार तिवारी 86

संस्मरण

वह आम का पेड़!
हरसिंह मनराल 93

लोकोत्सव : देशज
सुरेन्द्रसिंह रावत 96

हिंदी का उत्सव

समर्पण 99
तेजस्वरुप त्रिवेदी

आलेख

गंगा की महिमा क्यों ?
डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त 101

रिपोर्ताज

बैजू की धरती पर बावरा हुआ मन
रघुवीर 104

राजभाषा

संगीत नाटक अकादेमी में विकास के पथ पर राजभाषा
तेजस्वरूप त्रिवेदी 106

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश
तेजस्वरूप त्रिवेदी 109

प्रतिक्रियाएँ 114

प्रकाशन 116

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संपादकीय

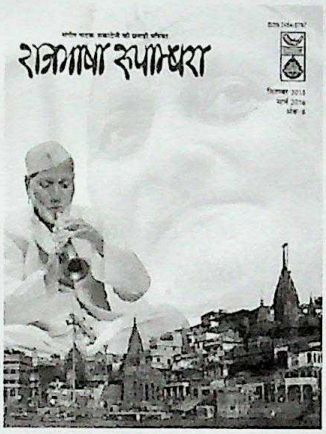

इस अंक में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ के जन्म शताब्दी वर्ष पर हम उनकी स्मृतियों को ताजा कर रहे हैं। अकादेमी से उनका सम्बन्ध काफी पुराना रहा है। वर्ष 1956 में अकादेमी ने बिस्मिल्लाह खाँ साहब को संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया और फिर अकादेमी की रत्न सहायता से। बिस्मिल्लाह खाँ साहब क्या नहीं थे और क्या थे यह हमें सुनीता बुद्धिराजा और मुरली मनोहर श्रीवास्तव के इस अंक में लिखे गये आलेख से ज्ञात होता है। संगीत नाटक अकादेमी की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष 2003 में सीरी फोर्ट सभागार में आयोजित समारोह में भारत के यशस्वी राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बिस्मिल्लाह खाँ साहब को सम्मानित किया। वह एक अविस्मरणीय क्षण था। बिस्मिल्लाह खाँ साहब सहजता, सादगी और विनम्रता की मिसाल थे। संगीत नाटक अकादेमी ने उनकी स्मृति में वर्ष 2006 से उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा पुरस्कार शुरू किये जो प्रति वर्ष प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में समर्पित उदीयमान युवा प्रतिभाओं को दिये जाते हैं। इस वर्ष 21 मार्च को बनारस में आयोजित सुर बनारस कार्यक्रम में अकादेमी ने नागरी प्रचारिणी मंडल, वाराणसी के सहयोग से बनारस में *सुर बनारस* कार्यक्रम का आयोजन किया जिसकी विस्तृत जानकारी विजयशंकर मिश्र के आलेख *सुर बनारस* में हम पाते हैं।

पिछले वर्ष अक्टूबर में बेगम अख्तर साहिबा के जन्मशताब्दी वर्ष के समापन अवसर पर अकादेमी ने तमाम कार्यक्रम किये जिसकी कुछ झलकियाँ हम डॉ कृष्ण कुमार शर्मा के आलेख *जिक्र उस परीवश का* में पाते हैं। बेगम साहिबा की शिष्या शान्ति हीरानन्द से रघुवीर की बातचीत भी बेगम साहिबा के विषय में तमाम जानकारी देती है।

राष्ट्र में फैली नाट्य की विभिन्न शैलियों का वृहद समागम अकादेमी द्वारा आयोजित *नाट्य समागम* उत्सव में देखेंगे। इस सन्दर्भ में सुशील जैन के आलेख *मेघदूत के आंगन में नाट्य समागम* और अकबर रिजवी के आलेख *संस्कृति की यात्रा में नाट्य समागम* में हम महत्त्वपूर्ण जानकारी पाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab, Jammu

हमारी पारम्परिक कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सरकार तो प्रयत्न कर ही रही है लेकिन जन भागीदारी भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। अकादेमी के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत विभाग द्वारा आयोजित *अमूर्त धरोहर* कार्यक्रम में देश भर से आये कलाकारों की उन कलाओं से रू-ब-रू होने का मौका मिला जो अब साधारणतया महानगरों में देखने को नहीं मिलती। अमित सक्सेना ने अपने आलेख *अमूर्त धरोहर* में इसका व्यापक वर्णन किया है।

इस अंक में जहाँ एक ओर बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना से संबंधित रहे हंस कुमार तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण करते हुए पटना के डॉ. वरुण कुमार तिवारी ने अपने आलेख *हंस कुमार तिवारी : सन्दर्भ और साधना* में उनकी स्मृतियों को ताजा कराते हैं वहीं दूसरी ओर प्रयाग शुक्ल चंद्रधर शर्मा गुलेरी की अमर कहानी 'उसने कहा था' के 125 वर्ष पूर्ण होने पर गुलेरी जी और उनकी अमर कहानी का पूरा सार हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

इसके अतिरिक्त इस अंक में और भी सामग्री है जिसे आप पढ़ेंगे और पहले की तरह अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाओं से अवगत करायेंगे।

आपका

—तेजस्वरूप त्रिवेदी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ जन्मशताब्दी वर्ष पर

शहनाई के सरताज : बिस्मिल्लाह खाँ

सुनीता बुद्धिराजा

उस दिन सवेरे से ही बरसात हो रही थी। यूँ भी बंगलौर में तापमान 320-330 तक पहुँचा नहीं कि पानी बरसने लगता है। पिछले दिन बहुत गर्मी थी। और सुबह-सुबह जब झड़ी लग गई तो समझ में नहीं आया कि स्पिक मैके के आयोजक वाणी महाविद्यालय के खुले ग्राउंड में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का कार्यक्रम किस तरह रखवाएँगे। लेकिन पिछले दिन की भीड़ को याद करते हुए मैंने सोचा कि वहाँ पहुँचने की एक कोशिश तो करनी ही चाहिए। आगे सब ऊपरवाला जाने। तेज बरसात में शायद आज कुछ कम लोग हों और खाँ साहब से बातचीत का एक और मौका मिल जाए। यूँ तो दिन में करीब तीन घंटे उनके साथ बैठकर ढेर सारी बातें उनसे सुन चुकी थी लेकिन प्यास अभी भी वैसी ही थी, जैसी उनसे न मिलने पर बरसों पहले से हुआ करती थी। 'बादल भी है बिजली भी है पानी भी है सामने। मेरी प्यास अभी तक वैसी जैसी दी थी राम ने!' उस तेज बरसात में लोग कहाँ बैठेंगे, कहाँ खड़े होंगे, खाँ साहब कैसे बजाएँगे! याद आया मुझे रमानाथ अवस्थी जी का गीत!

वाणी विद्यालय के बाहर पानी जमा हो गया था। ऊपर से लगातार बारिश। बिस्मिल्लाह खाँ साहब एक कजरी बजा रहे थे और भीगी कुर्सियों पर भीगते हुए हजारों लोग बैठे, उनकी कजरी सुन रह थे। मैं, जो कुछ कम लोग होंगे, ऐसा सोचकर गई थी, ढूँढ़ रही थी कि वहाँ कहीं खड़े होने की जगह तो मिल जाए!

बिस्मिल्लाह खाँ साहब 90 पार कर चुके हैं, चल नहीं सकते। व्हील चेयर पर उन्हें लाया जाता है और मंच पर दो लोग कुर्सी से उन्हें उठाकर नीचे बिठाते हैं, लेकिन खाँ साहब जब अपनी 10 लोगों की मंडली के बीच, अपनी शहनाई को फूँक देते हैं, तो मन से सिर्फ दुआ निकलती है, 'भगवान आपको सलामत रखे खाँ साहब, भगवान आपके सुरों को सलामत रखे।'

कजरी खत्म करके खाँ साहब श्रोताओं के साथ थोड़ी बातचीत शुरू करते हैं, ''आप सोच रहे थे कि इतनी बारिश में कैसे बैठेंगे और कैसे हमें सुनेंगे? मगर देखिए उसका करम! अब फिक्रमंद होने की कोई जरूरत नहीं। बारिश रुक गई है।'' उनके मुँह में सिर्फ सामने के दो दाँत दिखाई देते हैं वे भी टूटे हुए, कभी बातचीत करते हुए वे ऊपर के दाँत मालूम पड़ते हैं और कभी लगता है कि ये नीचे के जबड़े के दाँत हैं! लेकिन खाँ साहब को कोई फर्क नहीं पड़ता कि उनके टूटे दाँतों की वजह से उनका 90 साला मासूम चेहरा और भी ज्यादा मासूम दिखने लगता है। दोनों कानों में सोने की छोटी-छोटी मुरकियाँ, सफेद कुर्ता-पायजामा, सिर पर टोपी, दाढ़ी हलकी बढ़ी हुई। ''अरे भई पसंद आए तो दाद दीजिए। ऐसा मत कीजिए! अच्छा लगे तो अमाँ तारीफ करो। रुपये-पैसे की भूख नहीं है हमें। किसी ने लाख दिए, दो लाख दिए। अमाँ सारा खर्च हो जाएगा। जरा ताली बज गई, वाह-वाह हो गई, हो गया काम। रुपया-पैसा सब खर्च हो जाएगा। मगर संगीत चल रहा है। तारीफ करने से क्या खर्च होगा? कुछ नहीं! उसका—कलाकार का सीना चौड़ा हो जाएगा। ये बात हम सिर्फ अपने लिए नहीं कह रहे। कोई गाने वाला है (गायक), सितार वाला है, सरोद वाला है, संतूर वाला है, ये सब चीजें है। भई इतनी मेहनत से आपके सामने गाते हैं, बजाते हैं, जरा 'वाह-वाह' तो कर दो। ऐसे नहीं बैठो, 'कुढ़' पब्लिक की माफिक। अगर एक बार फिर हमने तय कर लिया कि नहीं सुनाएँगे, तो फिर आप चाहे बाद में कितना हाथ जोड़िए, कुछ नहीं सुनाएँगे। प्रोग्राम हम करेंगे अपनी मरजी के मुताबिक। अल्लाह सलामत रखे आप सबको।''

गा रहे हैं बिस्मिल्लाह खाँ साहब। 'दन न दन दन, दन न दन ऽऽऽ।' बजाना शुरू करते हैं—राग-बिहाग। उधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE(2025)Gurukul

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हल्की बौछार हो रही है, इधर बिस्मिल्लाह खाँ साहब की शहनाई के सुर एक-एक करके सभी के दिलों में उतरते जा रहे हैं, बार-बार तालियों की गड़गड़ाहट गरजते बादलों की गड़गड़ाहट को पीछे छोड़ देती है। उनकी आँखों की सफेद होती हुई पुतलियाँ जाने क्या देख पाती हैं, क्या नहीं, लेकिन वहाँ बैठे श्रोता निश्चिय ही देख पाते हैं और समझ पाते हैं उन आँखों की, शहनाई के स्वरों की और सफेद कुर्ते-पाजामे में लिपटे हुए उस नब्बे साला शख्स की बातों की सच्चाई। बिस्मिल्लाह खाँ साहब जिन्दगी के ऐसे मोड़ पर हैं जहाँ उन्हें संगीत के अलावा किसी चीज की, किसी आदमी की परवाह नहीं है। इसीलिए, वही एक ऐसे कलाकार हैं जो बेखौफ, बगैर किसी की परवाह किए, बेखटके सामने बैठे हुए हजारों श्रोताओं को 'कूढ़' कह सकते हैं और श्रोता बिना किसी नाराजगी के, उनके संगीत में उतरते हुए यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं, कि उनकी बात में दम तो है। बेझिझक अब वे सिर हिलाकर, वाह-वाह करते हैं और जहाँ शहनाई के स्वर थोड़े से भी उन्हें रोमांचित करते हैं, वही उनके दोनों हाथ आपस में जुड़ जाते हैं, ईश्वर का धन्यवाद करने के लिए, ताली बजाने के लिए।

शहनाई के स्वरों के साथ-साथ बीच-बीच में खाँ साहब की गुफ्तगू भी चलती है और लोग उनकी बातों को सिर माथे लेते हैं वैसे ही, जैसे अपने घर के किसी बड़े-बुजुर्ग की बातों को लेते हैं। ''कलकत्ते में प्रोग्राम हो रहा था। बड़ा अच्छा प्रोग्राम हो रहा था। करते-करते कोई तारीफ नहीं कर रहा है। यूँ भी बंगाली जितने हैं, तारीफ नहीं देते। गायक ने कहा, 'ये क्या कूढ़ौ बसौं?' सब चुप। सब को कूढ़ बना दिया। उसके बाद कोई छोटी चीज थी, मगर वो कलाकार क्या बढ़िया गा रहे थे! हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। न तो आपके तारीफ करने से हमारा नाम कुछ बढ़ जाएगा, हम कोई नामी नहीं हो जाएँगे। न ही तारीफ न करने से हम कोई घट जाएँगे। ये जरूर है कि ये मेहनत का काम है इसलिए भी कि जितना साज मिलता है—सितार है, सरोद है, वायलिन है—बहुत-सा साज है, सिर्फ हाथ का है। और यह, शहनाई? यह फूँक का काम है। इसमें कितनी देर प्रोग्राम हुआ, इतनी ही हुआ बस? आप कहेंगे। ऐसा नहीं है भई, हम जितना कर सकते हैं अब उतना करेंगे, ये नहीं कि साज पर तार चढ़ा लिया और बजाते जाओ। यह शहनाई है, मालिक की मेहरबानी से यह बजती है। शहनाई पूरे हिंदुस्तान में बज रही है। हर जगह। शहनाई पूरे हिंदुस्तान में बज रही है। हर जगह। मगर माफ कीजिएगा महाराज, बनारस कुछ अलग है। (तालियाँ) ये तारीफ हो गई है? नहीं, ये है ही ऐसा! 'ए गंगा द्वारे बधइया बाजे, गंगा द्वारे, हे गंगा द्वारे (गाते हैं)' गंगा जी में पंजा भिगोए हैं और सुनने वाले कोशिश कर रहे हैं, 'अरे वाह मलिक, वाह हीरा, कइसन बजावत ही गंगा कसम!' ये, वो बनारस है साहब। कुछ भी हो, तमाम हिंदुस्तान का कितना-कितना करैक्टर है, बनारस अलग है।''

अगले दिन बातचीत के दौरान मैं बिस्मिल्लाह खाँ साहब से पूछती हूँ, 'आपको बनारस बहुत पसंद है। बनारस ही क्यों?' ''हाँ सब बनारस। बनारस है ही बनारस। सोचो तो सही जरा। गौर करो, हम जितने भी हैं इंसान, सुर की तलाश में हैं न? रस की तलाश में हैं? अरे यार, कहीं मत जाओ, बनारस चले जाओ। वहाँ बना रस है। रस बना-बनाया है। जाओ, और पी लो। लोग सुनते हैं, हमारी बात को सुनकर कि खाँ साहब भी क्या-क्या बात कहते हैं। अमाँ यार, हम खुद बनारसी आदमी हैं, बनारस की तारीफ नहीं करेंगे? कुछ भी हो, बनारस जो है पहले से ही उसमें अल्ला रक्खा ने बना रस दिया है। हमने बनाया नहीं है। पहले ही से तैयार कर दिया है उस सुर के रस को। पीना हो तो चले आओ वहाँ।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब बनारस को बहुत प्यार करते हैं। इज्जत करते हैं गंगा माई की। ''अब लीजिए, दुनिया जहान घूम कर आते हैं कहाँ-कहाँ के म्लेच्छों से वास्ता पड़ता है। लौट कर आता हूँ तो पहला काम ये करता हूँ कि गंगाजी में शहनाई को डुबकी लगाता हूँ। शहनाई खाली नहीं, खुद भी। शहनाई ली हाथ में और कई गज तैर के चले गए आगे। गोता मारकर फिर तैरते हुए वापस चले आये। अलबत्ता कपड़ा तो हम हमेशा गंगा जी में धोया हुआ ही पहनते हैं। धोबी के हाथ का धुला कपड़ा नहीं पहनते। हमारा एक ही धर्म है—सुर-संगीत। उस मालिक के करम से जो हो होगा, हम और आप उसे देखेंगे नहीं, वह हो जाएगा। ये काम कैसे होगा, बाज दफा पता भी नहीं होगा, बस हो जाएगा, बस, गंगा जी में विश्वास रखिए, अपने करम में विश्वास रखिए और मालिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में विश्वास रखिए। देखिए न, इनका खत आया, किसे क्या लिखा था, कैसे क्या होगा पता नहीं था। कहाँ बनारस और कहाँ यह आपका बंगलौर। न मालूम कितना होगा पता नहीं था। कहाँ बनारस और कहाँ यह आपका बंगलौर। न मालूम कितना दूर है ये। देखिए, हम यहाँ चले आए और आके आपसे बातचीत भी हो रही है। किसे मालूम था, इतने दिनों के बाद यहाँ आपसे मुलाकात होगी!''

खाँ साहब का बनारस और गंगा जी के प्रति प्रेम चाँदनी रात में खिली कुमुदिनी की तरह पाक है। उसमें किसी मिलावट की बू नहीं आती। उनकी बात सार्वभौमिक, शाश्वत सत्य की तरह प्रतीत होती है। मन होता है कि कहू। उन धर्म के खिलंदड़ महानुभावों से कि गंगा जी सिर्फ तुम्हारी नहीं हैं, बनारस और बाबा विश्वनाथ का मंदिर सिर्फ तुम्हारा नहीं है। ये मंदिर की घंटियाँ, ये गंगा जी की लहरें, ये कच्ची-पकी गालियाँ, हर उस इंसान की हैं जो यहाँ बसता है, जो इन्हें प्यार करता है। यहाँ की सुगंध बिस्मिल्लाह खाँ साहब की साँसों में बसती है। गंगाजल से उनकी शहनाई के स्वर पवित्र होते हैं। अपने देश को, अपनी जमीन को, अपनी मिट्टी को चाहने के लिए किसी धर्म विशेष को मानना आवश्यक नहीं है।

यही कारण है कि बिस्मिल्लाह खाँ साहब को स्वरों के अतिरिक्त और कुछ भी छूता नहीं है। क्योंकि वही तो जीवित रहेगा न! ''आप हमें क्या दे सकते हैं? हमारा यदि 10 रुपया है तो हम वही लेंगे, 11 नहीं लेंगे। हमें नहीं चाहिए कुछ भी उसके ऊपर, जो हमारा नहीं है। हम तो इस तबीयत के आदमी हैं। क्या मिलेगा लालच करके, ये करके, वो करके? धत् हमें वो नहीं चाहिए। हम क्या किसी से कम हैं? वहाँ पर तुम सम्राट हो, यहाँ हम भी किसी से कम नहीं हैं। कितनी लाख है तुम्हारे पास? बताओ हमें। कोई आदमी तो होगा जिसके पास कुछ नहीं होगा? जाओ यार! इतनी बड़ी दुनिया है, फिर सबके सब चले जाएँगे। कोई नहीं रहेगा। बस, सुर जो हैं, सुर देवता रहेंगे। यह आवाज, देखिए जिसको तुम आवाज कह रहे हो, उसी को हम सुर कहते हैं। है न! और सुर है न, दिखाई नहीं देता महाराज। हम कह रहे हैं कि सुर दिखाई नहीं देगा, सुना जा सकता है। कहिए तो सुर महाराज सबके हैं, और किसी के भी नहीं हैं।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब दुनियावी तौर-तरीकों से अभी भी इतना वाकिफ नहीं हैं जितना कि वाकिफ हैं वे सुरों की उपज से। ''हम और कुछ नहीं जानते। आप हमसे पूछिए कि गांधार कैसे उतरा है, धैवत कैसे लगाना है, हम वो जानते हैं। गांधार चढ़ी है कि उतरी है,आप नहीं बता पाएँगे। (गाते हैं...) क्या समझा आपने? बताइए हमें? संगीत वाला वो है, जो वह सवाल कर रहा है, तो उसे जवाब भी मिलेगा। और नहीं तो सब बकवास करेंगे। अरे यार इतने हजारों आदमी आते हैं, बात करते हैं और कुछ नहीं सीख ले गए। सुर क्या है, वो चीज किसी के पास नहीं है।'' उसे पहचानने के लिए एक बहुत सुरीला कायनात चाहिए, सुरीला कान, सुरीली आँख, सुरीली जिंदगी, खाँ साहब गा रहे हैं, गुनगुना रहे हैं।

गुनगुनाते-गुनगुनाते बिस्मिल्लाह खाँ साहब अपनी कुल परंपरा को याद करने लगते हैं। उनके नाना थे—रजब अली खाँ साहब। हमेशा बनारस में बालाजी मंदिर में शहनाई बजाते थे। उनके वालिद मियाँ इतने बड़े कलाकार नहीं थे, लेकिन नाना साहब अच्छी शहनाई बजाने लगे। गाते भी थे, ''माई जोगी आए द्वारे, होये रस पीवो। माई जोगी आए द्वारे। होये रस पीवो...'' (बिस्मिल्लाह खाँ साहब गा के सुनाते हैं।) हमारे नाना की बंदिश है ये। चलते-चलते एक दिन बालाजी मंदिर के सामने पहुँचे। हमारे मामू, बड़े मामू, छोटे मामू रियाज कर रहे थे। एक बाबा थे स्वामी जी। उनके यहाँ कोई औलाद नहीं थी। मामा को जब उन्होंने सुना, तो बोले, अरेऽऽऽ। आओ, आओ, आओ। यहाँ भी थोड़ा बजा दिया करो। दूसरी जगह, मंदिर के करीब ही चबूतरे पर, जहाँ से बालाजी का दर्शन साफ होता था। अच्छा बाबा! तो उसी दिन से हमारे नाना और फिर मामू वहीं बजाने लगे। महीने में सात रुपया देते थे, चाँदीवाला। आजकल के इस 35 रुपया, 40 रुपया बराबर। रुपये खातिर नहीं, मगर मामू जबान दे दिए इस खातिर और गा रहे हैं वे बाबा—'अवगुन को गुन न कीजिए। अवगुन को गुन न कीजिए। क्या जाने गुनियन की रीत। अवगुन को...' हमने तो एक दो-चार मिनट ही गाया अभी। लेकिन बाबा ने महीनों-महीनों एक-एक सुर की हरकत बताया। तो बाबा ने मामू मो ऐसे तैयार किया, हाँ बेटा, ऐसे नहीं यूँ। ऐसे नहीं नहीं, यूँ। बहुत दिन तक सिखाए, ऐसा नहीं कि साल-दो साल। छः बरस! क्या-क्या बंदिशें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थीं उन बड़े लोगों की! एक महराजिन थीं जो खाना पकाती थी। बाबा कहें, महराजिन! हाँ बाबा! ले आओ तो! तो महराजिन दो थाल लगा दे। एक थाल बाबा को और एक हमारे मामू को। आमने-सामने बैठे हैं दोनों। और खा रहे हैं। जो भी है, पुलाव, पूरी, फलाना, ढिमका। लड्डू है, मगदल है, आधा खाया बाबा ने और कहें ले बेटा। मामू कहें 'लाओ बाबा', और लेकर खा गए। मामू सोचते थे कि इनका दुआ हम ले लेंगे तो जन्नत मिल जाएगी। दुनिया जहान का खजाना फिर हमारे पास है। सोचें कि इनको मान लिया है, ये हमारे गुरु हैं, हमारे बाप हैं। उनकी पूरी दुआ मिल गई थी। बस संगीत का सारा खजाना वहीं से मिल गया।

''ऐसे तो हमारे उस्ताद थे। मुहम्मद हुसैन खाँ साहब। ताज खाँ साहब के भानजे। वो हमारे मामू के उस्ताद थे, लेकिन सिद्ध कराया उन्होंने। बाबा ने नाम नहीं लिया उनका कभी। बस बाबा ही कहा हमेशा। ऐसे नाम नहीं लिए जाते कभी। इसी से हमारे संगीत में कहा है, जाँत नहीं, पाँत नहीं। कोई भी हो, कहीं का भी हो। अगर शरीफ है, अगर उसमें लगन है तो सीख जाएगा। मगर शर्त यह है कि उसे खर्च करना है। उनका कहना है कि इसे खर्च करो तो बढ़ेगा, ये तो ऐसी दौलत है संगीत की। दूसरी दौलत को खर्च करो तो बढ़ेगा, ये तो ऐसी दौलत है संगीत को। दूसरी दौलत को खर्च करो तो कम होती है, मगर संगीत की दौलत को जितना खर्च करो, वो उतना ही बढ़ती है।''

अपनी उम्र के सारे बच्चों की तरह बिस्मिल्लाह खाँ को भी मुश्किल का काम पसंद नहीं था। तबीयत मचल जाती कि दोस्तों का साथ है, खुशी का आलम है, पतंग उड़ रही है, उनके साथ थोड़ी चुहल हो जाए। कहाँ वो हँसी, ठट्ठा, खेल और कहाँ ये गाना- बजाना। लेकिन नहीं। मामू कहें कि तुम्हें बैठना है। उसमें जरा-सी चूक हो जाए तो मार भी खाते थे। ये आएँ घूम-घाम के। ''मामू पूछें, रियाज किया था? हम कहें—हूँ-हाँ। मामू कहें रियाज नहीं किया? बेवकूफ झूठ बोलता है।''

''पहले मजबूरी में और फिर खुशी से बजाने लगे। अब उसी से हम शुरू हो गए। घंटों रियाज करें। दो-चार राग बजाने लगे। ये चीज ऐसी है कि इसको अपने दिल में खुशी से मंजूर करके लेना पड़ेगा कि भइया, ये हमको करना है! उसके बाद हमारे मामू कहते थे कि कोई अस्थान लेना पड़ेगा, कोई मजार-शरीफ है, या कोई मंदिर है, या कोई ऐसी जगह है जहाँ एकांत हो और पता चले कि यह किसी बुजुर्ग की जगह है, या शाह साहब फलाने यहाँ दफन हैं। तो उसे चुनो, तुम्हें उनकी दुआएँ मिलेंगी। मंदिर है तो देवताओं का आशीर्वाद मिलेगा। तो वो बालाजी मंदिर लिया उन्होंने। महाराज साहब ग्वालियार के थे, हमारे नाना, हमारे मामू के भी बाप! वहाँ आरती होती थी, बालाजी मंदिर में, और उस पर शहनाई बजती थी। 15 मिनट। तीन-चार घंटा रियाज होता था उसके लिए। उसके अलावा भी 12-15 घंटे और रियाज। हमारे मामू करते-करवाते थे। अब जो आदमी 18 घंटे रियाज करे और सिर्फ 6 घंटे सोने-खाने और बाकी अपने निजी काम के लिए दे तो वो कुछ होंगे कि नहीं? वहीं मंदिर के पास।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब के मामू जान को तो शहनाई बजाते-बाजते तरह-तरह के अनुभव होते थे। अब उनकी बात वही जानें। लेकिन जब भानजे साहब का रियाज शुरू हुआ तो बराबर वे इन पर नजर रखते कि कहीं इधर-उधर न निकल जाएँ, बच्चे ही तो हैं आखिर।

विशाखापट्टनम में स्टील प्लांट के हिल टॉप गेस्ट हाउस, गंगावरम गेस्ट हाउस (समुद्र तट पर) और शहर में स्पिक मैके के प्रोग्राम के बीच-बीच, बंबई के साहिल होटल में या फिर बंगलौर में उस येलहंका के निकट वाले रिजार्ट में, अलग-अलग समय और स्थान पर बातचीत के दौरान, बिस्मिल्लाह खाँ साहब अपनी सुरीली बातचीत से जरा भी नहीं भटके, जहाँ से बातचीत का सूत्र पिछली बार छूटा था, वहीं से अगली बार शुरू हुआ, इतने वर्षों के अंतराल के बावजूद, तो फिर रियाज करते समय कैसे भटकते? मामा को थोड़े ही दिन में पता चल गया कि लड़का 'ठहर' गया है और अब रियाज में बैठेगा कि नहीं, इसकी फिक्र करने की जरूरत नहीं है।

''हमारे खयाल में 10-12 साल की उमर रही होगी हमारी तब। अब हमारी लगन हो गई, तो खुद जा रहे हैं क्या है, कि शाम को एक राग लेते थे। 'नी रे गा ऽऽऽ' करते मामू बाते कि एकदम से जाना है बीच में साँस लेकर नहीं। जब ये सध गया हमको, तब तक साल डेढ़-साल गुजर चुका था। मामू कहें, यहाँ आओ। और हम डरते थे उनसे। जरा-सा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं गड़बड़ हो गया तो ऐसा जोर से थप्पड़-धाड़। कहें कि कुछ देखना तो किसी से कुछ कहना मत। 10-12 बरस के हम पूछें कि क्या देखें तो किसी से नहीं कहें? तो मामू कुछ बोले नहीं। लेकिन हमारी आदत है, हम रियाज कर रहे हैं। एक दिन, महीने-दो महीने के बाद—वहीं बालाजी मंदिर में हमारा रियाज चल रहा है। वो ऐसा अस्थान है कि वो बालाजी का मंदिर, उधर गंगा मैया का मंदिर, उधर जड़ाऊ का मंदिर, इधर मंगला मैया जी। चारों तरफ ये सब। ओर बीच में हम बैठे हैं। 'देऽऽ ऽऽ दंग दंग दंग दंग दिंग ऽऽऽ'' हम लगे हैं उसी में, कि मैया हो, हमारे नाक में खुशबू आई। हम दरवाजा बंद किए हैं। खिड़की है, दरवाजा है, दो-चार सीढ़ी है, उसके बाद गली आ जाती है। मंगला मैया का मंदिर सामने हैं। और इधर भी रास्ता है उधर भी रास्ता है। खुशबू आ रही है। हम सोच रहे हैं कि हम तो इतर नहीं लगाए हैं। बाहर आवा-जाही है। फिर हमने सोचा गंगा मैया की तरफ कोई आया होगा। उसने शायद इतर लगाया है, और सुरो और खुशबू में हम झूम रहे हैं। आँख बंद है हमारी। दरवाजा-खिड़की भी बंद है। 'दंग दंग दिंग ऽऽऽ' अब हम बढ़ रहे हैं। और आँख खुलने पर देखते क्या हैं कि सामने से कोई चले आ रहे हैं। ये दाढ़ी, ये हाथ में कमंडला, दूसरे में छड़ी लिए हैं, कपड़ा खुला, दृष्टि बाँधी है। और हमारी साँस ऊपर की ऊपर, नीचे की नीचे। डर के मारे हमारे हाथ काँप रहे हैं। वो कहें, बजा बेटा, बजा बेटा। अरे बेटा बोल तो सकता नहीं, बजाएगा क्या? वो कहें, हा, हा, हा, बजा। मजा करेगा। मजा करेगा, बजा। हमारे हाथ काँप रहे हैं मगर जेहन फौरन काम कर रहा है। यार, इनसे दुआ लेना है। और दरवाजा बंद ही है, बंद दरवाजे के बीच से वो जो गए हैं, हम भी दरवाजा खोल कर निकले। इधर देखा, उधर देखा, कोई नहीं है। घड़ी देखा, करीब साढ़े दस। उस वक्त लालटेन जलती थी, बिजली नहीं थी। हम भी जल्दी से अपना साज लिया और एक-दो-तीन।

''वहाँ रास्ते में एक सरदार जी थे, वो मलाई और दही बेचते थे। हमारी जान साँसत में! हमें घबराए हुए देखकर पूछे, क्या बचवा? हम कहिन—तनिक रंगील दास के फाटक-तलक पहुँचाए दियो। बहुत डर लग रहा है। कहिन बचवा—जाय के हो? पहुँचाएँ देत हैं। अब वो पहुँचाए दिहन रंगील दास के फाटक तलक, वहाँ आए तो एक-आध दुकान खुली थी। इधर-उधर देखा, घर आए, खाना खाया, सो गए। और सुबह उठ जाते थे, 3-30, 4-00 बजे। हमारे कान में सुर पड़ा, 'भैरव' या 'रामकली' कुछ बजा रहे हैं मामू। सुन रहे हैं हम। देख लिया कि जब वो बजा चुके, उसके बाद नाश्ता-वाश्ता कर लिया, उसके बाद हम उनके पास गए, घबराहट के मारे कि 'मामू, मामू।' वो देखते ही समझ गए कि हो गई मुलाकत। कहें 'तनिक सुनो, देखो तुम वहाँ चले जाना, इतने की तरकारी है, इतने की लौकी है, इना वो है, लेके चले आना।' और हम जो कहना चाहते थे, न कहने पाए। 'अच्छा मामू, मामू, मामू।' 'अरे तुमसे कहा नहीं कि वहाँ चले जाना? आठ आना पैसा है और देखो ले लेना अपनी मुमानी से।' और हम तीन बार ऐसे ही किया, 'मामू, मामू, मामू'। 'क्या है?' हमने बता दिया कि ये हुआ। तो मारा थप्पड़ धाड़। 'अर्रे मरदूद, मना किया था न कि कुछ कहना मत!' अरे ऽऽऽ यार, ये बात है! हम कहें ओ हो हो हो। फिर चुप, कान पकड़े। मामू बोले, 'अब देखना तो तब कुछ कहना मत। खबरदार, किसी से न कहना।' उसके बाद दो वाकया हुए, लेकिन क्या ओय, होय। कुछ नहीं कहे हम!''

हिंदुस्तान में जितने वाद्य कलाकार हैं, उन सभी को उनके वाद्यों के कारण जाना जाता है। लेकिन दो कलाकार हैं, जिनके साजों को उनके नाम के कारण जाना जाता है। पंडित शिवकुमार शर्मा का 'संतूर', बिस्मिल्लाह खाँ साहब की शहनाई। बिस्मिल्लाह खाँ साहब के अलावा और किसी का नाम शहनाई के साथ जुड़ा हुआ नहीं है। ऐसा लगता है कि दोनों ही जैसे एक-दूसरे के लिए बने हों। एक-दूसरे की पहचान हों।

''ये शहनाई जो है, हमारे बुजुर्गों ने—हमारे मामू, हमारे नाना, मामू के वालिद, उनके वालिदा, ये सब गाते थे। गवैये थे। जैसे सब गाते थे। लेकिन उनके दिमाग में आया कि यार, राग तो हमें याद हो गया है, गाने में तो वो (कलाकार) भी अच्छे हैं, वो भी अच्छे हैं। वो अच्छे हैं, सारंगी में भी ये हैं, वो हैं। तबला में इन लोगों ने बड़ा नाम कर लिया है। सितार बजाने वाले ढेरों हैं। और गायकी तो भरी हुई है। जब सब आजमा लिए, तब पाया कि सबसे कंडम साज यही है, शहनाई। तो फिर ये साज लिया। उसमें अस्थायी, अंतरा सब

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-Mo

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने लगे। प्रेक्टिस करते-करते उसमें कुछ तानें भी आ गईं। जो राग का दस्तूर है, उसी में सब कुछ करने लगे। नाना के पुराने लोग हमारे! उसके बाद नाना आए, मामू आए। हमारे मामू बड़ तगड़े आदमी थे। ओये, होये, होये। उनका यकीन था कि जो कहते हैं, फलाँ राग से बारिश हुई है और फलाँ राग से दीया जलता है बिल्कुल सच है। यह गलत नहीं हैं। वैसा अंदाज ही नहीं है। तुमको आएगा कहाँ से? अब हमारी उम्र नहीं है ऐसी कि ये सब करें। लेकिन हाँ, जब चाहेंगे तुम्हें हँसा देंगे। जब चाहेंगे तुम्हें रुला देंगे, ऐसा तो हम अब भी बजा ही लेते हैं।''

बचपन में 15 अगस्त, 26 जनवरी को अकसर बिस्मिल्लाह खाँ साहब को टेलीविजन पर सुबह-सुबह शहनाई बजाते हुए देखा। रोज सवेरे आकाशवाणी पर भी कार्यक्रमों का प्रारंभ शहनाई वादन से ही होता था। घरों में शादी-ब्याह और हर खुशी के मौके पर या तो बिस्मिल्लाह खाँ साहब की शहनाई का रिकॉर्ड बजता या फिर कुछ शहनाई बजाने वालों को लोग बुलवाकर मंडप के पास बजवा लेते। शहनाई की पहचान ही हो गई शुभ-काम के साथ जुड़े साज की।

''पुराने जमाने में बादशाह लोग थे, नवाब लोग थे, राजा थे। उनका एक बड़ा फाटक होता था, उसके ऊपर नक्कारा बजता था। और वो नक्कारा बहुत बड़ा-बड़ा होता था। एक सील होती थी, छोटी-सी धिन धिन ना-धिन-धिन ना...। एक होता था पहलूदार। दूसरा हाता था मुरसिल। मुरसिल क्या करता था? खाली उड़ान भर रहा है। पहलूदार खाली ठेका लगाता था। 'धा धिन धिन ना धा धिन ना धिन धिन ना' खाली ठेका लगा रहा है। और वो मुरसिल खाली उड़ रहा है साथ में। ये सब होते थे। साथ में एक सुरवाला होता था, एक शहनाई बजती थी। उस जमाने में इसका रियाज होता था। दूर से बड़ा मजा आता था सुनने में। शहनाई सुनने में बड़ा अच्छा लगता था। तो बादशाहों में, राजाओं में, नवाब साहबों में ये था कि अब जब वे सवेरे सलामत उठे तो शहनाई बजी। उस वक्त ये मंदिर-वंदिर के लिए नहीं था। वो वहाँ शहनाई बजी और सबको मालूम हो गया कि बादशाह सलामत उठ गए। अब उसके बाद 10-15 मिनट के बाद मालूम पड़ा कि दरबार में आ गए हैं। तो उस जमाने में ये रिवाज था कि राजा-महाराजा-बादशाहों की सलामती का पता चलता था जनता को शहनाई बजने से। पता चला कि इस वक्त वे क्या कर रहे हैं, क्योंकि आम लोग तो यूँ भी उन तक पहुँच नहीं पाते थे। इसी तरह जब उनके यहाँ भी कोई शादी-वादी रही होगी तो उनका हुकुम हुआ कि जब शहनाई बजवाओ! तो शहनाई बज गई। इसी तरह कभी-कभी जब खुशी में शहनाई बजी तो लोगों ने पूछा कि बादशाह सलामत नहा चुके, खाना खा चुके, दरबार लगा चुके, ये बेटाइम शहनाई क्यों? पता चला कि उनके यहाँ शादी है, या बच्चे का जन्म है या बेटी की सगाई है। इससे पता चला कि शुभ-मंगल का कोई काम हो रहा है। तो यूँ भी बादशाह सलामत जब सो के उठे तो ये भी खुशी का मौका है, कि ठीक-ठाक हैं, नाश्ता कर लिया तो भी खुशी है कि तंदुरुस्त हैं, दरबार लगाया तो भी खुशी का मौका है, कि दिमाग उनका ठीक-ठाक है और शादी-ब्याह भी खुशी का मौका ही है तो इस तरह जब खुशी का माहौल हुआ शहनाई बजने लगी। जिसके यहाँ शादी-ब्याह हो, कुछ नहीं रखेगा, गवैया नहीं बुलाएगा, फनकार नहीं रखेगा, लेकिन सस्ती ही सही, शहनाई जरूर बजाएगा।

''गरीब आदमी है, 20 रुपये की शहनाई बजाएगा, लेकिन बजाएगा। शहनाई बजी, और दुनिया भर को मालूम हुआ कि खुशी है। क्या अल्लाह का करम है! हम पर तेरी मेहरबानी, परवरदिगार! हमको वो साज दिया है कि अब हमारी शहनाई बजेगी तो सब समझेंगे कि खुशी का काम है।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब की आँखें भीग आई हैं, मालिक का शुक्रिया अदा करते-करते। उस वक्त मेरे साथ कमरे में और भी कई लोग बैठे हैं जो उनकी बातों को सुन रहे हैं। हम सब भी अपनी आँखें पोंछ रहे हैं। जैसे कि जब भी हमने ईश्वर को धन्यवाद देते समय अपनी आँखें पोंछ रहे हैं। जैसे कि जब भी हमने ईश्वर को धन्यवाद देते समय अपनी आँखें पोंछीं, तो पला चल गया, बिस्मिल्लाह खाँ साहब की शहनाई बजी है।

यही बिस्मिल्लाह खाँ साहब अपने साज पर बहुत नाज करते हैं। ''सब कहते हैं, सितार बहुत मुश्किल है। सब कहते हैं गाना मुश्किल है। सरोद मुश्किल है, सारंगी मुश्किल है। जी! बस हर एक कहता है उसका साज बहुत मुश्किल है। अरे बहुत मुश्किल है तो इतने सारे हो! कितने हैं, गिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लो! सरोद में देखो, सितार में देखो, गायकी में देखो। बहुत मुश्किल तो है, लेकिन इतने (सारे) हो! शहनाई में कौन है? हा हा हा। मुश्किल तो ये हुआ! सबसे ज्यादा मुश्किल तो ये है, इसमें आगे बढ़ ही नहीं सकता। षड्ज का षड्ज, षड्ज का पंचम, इतनी दौड़ है बस। कुल डेढ़ सप्तक का साज है और सारा कमाल इसी में दिखाना है। खाली शुरुआत करना है। एक सितार है, उसमें बोल रहा है, डेंग डेंग डेंग ऽऽऽ (गाते हैं) कई जरब लगाएँगे एक नहीं। यहाँ ये नहीं है। हेंऽऽऽ ऽ आ ऽऽऽ न ऽऽ दिया ऽऽ न ऽऽ। एकदम जाएगा। यह एकदम वाला साज है। इनसे कहिए कि एकदम लगाएँ किसी साज में। तीन-चार जरबें लगेंगी। कम-से-कम।''

शहनाई में गमक किस तरह से ले पाते हैं, प्रश्न है।

''ये बड़ी मुश्किल है'', बिस्मिल्लाह खाँ साहब कहते हैं। ''डागर खानदान में गाने में ये लोग करते थे। गमक हम नहीं लगाते, सच बात है ये। डागर खानदान के भाइयों को सुना हमने, सन् 30 में। (ध्रुपद सुनाते हैं थोड़ा-सा) ये साधना शुरू किया। करते-करते थोड़ी आ गई। गोविंद साहब कलकत्ते में कंसर्ट करते थे, ऑल बंगाल। उसके बाद गमक का काम हमारे एक भाई साहब थे दोनों भाई एक के बाद दूसरे, थोड़ा करने लगे। वो पूछें, अच्छा, गोमोक चढ़ाया है? गोमोक चढ़ाया है? बहरहाल, ये है मुश्किल। सब शहनाई वाले नहीं कर पाएँगे।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब की ढेरसारी कांसर्ट्स सुनी है। आँख बंद करके बैठते हैं तो कई बार महसूस होता है कि वायलिन बज रहा है, बहुत बार उसमें सितार की झंकार सुनाई देती है। कभी गायन सुनाई देता है तो कभी तबले की थाप सुनाई देती है। हर एक साज को बिस्मिल्लाह खाँ साहब शहनाई के माध्यम से कैसे पहुँचा पाते हैं? क्या यह अल्लाह की मेहरबानी से होता है या कुछ कोशिश करते हैं कि लोगों को महसूस करा दें कि शहनाई में हर साज छुपा है?

''हम ये कोशिश तो करेंगे कि इतना टुकड़ा जो है वो सितार मेल का है, इतना टुकड़ा गायकी मेल का है। इतना टुकड़ा जो है, वो गमक मेल का है, लेकिन भरोसा उसका है, उस मालिक का। अगर वो चाहेगा तो हम कर सकते हैं वरना हमारे बस बस की बात नहीं है,'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब कहते हैं। वे जान-बूझकर करते हैं या अपने-आप हो जाता है, जिज्ञासा है। ''नहीं नहीं पहले दिमाग में आता है कि इसको ले के चलेंगे लेकिन आखिर ये दिल में आता है कि तू चाहेगा तो होगा। अभी सोचा नहीं है, एक बार चलते-चलते एक तरफ इसे बजा रहे हैं (गाते हैं) लेकिन इसके बाद क्या आएगा, ये वो ही जानता है, और नहीं। और फिर संभल-संभल के सोंच सकता है। घबरा के नहीं चलना चाहिए। बड़े इत्मीनान से जाना चाहिए। तभी रौशनी पैदा होती है, दिखाई देता है कि क्या करें। लेकिन उसकी (अल्लाह की) तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए। कर तो रहे हैं, रियाज हम कर रहे हैं, आगे उसका करम। 'दन दन दन दान दान दान ऽऽऽ ऐ ऽऽऽ', ये है। (गा रहे हैं) ये ले के चले। लेकिन सोच रहे हैं कि तू चाहेगा, तभी होगा, अपने से नहीं होता।''

कभी-कभी शहनाई लोक संगीत के निकट भी प्रतीत होती है। उसमें धुन बहुत बजाई जाती है, संभवत: यह कारण हो। ''लोक-संगीत? दुनिया भर की जितनी चीजें होंगी लोक-संगीत की, वो हम कर लेंगे। कोई भी फिल्मी धुन हो, हम दन के दन सुना देंगे, लेकिन हम करते नहीं हैं। 'गूँज उठी शहनाई' में जरा दे दिया था। करामत अली खाँ साहब ने कहा, तो मजबूर होकर 'दिल का खिलौना हाय टूट गया', जरा कर लिया। अब चूँकि एक बार बजा चुके हैं इसलिए ये नहीं कहते कि बिलकुल नहीं करते, क्योंकि अच्छा नहीं लगेगा। मजबूरी हो तो जो बजा दिया है, उसी को बजाना पड़े तो बजा लेते हैं। लेकिन हमारी रोटी उसके ऊपर है ऐसा नहीं है। असल तो है हमारा शास्त्रीय संगीत। यही ले के चले हैं हम और यही ले के चलेंगे। अमेरिका हो, फ्रांस, लंदन सब जगह यही किया है हमने। शास्त्रीय संगीत ही ले चलेंगे। जिसको सौ दफे गरज हो सुनो। हमें परवाह नहीं। लोग कहते हैं कि खाँ साहब, ये अमेरिका है, लंदन है, हम कहते हैं कुछ भी हो। हमारे पास इतनी जमीन है चलने के लिए। हमारे पास पूरा हिन्दुस्तान है, हिन्दुस्तान में चल लेंगे। हमारा यहीं पेट भर जाएगा। हम सुनाएँगे वही जो हमने रियाज किया है। हाँ लोक-संगीत (सुगम संगीत) में कुछ चुनी हुई चीजें हैं जो हमें पसंद हैं। बहुत अच्छी चीजें हैं, जैसे लता गाती है, और उसकी आवाज में कशिश पैदा है, मालिक की मेहरबानी है। उसके कहने में कुछ कुदरत के करिश्मे हैं। अब वो कौन-सी चीजें हैं, बोल-वोल याद नहीं है, ज्यादा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2026-Gandhi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुन याद है। (गुनगुनाते हैं) 'आ जा तू आजा धीरे-से आ जा' हमें पसंद है। वो गाना नहीं है। उसमें कुदरत के करिश्मे नजर आ रहे हैं, वो सुर बोल रहा है।''

बिस्मिल्लाह खाँ सहब को शहनाई बजाते समय कभी ऐसा महसूस नहीं होता कि ये मैं कर रहा हूँ। ''यह जो मैं कर रहा हूँ बात है न, यही दूसरे तरफ लपट जाती है। तेरी मेहरबानी से चलते हैं मालिक। तुम्हीं ने हमको दिया है। क्या करेंगे। थोड़ा और? प्रोग्राम करते-करते तेरी मेहरबानी से थोड़ा मूड बनने दे। जरा हमारी तबीयत लग जाती है। उस वक्त दुआ करते हैं कि थोड़ा मूड बनाने दे। उस वक्त दुआ करते हैं कि थोड़ा और मेरे मालिक! अलबत्ता रियाज बहुत जरूरी चीज है। ये नहीं कि हम बकवास कर रहे हैं, सुन लिया और हो गया। तमाम शासतर भरा पड़ा है, पारिजात है, रत्नाकार है, जरा देखिए उठाके, आगे-आगे क्या अमल है, वैसे करना पड़ेगा। सब तैयारी करके आइए और फिर कहिए कि नहीं हुआ। तब अलबत्ता सोचेंगे कि क्यों नहीं हुआ? सब हीरा जवाहरात भरा पड़ा है, मालिक की मेहरबानी तो तब होगी, जब खुद कोशिश करेंगे, जी जान से रियाज करेंगे। वरना अल्लाहताला भी क्या करेंगे?'', कहते हैं बिस्मिल्लाह खाँ साहब।

मैंने अधिकतर कलाकारों को सुना है, यह कहते हुए कि वे अपने लिए बजाते हैं या ईश्वर की प्रार्थना के लिए गाते या बजाते हैं। अधिकांश कलाकार यही कहते हैं कि संगीत उनके लिए साधना है, भगवान से मिलने का रास्ता है। लेकिन बिस्मिल्लाह खाँ साहब! वे तो सबसे अलग हैं। इस सवाल पर कि वे किसके लिए बजाते हैं, वे कहते हैं, ''अरे, हम वो नहीं हैं जो कहें कि हम अपने दिल को खुश करने के लिए शहनाई जाते हैं। अरे बजाएँगे नहीं, तो रोटी कहाँ से खाएँगे? कुछ करना है, दुकान क्यों खोलते हैं? दफ्तर क्यों जाते हैं लोग? पूछिए, मिल में काम कर रहे हैं, न जाओ, किसके लिए कमा रहे हैं? हम किसके लिए कर रहे हैं? अमाँ बच्चों को पालने के लिए कर रहे हैं। दो पैसे मिलते हैं, इसलिए कर रहे हैं। हाँ ये बात दुरुस्त है कि हमारे खानदान में बड़े बुजुर्गों ने सोचा कि ऐसा कौन-सा साज लो कि हम एक हो जाएँ अकेले! इधर वो तबीयत है। शहनाई तो बज रही है पूरे हिंदुस्तान में। लेकिन खाली तुम्हारी फूँक कुछ ऐसी आए कि सुनकर लोग कहें कि बिस्मिल्लाह खाँ है और कोई नहीं है। हा, हा, हा।''

शहनाई कहाँ से आई, बिस्मिल्लाह खाँ साहब ने इसे क्यों चुना, इस पर पहले-पहल संगीत कैसे उतरा, यह भी अपने आप में एक कहानी है। शहनाई पर सबसे पहले स्वरों को निकालने वाले थे—बू अली सेना। ये दो जगह के रहने वाले थे, या तो ईरान के और या फिर यूनान के। इन्हीं दो जगहों में से एक जगह रहने वाले थे हकीम बू अली सेना। यूँ उनका नाम बहुत लोग नहीं जानते। उन्होंने ही इस साज को सबसे पहले ईजाद किया और अपने नाम के पीछे इसका नाम रख दिया, 'सेनाई।' वहीं 'सेनाई' वक्त के चलते 'शहनाई' बन गई क्योंकि बड़े-बड़े नवाबों, शहनशाहों के यहाँ बजाई जाती थी, इसलिए बाद में यह 'सेनाई' से 'शहनाई' हो गई। हकीम बू अली के माने है जिसमें अली की बू यानी खुशबू हो। जिस साज को सुनकर मौला अली की याद हो आए, वो है 'शहनाई'!

''शहनाई ईरान में थी, यूनान में थी,'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब बताते हैं, ''पर उसे उन लोगों ने 'कंडम' कर दिया था। डेढ़ ही सप्तक का साज है यह। दूसरे बजाने-गाने वाले तीन सप्तक तक ले जाते हैं। कहाँ-से-कहाँ पहुँच गए उनके साज''। सितार कहाँ पहुँच गया, वीणा कहाँ पहुँच गई। लेकिन मालिक की मेहरबानी से हम दो सप्तक तक लगा देते हैं। दिखा देंगे कि दो सप्तक हो गई। लेकिन, ज्यादा नहीं चल पाएँगे। फूँक से तीन-चार स्वर हम लगा लेंगे। पूरा सुनो-गांधार। फूँक से, कोमल अति कोमल। तीव्र, अति तीव्र हो जाएगा। वही श्रुति वाला हिसाब आ जाएगा। उसको हम लगा लेते हैं। मगर ये सब चीजें होती ऐसी हैं कि रियाज करना पड़ेगा और करना पड़ेगा मालिक पर भरोसा। यदि दिमाग में ये बात आ गई कि हम इसलिए कर रहे हैं कि हम ऐसे हैं, वैसे हैं तो नहीं नहीं, तब सब गड़बड़ हो जाएगा। ये नहीं कि मैं कुछ हूँ। नहीं, तब तो अपने आप तुम ओ३म् बन जाओगे। कहो, तेरी रजा है मालिक, तू दे देगा तो हो जाएगा।''

विशाखापट्टनम में बिस्मिल्लाह खाँ साहब से बातचीत करते वक्त कुछ और मित्र भी वहीं हैं एक मित्र पूछते हैं, 'दक्षिण भारत में 'नादस्वरम्' होता है—क्या नादस्वर और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहनाई का उद्भव एक ही जगह से है?' ''वो बड़ा साज है, बड़े जोर से बोलता है'', खाँ साहब बताते हैं। ''वो अपने यहाँ की गायकी भी करते हैं, लेकिन उनकी गायकी और हमारी गायकी में बहुत अंतर है। हम कहते हैं कि हमारी शहनाई उनको दे दीजिए, तब फिर देखिए कि क्या होता है। ये फूँक का काम है। वो (नादस्वरम्) दबा के बोल ही नहीं सकती। रंग भर के दाबेंगे, तार की तरह चाबेंगे, वह है, 'नादेस्वरम्'। ऊँचे बोल नहीं बोलते, मालिक की मेहरबानी है, लेकिन ये शहनाई है। नफीरी, दिल्ली में बोलती है, वह शहनाई है। खाली नाम बदल गया है। अच्छा भइया, बकवास बहुत हो गई, अब चलें, खाना खाएँ'', बिस्मिल्लाह खाँ साहब कह रहे हैं।

स्पिक मैके के कार्यक्रम के लिए बिस्मिल्लाह खाँ साहब आए हैं और स्टील प्लांट में हमारे मेहमान हैं। खाने के लिए उठ ही रहे हैं कि एक मित्र पूछ लेते हैं, 'खाँ साहब आपके शिष्य भी हैं क्या?' ''हाँ शिष्य, हम बात ही भूल गए। किसी ने हमारे नाना से पूछा, तो उन्होंने कहा, अल्लाह चाहेगा तो निकलेगा, हम किसको कहें। वही बात किसी ने हमारे मामू से भी पूछी, उन्होंने कहा कि अल्लाह चाहेगा तो निकलेगा, अब वही बात आप हमसे भी पूछ रहे हैं। हम भी वही कह रहे हैं कि अल्लाह चाहेगा तो निकलेगा, हम नाम क्या बताएँ? आ हा हा, मालिक तेरा करम।''

शहनाई फूँक का काम है। ज्यादातर फूँक से, और फेफड़े से, पेट से। लेकिन खाँ साहब सिगरेट पीते हैं, तो इससे कोई अंतर नहीं पड़ता?

''अगर बोतल पिएँ तो असर पड़ता है, नुकसान नहीं करेगा? गाँजा, चरस, बोतल, लेकिन, पीते हैं लोग। हम तो सिर्फ सिगरेट पीते हैं। वो भी जैसे अब ये बकवासबाजी हो रही थी, तो ऐसे में हमारा मूड बनता है। प्रोग्राम के वक्त आप हमको सिगरेट पीता हुआ नहीं देखेंगे। नहीं, अब प्रोग्राम खत्म हो गया, बकवास हो रही है...तो लाओ जरा एक कश लगा लें। एक दफे ऐसा हुआ कि अखबार वालों ने लिखना शुरू किया कि खाँ साहब सिगरेट पीते हैं, उन्हें सिगरेट नहीं पीना चाहिए, वगैरह वगैरह। तो हमारे दोस्त साहेब आदमी हैं। जैसे आपके दोस्त हैं, हमारे भी दोस्त हैं। अपने दोस्तों में बैठ के हमने कहा, कि यार हमने अब छोड़ दिया। सारे दोस्त हैरान, कहें कि खाँ साहब आपने सिगरेट पीना छोड़ दिया? हमने कहा, अमाँ नहीं यार, हमने अखबार पढ़ना छोड़ दिया।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब की छोटी-छोटी चुटकियाँ बातचीत में और हाजिरजवाबी ने हमेशा से ही उन्हें लेखकों का प्रिय बनाया है। उनके पास किस्से-कहानियों का अम्बार है, ऐसे किस्से-कहानियाँ जो बहुत बहुत बड़ी सीख दे जाते हैं। संगीत का बहुत बड़ा मर्म बता जाते हैं। उनकी बातें भी उनकी शहनाई की ही तरह उसमें घुलली हैं।

उस बार बिस्मिल्लाह खाँ साहब अमरीका में कहीं बजा कर चुके थे। शहनाई का कार्यक्रम संपन्न हुआ, बाद में काफी लोगों ने घेर लिया। सवाल पूछ रहे हैं कि खाँ साहब ये राग कैसे और वो धुन कैसे? ''तो हम बोले, खूब बोले। अपनी जबान बोले। हमारे वहाँ एक अपनी जबान बोलने वाले दोस्त हैं, सैयद हाशिम हुसैन रिजवी। तो वो लोग सवाल करें और रिजवी साहब उसका तर्जुमा करके हमको बतलावें। फिर हम उनके सवाल का जवाब दें और रिजवी साहब वापस तर्जुमा करके उन्हें बतला रहे हैं। तो हमने फिर उनसे कह दिया कि हाशिम भाई, आप इन्हें बतला दीजिए कि अगर संगीत सीखना है और हमसे लेना है, तो भइया हमारी जबान सीखिए! हा हा हा! हम डायरेक्ट बतलाएँगे आपको!''

तो क्या संगीत की भी कोई अपनी जबान है?

''हाँ, है। संगीत की अपनी जबान है, और वो हर जबान में है। संगीत की कोई खास जबान भी नहीं है। जैसे पुराने जमाने की किताबें देखें तो वो संस्कृत में आती थीं। अब उसको आप अपनी जबान में ले के चलना चाहें तो तर्जुमा करना पड़ेगा, वो है तो, चाहे तो। लेकिन हम अपनी जबान में ले के चलते हैं उसे सहल करने के लिए, समझने के लिए। संगीत की कोई एक जबान नहीं है कि बस यही ऐसा। न! आप देखें, अस्थायी अंतरा बना है न? तो एक अस्थायी ये है, ''प्रथम सुर साधे ऽऽऽ' फिर 'दिर दिर दिर तूम...ताहे तासूम चश्मे सब दा नूम...नसीबन नूम।' अब ये दूसरा वाला फारसी में है लेकिन आपकी समझ में आता है। चीज यह फारसी में है, फिर भी आपको समझ में आती है क्योंकि यह सुरों की जुबान है। तब किसकी जबान लें? गाने में हमारे बुजुर्गों ने इकट्ठा किया सब, तो उसमें मत जाओ कि ये फारसी में है, कि ये हिंदुस्तानी है या ये संस्कृत में है। है तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025,Gurukul

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वो संगीत है, है तो वो सुर, तो सबको लेना चाहिए। हमने एक बार आपसे पहले भी कहा था कि सुर महाराज सबके हैं, और किसी के भी नहीं हैं। तो संगीत भी सबका है, और किसी का भी नहीं है।''

जब सुर सबका है और संगीत सबका है और दोनों ही किसी के भी नहीं हैं फिर घराना क्या होता है? बिस्मिल्लाह खाँ साहब खुद किस घराने के हैं? ''हमारा? ये जो घराना ले के आए हैं, ये घराना कब से निकला? घराना, हम लोग तो यही जानत हैं कि स्वामी हरिदास जी थे। वो गुरुओं के गुरु थे। उनके शागिर्द हुए तानसेन, बावरा हुए, ये हुए, वो हुए। सब चले आ रहे हैं। ये तो वो जमाना है—अकबर बादशाह के जमाने का। वहीं से सब चले आ रहे हैं। तो घराना कब से निकल आया? क्या किराना घराना है, क्या आगरा घराना है, क्या ग्वालियर घराना है? गायकी का अंग है—ठीक! लेकिन उसी घराने का आदमी जो है, गायकी नहीं गाता, और कहेंगे हम उस घराने के हैं। हम सुनते जाएँगे कि किराने का है, लेकिन गायकी ही नहीं है उसके पास। और वो कह रहे हैं कि हम किराने के हैं। हम फय्याज खाँ की गायकी सुनते जाते हैं, भई कैसे हैं वह, 'झन झन झन झन पायल बजे, लागे मोरी सास ननदिया, और मोरी देवरनिया जेठनिया। झन झन झन झन-..ए ए ए ए....झन झन झन।' (गाकर सुनाते हैं) ये गायकी है। किराना, आगरा, ये सब घराने निकल आए हैं, लेकिन उन्हीं घरानों के लोग गायकी छोड़ कर कुछ और करने लगे हैं। घराना-वराना कुछ नहीं हैं। सब स्वामी हरिदास के शिष्य हैं।'' एक बार फिर से खाने के लिए गुहार लगती है। 'साहब खाना तैयार है, खाने के लिए चलेंगे?'

''जी? अब बासी हो जाने दीजिए उसको,'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब चुटकी लेते हैं।

खाने का दौर और बातचीत का दौर, दोनों ही खूबसूरत गंगावरम् तट पर बने गेस्ट हाउस में चल रहे हैं। ''बात ये है कि हमारे एक किलोमीटर सामने ही समंदर था। विदेश में कहीं। सिर्फ एक किलोमीटर, जी! हम नहीं गए। लड़के बच्चे सब गए। वहाँ जा के उतर पड़े सब लोग। बस इतनी दूर और इतना पानी। ये क्या है? मालूम हुआ कि बहुत से लोग यहाँ आते हैं और आके नहाते हैं। बहुत दूर, हरा समंदर पता नहीं कितना पानी है वहाँ पर। और वहाँ पर एक दरख्त है, पेड़ है, लाल रंग के बगुले हैं बीर-बहूटी की तरह से। बगुले जो हैं, लाल-लाल-लाल। लेकिन ऑर्डर है कि उनको पकड़ नहीं सकता कोई। तो ये हो गया। लेकिन हमको इधर थोड़ा एहतरामी हो गया पानी से, अब नहीं बैठते हैं समंदर के नजदीक। पहले नहाया है, लेकिन अब नहीं। अब हम समंदर देखते भी नहीं। दूर-दूर रहते हैं। आपने कहा यहाँ समंदर है, समंदर है, तो हमने सोच लिया कि वहीं किसी कमरे में चलके बैठ जाएँगे।''

एक बार खाँ साहब को किसी दूसरे देश में सड़क से एक लंबी यात्रा तय करनी थी। सड़क घुमावदार, कभी ऊपर जाती हुई, कभी नीचे, सुरंग की माफिक बत्तियाँ जग-मग जग-मग। बिस्मिल्लाह खाँ साहब ने सोचा कि ये कैसा रास्ता है, चक्कर पे चक्कर, चक्कर पे चक्कर, घुमाता ही जा रहा है। दिल पर हाथ रखकर बैठ गए कि कहीं धड़क ही न जाए, आखिर दिल ही तो है। ''वो तो बाद में हमें पता चला कि समंदर के बीच से रास्ता है। ऊपर समंदर और नीचे गाड़ी-वाड़ी जा रही है। हमें कुछ पता नहीं कि हमारे ऊपर पानी है। हमें पहले पता नहीं था, बताया नहीं, वो तो जब हम वहाँ से बाहर निकल आए। तो मगर क्या समंदर! अर्रे, हम कहाँ ये तो नजदीक में ही समंदर है तो जो ले के जा रहे थे हमें अपने साथ, बोले कि खाँ साहब आप इसी के नीचे से तो निकल कर आए हैं। अरे यार, पहले से बता देते तो हम कह देते कि नहीं जाएँगे इधर से। खुदा न खास्ता इतना बड़ा समंदर, कहीं कुछ हो गया?...हाँ, हाँ, खाँ साहब क्या हो गया? लेकिन साहब वह रास्ता और समंदर, दोनों ही क्या लंबे-चैड़े, गहरे, ऐसी-ऐसी लहरें उठती हैं जिनके बारे में कुछ पता ही नहीं, बिल्कुल संगीत की तरह।'' अब समझी, बिस्मिल्लाह खाँ साहब समुद्र से जुड़ी इतनी घटनाएँ क्यों सुना रहे हैं। असल में बताना चाह रहे हैं, बिलकुल दुनियावी तरीके से कि संगीत अथाह है, गंभीर है, गहन है। उसकी गलियाँ उसके रास्ते, उसके मोड़, सभी कुछ डरावने लग सकते हैं, कठिन, विषय लग सकते हैं, किंतु अंततः जब सम पर पहुँचते हैं तो महसूस होता है, अरे, यह तो यहीं था, हरा समंदर, हमारे आस-पास, हमें घेरे हुए, और हम उसका पता भी नहीं चला पाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

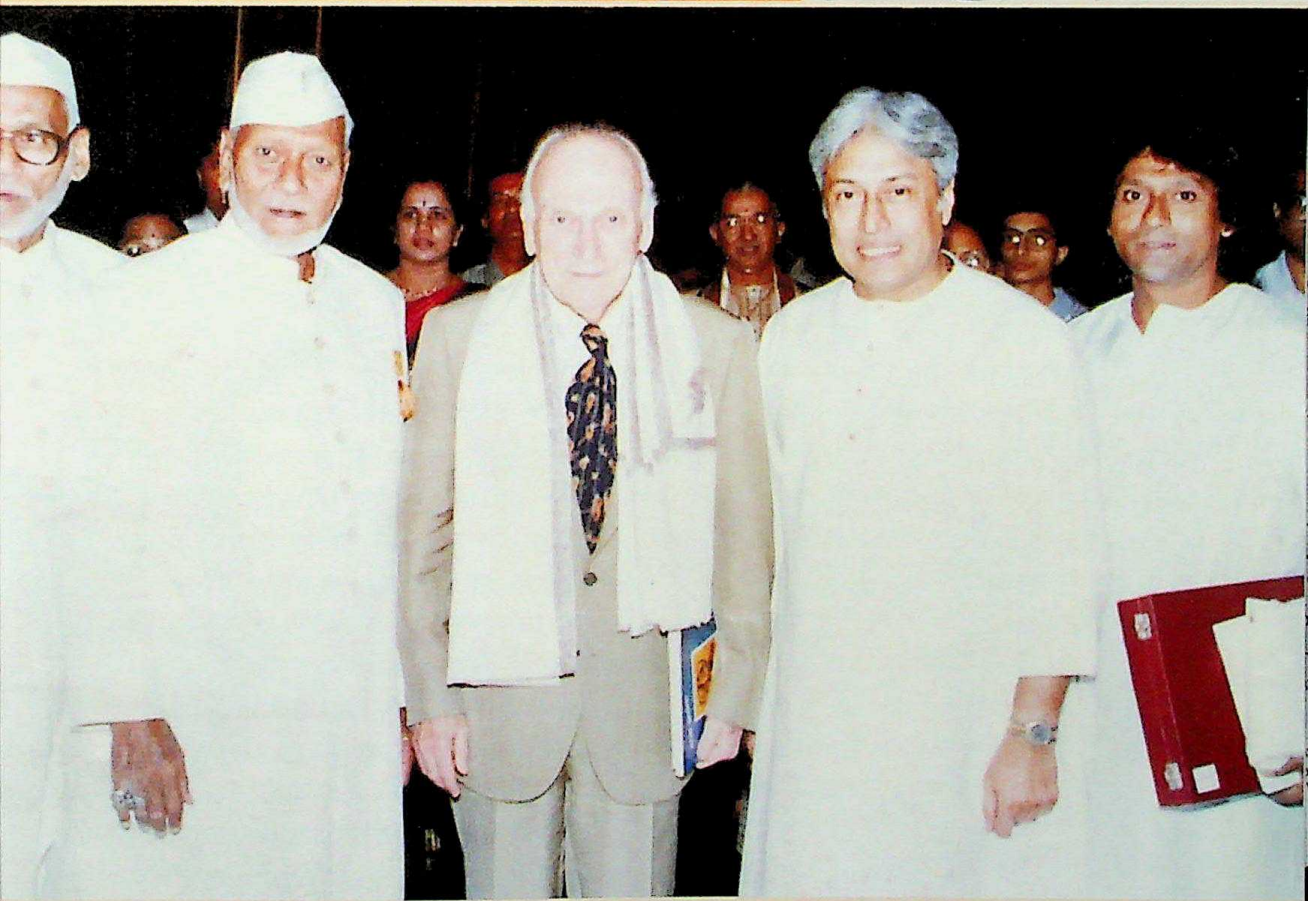

ऊपर-बायें : शहनाई वादन की प्रस्तुति में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ

ऊपर-दायें : चिंतन की मुद्रा में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ

नीचे : अकादेमी पुरस्कार एवं अकादेमी रत्न सदस्यता समारोह में यहूदी मेनुईन और उस्ताद अमज़द अली खाँ के साथ उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब

CC-0. Kashmir Treasures Collection Srinagar. Digitized by eGangotri

Gandhi Memorial Co

ऊपर-बायें : राष्ट्रपति भवन में आयोजित अकादेमी पुरस्कार एवं रत्नसदस्यता समारोह में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ

ऊपर-दायें : एम बालमुरलीकृष्ण के साथ उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब

नीचे : अकादेमी की तत्कालीन सचिव उषा मलिक और कला प्रेमियों के साथ मध्य में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब

CC-0 Agamigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितनी ही बार गए, घूमे, मजा लिया। कनाडा, अमरीका, लंदन, खूब घूमे-फिरे। सब अच्छा है, सड़कें इतनी अच्छी और कितनी बढ़िया, तीन-तीन लाइन बनी हैं। एक जा रहा है 70-80 मील पर, दूसरा निकला 90-95, तीसरा आएगा 120! इधर से निकला, फिर उसी लाइन पर आ गया (किशन महाराज की तिहाई की तरह)!

बिस्मिल्लाह खाँ साहब बातों में आनंद देने के साथ-साथ आनंद लेकर भोजन भी कर रहे हैं। एक-एक चीज का नाम पूछ कर थोड़ा-थोड़ा चखते हैं।

''वैसे खूबसूरत स्विट्जरलैंड हैं। बहुत खूबसूरत है। ये क्या है भइया? अवियल? इसको क्या कहते हैं, पोंगल? रख दो भइया जरा-जरा। हालैंड देखा आपने? समंदर—वहाँ देख रहे हैं, लड़के-लड़कियाँ समंदर में कूद रहे हैं। भई हमारी तहजीब नहीं कहती। अच्छा लग रहा है, तो तुम्हें लगता होगा। हमारे यहाँ के लिए नहीं है। पेरिस में लड़के-लड़कियों का जो चलन है, उसे देखकर हम सकते में आ गए। एक दिन हम वहाँ घूम रहे थे शेरवानी-पाजामा पहन कर। तो लोग हमें ऐसे घूर रहे थे जैसे न जाने कहाँ से छुट्टे खुल कर आ गए हों। पाजामा, ऊपर से काली शेरवानी। हाँ कुछ चीजें हमें वहाँ की पसंद हैं जैसे वहाँ की साफ-सफाई। तो उस दिन क्या हुआ है कि हम खरीदने गए थे सामान, ट्रांजिस्टर और क्या-क्या। एक सरदार जी हमें दीख गए जी! वाह, वाह, वाह। हम कहा यार, ये तो हमारे हिंदुस्तान के ही हैं। तो हमने वहीं से आवाज दी, सत सिरी अकाल, सरदार जी। सरदार जी बोले, 'ओ सत सिरी अकाल जी। पर माफ करना खाँ साहब, मैं आपको पहचान नहीं पाया। आप करते क्या हैं जनाब?' तो हमारे साथियों में से एक बोले कि खाँ साहब शहनाई बजाते हैं। इस पर सरदार जी कहें, अजी ये क्या शहनाई बजाते हैं! शहनाई तो बजाते हैं हमारे हिंदुस्तान के बिस्मिल्लाह खाँ जी! हमारे साथी बोले, ये वही बिस्मिल्लाह खाँ साहब हैं? अरे बिस्मिल्लाह खाँ साहब, कमाल हो गया, मेरा तो जनम सुधर गया। फिर तो इतनी मुहब्बत, कि हमारे घर आइए रात को खाना हमारे घर में खाइए। ये खाइए, वो खाइए। पकाया भी उनकी बीवी ने, बहुत पकाया और बहुत अच्छा पकाया। हमें मालूम हुआ उस दिन कि हिंदुस्तान में बैठकर खाना खा रहे हैं। देखिए न, संगीत कहाँ-कहाँ आपको अपने लोगों से मिला देता है! उस दिन वहाँ पेरिस में और आज यहाँ।''

''ये क्या है भइया? केला है? दे दो, थोड़ा-सा। किस इस्टाइल में पकाते हैं, केरला इस्टाइल में? हाँ भिंडी है? अच्छा दो। अचार लेंगे आप? हाँ, सब लेंगे, थोड़ी-थोड़ी चीज सबका जायका लेना है। काहे का अचार है आम का? हाँ, आम का ठीक है। रख दीजिए, इतना बड़ा नहीं, छोटा-सा टुकड़ा। थोड़ा-थोड़ा खाएँगे, और खुराक भी है हमारी बहुत कम। ये क्या है पालक-पनीर, अच्छा-अच्छा, थोड़ा-सा पालक दे दो। शुक्रिया, इंतजार करके हम यहाँ खाने वाले हैं क्या? ये क्या है? बेक्ड सब्जी? अच्छा। अरे खाने की चीज तो अब लाए हो! भइया दाल दो हमें! हाँ तो पंडित जसराज का रिकॉर्ड है आपके पास, वही जो कार में बजा रही थीं आप? इसमें तो बागेश्वरी है, भटियार और मधुमाद सारंग। भटियार दो किस्म का है। (गाकर सुनाते हैं) एक वो है, दूसरे महाउऽऽ, भई पूरी ले आओ, खाली तरकारी खाएँगे। ये क्या मशरूम, शिमला मिर्च, अच्छा-अच्छा, थोड़ा-थोड़ा रख दो अच्छा। तो ये साग लाओ, पालक वाला।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब एक बच्चे की तरह पुलकित हैं। हर सब्जी को चख रहे हैं, उनकी मेजबान का मन रखने की कला भी उनकी शहनाई के स्वरों की तरह ही अनछुई है। बाहर थोड़ी-थोड़ी फुहार पड़ रही है। समुद्र-तट पर लहरों की टकराहट सुनाई दे रही है। खाँ साहब बनारस की यादों में खो गए हैं। ''धीरे-धीरे सब कुछ खत्म होता जा रहा है। सावन-भादों हैं। सावन और भादों में कजरी चलती है बनारस में। रसूलन भी हैं, सिद्धेश्वरी भी हैं। बहुत अच्छी-अच्छी गायिका हैं। काशी जी में झिमिर-झिमिर पानी बरस रहा है। बाप रे! और झूला पड़ा है बड़े-बड़े जमाने के रईस। राजा मोतीचंद, हरीराम सिंह जी, कालो जी। बड़े-बड़े सब उस जमाने के पैसे वाले रईस। पूरी छन रही है, हलुआ बन रहा है, तरकारी बनी है। आम का पेड़ लगा है। उसके नीचे एक तरफ भाँग घोटी जा रही है। कजरी हो रही है। उसमें हमारे मामू भी शरीक हैं। झूला पड़ा है और कम-से-कम 25-30 गायिका हैं। 2-3-4 तो बैठी हैं और 2-3 पेंग चला रही हैं। और शहनाई लेकर हम लोग बैठे हैं, हमारे मामू के साथ। और राजा लोग उधर बैठे हैं, रईस। और क्या हो रहा है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'सिया संग झूले बगिया में राग ललना। अरे राम ललना, अरे राम ललना ऽऽऽ। सिया संग ऽऽऽ।' और यों कहके जो मारा है पेंग—वो चढ़ा जा रहा है झूला। हम शहनाई बजा रहे हैं। क्या आनंद आता है कि वो ऐसे बना रही है। ये ऐसे बना रही है। वो चीज अब नहीं होती। अब हिंदुस्तान में कहीं नहीं होती। अब बनारस में भी नहीं होती। गाना जैसे सब ने बंद ही कर दिया।

''एक रोज बेगम अख्तर बैठी थीं लखनऊ में। प्रोग्राम हो चुका था। हम गए वहाँ। हम कहा, सलाम वालेकुम। बोली, 'क्या अमाँ खाँ साहब', मर्दाना बोली बोलती थीं, 'क्या अमाँ खाँ साहब, कैसे चले आए?' हम कहें वो तुम्हारी 'चीं' सुनने आए हैं। उनके गाने में एक 'चीं' ऐसी, आवाज आती थी। यूँ गाने में उसे बेसुरा ही समझा जाएगा, मगर कहिए तो वही बेगम अख्तर के गाने की जान थी। हमें बहुत पसंद थी। बेगम कहें, 'अमाँ हटिए मियाँ, मसखरी करते हैं आप भी खाँ साहब।' हम कहें, नहीं बेगम, वही सुनने आए हैं। *दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे, वरना कहीं तकदीर तमाशा न बना दे।* जैसे ही वो सुनाएँ, हम कहें, आ हा हा, आ हा हा। क्या गाती थी वो। एक रोज आधी रात का वक्त है, हम लेटे हैं। हमारी बेगम भी बगल में लेटी है और कहीं रिकॉर्ड बज रहा है, दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे, वरना कहीं तकदीर तमाशा न बना दे। एक बजा है कि डेढ़, और हम कर रहे हैं आ हा हा, आ हा हा। हमारी बेगम कहती हैं, यह क्या आ हा हा, आ हा हा कर रहे हैं? हम कहें, कमाल हो तुम, कूढ़ हो। चुप रहो तुम। हम कह रहे हैं कि तुम कूढ़ हो तो ऐसा सुनकर हमारी बेगम के कान भी उसी तरफ लग गए। हम कहें कि बेगम अख्तर गा रही है। इसको सुनो। वो चुप। बेगम हमारी गाना वगैरह तो नहीं जानती थीं, लेकिन सुर तो जानती थीं। आखिर बोली, कौन हैं ये! हम कहा, हम जिसको इतनी देर से कह रहे हैं, उसको अब पूछ रही हो तुम? बेगम अख्तर हैं ये! सुबह उठकर पता लगाया, रात-बेरात एक बजे किसने रिकॉर्ड बजाया था! मालूम हुआ कि नहीं, बेगम अख्तर का प्रोग्राम हो रहा था। वही गा रही थी।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब बेगम अख्तर को याद करके आँखें भी पोंछते हैं और उनके गाने को याद करके खुश भी बहुत होते हैं। ''फिर तो धीरे-धीरे करके उस जमाने के सारे लोग रुख्सत हो गए। बिट्टन थीं, उधर रसूलन थीं। उधर शैल कुमारी थीं। भरी पड़ी थीं उस जमाने में। एक से एक जगह जा के खड़ी हो जाती थीं। हम दूर से देखते इधर देखा, उधर देखा, किसी की निगाह में तो नहीं आ रहे। हम देखते-सुनते छुप-छुपकर कि कोई देखने न पाए। एक तरफ रसूलन गा रही हैं और दूसरी बिट्टन गा रही है। आ हा हा। कौन-कौन भरी थीं बिल्कुल। क्या लाजवाब गायकी सुभान अल्लाह। बिट्टन अच्छा गाती थीं, और रसूलन किससे कम थीं! हमारे मामू भी कमाल के आदमी थे। खाना खाते थे, दोपहर में। उधर हम बालाजी के मंदिर से रियाज करके चलते थे, डेढ़ घंटा। डेढ़ बजे घर पहुँचे। मामू ने घड़ी में टाइम देखा, 'क्या अमाँ, कहाँ रह गए इतनी देर?' हम कहें, जी वो रसूलन गा रही थी। शंकरा गा रही थी?' कैसा गा रही थी? जिस वक्त पूछें हमसे तो बताएँ। दोनों की आवाज़ सुन रहे थे। बिट्टन भी है इधर, उधर रसूलन भी है। एक मकान इधर था एक मकान उधर भी, दोनों की आवाज चल रही है। वो रसूलन भी अच्छी थी। बता देते हैं, हाँ, देखने में कुछ नहीं, मगर क्या अच्छा गाती थी। उधर बिट्टन, 'रसिया आ हो न!' चमक के गा रही है। हम किसी से कुछ नहीं पूछते थे, बस सुनते थे। भई बालाजी मंदिर में हम रियाज करते थे। वहाँ जाकर रोज प्रैक्टिस चलती हमारी। हमारे मामू बैठे रहते थे। वहीं, कहीं सामने। अंदाजा लगा लेते कि हम कब खत्म करेंगे तो उठके चले जावें। मुमानी हमारी बैठी रहें खाना लगा के। बेटा खाना लग गया है। हमारे मामू समझ जाएँ कि खाना रात को वहाँ से आने के बाद अब ही खा रहे हैं, सवेरे से कुछ नहीं खाया। कहें चुप रहो, और फिर हमारे सात सुरों का रियाज शुरू कर दें। एक ही स्वर को कहते रहें।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब की बातें अब ऐसे मोड़ पर पहुँची हैं, जहाँ ईश्वर और संगीत एक हो जाते हैं। आपको जिंदगी में सबसे ज्यादा पसंद क्या है? ''सबसे ज्यादा? सबसे ज्यादा पसंद है, वो है मालिक। वो एक है। जब हमारी लगन चलती है इसके साथ तब और कुछ बाकी नहीं रहता। 'तू ही निरंकार। तू ही निरंकार' निरंकार कौन है, वही न? तू ही निरंकार, रच्यो सब संसार। तू ही निरंकार। एक दफे, दो दफे, चार दफे चला जा रहा है, इस सब के अंदर कि क्या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताएँ। कब शुरू करें? इसको शुरू करने का दिन है, शबे पंचमवार। जुमे रात आई नहीं है, उसके एक दिन पहले की रात लगेगी। वक्त, अगर शाम को शुरू करना है तो चाँद रात है, उरूज यानी चाँद निकल आया है। ये नहीं कि 15 तारीख के बाद। वो तो अवरोही में हो जाएगा। आरोही में होना चाहिए। तो शुरू चाँद अगर निकल रहा है, तब आप शुरू करें। एक अस्थान लेना पड़ेगा। घर में या बगीचे में, या कहीं जगह बना लें, फिर वही पढ़ना पड़ेगा। जरा चालीस रोज उसको पढ़िए। गिनके। तारीख ले लीजिए। आज से शुरू किया तो 40 रोज बाद देखिए। जिस वक्त 'तू ही निरंकार' कहा तो कहने के बाद सोचिए कि हम किससे कह रहे हैं, वो अपने मालिक से कह रहे हैं। 'तू ही निरंकार रच्यो सब संसार। तू ही निरंकार।' जैसे छोटा बच्चा अपने माँ-बाप उसको फुसलाया करते हैं कि भई लो, ये ले लो, वो ले लो। मगर बच्चा कह रहा है कि न हम तो यही लेंगे। बच्चे की तरह उससे माँगों। दुलार करो कि हम तो यहीं लेंगे। हम तो यही चाहते हैं। वह बड़ा दयालु है। बड़ा करम करता है कि माँग रहा है, चलो ले लो। थोड़ा और सच्चाई ये है कि अगर उसने थोड़ा भी करम किया, थोड़ा भी दे दिया तो हम कामयाब हो गए।

''बहुत-सी चीजें हैं भाई, क्या-क्या अमल थे।'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब आगे बढ़ते हैं। ''हिन्दी में क्या कहते हैं? यानी करना। कई तरीके हैं। एक तो यह कि घर में बैठे हैं, अस्थान बना दिया, बगीचा हो जाए या और कोई दूसरी जगह। लेकिन हाँ, वहाँ कोई दूसरा आदमी न जाए! एक ये तरीका है। और एक दूसरा तरीका है कि अगर और भी शक्ति चाहते हैं तो 'अब मोरी प्यास ऽऽऽ आ।' गंगा जी में जाइए, और दिन है इसका इतवार या मंगल। ये दो दिन, इसमें से सुबह के वक्त, जब सूरज न निकला हो, और गंगा जी में जाने पर जब आधी कमर डूब जाए पानी में। तब खड़े हो जाइए। सूरज नहीं निकला। है और खड़े हो जाइए। अब इसको भी 40 रोज तक करना पड़ेगा। इसमें ऐसा होता है कभी कि जाड़े का दिन है, शुरू तो किया था पहले, लेकिन करते-करते जाड़ा पड़ने लगा। फिर भी करना पड़ेगा। वो वहाँ 40 मर्तबे पढ़ना पड़ेगा। अपनी तबीयत को समर्पित कर दीजिए कि हम इसको लेंगे, छोड़ेंगे नहीं। तो इसको करते-करते आप देखिएगा कि क्या किया था शुरू और 40 दिन के बाद देखिए उसको, फर्क मालूम पड़ेगा। और यूँ करने के बाद कहते हैं कि 'सुर के साधे सब सधे-साधे सब सध जाए।' तो ज्यादा राग नहीं, एक-दो राग में ही फैसला हो जाएगा। चार राग काफी हैं। पहले इनको कंट्रोल कर लीजिए। एक सुबह का, एक 10-11 बजे दिन का, एक 3-4 बजे दिन का, एक 7-8 बजे रात का। चार हो गए? इसकी प्रैक्टिस कर लीजिए। चलते-चलते इस कदर आगे आ जाएँगे। कि अपने आप दूसरे-दूसरे राग गाने लगेंगे। बड़ी मुश्किल-मुश्किल बात है ये, लेकिन यह नहीं कि हमारी बकवास है, सब लोग सुन रहे हैं और हो गई। नहीं! करना पड़ेगा। इसका जिंदा मिसाल ये है कि इतने लोग बैठे हैं, रईस भी हैं, गरीब भी हैं, हाकिम भी हैं, हुकूमत भी है, कुर्सी भी है, सब है। सोने का ढोका भी है और आप एक झोंपड़े में रह रहे हैं। फूँस का झोपड़ा है और सोने का ढोका आपके पास है। लेकिन क्या बन जाएगा मकान सबका? आपको चलना पड़ेगा नहीं। सोना कुछ नहीं कर सकता। पहले उसको बेचो, मजदूर बुलाओ, ईंटा खरीदो, ये करो, सब करना पड़ेगा न? तो सोना कुछ नहीं कर पाएगा। काम लेना है तो आपको दौड़ना पड़ेगा। यही है दौड़ हमारी संगीत की।''

संगीत और संगीत-साधना के संबंध में इतनी सीधी-सच्ची बातें कम सुनने को मिलती हैं। इतनी खरी बात वही कलाकार कह सकता है जो बहुत बड़ा साधक हो और जिसने अपना समूचा जीवन सुरों की पहचान उनकी पकड़ में ही निकाल दिया हो। बिस्मिल्लाह खाँ साहब ने अपने जमाने के कलाकार भी देखे हैं और उनकी कला को भी निकट से जाना है। आज भी वे नई पीढ़ी को जाँचते-परखते हैं और उनकी कला के भी द्रष्टा हैं। 'उस जमाने के और आज के लोगों के व्यवहार में आपको क्या अंतर महसूस होता है?' मैं पूछती हूँ।

''है, गायकों में, फनकार में, ये सब उसी में हैं न! जैसे सितार में लीजिए, गायकी में लीजिए। उस जमाने में वो लोग बड़ी साधना करके आते थे। आजकल नहीं हो रहा। बहुत तो हम नहीं जानते, लेकिन कुछ को जानते हैं। तस्बीह हाथ में है। नमाज पढ़ रहे हैं। कोई नशा नहीं है। तब उनके सुरों में तासीर थी। 'एऽऽऽ दइया मैं देखूँ ऽऽऽ। ये नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खरज-खरज से ऊपर निकल आए। अभी दो ही सुर हैं। फिर देखो कि क्या-क्या निकलता है। भाग के क्यों जाएँगे ? एक राग तीन घंटा हम लोग गा-बजा लेते थे। ये मतलब! नहीं-नहीं खरज के साथ-साथ ऋषभ-गांधार भी ले आएँ तो देखिए कितना निकल रहा हैँ उसमें फिर कितना आएगा! फिर उसके बाद पंचम है, धैवत हैं चलते जाएँगे। तो एक राग पौने तीन, तीन घंटा होता था। यही तो बात होती थी, जी, वो करके आए हैं न, सुरों का कंट्रोल! सारे गा मा पा धा नी सा उसको लिए हैं न, ये सब, फिर बाकी आ गए। हर जगह चैन मिलेगा। तबीयत को चैन मिलेगा। पहले के लोग ये करते थे रियाज, कोई नशा-वशा नहीं। जैसे ग्वालियर के पंडित कृष्णराव जी कोई नशा नहीं। ऐसे बहुत से लोग, बहुत पुराने-पुराने। आजकल क्या है? व्हिस्की नं- वन। और ये करो, वो लाओ, अमाँ मुर्गा लाओ। वो करो, सब ठीक है, अहा हा हा, अहा हा हा, बस 'हाय' नहीं हो रही है। 'हाय', हम लोग उसके चक्कर में रहे हैं। अब वहाँ वाह-वाह-ये नहीं होगी। च् च् च् च्, सुर में फर्क है। मगर ये कब तक? कोई नशा नहीं करते थे। आज मालिक का शुक्रिया अदा करते हैं। 15-20 साल की बात तो हम नहीं कहते।

''पुरानी बात है ये खूब। उस वक्त दोस्त हमारे सहबाब में घूम रहे हैं, और गंडेदार नमाज थी हमारी। कभी पढ़ा, कभी नहीं पढ़ा। लेकिन उसके बाद से जो हमारे उस्तादों ने, हमारे गुरुओं ने कहा कि नहीं, अगर तुम शक्ति पैदा करना चाहते हो, अगर संगीत में रहना चाहते हो तो जरा नमाज भी पढ़ो। उसकी इबादत करो। इतनी बार सुभान अल्लाह, सुभान अल्लाह, सुभान अल्लाह, सुभान अल्लाह कहिए। सौ बार पढ़ने के बाद क्या मिलेगा ? आप इसे करते जाइए तो हफ्ते-दो में पता चल जाएगा, दिखाई नहीं देगा, लेकिन काम बनेगा। आप हैरान होंगे कि अरे यार, ये कैसे हो गया ? जो करके आ रहे हो वो, और ये। दोनों चीजें साथ चली हैं। अल्लाह का करम अभी आपसे कहा था न कि हम जाएँगे तो जरूर आपके यहाँ, मगर नमाज पढ़ के जाएँगे। बात ये है कि नमाज नहीं छोड़ेंगे। तो ये सब चीजें है जो आजकल लोग नहीं कर रहे हैं, संगीत के लिए न ही उसकी साधना है और न ही इबादत, जबकि अच्छे कलाकार के लिए ये दोनों ही बहुत जरूरी है।''

अब बिस्मिल्लाह खाँ साहब की यादों की कुछ और परतें खुल रही हैं। और उसमें सबसे ऊपर हैं, पंडित भीमसेन जोशी। उनसे खाँ साहब की दोस्ती सन् 1939 से है। ''सन् 39-40 में यह आया था लखनऊ। हमारा प्रोग्राम चल रहा था। हमने सन् 38 में प्रोग्राम करना शुरू किया। और लोग सारे हमारे स्टूडियो में आर्केस्ट्रा बजाने वाले सब थे। कहें— यार एक गवैया आया है। बड़ा अच्छा है, नाम है भीमसेन जोशी। हम कहें, कहाँ के हैं ? कहें पूना के, पूना गायकी है उनकी। तो हमने सोचा कि ठीक ही मराठा में कोई पूना गायकी होगी! हमने कहा यार हम भी जाकर सुनें। तो हम भी जाकर बैठ गए वहाँ। हमारा प्रोग्राम कोई घंटे-डेढ़ घंटे के बाद था। और उसका प्रोग्राम होने वाला था। हम पहुँच गए। उससे कोई जान नहीं, पहचान नहीं। बैठे-बैठे, बैठे-बैठे शुरू किया उसने। शुरू से ही से, जब उसने सुर लगाया, मैं चुप बैठा हुआ था। सोचूँ कि ये पूना अंग की गायकी नहीं है। दिल में कह रहा हूँ। उसके बाद चलते-चलते जब तानें बनना शुरू हुई तो हम कहा, वाह! प्रोग्राम खत्म हुआ। 20 मिनट का प्रोग्राम था। हम कहा, यार जोशी साहब बहुत उम्दा। 'वाह जोशी साहब वाह', ऐसा नहीं। हमने पूछा कि आप शागिर्द किसके हैं? बोले, 'सवाई गंधर्व के शागिर्द हैं।' हम कहा, सवाई गंधर्व के ? अरे, सवाई गंधर्व तो अब्दुल करीम खाँ के शागिर्द हैं। तो ये तो किराने की चाल है! हमने कहा कि आओ यार, गले से मिल जाओ तुम! तो उस वक्त से अब तक हमारी उसकी दोस्ती है! उसमें फर्क नहीं आया जर्रा बराबर। एक प्रोग्राम उसने कराया, कहा यार चला आ तू। तुझे आना है। हम कहा, आएँ कैसे, बहुत से प्रोग्राम हमको करना है। उसने कहा कि तुझे आना है। पैसे भी कम हैं। हमने कहा कि यार, इसी से तो कह रहे हैं, कि न तो पैसा है, और क्या यूँ ही प्रोग्राम छोड़ दें ? मगर उसने कहा कि जो भी हो तुझे आना है। तो बस हम कहा चल, अब आएँगे, कुछ दे या न दे। चले गए। और अभी तक हमारी दोस्ती कायम है। लेकिन एक चीज की हिदायत उसे दिया। जब बहुत करीब हो गए तो हम कहा जोशी, संगीत को बरकरार रखना है तो ये बोतल-बोतल छोड़ दे। हा, हा, हा। अल्लाह अच्छा रखे उसे, हम यही दुआ करते हैं परवरदिगार से। अल्लाह ताला उसे सलामत रखे।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिस्मिल्लाह खाँ साहब स्व. एम.एस. सुब्बुलमी के साथ अपनी मुलाकात को याद करते हैं। ''हुआ था ऐसा, मास्को में। उनका एक आदमी था साथ में, आगे दौड़ के आया, 'खाँ साहब सुब्बुलक्ष्मी हैं।' हम कहा वो गाएँगी ? वो कहा, हाँ खाँ साहब। हम पूछा, कहाँ हैं ? बोले, वो खड़ी हैं। एक अदब है, तो हम गए। आदाब बजा लाता हूँ, आदाब बजा लाता हूँ। बड़े प्यार से बोलीं अरे खाँ साहब। उन्हें पता चल गया था कि खाँ साहब हमारे बाद में बैठेंगे, और यदि ऐसा हुआ तो क्या नतीजा निकलेगा इसका भी उन्हें अंदाजा था। हम कहा, सुनो! बोली क्या खाँ साहब ? हम कहा, हम तुमसे पहले बजाएँगे। बोलीं, अरे नहीं-नहीं खाँ साहब, आप बड़े हैं। हम कहा न न, हम पहले बजाएँगे। हम दोनों ही समझते थे कि अगर हम बाद में धमक गए तो उनके गाने का असर गड़बड़ा जाएगा। तो हमने इसरार किया कि नहीं, ये हिंदुस्तान की मल्लिकाए तरन्नुम हैं, इन्हें ही बाद में बैठना चाहिए। ये सब लयदारी की बातें हैं, सुरों की बातें हैं। जो लोग खुद सुर में होंगे, वही इन बातों को समझ सकेंगे वरना नहीं। अब इस वक्त याद नहीं है कि उन्होंने क्या गाया, लेकिन जो भी हो, क्या खूब गाया। 'नन हह हा... आ नदिया द द न... ल।' (गाते हैं) सब बचपन में चला आ रहा है। हमारे मामू के पास बहुत बड़ा खजाना था। मगर माली हालत कुछ ऐसी थी कि बस, खस्ता। ऐसे तो मकान था, दालान था, उस पर छप्पर पड़ा हुआ था। उसमें से पानी टपक रहा है, तब भी कोई फिक्र नहीं है। मामू ने भी कहा—जाओ तुम खुद सुर में रहो, और पूरे हिंदुस्तान को भी सुरीला बनाओ। सुब्बुलक्ष्मी ने यही काम किया, हम तो यही कहते हैं।''

उनके नाना गाते थे। शहनाई भी बजा लेते थे। मामू भी गाना और शहनाई दोनों ही सीखे थे। लेकिन उन्होंने कहा, गाना है तो, लेकिन उतना नाम नहीं हो सकता। शहनाई में भी जैसी वह थी, उस स्वरूप में उतना नाम नहीं हो सकता, इसलिए बिस्मिल्लाह खाँ साहब के बड़े-बुजुर्ग शहनाई में गायकी संग को ले आए। ''और जब गायकी को शइनाई में मान लिया तो हमरे मामू जो थे वो बड़े दिलेर थे। बड़े तगड़े। ओ हो हो हो (गाते हैं) देवी दुर्गे सदा। देवी दुर्गे सदा। संतुर कृपालिनी। देवी दुर्गे सदा। एक दफे, दो चार दफे। उसी एक लाइन को बार-बार कहते जाएँ तो आँख में आँसू आ जाएगा। आँख में आँसू आएगा ही, ये दावा करते हैं। आँख में आँसू आ जाएगा और आप तारीफ नहीं करेंगे। तारीफ नहीं होगी, आप चुप रह जाएँगे। लेकिन यह सब पुरानी बातें हैं। संगीत का ऐसे असर भी कुछ और ही होता था। जो वहाँ के राजा थे, आगरे के, कहें कि बड़ी गरमी हो रही है, कुछ ऐसा करो कि पानी बरसे। उन्होंने कहा अजीम बख्श मौला बख्श से। तो उन्होंने इनको देखा और इन्होंने उनके देखा, बोले, अमाँ अभी आते हैं। चले गए अजीम बख्श मौला बख्श अपने यहाँ और जाय के नहाय लिया। धोती बाँध लिया। आधी धोती बाँधे हैं और आधी धोती ओढ़े हैं, आ हा हा। अब आ के बैठ गए। बस एक-दो-तीन-चार, एक-दो-तीन-चार तानपूरा छेड़ रहे हैं। होते-होते एक छोटा-सा बादल था और वह सिर पर आ गया। बैठे हुए हैं। जमीन पर। राजा वहाँ के भी जमीन पर बैठे हैं, आँख बंद करके। गाना शुरू हुआ, ये लोग भी नहाए हुए हैं, खाली अभी धोती बाँधे हैं, तो उसके बाद अब धीरे-धीरे कहीं-कहीं बूँद पड़ी। ऐसा होता है न कि बूँद पड़ते-पड़ते भड़-भड़ भड़-भड़ पड़ता है। और ये लोग उसी तरह बैठे हुए हैं। कौन-सा राग शुरू किए हैं। और ऐसा वहाँ के बादल आ गए हैं और भड़भड़ाय के बूँद पड़ने लगी। उसी तरह से बादल बरस रहे हैं बरसते-बरसते इतना बरसे कि पानी वहीं जमा हो गया—जहाँ बैठे हैं। लेकिन वहाँ इशारा कर रहे हैं कि हरगिज हटो मत। राजा वहाँ के बैठे हैं और भीग रहे हैं। इधर से इशारा कर रहे हैं कि जाना मत ऐसे ही, जाना मत। अब महाराज को ठंड लग रहा है, पानी है—नीचे बह रहा है तब उसके बाद महाराज ने वहीं से हाथ जोड़े। राजा हाथ जोड़े हैं, तब इन्होंने वही कुछ उलटा पढ़ा। उलटा पढ़ा तो कट्ट से बादल जो हैं, वो गायब। सूरज निकल आया। सब जल्दी से वाह-वाह कर उठे। उस जमाने में जो हार होता था सोने का, सोने का कड़ा होता था, महाराज ने इनाम में दिया। वह सब तब था, अब नहीं है भाई। लेकिन ऐसा हो चुका है।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब ने यह नजारा नहीं देखा। उनके मामू बतलाते थे। अजीम बख्श मौला बख्श एक थे, दूसरे थे अब्दुल्ला अब्दुल मजीद। ''सोचने की बात है कि उस जमाने में ये तासीर जिनकी गायकी में थी कि वे पानी बरसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दें। मुसलमान ही क्यों हुए, और कोई क्यों नहीं हुए। दूसरे लोग भी बड़े-बड़े गायक हुए हैं, लेकिन इबादत में कोई सुर ऐसा निकलता था जो उसी जगह पहुँचता था, जहाँ उसका असर होता था। कुछ अल्फाज थे, ऐसे कह जाते थे जिनकी तासीर ऐसी थी कि भई पानी बरसा, उसे उलटा पढ़ दिया तो धूप निकल आई। पानी बह रहा है, महाराज हाथ जोड़ रहे हैं, उल्टा पढ़ा कुछ धूप निकल आई। लेकिन हर वक्त ऐसा नहीं होता था। और इनाम क्या मिलता था? अमूमन, धोती। मर्दाना धोती—हर एक को। और देखिए उस वक्त की बातें हो रही हैं, कौन-सी? गाने-बजाने की उसके असर की।''

खाँ साहब गा रहे हैं, ''देवी दुर्गे सदा। देवी दुर्गे सदा... संतुर कृपालिनी। देवी दुर्गे सदा। कैसे-कैसे ढंग से यह कहते थे। हमारे मामू बतलाया करते थे।'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब की आँखों की पुतलियाँ करीब-करीब सफेद हो गई हैं, उम्र के कारण। लेकिन संगीत-प्रेमी का चेहरा वे अभी भी पढ़ सकती हैं। उनके कमरे में उनसे मिलने आए कम-से-कम 15-20 लोग हैं वहाँ बंगलौर के संभ्रम रिजार्ट में, लेकिन वे पिछले करीब दो घंटे से मुझ ही से बातें कर रहे हैं। पलंग पर बैठे हैं, सिर पर इस वक्त टोपी नहीं है। बाल बिखरे हुए। आधी आस्तीन की बनियान, गंगाजल में धुली हुई और हरी-नीली धारी वाला लंबा जाँघिया। यह है इस वक्त सारी दुनिया में सिर्फ एक शहनाई वादक, 90 साला, भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ की पोशाक। जाँघों को सामने से ढँकने के लिए उन्होंने हल्के हरे रंग की एक छोटी तौलिया उनके ऊपर रख ली है, बस। बिस्मिल्लाह खाँ साहब बातें चाहे बता रहे हों। सोने के हार, सोने के कड़े और राजे-महाराजों से मिली धोतियों की, संगीत के असर की, लेकिन वो खुद उन सारी दुनियावी बातों से कहीं बहुत ऊपर चले गए हैं। उन्हें इस बात की कतई परवाह नहीं है कि उनसे मिलने इस वक्त कौन-कौन लोग आ रहे हैं, वे उन्हें देखकर क्या सोचेंगे या नहीं। बिस्मिल्लाह खाँ साहब तो बस उस वक्त गा रहे हैं। 'देवी दुर्गे सदा। देवी दुर्गे सदा ऽऽऽ।'

''तो हम आपको बतला रहे थे कि हमारे मामू की बड़ी अच्छी गायकी थी। वही बालाजी मंदिर में, बनारस में अभी भी है। मंगला गौरी मंदिर। मंगला गौरी मंदिर में होता ये है कि जो पत्थर वहाँ लगा है, वहाँ जाकर गंगाजल चढ़ा रहे हैं। वहीं फूल चढ़ा रहे हैं, पत्थर ही तो है, हमने उसी पत्थर पर बाहर हाथ रख दिया और जो कुछ कहना था, उसी को कह दिया। है किसी की मजाल जो रोक ले? नहीं रोक सकता। उसी पर हाथ रखा। क्योंकि असल बात ये है सुर-संगीत जात-पाँत नहीं मानता। हम कहा यो हो गया। हमारी साधना हो गई। क्योंकि सुर देवता किसी के नहीं हैं और सबके हैं। जब अपनी हस्ती को मिटा दोगे तो सुर देवता तुम्हारे हो जाएँगे। तब हाथ क्या आएगा, ये भी बता देते हैं उन्हें 'देवी दुर्गे सदा। देवी दुर्गे सदा। संतुर कृपालिनी। देवी दुर्गे सदा ऽऽऽ।''

सुर जाति, समुदाय, छुआछूत नहीं मानता। जिसने स्वयं को उसको समर्पित कर दिया, सुर उसी का हो जाता है। बिस्मिल्लाह खाँ साहब भी जात-पाँत नहीं मानते। उनके लिए सबसे बड़ा है सुर। ''कोई भी हो, बात ये है कि अगर सुरीला है तो हम तो मानेंगे ही। हम तो मानेंगे ही उसको। वह फिर चाहे बामन हो चाहे चमार। वो हमको खिला दे कुछ, पिला दे कुछ, कुछ मीठा खिला दे, हम छुआछूत और ये सब नहीं करेंगे। लेकिन यदि बेसुरा है, कम सुरा है या लयदार नहीं है तो हम कहेंगे अमाँ तुम जाओ। वरना जहाँ हमारा सुर है, वहीं एक जज्बा आ जाता है। जहाँ हमारा सुर है, वहीं मिलाओ, नहीं तो जाओ।''

''विलायत खाँ के साथ हमने बहुत जुगलबंदियाँ की हैं। बहुत सुर में है वो'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब को अब याद नहीं है कि विलायत खाँ साहब भी रुखसत हो चुके हैं। 'रवि हैं, विलायत हैं, क्या सुरीले हैं। एक हिंदू हैं, एक मुसलमान और दोनों ही एक से बढ़कर सुरीले हैं। एक बार की बात। विलायत खाँ बजा रहे हैं और हम उन्हें सुन रहे हैं कि एक आलाप और करो यार। और पब्लिक ये सोच रही है कि हम नरवस हो रहे हैं। और हम कहते हैं, कर तो ले, कर तो ले, माशा अल्लाह क्या बजा रहे हैं। फिर हम उठाते हैं अपना साज-सुर में—दा दा दा दा न जा रे जा न दियांऽऽऽ। कहाँ छोड़ना चाहिए। यह मुश्किल है। (गा रहे हैं) सामने हमारे आठ-दस लड़कियाँ बैठी हैं। 11-12 बरस की, जब सम आए तो वो सिर को यूँ करें। यूँ करें। कहें कि लयदार तो जरूर है ये। हमने उन्हें अपने पास बुलाया। डर के मारे आ नहीं रही हैं। जाहिर है, हमें जानती तो थी नहीं, खैर जब आई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पास में तो हम सब के सिर पर हाथ रखा और कहा—बेटा हम तोहरे बाप हैं, तुम बच्चियाँ हो। जब तुम लय में हो, खुश रहोगी इंशा अल्लाह। दूसरे के बच्चे हैं कि हमारे, लेकिन सुर-लय में हैं तो ऐसी सूरत में मुहब्बत पैदा हो जाती है।''

साथ में जो उनके गण इत्यादि हैं वे कहते हैं कि खाँ साहब अब आप आराम कर लीजिए, सुबह से बैठे हैं। तो उन्हें टका-सा जवाब मिलता है, ''ये बस तुम्हारी समझ में आता है? तुम लोग कूढ़ हो, ये सब संगीत की बात है। तो संगीत जात-पाँत, उम्र कुछ नहीं देखता, कुछ नहीं मानता। हमारी लड़कियाँ हैं, नवासियों हैं। हम उनसे भी कहते हैं कि बेटा एक दफे, दो दफे, चार दफे, 30-35 दफे करके देखो। एक ही सुर को। जब तुम उस सुर के बहुत करीब आ जाओगे, तब तुम चुप हो जाओगे और तुम्हारे पास में, अगल-बगल जो लोग बैठ होंगे, उनकी आँख में तरावट आने लगेगी। बोलेंगे नहीं ज्यादा। 'न न ना ऽऽऽ' क्या है ये सारंग—आऽऽऽ आऽऽऽ ऐंऽऽऽ। और जब उसमें बैठोगे तो दिल में कुछ होने लगेगा। दिल की बात एक है। दिल तो एक ही है, कोई अलग नहीं है। कोई हिंदू है, कोई मुसलमान है, कोई ये है, कोई वो है अमाँ जाओ। अपना काम करो। कोई जूता सीने वाला है, चमार है, अगर सुरीला है तो हम अपनी बगल में बैठा के उससे बात करेंगे।''

संगीत की पहली सीढ़ी है उसके प्रति रुचि, और दूसरी सीढ़ी है उसके प्रति समर्पण। बिस्मिल्लाह खाँ साहब उदाहरण देते हैं, 'रैदास तो चमार थे। अगर वो जूते का टाँका लगा रहा है तो इतना सुरीला टाँका लगाया है। उधर आप अच्छे खानदान के हैं, रईस हैं लेकिन सुर में नहीं हैं, तो टाँका सुरीला लगना चाहिए, अमाँ टाँका भी सुरीला कैसे होगा? अलबत्ता ये समझने की बात है। अगर समझ में आए तो ठीक, वरना नमस्कार महाराज। तशरीफ ले जाइए। कई बार बात संगीत की हो रही है और बीच में कोई कुछ और बात करने लगे तो लगता है कि क्या बेसुरी बात कर रहे हैं। हमारे अपने सभी, भाई, भतीजे, भतीजियाँ हैं। इधर हम बात कर रहे हैं उधर वो इतना ऊँचा बोल रहे हैं, तो हम उनसे कहते हैं कि भइया इतना कूढ़पने की बात क्यों कर रहे हो? जरा आवाज तो कम कर दो। अच्छा मालूम पड़ेगा। सुरीला बोलोगे तो बनारसी मे हम कहेंगे वाह भैया वाह! गंगा कसम, कइसन सुर लगावत हो, कइसन मजा आवत हो। गंगा कसम यार, मालिक तोहका तन्दुरुस्त रखें।''

भतीजे-भतीजियों, नवासियों के बचपन को याद करते-करते बिस्मिल्लाह खाँ साहब एक बार फिर अपने बचपन में पहुँच जाते हैं। बालाजी मंदिर में एक पंडित जी थे जिन्होंने अपने घर में ही पूजा-उपासना के लिए एक छोटा-सा मंदिर बना लिया था। मंदिर से बाहर भी नहीं निकलते। उसके घर और बालाजी मंदिर के बीच लकड़ी का एक छोटा-सा दरवाजा था। बिस्मिल्लाह खाँ मंदिर के भीतर से उठते गायन और मन्त्रोच्चार के स्वरों को सुनते। थोड़ी देर के बाद बालाजी मंदिर का घंटा बजता और जिज्ञासु बच्चा बिस्मिल्लाह इधर-उधर झाँकना शुरू करता। ''हमने देखा कि पंडित जी के हाथ में एक बड़ी-सी कटोरी है और उसके अंदर चुंगरवा भी है, बताशा भी है, और क्या-क्या चीज है। फल भी है, सब थोड़ा-थोड़ा। पंडित जी हमें इशारे से बुलाकर कहें कि ले बेटा। हम कहें लाओ महाराज। खा गए सब बिल्कुल। किसी को नहीं दिया, खा गए। ये सब हमने खुद किया है। वो भी हमें शहनाई पर सुर लगाते हुए सुनते थे। हमें, हमारे मामू को, हमारे नाना को भी उन्होंने सुना था। और ऐसा नहीं कि हमारा सुर मिलने पर कोई हर एक दिन वो हमें बुलाते हों और इनाम दे देते हों। लेकिन एक ही सुर को हमें महीनों लगाना पड़ता और उसका रियाज करना पड़ता। अरे, सुनके देखो, महीने भर में हमने यही तो किया और तब कहीं जाके हमें कटोरी भर चुंगरवा-बताशा मिलता। क्या बताएँ, बालाजी मंदिर के पंडित जी के हाथों से मिलने वाला वह चुंगरवा-बताशा हमारे लिए बहुत कीमती था।''

''वहाँ बजाने के लिए मामू को मिलता क्या था, चाँदी के 7 रुपये, 35-40 रुपये। आज के 30 रुपये महीना उसमें हमारी नानी और मुमानी खाना पकाने का सामान लाती। खाना, खाना भी था।'' अरे इतना सामान 17 आना 18 आना में कि उठता ही नहीं था। इताना सामान इतना अच्छा खाना, लाजवाब कि ओ हो हो हो है। अल्लाह के करम से हमने बना लिया फिर सब। मकान है। और कई बीघा जमीन है हमारी तरैया में। इतनी बड़ी जमीन है, इस सब मकान से कहीं बड़ी। लेकिन इतना जरूर है कि कोई आदमी कारखाना-दुकान बीच में नहीं खोल सकता। नहीं, हम लोग कभी जाएँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो अपनी जगह है। चद्दर बिछा दिया, चारपाई बिछा दिया, खटिया बिछा दिया। जो सिगरेट पीने वाले हैं, मिठाई खाएँ।। हलवाई की दुकान भी बगल में है। वो पेड़ा भी बना रहा है। मीठा भी बना रहा है, मलगज भी बना रहा है। जिसे जो करना है करो, मगर शर्त यह है कि सब सुर में करो। अब क्या बताएँ, पहले तो खूब जाते थे लेकिन अब चलने-फिरने से लाचार हैं, मगर 'सा' अगर हाथ में रह गया तो फिर 'दन दन दनन दन दन...।' करते हुए सालों निकल जाएँगे। जिंदगी सुरीली होनी चाहिए, जी! वरना कौन मजहब हैं, ये कौन जात हैं, वे कौन हिंदू हैं कि मुसलमान हैं कि ईसाई—कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि सबका एक ही मजहब है, संगीत, सबकी एक ही जात है, सुर। सबके सब सुर को मानने वाले हैं।''

यहाँ संगीत एकमात्र कारण है कि दुनिया के वे सब लोग बिस्मिल्लाह खाँ साहब को ऐसे मानते और पहचानते हैं कि खुद खाँ साहब दाँतों तले उँगली दबा लें। खाँ साहब मास्को का एक किस्सा सुनाते हैं। ''मास्को में हम लोग ऐसे होटल में ठहरे जो आठ मंजिला था। एक...दो...तीन...आठ। हर मंजिल में एक हजार कमरे। मास्को होटल। अरे बाप रे बाप! उसमें हम भी गए थे, इमरत खाँ भी गए थे, परवीन सुलताना भी गई थी और सुब्बुलक्ष्मी भी गई थी। हम सब उसी में ठहर गए थे। अगर कमरे का नंबर याद नहीं है तो फिर ढूँढ़ते रह जाइएगा कि कहाँ है। उसमें एक कोने से दूसरे कोने तक जाने के लिए गाड़ी में जाना पड़ता है। उसमें हर थोड़े कमरे के बाद कैंटीन बनी हुई है। एक लेडी बैठी रहती है। तो हमने वहाँ धुन बजाई, रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम'। धुन ऐसी बजी कि दूर से जो बैंड वाले हैं वे भी ऐसा कर रहे हैं। कितना अच्छा, आहा कितना अच्छा। उनको भी अच्छा मालूम हुआ। इंदिरा जी को भी ये चीज हमने सुनाई थी कई बार। बड़ी पसंद थी उनको वह धुन। तो प्रोग्राम हो चुका था। तो हमने देखा कि गोर्वाचोव वहाँ है। बड़े ऊँचे तगड़े। वो आगे बढ़े हमारी तरफ तो हम भी थोड़ा बढ़े उनकी तरफ। तो हमारा तवार्रूख करवाया गया उनसे। अंग्रेजी में दूसरे साहब कुछ बोले जो हमारी समझ में नहीं आया। इतना जरूर समझ में आया कि हमारे बारे में कुछ कह रहे हैं। तो हमने गोवोचोव से कहा कि साहब आज बड़ी खुशी का दिन है कि आपके दर्शन हो गए। हम तो ये बोल रहे हैं उधर वो जवाब देते हैं, वाह, वाह, वाह, क्या शीन-काफ, देखिए क्या कहते है, 'खाँ साहब, मैं आपसे मिलके बड़ा खुश हुआ।' हमने कहा यार, क्या शीन काफ, इतनी साफ-साफ बोल रहा है।''

''तो ये संगीत क्या है, अब यही सोचना पड़ता है। कहाँ हम गरीब आदमी और कहाँ हमसे ये इतने बड़े आदमी मिल रहे हैं और खुशी महसूस कर रहे हैं। वाह मेरे मालिक क्या चीज बनाई है तूने ये संगीत। कहीं-कहीं प्रोग्राम होता है। मूड बना है, लोग सुन रहे हैं, खुश हैं। अपनी बंबई में भी बोलते हैं। बड़े खुश हुए लोग। हम कहा सुनो, दुनिया नारा लगाती है न, फलाना जिंदाबाद, ढिमाका जिंदाबाद। ये सब करते हैं आप लोग। अब आप हमारा नारा सुन लीजिए। पहला नारा है, हिंदुस्तान जिंदाबाद। दूसरा नारा है, संगीत जिंदाबाद। तीसरा नारा है, कलाकार जिंदाबाद। सब लोग तालियाँ बजाते हैं। हम और किसके लिए जिंदाबाद कहें भई? कलाकार जो है, वह जिंदाबाद। हिंदुस्तान हमारा अपना जिंदाबाद।''

शहनाई बजाने के लिए स्वयं को स्वरों में साधना आवश्यक है। यह अन्य साजों से भिन्न है क्योंकि अन्य साजों में अधिकतर तार होते हैं। उन पर आघात होते ही सुर उपजता है। किंतु शहनाई चूँकि फूँक का साज है, इसलिए उसके लिए एक दूसरे तरह की साधना आवश्यक है। वही शहनाई में रियाज भी है। ''हम कहते हैं कि जो भी काम करो, उसे पूरा दिल लगाकर करो। दो घंटा, तीन घंटा, पाँच घंटा। जो काम करते हो या करने वाले, उसके बारे में आँख बंद करके सोचो—2-5 मिनट। बस फैसला करो, और ईमान से फैसला करो कि यह अच्छा है या नहीं। अब फैसला कर लिया तो फिर जो कर रहे हैं, हम जान के कर रहे हैं। अच्छा काम किया तो फिर उसे बार-बार करो और गुनाह का काम किया तो फिर उससे तौबा करो। अच्छी चीज है तो फिर खुशी है क्योंकि दुनिया वाले कहेंगे कि वाह-वाह क्या बात कही है। लोग बच्चों को तालीम देते हैं। बच्चों को तालीम देने का मतलब है कि हम तो पहले उस पर अमल कर लें। हम खुद ही यदि वही कर रहे हैं और दूसरों को सिखलाना चाहते हैं तो उस बात का असर दूसरों पर नहीं होगा। सुरों को जानने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए पहले अपने आप को सुरीला बनाइए। हमारे पास सब शागिर्द आए। हिंदू, मुसलमान, बंगाली, हम ये नहीं देखेंगे को किस धर्म या जात के हो। हाँ शरीफ हो तो आओ। खिलाएँगे अपने घर में, ठहराएँगे, अपना कपड़ा पहनाएँगे, सिखाएँगे और जब तैयार हो जाओ तो फिर जाओ। हम शागिर्दों का नहीं खाते। तैयार हो जाओ तो 20-25, 30 हजार रुपया बना ही लोगो। हमारी तसल्ली है। लेकिन इसकी शर्त यह है कि अपने आप को पहले खूब तैयार करना पड़ेगा, माँजना पड़ेगा। फिर देखा कि प्रोग्राम यहाँ किया, हैदराबाद में कि विजयवाड़ा में, रूस में कि अमरीका में किया, कहाँ-कहाँ वहीं आपकी शहनाई की गूँज गूँजती रहेगी।''

इसी बात पर बिस्मिल्लाह खाँ साहब एक घटना सुना रहे हैं, ''जब ये बिरजू नाचता था। उसके बाप नाचते थे। अच्छन महाराज। चचा-शंभू महाराज, लच्छू महाराज सब नाचते थे। मगर हम बिरजू की तारीफ करेंगे, तो क्यों नहीं करेंगे? एक बार किसी प्रोग्राम में शंभू महाराज गाली दिया तो हम कहा—क्या बेसुरी बात करते हो? लेकिन तभी बिरजू भी नाचा और इतना सुंदर कि हम रो पड़े। हम शंभू महाराज से कहा—महाराज, हम तुमको देखा, अच्छन महाराज को देखा, लच्छू को देखा। लेकिन किसी का नाच देखकर हम रोए नहीं। लेकिन इस लड़के ने (बिरजू ने) हमको रुला दिया। ऐसी आमद कि क्या बात। किशन महाराज तबले पर थे। पीछे बैठे हम, कुर्सी डाल के नाच देख रहे हैं, पीछे से ही देखेंगे हम, आगे नहीं बैठेंगे ऐसा हमने सोचा। ऐसी आमद हुई उसकी, ऐसे खूबसूरत कि आँख में आँसू आ गए। वाह, वाह, वाह! बस हम कुछ कह नहीं सकते। हम कहा महाराज हम कितना तुम्हारा नाच देखा, लेकिन किसी ने हमारी आँख में आँसू नही लाया, इस लड़के ने आँख में आँसू निकलवा दिया। ये है—राग, रागिनी, नाच। ये हमारे किए नहीं होता। ये खुद-ब-खुद बनेगा। रोज नहीं बनेगा, लेकिन एक दिन ऐसा बनेगा कि खुद कलाकार कह उठे कि क्या बात है। इस तरीके से बिरजू कितनी बार नाचे हैं, लेकिन वो नाच जो था उसका इलाहाबाद में, या कलकत्ते में वैसा कहीं नहीं हुआ। किशन महाराज से हमने कहा, महाराज तुमने संगत भी खूब किया। ये आमद जो आया था, उसी हिसाब से मिले हो तुम उससे।''

कलाकार जब स्वयं स्वरों में खोया हुआ हो तो श्रोताओं पर भी उसका प्रभाव उतना ही गहरा पड़ता है। सैनफ्रांसिस्को की पहाड़ियाँ। एक बार आयोजकों ने बिस्मिल्लाह खाँ साहब को वहीं एक हिंदुस्तानी सज्जन के घर में ठहरा दिया। उधर घर में खाना तैयार हो रहा था और इधर बिस्मिल्लाह खाँ साहब घर के बाहर की पहाड़ी की एक चट्टान पर बैठ गए—अकेले और शहनाई बजाने लगे। प्रकृति का दृश्य इतना सुंदर था कि शहनाई के स्वरों में खुद ही डूब गए। थोड़ी ही देर में वहाँ से जो मोटर-गाड़ियाँ जा रही थीं, रुक गईं वहीं, शहनाई के सुरों को सुनकर। खाँ साहब को मालूम भी नहीं पड़ा कि आस-पास कितने लोग, कितनी मोटर-गाड़ियाँ जमा हो गए। यह होता है कलाकार का कला की हदों को पार करना।

लेकिन अपनी ही कला की हदें पार करने वाला यह दुनिया का सबसे बड़ा कलाकार कभी-कभी उदास भी हो जाता है। कभी-कभी अफसोस भी करता है वह। ''खूब घूमे साहब हम। कनाडा भी घूमे, अमरीका भी घूमे। हर तरफ घूम-घाम के अंदाजा लगा लिया कि दुनिया क्या चीज है। तब ये फैसला किया हमने, और खूब समझ-बूझ के किया, कि संगीत सब जगह है, ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँ संगीत नहीं। इटली में देखिए, जापान में देखिए, सऊदी अरब, टर्की, सब जगह है संगीत। लेकिन जो हमारे यहाँ का शास्त्रीय संगीत है, वो तो कुछ और ही है। और ये फर्क हुआ कि अमरीका, लंदन के लोग हमारे शास्त्रीय संगीत को समझने की कोशिश करने लगे और वहाँ जा-जाकर बताने लगे हमारे संगीत के बारे में। खूब मजे में बताया। अब हालत ये है कि वहाँ जाओ तो संगीत का मजा आता है। लोग सच्ची दाद देते हैं और खुशामद करते हैं। हम कहें कि कुछ दिन के बाद क्या हिंदुस्तान वाले यहाँ आएँगे संगीत सुनने? सोचिए, जब ये हालात हो जाएँगे, तब क्या जो हमारे आज के लोग जो सब संगीत मिला-जुला (फ्यूजन) कर रहे हैं, तब उसे सुनने आएँगे क्या लोग? कभी-कभी अफसोस होता है। लेकिन क्या करें, संगीत में यह मिलावट, यह तो आज से नहीं, परंपरा से चला आ रहा है। शास्त्रीय संगीत तो यूँ भी हमेशा से कम रहा है। पहले जितने कलाकार थे, कोई कौन राजा-महाराजा के यहाँ जाके टिक जाते थे, आज के कलाकार फॉरेन में जा कर टिक जाते हैं। बस, अपने लोग भी अपनी कला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और अपने देश को छोड़ कर जब पराये हो जाते हैं तो अफसोस तो होगा ही।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब के एक खालाजाद भाई हैं उनके साथ। एक घटना सुनाते हैं। अमरीका में कहीं पर खाँ साहब का प्रोग्राम हो रहा था। वहाँ के लोगों ने तय किया कि इंडियन क्लासिकल म्यूजिक नाइट मनाई जाए। खाँ साहब को वापस आना था। जब उन्होंने कहा कि खाँ साहब आप वापस न जाएँ, यहीं रहें। 15 दिन के बाद प्रोग्राम था और आयोजकों ने वहीं एक बड़े होटल में सब लोगों के रहने की व्यवस्था करवा दी। चारों तरफ पहाड़ और बीच वादी में बैठक, यह था कार्यक्रम का स्वरूप।

''हाँ'' ऐसे हैं, बिल्कुल पहाड़, बहुत अच्छी चीज है,'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब बता रहे हैं, ''माइक ऐसा फिट था कि आवाज गूँज रही थी। और उस दिन प्रोग्राम था रविशंकर जी का। अल्ला रक्खा तो तबले पर उनके साथ। प्रोग्राम वालों ने कहा कि भई मिला लीजिए साहब। हम गए स्टेज पर —ऐंऽऽऽ। 5-7 सेकंड मिलाया। बहुत उम्दा। रविशंकर आए बोले भइया आओ साज़ देख लो, हम कहा हम देख लिया। हम जानते थे, वहाँ उनके सब मानने वाले थे, किसी ने कुछ गड़बड़ कर दिया तो। वही सब लड़के थे वहाँ पर। मजा ये हुआ कि पहला प्रोग्राम था हमारा। ठीक है साहब, भर गए सब, अमरीकन, कनेडियन, इंडियन। कुछ नहीं किया हमने शुरू में—जरा-सा ऐंऽऽऐंऽ। करके छोड़ दिया। और वो आवाज रस रही है। अब जब ज्यों रस रही तो जम के बजाया। सन्नाटा भरा है। सब चुप। चौकस प्रोग्राम हुआ। और ज्यादा टाइम नहीं, बस 50 मिनट या 45 मिनट। फिर उसी में आलाप हुआ, तान हुआ, गायकी अंग भी हो गया। ये जम के। उसके बाद चले अली अकबर। उसने मुझे देखा कि इसने सुर का काम किया तो वे निकल गए ताले पर। द्रुत पर, और ताम-झाम ये-वो। उसने भी बहुत अच्छा काम किया। उसके बाद आए रविशंकर। उसने भी क्या बढ़िया बजाया। बड़ा मजा आया। बस अब उमर हो चली है। सेहत ठीक नहीं रहती। तब तन्दुरुस्त रहें भइया। परबरदिगार अच्छा रखे, दुआ करना चाहिए। अब हैं दो अच्छे कलाकार, इनका जवाब वो और उनका जवाब ये। अब एक न रहें तो कौन किनका जवाब है फिर? सोचने की बात है। जिन्दा रहो, तभी तो मजा आएगा।

''एक बार गए हम लन्दन। वहाँ पहले हमने बजाया और उसके बाद फिर विलायत खाँ ने बजाया। अगला उन लोगों ने झट से डुएट रख लिया विलायत खाँ और हमारा। हमारा पसन्द किया लोगों ने। उसके बाद बातचीत हुई। हमने कहा कि कितना अच्छा होता कि एक तरफ विलायत खाँ बैठ जाते, एक तरफ रविशंकर, एक तरफ हम बैठ जाते, तब प्रोग्राम होता तो क्या बात थी। लोगों ने खूब ताली बजाई और कहा कि खाँ साहब बहुत अच्छा, कोशिश करेंगे हम। हमने कह दिया कि ठीक है, कोशिश कीजिए आप। ऐसा हो गया तो फीस भी अपनी आधी ही लेंगे हम। ऐसा हुआ नहीं मगर। लोग कभी-कभी इतनी देर क्यों कर देते हैं कि बाकी सिर्फ अफसोस रह जाता है?''

संगीत-साधना के बारे में चर्चा अभी भी जारी है। बिस्मिल्लाह खाँ साहब वापस उसी जगह लौट आए हैं। ''उस दिन आपने इतना खाना खिलाया, अच्छा है। ये अच्छा है, वो अच्छा है। मीठा है, उसका अपना खाना है। उसी तरह से संगीत का भी अपना खाना है। संगीत शुरू होता है, न द द द द न द न दन—ये तो कहा हमने, चुप मारे बैठे हैं सब और उन्होंने कहा, वाह-वाह, बढ़ गई तबीयत, ऐसा है संगीत। पहली बात तो यह है कि संगीत सुरों को साधना है और स्वर क्या चीज़ है? षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद। है न? दो ऋषभ, दो गांधार, दो मध्यम, दो धैवत, दो निषाद् और पंचम और षड्ज्। यही बारह स्वर हैं न दुनिया में? कोई 13 मान के बताए तो मानें या फिर कोई 11 मान के दिखाए। अरब का हो या फिर अमरीका का, या जापान का हो, कहीं का भी हो, उसे ये 12 सुर ही मानना है और ये 12 सुरों का मेल कुछ इस तरह का होता है कि तासीर पैदा करता है, शक्ति। और अगर शक्ति पैदा कर लिया तो तमाम राग जो आएँगे, इन्हीं सुरों में से तो आएँगे न? आपने कंट्रोल कर लिया है कि ऋषभ् कैसे बोलेंगे, गांधार कैसे बोलेंगे, मध्यम केसे और धैवत कैसे? इन्हीं में से तो राग आएगा न। सुर तो आपने ले ही लिया है। जब वो लगेगा तब आनन्द आएगा। श्रुतियाँ हैं। किसी में दो हैं, किसी सुर की तीन, किसी की चार। पूरे सुर केवल 12

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। कोमल तीवर मिला कर। 'ऐ बारे सईयाँ, तोहे शकल बिना लो ऐ बारे सईयाँ (गा कर सुनाते हैं अलग-अलग स्वरों पर रुककर)' गांधार पर रुकना हुआ, ये ऋषभ् पर। ये हुआ। हर एक सुर पर पहले कब्जा करता है। सा रे गा मा पा ध नी सां। सा नी ध पा मा गा रे सा। ये एक रियाज़ है जो रट रहा है धीरे-धीरे। सा रे गा मा पा धा नी सां (धीरे-धीरे) फिर चलेगा सारेगामापाधीनासां। फिर जल्दी-जल्दी सारेगामापाधानीसा बहुत जल्दी, जल्दी तो तान बन जाएगी। सुर को बुलाना, सुर को कंट्रोल करना होगा, जितने भी गाएँगे, बजाएँगे रागों में इसी मेल में गाएँगे। औड़व-षाड़व है, षाड़व-औड़व है, औड़व-औड़व है, षाड़व-षाड़व है, जितना भी है, सब इसी मेल में, कुछ और है तो हमें बताओ और अगर नहीं बता पाएँगे तो वही है जो हम कह रहे हैं।''

संगीत उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब के लिए इबादत है। ''संगीत कहें, या नमाज कहें, दोनों एक हैं। दोनों ही पाक हैं। नमाज में क्या पढ़ते हैं, कोई गाली-गलौज करते हैं। बिस्मिल्लाह-उल रहमान रहीम। यही तो कहते हैं न। यही इबादत है। यही संगीत है। अरे कुछ जाके सीखो। और कुछ भी नहीं है भाई। वो मालिक एक अकेला है। उसकी इबादत खुद करो। जैसे दूसरे के पकाए खाना नहीं पकाना नहीं आएगा, वैसे दूसरे के इबादत किए न आपकी मालिक से मुलाकात होगी, न सुरों से पहचान होगी। और एक बार हो गई उनसे मुलाकात, फिर देखिए दुनियावी चीजें सब पीछे छूट जाती हैं। हमारे दोस्त हैं। बनारस में, सुन कर कहें, अबे वाह, क्या बात है, क्या गा रहे हैं, क्या बजा रहे हैं। और हम उसी में खुश हैं। पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण, भारतरत्न हो गए, और ये हमें 'अबे' कह रहे हैं। हमें मजा आ रहा है। वो कहें, 'गंगा कसम, कइसन मजा आवत हो', तो उसमें एक खुलूस पैदा होता है। खुलूस पैदा होता है कि वो अपना है, गैर नहीं है किसी गैर को नहीं पुकार सकते इस तरह।''

कुछ साल पहले मैंने बिस्मिल्लाह खाँ साहब और विलायत खाँ साहब की जुगलबन्दी सुनी थी मुम्बई में। उसमें विलायत खाँ साहब ने कहा कि अब हम लोगों की उमर हो गई बैठने की कि ये भी बैठें, और हम भी बैठें, और हम लोग सुना करें—बच्चों को। लेकिन हमारे बड़े बैठे हैं बिस्मिल्लाह खाँ साहब। जैसा आप बजाते हैं, हम पीछे-पीछे चलने की कोशिश करते हैं। उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब ने उस वक्त कहा कि 'ये जरूर कह रहे हैं कि ये हमसे छोटे हैं लेकिन ये कैसे भूल गए कि ये सितार बजाते हैं मैं शहनाई बजाता हूँ। इस नाते विलायत खाँ साहब हमारे बड़े हैं।' दोनों ही महान कलाकार विनम्रता की एक से एक ऊँची सीढ़ी पर चढ़ रहे थे उस दिन। कलाकार में इतनी विनम्रता कैसे आती है?

''राग का रस ही मानो कलाकार का रस है। दिल से वह बातचीत करेगा जब, तब वह प्यार और रस ही है लेकिन असलियत ये है कि वह सारी मुहब्बत बातचीत में ही है। जब आमने-सामने साज़ लेकर बैठेगा तो मानो दुश्मनी हो जाएगी। हा हा। बस साज़ लेके बैठा, कोई सरोद लिए है, कोई तासीर लिए है, जरूर दुश्मनी हो जाएगी। और यही नहीं कहे, क्या यार, बड़ा मजा आ रहा है। अरे यार क्या-क्या बजाने वाले थे साथ भी। ये किशन महाराज ही क्या बजाता था। अब खत्म हो रहा है। भई तुम्हारे हाथ में अब तबला नहीं रहा, बोतल है। बोतल खत्म कर रही है। ये तो समझो! क्या करोगे ऐसे में? अनोखे लाल होता था, या बीरू मिसर। आहा हा हा। अरे वाह वाह। कितना अच्छा तबला, दूसरे लोग भी हैं जो बजा गए, ये बजा गए, वो बजा गए। एक तारीफ हो रही है। बीरू मिसर आए हैं। साफ—एक पतला-सा पहने हैं। एक कपड़ा था—हल्का-सा, मेडल लगा। इधर-उधर सब उतार दिया, ऐसी बजाई कि आ हा हा (ताली बजाते हैं) सबसे अलग हैं बीरू मिसर, वो सबसे अलग हैं। करते चले गए और कोई नहीं है। बीरू मिसर के हाथ में क्या तासीर थी, ध्यान करके हाथ रखें तबले पर तो लगे इसमें से आस निकल रही है। तबले में से आस निकल रही है! क्या करें, ऐसे अन्दाज़ से हाथ रखा कि भई वाह वाह! 'आ ऽऽऽजाने जाने ऽऽऽ न छोड़ो', उसको लगाए जा रहे हैं—'मत छोड़ो', लगाए जा रहे हैं। बड़ा मजा आ रहा है, लोग झूम रहे हैं। अमाँ टाइम कितना हो गया? सबा घंटा। लोग कह रहे हैं और बजाइए। हम भी कहते हैं कि भइया, बीच में दो-ढाई घंटे का टाइम दीजिए, हम फिर चले आएँगे। राग का यही रस, कलाकार का रस है।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब गाते हैं, एक बधाई, ''गंगा द्वारे ऐ गंगा द्वारे, बधाईया बाजे। गंगा द्वारे।'' गंगाजी में पंजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भिगोए हैं। और साथ-साथ एक नहीं, कई-कई कजरियों को लाइन लगी हुई है मगर हम ये बात बार-बार कहते हैं कि सुर महाराज सबके हैं और किसी के भी नहीं हैं। जो सुरों को अपना लेगा, ये सुर महाराज उसके हो जाएँगे, उसके साथ-साथ चल देंगे। जो सुरों को नहीं अपनाएगा, सुर महाराज भी उसे छोड़ देंगे। गाना-बजाना तो मुश्किल है ही सुनना तो और भी मुश्किल काम है। तब कम-से-कम इतना तो करें कि सुनना ही सीख लें। ये नहीं कि प्रोग्राम हो रहा है और सारी-की-सारी लाइट आपने कलाकार के ऊपर ही डाल दी। भई खुद तो हमें देख रहे हैं। हम किसी को देख नहीं सकते। अरे संगीत तो दो तरफ चलता है। कलाकार से सुनने वाले तक और सुनने वाले से कलाकार तक। अगर सुनने का ठीक से शौक पैदा हो गया तो धीरे-धीरे करते-करते पूरी तरह ताल भर जाएगा। यदि गाने-बजाने का रियाज करना पड़ता है तो भई सुनने का रियाज भी इतना ही जरूरी है।

श्रोताओं की मनःस्थिति पर, कलाकार का कार्यक्रम कैसा रहेगा, यह बहुत निर्भर करता है। बिस्मिल्लाह खाँ साहब को सारे ही राग तब प्रिय हो जाते हैं जब उनके और सुनने वालों के बीच बढ़िया ताल-मेल हो जाए। यदि कभी वह तालमेल न पैदा हुआ तो मूड बिगड़ा और सबके सब राग खुद उनहीं के दिल को नहीं छू पाएँगे। तो दिल को छूना बहुत बड़ी बात है। और कलाकार के जीवन में बहुत महत्त्व रखती है।

बिस्मिल्लाह खाँ साहब एक बार फिर से अतीत के झरोखों में झांक रहे हैं। 'ये दशहरा है। दशहरे में कोई राजा का दरबार ऐसा नहीं जो खाली रहे। कलाकार पहुँच जाते थे सब। बगैर बुलाए भी पहुँच जाते थे। अब खाने का इन्तजाम वगैरह सब वहीं पर। हाथीखाना रहता था। हाथीखाना को साफ किया और सब जमा वहाँ पर, फिर दरबार में गाना-बजाना हो रहा है। अब नहीं, लेकिन हुआ है ऐसा, हम छोटे थे तब। एक बार का किस्सा सुनावें आपको। लखनऊ एक ऐसी जगह थी, बड़ी खूबसूरत जगह हिन्दुस्तान में मानी गई। कोई पूछता लखनऊ में क्या है? कुछ नहीं मियाँ, तवायफ बैठती थी चौक में। खाली जायका लेने के लिए एक बार हम भी निकले। हमारे साथ दो-तीन आदमी और चले आए। टुंडे का कबाब खाने के लिए चले आए। वहाँ जा के देखे, कि वहां एक से आँख मिल गई। हमने कहा कि ये आँख से देखती नहीं, तीर मारती है। बगल में से टुंडे का कबाब लिया और उधर उन्होंने सुर लगा दिया 'द न द न दन दन न दन दन।' अर्रे-बाप रे बाप! अरे खाँ साहब, अरे खाँ साहब! हम कहिन, भागो यहाँ से। एक तो खूबसूरत, ऊपर से आँखों से तीर चलाए और तीसरे सुरीली भी। और जो हम भागे वहाँ से कि क्या बताएँ। तो हमने कहा न कि सुर महाराज सबके हैं, और किसी के भी नहीं। सुर, जात-पाँत, ऊँच-नीच नहीं देखता। आप कोशिश कीजिए कि भारतीय शास्त्रीय संगीत को आप लोग जिन्दा रखें। अब यह विरासत आप लोगों के हाथ में है।''

इस बीच एक साहब वहाँ आते और गुजारिश करते हैं, खाँ साहब आपकी तसवीरें उतारना है। खाँ साहब कहते हैं, ''उतार लो बेटा। टाइम कम है, काम ज्यादा है, हाँ क्या नाम बताया (वहाँ एक बच्ची भी बैठी है) बागेश्वरी? एक और लड़की है बनारस में। उसका नाम भी बागेश्वरी है। इससे बड़ी है। हमारे एक शागिर्द हैं दिल्ली में, उसकी शागिर्द है। अच्छा बजाने लगी है। लड़कियाँ गाती हैं, सितार-सरोद बजाती हैं, लेकिन शहनाई। फूँक का साज है यह। आएगी, उतरेगी मैदान में। पहले भरा हुआ था बनारस। बहुत गाने वाली थीं दाहिने-बाएँ दोनों तरफ। अब रसूलन है, न वकूलन है, न बिट्टन हैं। भई हाँ, गिरिजा देवी जरूर है, लेकिन बुढ़ापा तो सब पर आ रहा है न। कहाँ से आएगी वह आवाज। ताकत की जरूरत होती है। परवरदिगार सलामत रखे। कभी-कभी दुआ-सलाम होती है, कभी-कभी हँसी-मजाक भी हो जाता है। प्रोग्राम वो भी कम ही करती है।''

एक बार खाँ साहब का कहीं प्रोग्राम हुआ। रात ढाई बजे वहाँ से अपने कमरे में लौटे। सोचा कि थोड़ा-सा सो लें, तो फिर चार बजे उठ ही जाएँगे नमाज पढ़ने के लिए। ''अभी उठते हैं, अभी उठते हैं और अजान हो गई। इतने में दो अधेड़ औरते आईं, नकाब ओढ़ा हुआ। ओए होए, जैसे सदा हमारे पास में आई। उसने कहा सो रहे हैं, हमने कहा हाँ। और कह रहीं बहुत कुछ, लेकिन हमें याद नहीं बस इतना-सा, 'काली कमली वाले तुझको लाखों सलाम, तुझको लाखों सलाम।' दूसरी कहती क्या है, हमें नहीं मालूम, बस 'ददियाऽऽनजरियाऽऽ द्वार न जा।' इधर पहली कहती है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'काली कमली वाले...' हम कहा आ हा हा, क्या जुगलबन्दी है, हमारी पॉकेट में जो था, सब निकाल के दे दिया। तो लो बाबा, ये है संगीत। कंठ में एक सुरीली-सी हरकत। हम इसी को जानते हैं, और इसी को मानते हैं। हम कहा वाह वाह-वाह!''

एक साहब आते हैं, अपनी ऑटोग्राफ बुक ले कर, 'जी इस पर कुछ लिख दीजिए।' ''क्या लिख दें भइया? क्या लिखवा रहे हो हमसे? सोंचो। हम सिर्फ तीन किताब पढ़े हैं और वो भी उर्दू की। लेकिन अल्लाह का करम है कि बहुतों से हमारी उर्दू ठीक है। बचवा, हम पढ़ा-लिखा नहीं, सुर सीखा है। ये नहीं कि हम पढ़े-लिखे ज्यादा हैं। चौथे दरजे में गए हैं—बनारस में। राजा दरवाजे के चौक में। तो वहाँ इम्तहान में ही नहीं बैठे हैं। हम चले गए मामू साहब के यहाँ। फेल हो गए। जब फेल हो गए तो हम कहे, जाओ हम फेल हैं, नहीं पढ़ेंगे। और जिसको आता है, हमारे पास आओ जवाब देगे। हाँ संगीत की कलास में हम कोशिश करेंगे कि अव्वल रहें। कोई पूछे—शहनाई सुन लिया, कहें हाँ सुन लिया। क्या सुन लिया भई, नाम तो याद ही नहीं है, सुर का भी पता नहीं हे, संगीत कुछ नहीं जानते, उसमें रुचि कतई नहीं, गाना नहीं जानते, बजाना नहीं जानते और हमसे बात करना चाहते हैं और कहते हैं, लाजवाब, लाजवाब। क्या लाजवाब भई पहले सवाल क्या है वो तो पता करें! नहीं ऐसे लोग बेसुरे होते हैं। और बेसुरों से हमें बड़ा डर लगता है।''

बिस्मिल्लाह खाँ साहब कई घंटे से मुझसे बातें कर रहे हैं और मैं मन्त्रमुग्ध-सी, जिज्ञासु-सी उनके एक-एक शब्द को, एक-एक स्वर को अपने भीतर समाने की चेष्टा कर रही हूँ। बिस्मिल्लाह खाँ साहब तो स्वरों का अथाह समुद्र हैं और मेरी प्यास भी अनन्त है। वह किसी भी तरह कम होने में नहीं आ रही। जितनी-जितनी बार उनसे भेंट होती है, उतनी-उतनी ही बार उनसे कुछ बातें, कुछ संगीत चर्चा और सुनने की इच्छा प्रबल हो जाती है। ''हमने इतनी देर में अन्दाजा लगा लिया कि आप लयदार हैं, सुरीली भी हैं। इतनी ही देर में अन्दाजा लगा लिया हम। खुद नहीं गाया, खुद नहीं सुनाया, सिर्फ सुना, लेकिन हम इतनी ही देर में अन्दाजा लगा लिया कि आप हैं। बस, ऐसे में सुर बनाए रखें आप। अल्लाह करे आप हमको ऐसे सुनें, बस, अपनी सेहत बनाए रखें, सुरीली ही रहें। कोशिश करें कि आप दूसरे सुनने वालों को भी तैयार करें। लड़के हैं, लड़कियाँ हैं, बच्चे हैं, उनको कुछ समझा दिया, बाकी और हम सब समझा नहीं सकते भई। नहीं, नहीं वो हमारे बस की बात ही नहीं है, समझाएँगे क्या आप सुरीली हैं। आप ये काम करें। ऽऽऽनजरिया लगा ले न रहे आ। हमारी नवासियाँ हैं, लड़कियाँ हैं नौहा वगैरह पढ़ती हैं। हम पूछे जरीन। कहें जी अब्बा जान। पूछें कौन-सा नौहा पढ़ रही हो? कहे अब्बा जान फलाँ नौहा पढ़ रही हूँ। हम कहिन अरे सुर में तो पढ़ो। कूढ़ हो तुम सब की सब। तो अल्लाह आपका ये सुर बनाए रखें। हँसी-खुशी में सबको गाना बाँटती रहिए। सुर बाँटती रहिए। बस यही सच्चा काम होगा। और आप भगवान का नाम तो लेती होंगी न?'' बिस्मिल्लाह खाँ साहब पूछते हैं। 'जी, मेरा जवाब है।' ''तो आप जिस भी भगवान को मानती हैं, उनकी पूजा करती हैं, या माला फेरती हैं, तो उसके आखिर में हमारा नाम भी जोड़ दीजिए। जो भी दुआ आप करें, उसके आखिर में हमें भी अपनी दुआओं में शामिल कर लीजिए। पता नहीं परवरदिगार कौन-सी जबान, कौन-सा मन्त्र, कौन-सी दुआ कुबूल कर ले। हमें यकीन है, कि आपकी दुआ कुबूल होगी जरूर।''

आमीन। सुम्मामीन। आप हमारी दुआओं में शामिल हैं बिस्मिल्लाह खाँ साहब। आप इस दुनिया के सुरों को मानने वाले हर आदमी की दुआओं में शामिल हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिस्मिल्लाह-ए-शहनाई

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

(बिस्मिल्लाह खाँ साहब के गाँव डुमराव के रहनेवाले मुरली मनोहर श्रीवास्तव को बनारस में अनेक बार उस्ताद साहब से मिलने का सौभाग्य मिला। मुरली मनोहर श्रीवास्तव ने बिस्मिल्लाह खाँ साहब पर एक किताब भी लिखी हैं। इस आलेख के माध्यम से मुरली मनोहर श्रीवास्तव अपने संस्मरणों को साझा कर रहे हैं—संपादक)

''अब्बा, भारत सरकार ने आपको 'भारत रत्न' दिया है।'' यह बात 25 जनवरी, 2001 की है, जब शाम के समय बिस्मिल्लाह खाँ के बड़े बेटे महताब हुसैन ने बी.बी.सी., लंदन (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) से फोन पर खबर पाई थी। उस वक्त खाँ साहब दिल्ली में ही थे।

थोड़ी ही देर बाद टेलीफोन फिर ट्रिंग-ट्रिंग कर उठा, जिसे आफताब ने उठाया और चिल्लाया, ''अब्बा ! लताजी (स्वर- कोकिला लता मंगेशकर) लंदन से बोल रही हैं।''

खाँ साहब ने जल्दी से फोन ले लिया।

''मैं लता बोल रही हूँ। सबसे पहले आपको बधाई हो! खाँ साहब, मुझे खुशी है कि हम दोनों को 'राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार' एक साथ मिला तथा अब भारत का सर्वोच्च नागरिक अलंकरण 'भारत-रत्न' भी साथ-साथ ही भारत सरकार ने देने की घोषणा की है।'' आगे कहा, ''खाँ साहब, 'भारत-रत्न' सम्मान आपको बहुत पहले मिल जाना चाहिए था।''

इस पर बड़े सहज भाव से खाँ साहब ने कहा, ''लताजी जितनी सुरीली हैं, उस लिहाज से उन्हें यह सम्मान सबसे पहले मिलना चाहिए था।'' साथ ही लताजी ने यह भी कहा, ''आखिरकार आपको यह अवार्ड मिल ही गया जबकि मैं दिल से कहती हूँ कि यह अवार्ड कई दशक पहले मिल जाना चाहिए था।''

बिस्मिल्लाह खाँ सच्चे, सीधे-सादे एवं खुदा में आस्था रखनेवाले, मंदिरों में विश्वास रखनेवाले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने मामूली सी चटाई से बड़े मंचों पर कीर्तिमान स्थापित किया। शहनाई कि स्वरों द्वारा कर्बला के दर्द को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते तो हजरत इमाम हुसैन की शहादत का दृश्य लोगों के सामने चलचित्र की तरह जीवंत हो उठता तथा मोहर्रम की 5वीं एवं 8वीं को मातमी धुन सुननेवाले फूट-फूटकर रो पड़ते।

एक दिन एक अजीबो-गरीब घटना घटी। बिस्मिल्लाह खाँ वाराणसी के मंगला-गौरी मंदिर के नौबतखाने में शहनाई बजा रहे थे। जब उन्होंने शहनाई के सुर को साधा तो अचानक सामने एक साधु को देखकर अवाक् रह गए, डर गए। शहनाई अपनी आवाज खो बैठी। डर से बोली भी नहीं निकल रही थी। बेचारे खाँ साहब सहमे हुए थे। ऐसा देख उस अज्ञात साधु ने कहा, ''तुम डरो नहीं, शहानाई बजाओ। बजाते क्यों नहीं, बजाओं!'' लेकिन साधु के इतना कहने के बावजूद वे उसे देखकर भय के मारे चिल्ला भी नहीं पा रहे थे। जब वह शहनाई नहीं बजा पाए, तब वह साधु एकाएक अंतर्ध्यान हो गया। फिर भी उस मासूम के होंठों ने थिरकना तो दूर आवाज निकालने से भी कतराने लगे। वहाँ से दौड़े घर पहुँचे, अपनी सारी व्यथा सिलसिलेवार अपने मामू को कह सुनाई। इस पर मामू ने सावधान किया, ''ऐसी बातें किसी से मत कहना।'' फिर उस बालक से यह भी कहा, ''अब तुम्हारी साधना अवश्य पूरी होकर रहेगी...।'' फिर क्या था, जब अपनी साधना में जुटे तो उन पलों को सोचने का मौका ही नहीं मिला।

पैगंबर बख्श मियाँ उर्फ बचई मियाँ मिट्ठन बीबी के यहाँ 21 मार्च, 1916 को उनका जन्म हुआ और उसी वर्ष 1916 में ही काशी हिंदू विश्वविद्यालय बनारस में बना। बचई मियाँ अपने परिवार का जीविकोपार्जन शहानाई बजाकर किया करते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे। बिस्मिल्लाह और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ऐसे वक्त को याद दिलाते है कि दोनों की विश्व में विशेष पहचान तथा महत्ता है।

'शंहशाहे शहनाई बनारस को जगानेवाले पीरे शहनाई बनारस की जिंदगी के हर संस्कार, हर पहलू का आरंभ बिस्मिल्लाह और शहनाई से होता था। बनारस, बिस्मिल्लाह और शहनाई तीनों इस कदर जुड़े हैं कि लगता है, तीनों हमनाम हैं। शहनाई माने बिस्मिल्लाह और बिस्मिल्लाह माने बनारस।

सन् 1930 में इलाहाबाद में ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फ्रेंस आयोजित हुई। उस कार्यक्रम में चौदह वर्षीय बिस्मिल्लाह भी मौजूद थे। उनकी उम्र को लेकर काफी प्रश्नात्मक रवैए दिखते थे। फिर भी काफी जद्दोजहद के बाद आयोजकों ने उन्हों कार्यक्रम प्रस्तुति का मौका प्रदान किया। लेकिन उम्र और प्रतिभा को लेकर सारे लोग दुविधा में थे। बिस्मिल्लाह अपने गुरु के साथ बजा रहे थे। तभी लोगों की भीड़ से आवाज आई : ''वाह उस्ताद वाह, क्या बात है।'' इसी तरह उस मंच का नायक बन बैठे इस कलाकार को उस्ताद फैयाज खाँ ने मंच पर आकर मामू अली बख्श की प्रशंसा करते हुए कहा, ''खाँ साहब, इस बालक को सँभालकर रखना।'' साथ ही पीठ भी ठोंकी, उत्साहवर्धन किया। तब से आज तक पीछे मुड़कर देखने का मौका नहीं मिला।

सन् 1937 में कलकत्ता (अब कोलकाता) में आयोजित ऑल इंडिया म्यूजिक कॉन्फ्रेंस संगीत सम्मेलन में उनके वादन से खुश होकर उन्हें तीन स्वर्ण पदक प्रदान किए गए और यहीं से सर्वोच्च शिखर सम्मान की ओर उनके बढ़ते कदम की शुरुआत हुई। पहली बार अठारह वर्ष की उम्र में अकेले शहनाई-वादन प्रस्तुत करने का अवसर मिला और अच्छे प्रदर्शन से उनका नाम हिंदुस्तान के अच्छे-खासे संगीतज्ञों में लिया जाने लगा और धीरे-धीरे अब विशिष्ट आयोजनों का आमंत्रण मिलना शुरू हो गया। कार्यक्रम प्रस्तुत करने का सिलसिला इस कदर शुरू हुआ कि दोनों भाई शम्सुद्दीन एवं कमरुद्दीन की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि फिर पीछे मुड़कर देखने का वक्त ही नहीं मिला।

वास्तव में संगीत किसी का नहीं होता। यह तो सिर्फ 'रियाज' (साधना) करनेवाले का होता है, जिसे प्रतिदिन करना चाहिए। यह किसी धर्म या समुदाय विशेष का नहीं। यह तो एक साधना है।

अप्रैल, 1956 में खाँ साहब को 'संगीत नाटक अकादेमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया—इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक (वाद्य संगीत) के लिए। सन् 1961 में भारत के राष्ट्रपति ने 'पद्मश्री' तथा नेशनल कल्चरल ऑर्गेनाइजेशन ने 'अखिल भारतीय शहनाई चक्रवर्ती' सम्मान से विभूषित किया। साथ ही उन्हें विश्व स्तर पर 'मास्टर ऑफ शहनाई' कहा गया।

मित्रता भी अजीबो-गरीब चीज है, जो कब, कैसे, किस-किस से हो जाती है, पता नहीं चलता। मुहब्बत में हर वक्त झुकना पड़ता है, सो खाँ साहब के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। वे अपने प्रिय मित्र विजय भट्ट एवं शंकर भट्ट की वर्ष 1959 में बहुचर्चित सुपर हिट फिल्म 'गूँज उठी शहनाई' में संगीत निर्देशन तथा शहनाई-वादन को नकार न सके। उस फिल्म में उन्होंने बतौर संगीत निर्देशक कार्य किया, जो अपने जमाने में खूब चली। 'गूँज उठी शहनाई' ने फिल्म जगत में तहलका मचा दिया था। उसके बाद 'सेहरा', 'एक दूजे के लिए' आदि के अलावा अनेक फिल्मों में उनकी शहनाई गूँजती रही। 'गूँज उठी शहनाई' के गीतों में : 'दिल का खिलौना हाय टूट गया, कोई लुटेरा आके लूट गया...' ने धूम मचा दी, जिसे आज भी गुनगुनाया जाता है।

आज भी हर संगीत समारोह में श्रोताओं से माँग आती है कि 'गूँज उठी शहनाई' के गीतों को अवश्य बजाइए, जिसे स्वरबद्ध किया था लता मंगेशकर ने। इस फिल्म के अलावा एक और कन्नड़ फिल्म, जो खाँ साहब को काफी पसंद करनेवालों में अव्वल थे। चेन्नेई (पूर्व नाम मद्रास) के प्रसिद्ध सिने प्रोड्यूसर विक्रम श्रीनिवास, जिनकी फिल्म ? 'सनाधि अपन्ना' थी, का संगीत निर्देशन भी उन्होंने किया।

समय के साथ-साथ हर इन्सान के बीते पल जब कभी याद आते हैं, तब मन में गुदगुदी-सी होने लगती है। तो कभी मन दर्द की गहराइयों में गोते लगाने लगता हैं। उन्हीं समयों में से एक नसरीन फिल्म प्रोडक्शन के बैनर तले बनी भोजपुरी फिल्म 'बाजे शहनाई हमार अँगना' का मुहूर्त शहनाई के बादशाह बिस्मिल्लाह खाँ द्वारा 28 अक्टूबर, 1979 को डुमराँव राज के बड़े बाग में संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि डुमराँव महाराजा बहादुर कमल सिंहजी थे। उस समय उन्होंने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्ष 1979-डुमरांव- फिल्म के मूहूर्त की तस्वीर- बिस्मिल्लाह खाँ, नाज, भारतभूषण, शशिभूषण)

जिन गीतों को संगीत दिया, वह भी मशहूर रहा।

बिस्मिल्लाह खाँ बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने एक साथ कई भूमिका निभाई। ध्वनि संगीतकार तो रहे ही, सन् 1958 में बनी फिल्म 'जलसा घर' में बतौर अभिनेता भी काम किया। सच वह कला को और कला उनके लिए समर्पित रही।

एक बार अमेरिका में कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए बिस्मिल्लाह खाँ पहुँचे। मंच बना हुआ था, उस पर दो वाद्य के कलाकार एक ही मंच पर आए हुए थे। शहनाई के साथ खाँ साहब और दूसरी तरफ 'ओबो' वादिका रोथवले (अमेरिका) पधारी हुई थीं।

साधारण-से वाद्य को लेकर मंच पर बिस्मिल्लाह खाँ ने शहनाई-वादन कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वाह, वाह से कला स्थल गुंजायमान हो उठा। कला-प्रेमी झूम रहे थे। इसी तरह मद्धिम होती शहनाई का सुर धीरे-धीरे अपने चहेतों के दिलों को छेड़े जा रहा था और जब समयवधि समाप्त हुई, खाँ साहब की शहनाई ने थोड़ी देर के लिए राहत पाई।

'ओबो' की धुनों के साथ कला-प्रेमियों के दिलों में दाखिल हुई ओबो वादिका रोथवले ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वाहवाही उन्होंने भी खूब बटोरी, क्योंकि वह अमेरिकी वाद्य था। दोनों कलाकारों ने बारी-बारी से कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

दोनों कलाकार कार्यक्रम प्रस्तुति के बाद आपस में चर्चा कर रहे थे वाद्यों पर। उस बीच रोथवले ने कहा, ''खाँ साहब, शहनाई तो बहुत साधारण वाद्य है और इसे मैं आसानी से बजा सकती हूँ।''

मंद मुस्कान भरते हुए खाँ साहब ने अपने एक सहयोगी को इशारा करते हुए एक शहनाई अमेरिकी वादिका को सौंपने को कहा।

शहनाई को लेकर रोथवले फूँके जा रही थीं। साँस फूलने लगी, चेहरा लाल हो गया, फिर भी शहनाई बजा नहीं पाई और अंततोगत्वा मायूस होकर उसे लौटा दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खाँ साहब अपने सहयोगी से बोले, ''जाओ, इसे धो लाओ।'' जब (रोथवले के वाद्य को) अमेरिकी वाद्य धुलकर आया उन्होंने उसे बड़े प्रेम से अपने होंठो से छुआते हुए प्रस्फुटित कर दिया—मार्मिक दर्दीले गीतों की शास्त्रीय धुन। यह दृश्य देखकर रोथवले अवाक् रह गईं कि मैं बिस्मिल्लाह खाँ की साधारण-सी शहनाई को नहीं बजा सकी और ये हैं कि मेरे वाद्य को इतने सहज भाव से बजा दिया, वह भी अपनी शास्त्रीय वाद्य शैली में।

''धन्य हैं आप। धन्य है आपकी वादन-क्षमता।'' कहते हुए रोथवले ने एक शहनाई खाँ साहब से माँगी। इस पर खुश होकर एक शहनाई, जो अतिरिक्त थी, उन्हें सौंप दी।

खाँ साहब—'रोथवलेजी, मेरा भी आपसे एक आग्रह है कि एक अपना वाद्य हमें भी दीजिए, ताकि मैं अपने देशवासियों को भी सुनाऊँ।''

रोथवले- ''यह कैसे संभव है? इसकी कीमत बहुत है।''

खाँ साहब- ''देखा आपने, 'हमारा दिल और है, तुम्हारा दिल कुछ और है।'' हम हिंदुस्तानी दिलवाले होते हैं। अगर प्रेम से कोई जान भी माँगे तो हाजिर है। खैर, ठीक है, हम उदार भाव के हैं, तभी तो आपका वाद्य भी बजा दिया। शहनाई , जो कम मूल्य पर बना वाद्य अवश्य है, पर इसको बनाना तथा तराशना उतना ही मुश्किल है। फिर भी, विश्व के कोने-कोने में लोग इसे बजा सकें, इसका प्रसार हो सके, यही हमारी इच्छा है।''

बात कुछ ऐसी है, जो दिल को लग जाए। इसी तरह की बात है। मुग्गबन बीबी बडे प्यार से खाँ साहब का सिर रात में दबातीं। सुबह के चार बजे जगती थीं तो उनका हाथ अपने पतिदेव उस्ताद के सिर पर रहता था। वे उन्हें बेइंतहा मुहब्बत करती थीं।

मुग्गन बीबी के मरने के बाद खाँ साहब अंदर-ही-अंदर टूट गए थे, जिन्हें किसी तरह उनके बच्चों ने सँभाला। काफी समझाया गया। थोड़े सँभले तो जरूर, मगर दिन में कई बार पान खानेवाले खाँ साहब, जो मुग्गन बीबी के पान लगाकर देने पर पान खाते थे, ने पान खाना पूरी तरह से छोड़ दिया। होंठो की लाली हमेशा के लिए छिन गई। रह गई तो झील-सी गहरी आँखों में मुग्गन बीबी का प्यार, उनकी यादें, जिसके बाद यादों के साये में पूरी जिंदगी कट गई।

मुग्गन बीबी ने बीच में साथ तो छोड़ा, पर उनकी यादों को बिसराना नहीं चाहते थे खाँ साहब और अपने बिस्तर पर ही अपनी शहनाई रख ली। जब कभी याद सताए, बिछुड़न रुलाए तो एकमात्र सहारा शहनाई हौसला-अफजाई करती और जीने की राह दिखाती।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के अवसर पर 15 अगस्त, 1947 की लाल किले में आयोजित स्वाधीनता दिवस समारोह में जब खाँ साहब को शहनाई बजाने का निमंत्रण मिला तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन जब आयोजकों ने पैदल चलकर बजाने को कहा तो बिस्मिल्लाह खाँ ने साफ तौर पर मना कर दिया। काफी जद्दोजहद के बाद जब आयोजकों ने कहा, ''खाँ साहब, आपके लिए खुशी की बात है कि सबसे आगे चलकर आप संपूर्ण भारतवर्ष का नेतृत्व करेंगे और आपके पीछे राष्ट्रपति (डॉ. राजेंद्र प्रसाद), प्रधानमंत्री (पं. जवाहरलाल नेहरू), सरदार पटेल आदि चलेंगे।'' सारी बात सुनकर जनाब आखिर मान ही गए।

नवाब पटौदी कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। बिस्मिल्लाह खाँ खादी का कुरता-पाजामा, सिर पर खादी की ही टोपी, शहनाई बजाते हुए चल रहे थे। उनके आगे एकमात्र औरत सिर पर कलश लिये सगुन (शुभ) के लिए आगे-आगे चल रही थी। फिर क्या, दृश्य देखने लायक था, मानो सारे हिंदुस्तानी उनके पीछे चल रहे हों। उस वक्त मनोहारी दृश्य। देखते ही बनाता था। खाँ साहब अपने आपको काफी गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

हमारे देश में उत्सवों, पर्वों, वैवाहिक एवं शुभ मुहूर्तों पर अमीर-गरीब हर वर्ग के लोग शहनाई बजवाते है। भारत में वैवाहिक उत्सवों के दौरान लोक संगीत और लोकगीतों के माध्यम से भारतीय संगीत ने विश्व को लय व ताल दी है। नवाब पटौदी ने घोषणा की कि ''आज बहुत ही खुशी की बात है, हम आजादी का कार्यक्रम कर रहे है और खुशी के इस मौके पर लाल किले के इस दीवान-ए-खास में हम चाहेंगे कि बिस्मिल्लाह खाँ साहब शहनाई बजाएँ।'' उसके बाद शहनाई का सुर साधा खाँ साहब ने और खूब जमकर शहनाई बजाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिस्मिल्लाह खाँ ने अपनी शहनाई की धुनों एवं उसके रागों से पूरी दुनिया की सैर कर लोगों का दिल जीत लिया था। उस्ताद का देश से होकर विदेशों में प्रवेश का सिलसिला सन् 1962 से शुरू हुआ, जब वे अफगानिस्तान होते हुए काबुल गए, फिर पाकिस्तान में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया, तत्पश्चात् स्वदेश लौटे।

बात उन दिनों की है, जब बिस्मिल्लाह खाँ, जिन्होंने सिर्फ हवाई जहाज का नाम भर सुना था, उन्हें क्या पता था कि एक दिन उन्हें भी हवाई जहाज में बैठकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यात्रा करनी पड़ेगी। वे हवाई जहाज की यात्रा से घबराते थे, लेकिन होनी तो होकर ही रहती है और जिसे विश्व-विजेता होना लिखा हो, उसे भला कौन रोक सकता था।

भारत सरकार ने उनके पास यह खबर भिजवाई कि वह उन्हें विदेश भेजना चाहती है। काफी आग्रह करने पर उन्होंने लाचारीवश स्वीकार किया जरूर, लेकिन अपनी कुछ शर्तें रख दीं। पहली शर्त- मैं स्वयं अकेले नहीं जाऊँगा। मेरे साथ आठ कलाकार और भी जाएँगे। दूसरी शर्त यह है कि विदेश यात्रा के पूर्व इजारत (तीर्थस्थल) के लिए बगदाद जाने का प्रबंध किया जाए। सरकार द्वारा दोनों शर्तें मान ली गईं और यहीं से दो अवसर एक साथ मिले- एक तरफ विदेश यात्रा, दूसरी तरफ हवाई जहाज से यात्रा करने का अवसर।

सन् 1965 में हवाई जहाज द्वारा लंदन इडेनबर्ग होते हुए, भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ बगदाद होते हुए दिल्ली पहुंचे और वहाँ से अपर इंडिया एक्सप्रेस (14 डाउन, अब 3014 डाउन) ट्रेन से प्रथम श्रेणी में बैठकर वाराणसी पहुंचे। खाँ साहब को 'इंडियन कौंसिल ऑफ कल्चर रिलेशंस' द्वारा प्रायोजित करके अफगानिस्तान भेजा गया।

तत्कालीन रेल मंत्री नीतीश कुमार ने 'भारत रत्न' से सम्मानित तमाम लोगों के लिए बेहतरीन तोहफा दिया था— प्रथम श्रेणी वातानुकूलित सभी गाड़ियों में यात्रा करने के लिए आजीवन रेल पास। सबसे अहम बात तो यह है कि 13 अगस्त, 2003 की सुबह शहनाई उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ को कार्ड के रूप में पास देते वक्त-घोषणा की थी, जिसमें यात्री के साथ एक परिचर भी चल सकता है। खाँ साहब को बेहद प्रसन्नता हुई थी।

बाबा संगीत को इबादत मानते थे। कहते थे, ''संगीत इबादत नहीं तो केवल बैंड बाजा समझिए।'' वर्ष 2000 में उनकी दत्तक पुत्री बनी व प्रख्यात शास्त्रीय गायिका शोभा घोष ने बताया, ''बाबा केवल सुर के कायल थे। उनके व्यक्तित्व में इतना संगीत बसा हुआ था कि सुर के रस के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता था। वे काफी गरम मिजाज के व्यक्ति थे। कोई भी दस बार सोचकर ही उनके सामने जाया करता था। पर हाँ, यदि आप सुरीले हैं तो फिर कोई दिक्कत नहीं, कभी भी जा सकते हैं और गाना सुना सकते हैं। उनका कहना था, ''बनारस का बना-बनाया रस संगीत में आसानी से मिलता है। इसीलिए बनारस बनारस है और वह मुझमें तुझमें मिला है। इसलिए मैं तुम्हारे साथ जुगलबंदी करूँगा।'' मैं घबरा जाया करती थी कि कैसे इतने बड़े कलाकार के साथ जुगलबंदी कर पाऊँगी। मुझे उनकी दत्तक पुत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।'' आखिरी रस्म के मौके पर भी वे मौजूद थीं।

जब संकटमोचन मंदिर व कैंट रेलवे स्टेशन पर बम विस्फोट हुए तो इस घटना को लेकर उस्ताद इतने क्षोभ में थे कि आतंकवादियों को बहुत कुछ कह डाला, आतंकवादियों का कोई जाति-धर्म नहीं होता। बोले अमाँ यार, हममें इतनी ताकत है कि दो-चार आतंकवादियों को बगल में दबा सकते हैं। नालायक काफिर हैं।'' यह खाँ साहब का मानव-प्रेम ही तो था, जो खुद को रोक न सके।

हे जनमानस के दर्द सहनेवाले संगीत-पुरुष। आपके लिए कोई शब्द नहीं बचा जो कहा जाए। आतंकवादियों द्वारा किए गए विस्फोट में मरे लोगों के शोक में अपना आखिरी जन्मदिन नहीं मनाया। धन्य हैं आप, धन्य है आपकी कृति, जिसने आपको हमेशा महापुरुषों की गाथाओं में अंकित कर दिया।

गहरी धार्मिक आस्था के साथ-साथ देशभक्ति की भावना उस्ताद साहब में कूट-कूटकर भरी हुई थी। अपने अल्लाह के साथ ही वह माँ सरस्वती के भी अनन्य भक्त थे। उन्हें बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी और गंगा से गहरा लगाव था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब एक अमेरिकन विश्वविद्यालय ने अपने यहाँ स्थायी रूप से विश्वविद्यालय का संगीतज्ञ बनने का प्रस्ताव भेजा तो उस्ताद ने विनम्रतापूर्वक कहा कि वह अमेरिका तभी आ सकते हैं, जब वह अपनी माँ गंगा को भी साथ ला सकें।

''गाँव में जिसे पिपही कहते हैं, पिपही नाम सुना है ना... उसी का परिष्कृत रूप है शहनाई। उत्तर मुगल काल के साजों में एक शहनाई भी है।'' गुरु-शिष्य परंपरा का पालन करने वाले बिस्मिल्लाह ने अपनी पहचान विश्व में बना ली। नली वाले सुषिरवाद्य यंत्रों में उत्तर भारत का सर्वश्रेष्ठ वाद्य शहनाई है जिसका सहयोगी वाद्य-दुक्कड (खुदरक), मंजीरा तथा रीपिट शहनाई जो दुहराता है। बिस्मिल्लाह ने भोजपुरी ऋतुगीत, मांगलिक गीत, छठ गीत, बारहमासा, झूमर, प्रेम मुलक-गीत, बिरहा आदि पर अपनी धुन देकर दुनिया को अपना मुरीद बनाया।

''अमाँ यार, क्या बात करते हो—दुनिया एक रंगमंच है और हम सब कठपुतली...। अपने-अपने करतब दिखाकर परदे के पीछे छिप जाएँगे। ये भी सोचनेवाली बात है कि मेरे पहले भी कई कलाकार आए, अपनी कला का दीवाना बनाकर चले गए। फिर भी आज वे कलाएँ दिनोंदिन पनप रही है।

घराना के बारे में पूछे जाने पर उस्ताद बताते है कि ''घराना कोई चीज नहीं, बल्कि यह एक माध्यम है, संगीत की पारिवारिक पृष्ठभूमि है। मेरा न तो कोई घराना है, न कोई ठिकाना। मेरा तो रियाज ही सब कुछ है। घराना कोई भी हो तुम अच्छे हो, तुम्हारे घरवाले अच्छे, तुम्हारे पास जो अच्छा गा रहा है वह हो गया घराना।''

रिक्शा पर बैठकर दूर-दूर तक बनारस में घूमनेवाले उस्ताद बीच बाजार में रिक्शा, रूकवाकर लोगों से मिलते-जुलते थे। मासूम बच्चों की तो जैसे जश्न-ए-बारात होती थी। रिक्शा रुक गया, खाँ साहब उसी पर घंटों बैठे रहते थे। लोगों का हुजूम उमड़ पड़ता। एक-एक कर सबकी बातों का जवाब देते रहते। तो कोई उसी में कहता, ''उस्ताद , एक बार शहनाई सुना दीजिए।'' फिर क्यात, शुरू हो गई। वहीं शहनाई लोगों का दिल रह गया, बच्चे गौर से देखते और सुनते रहते थे। यह वही बनारस है, जहाँ विश्व स्तर के लोग आते हैं। वहीं इस जगह की महत्ता ही कुछ और होती है। इस बाबत जब मैंने उस्ताद से पूछा कि ''आखिर क्यों रिक्शा पर आपको इतना अच्छा लगता है?'' तो वे कहते, ''अरे बेटा, ये कौन सी चौंकनेवाली बात हैं। रिक्शा ही एक ऐसी सवारी है, जो बड़ी-बड़ी सड़कों से लेकर गलियों तक में आराम से जाती है। और हाँ! देखो न, कितना अच्छा लगता है, जब रिक्शा चालक से बात करते-करते मंजिल आ जाती है। रास्ता कब खत्म हुआ, पता ही नहीं चलता। मेहनतकश रिक्शा चालकों को भी दो रुपए मिल जाते हैं।'' लेकिन रिक्शा खींचनेवालों की उम्र ढलने पर होनेवाले दर्द पर उस्ताद की आँखें छलक आती थीं।

बचपन होता ही बहुत गुस्ताख है, जो हर पल खुद को याद कर इन्सान अतीत में डूब जाता है। अपने अहाते के चबूतरे पर बैठकर बच्चों की तरह दिलवाले खाँ साहब सबको अपने बचपन से लेकर जवानी तक की, डुमराँव से बनारस और बनारस से देश-विदेश की चर्चाएं करते नहीं थकते थे। कभी-कभी तो रो पड़ते, कहते, ''कभी इसी मिट्टी में बचपन में खेला, आज केवल इसे नमन करने ही आ पाता हूँ।'' दर्जनों बच्चों की टोलियाँ उनके इर्द-गिर्द मंडराती रहतीं। खाँ साहब उन बच्चों में अपना बचपन देख दस-दस के, पाँच-पाँच के नोट खूब बाँटते और कहते, शाम को फिर आना, मलाई खिलाऊँगा। जाना तो दूर, उन्हीं की देह पर आस-पास मचलते रहते। पर अब वह बात कहां—'दादा आ गए! दादा आ गए!'

जमाने से परिवार ज्यों-ज्यों बढ़ता है, उसमें बिखराव आता जाता है। कितने लोग तो अपने परिवार और बेटों को समेटकर रख नहीं पाते। वहीं उस्ताद अपने तथा अपने भाई शम्सुद्दीन के मरने के उपरांत दोनों भाइयों के संयुक्त परिवार को जीवनपर्यंत चलाते रहे।

एक लंबे परिवार के कुनबे यानी लगभग 100 से अधिक सदस्यों के संयुक्त परिवार को एक साथ लेकर चलनेवाले उस्ताद पूरी दूनिया में एक मिसाल रहे। आखिर कैसे चलाते थे परिवार? कौन सा पाठ पढ़ाया परिवारवालों को? उनकी मिल्लत ऐसी, जिसे आस-पास के लोग भी देख दाँतों तले अगुंली दबा लेते। घर में छोटे से लेकर बड़ो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का खयाल रखना, हर एक-दूसरे को जिम्मेदारी सौंपकर परिवार रूपी नाव की एक कील को भी गिरने नहीं दिया।

बनारस का मकान, सोलह छोटे-छोटे कमरे, एक रसोईघर तो नीचे पुरस्कारों से सजा एक बड़ा कमरा है, जो अतीत से वर्तमान तक का बंद जुबां से बयां करता है। वैसे में एक साथ, एक व्यवहार के साथ पालन-पोषण करने वाले उस्ताद दुनिया के कई स्थानों में घूम आए, मगर अपने इतने लंबे परिवार के हर एक सदस्य का नाम जुबान पर रहता था।

अपने अब्बाजान के अव्यवस्थित घर को संभालनेवाली जरीना बेगम कहती है, ''मेरे अब्बा बचत में विश्वास नहीं करते थे। जो भी कमाते, दूसरों को दे देते थे, जिसमें जरीना को घर चलाने के लिए कुछ पैसे दे देते तो बाकी के पैसे कई लोगों में बाँट देते थे। उनका संगीत से ही आरंभ और समाप्त होता था।''

प्रख्यात शास्त्रीय गायिका शोमा घोष (उस्ताद की दत्तक क पुत्री) बताती है कि बाबा संगीत को इबादत मानते थे। कहते थे, ''संगीत इबादत नहीं तो केवल बैंड-बाजा समझिए।'' संगीत, रियाज की बातें शोभा ज्योंही छेड़ती, बडे खुशी के साथ कहते थे, ''बेटी, जब भी रियाज करना होता है तो मैं बालाजी मंदिर या मस्जिद की तरफ अपनी शहनाई घुमा देता हूँ। मैं जानता हूँ कि ऊपरवाला सुनता है। इसी को इबादत कहते हैं।'' बाबा केवल सुर के कायल थे। उनके व्यक्तित्व में इतना संगीत बसा हुआ था कि सुर के रस के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता था।

दर्द में डूबी शहनाई के जादूगर तथा अपनी धुन से हिंदू-मुसलिम संप्रदाय के बीच की अद्भुत कड़ी खाँ साहब ने बनारस के हैरिटेज अस्पताल में 21 अगस्त, 2006 को रात्रि 2.20 बजे अंतिम साँस ली। वे चिरनिद्रा में सो गए, जिन्हें बनारस में जमाने की मशहूर नर्तकी उमराव जान की मजार से थोड़ी दूर वाराणसी के कब्रिस्तान फातमान में दफनाया गया।

एक बार बनारस की गुलजार रहनेवाली गलियों में घूमते रो पड़े थे खाँ साहब और कहा था, ''इन्हीं गलियों में कभी सिद्धेश्वरीबाई, विलाधरी, बड़ी-छोटी मोतीबाई और राजेश्वरीबाई पूरब अंग की गायिकाओं का गुलजार बसेरा हुआ करता था, पर आज वीरान पड़ा है। इसी वीरानगी में शामिल उस्ताद की गली, जहाँ एक तेज दीये के बुझने के बाद शहनाई तो बजेगी, मगर उसे बजानेवाला सूरमा अब खुली आँखों में नहीं, बंद आँखों में नजर आएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुर बनारस

पं. विजय शंकर मिश्र

[उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ जन्म शताब्दी वर्ष पर संगीत नाटक अकादेमी ने बनारस में 19-22 मार्च 2016 तक ***सुर बनारस*** *नामक कार्यक्रम का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम को पण्डित विजयशंकर मिश्र ने देखा-सुना और समझा इसी कार्यक्रम पर आधारित उनका आलेख* ***सुर बनारस*** *यहाँ प्रस्तुत है—संपादक]*

भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का नाम अब किसी परिचय का मोहताज नही रहा। शहनाई के पर्याय बन चुके इस महान संगीतकार के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी ने बनारस में *सुर बनारस* नाम से एक चार दिवसीय संगीत का आयोजन किया। यहाँ यह विशेष रुप से उल्लेखनीय है कि अकादेमी के अध्यक्ष पद पर जब से शेखर सेन आसीन हुए हैं, इस तरह की सृजनात्मक गतिविधियों में तेजी आ गई है। बनारस में आयोजित इस समारोह में विभिन्न संगीत विधाओं के अनेक नये-पुराने संगीतकारों ने अपने-अपने ढंग से खाँ साहब को संगीतांजलि अर्पित की। राजेन्द्र प्रसन्ना का बांसुरी वादन एक अलग सुरीली ऊंचाई लिए हुए था। उनके युवा पुत्र ऋषभ प्रसन्ना ने भी अपने सुरीलेपन से आकर्षित किया। विलंबित एकताल में जहाँ उन्होंने गांभीर्य और ठहराव का परिचय दिया वहीं द्रुत त्रिताल में अपनी तैयारी से चमत्कृत किया। खाँ साहब की बजाई हुई पूरब अंग की धुन को भी उन्होंने मनोयोग पूर्वक बजाया। तबले पर ललित कुमार ने इनका अच्छा साथ दिया।

अब्दुल सलाम नौशाद ने हिन्दुस्तानी शैली में अच्छा क्लेरोनेट वादन किया। उन्होंने राग वागेश्री की अच्छी प्रस्तुति की। रचनायें विलंबित एकताल,आड़ाचैताल और द्रुत त्रिताल में निबद्ध थीं। ठुमरी और होली का गायन भी पसंद किया गया। मुकेश राजदाया ने तबले पर इनका साथ निभाया। प्रमोद गायकवाड़ ने सपरिवार सुंदरी वादन किया। इनके साथी कलाकारों में नम्रता गायकवाड़ (सुंदरी), सीमा प्रमोद गायकवाड़ (सुंदरी), नितिन गायकवाड़ (तबला), केदार जाधव (नगाड़ा) और प्रेरणा सीमा गायकवाड़ (सुर सुंदरी) थे। विलंबित एकताल और द्रुत त्रिताल में निबद्ध गतों के अलावा धुन की प्रस्तुति भी अच्छी रही।

छन्नूलाल मिश्र ने हंसध्वनि से अपने गायन का शुभारम्भ किया। बोल थे—*आये सजन मोरे मंदिरवा।* पं. मिश्र आज होली के रंग में रंगे हुए थे। उन्होंने झपताल में एक ठुमरी सुनाई—*आये खेलन होली संग लिए ब्रज गोरी*। उन्होंने पीलू में भी होली के रंग बिखेरे-*बरजोरी करो ना मोसे होली में।* उनकी अगली होली थी-देखो नंदलाल। खेलें मसाने में होरी दिगम्बर में जहाँ भगवान शंकर के होली खेलने के प्रसंग का चित्रण था, वहीं डिमिक-डिमिक डमरु कर बाजे-में भगवान शंकर के नृत्य का। पं. मिश्र हर प्रकार के श्रोताओं को काबू मे करने की कला में माहिर है। आज भी उन्होंने श्रोताओं को झूमने पर विवश कर दिया।

बाँसुरी फूंक का एक श्रमसाध्य साज़ है, और पं. हरिप्रसाद चौरसिया इसके वयोवृद्ध उपासक। पं. चौरसिया ने इस शाम झिंझोटी की मनभावन प्रस्तुति करके यह सिद्ध कर दिया कि बाँसुरी पर उनकी पकड़ आज भी बरकरार है। विजय घाटे (तबला) एवं भवानी शंकर (पखावज़) की तेजतर्रार संगति के बीच भी पं. चौरसिया ने अपनी ऊंचाई कायम रखी। सुरीले आलाप के बाद मत्ततताल में उनका वादन उनकी श्रेष्ठता को सिद्ध करनेवाला था। पी. विजय गोपाल का कर्णाटकीय शैली का बाँसुरी वादन भी काफी आकर्षक रहा। पदमाशंकर की वायलिन एवं आर.शंकर नारायणन की मृदंगम की संगति में उन्होंने अत्यंत सुरीली एवं सुमधुर प्रस्तुति की। अपने वादन का समापन उन्होंने यमन कल्याण में निबद्ध एक कृष्ण भजन से किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भीमण्णा जाधव का सुंदरी वादन भी खूब पसंद किया गया। इन्होंने विलंबित एकताल और द्रुत त्रिताल में अपनी रचनायें प्रस्तुत की। पुंडरीक कृष्ण भागवत ने तबले पर एवं यशवंत जाधव ने सुंदरी पर इनका साथ निभाया। मिश्र खमाज में उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ की बजाई हुई एक धुन से इन्होंने अपने वादन को विराम दिया। सिक्किल माला चन्द्रशेखर का कर्णाटकीय शैली का बाँसुरी वादन उनकी प्रतिभा का परिचायक था। आनन्द भैरवी और मिश्रचापु ताल में श्यामा शास्त्री की रचना और फिर मुत्तुस्वामी दीक्षितार की भावपूर्ण रचनायें प्रस्तुत करने के बाद सेमनगुडी श्रीनिवास द्वारा स्वरबद्ध एक रचना भी उन्होंने सुनाई–*तुंग तुरंगे गंगे*।इन्होंने स्वाति तिरुनाल की विरेश्वरी रचना से वादन का समापन किया जो सिंधुभैरवी और रुपक ताल में निबद्ध थी। संतोष मिश्र ने सारंगी पर राग बसन्तमुखारी को क्रमशः विलंबित एकताल, 11 मात्रा और तीनताल में प्रस्तुत किया। इन्होंने भैरवी में एक धुन भी बजाई। तबले पर कुबेर नाथ मिश्र ने काफी अच्छा वादन किया। प्रो. मोहिनी मोहन पटनायक का हिन्दुस्तानी शैली में प्रस्तुत बाँसुरी वादन भी रसमय था। इन्होंने आठ और नौ मात्राओं में अपनी रचनायें प्रस्तुत की। अपने वादन का समापन इन्होंने एक धुन से किया।

पं. कृष्णाराम चौधरी और ज़ामिन खाँ की युगल शहनाई के साथ सोमा घोष का उपशास्त्रीय गायन आकर्षक रहा। सोमा ने राग विहाग के अत्यन्त लोकप्रिय द्रुत ख्याल–*लट उलझे सुलझा जा रे बालम से* आगाज़ किया। बाद में उन्होंने एक तराना भी सुनाया। *डगर बीच कैसे चलूं मग रोके कन्हैया*–ठुमरी भी और *मोहे पनघट पे नन्दलाल छेड़ गयो रे*–जैसा फिल्मी गीत भी। सोमा अच्छा गाती हैं, उन्हें खाँ साहब का सान्निध्य भी मिला था। पं. कृष्णराम चौधरी का शहनाई इस कार्यक्रम का धवल पक्ष था। वे खाँ साहब के अनन्य भक्त है। उन्होंने खाँ साहब को बहुत ही आत्मीयता के साथ अश्रुपूरित नयनों से स्मरण किया। उनका प्रभावशाली वादन इस कार्यक्रम को एक अलग ऊंचाई दे गया।

नित्यानंद हल्दीपुर का भावपूर्ण और सुरीला बाँसुरी वादन काफी आकर्षक रहा। उन्होंने मारवा की अत्यन्त सशक्त प्रस्तुति की। मारवा बाँसुरी की दृष्टि से कठिन राग है,लेकिन नित्यानन्द ने इसे पूरी शुद्धता और सजगता से प्रस्तुत कर अपनी काबिलियत का अच्छा परिचय दिया। तबले पर विनोद लेले ने काफी सूझ-बूझ के साथ इनकी संगति की। कादरी गोपालनाथ का कर्णाटकीय शैली का सैक्सोफोन वादन भी काफी आकर्षक रहा। अपने संगत कलाकारों के साथ मिलकर उन्होंने महफिल पर अपना रंग जमा दिया। अपने कार्यक्रम का समापन इन्होंने प्रसिद्ध भजन–*पायो जी मैंनें राम रतन धन पायो*–से किया। ऋत्विक सान्याल का आडम्बरहीन सादगीपूर्ण ध्रुपद गायन भावविभोर करनेवाला था। यमनकल्याण में भावपूर्ण आलाप के बाद उन्होंने बसंत में एक धमार सुनाया–*केसर घोल कहाँ जइहो ?* इसके बाद पुष्टिमार्गीय परम्परा का एक द्रुत लय का ध्रुवपद उन्होंने सूरताल में सुनाया जो राग काफी में निबद्ध था। उल्लेखनीय है कि काफी जैसे रागों में ध्रुपद बहुत कम सुनने को मिलते हैं। मारधाड़ के पर्याय बन चुके ध्रुपद को पं. सान्याल ने जिस रसमय अंदाज़ में प्रस्तुत किया वह प्रशंसनीय है।

मालिनी अवस्थी का उपशास्त्रीय गायन लोगों को आकर्षित करने में सफल रहा। उन्होंने खंबावती की एक होली से शुरु किया—*होली खेलो नन्दलाल।* उसके बाद गारा में एक दादरा सुनाया— *भरी आई रे गोरिया के नयनवा।* इसके बाद *उड़त अबीर गुलाल होली* के बाद उन्होंने वियोग श्रृंगार की कजरी—*आग लागे सैंया की सुरतिया* और संयोग श्रृंगार की चैती—*सोवत निंदिया जगाये हो रामा भोर हो भोर*–को भावपूर्ण अंदाज़ में प्रस्तुत किया। हारमोनियम पर धर्म नाथ मिश्र, तबले पर अभिषेक मिश्र और सारंगी पर मुराद अली ने इनकी अच्छी संगति की। जी.कोदनरमन का नागस्वरम वादन और अजय प्रसन्ना का बाँसुरी वादन लोगों पर अपनी छाप छोड़ने में सफल रहा। अजय ने मध्य एवं द्रुत त्रिताल में अपनी रचनायें प्रस्तुत की। तबले पर ललित कुमार और बाँसुरी पर अतुल शंकर ने अच्छा साथ निभाया। रेवती साकलकर और ममता शर्मा का गायन भी आकर्षक रहा। रेवती ने शुरुआत ठुमरी से की–पिया मिलन की आस। कबीर के एक निर्गुण को उन्होंने दादरे की शक्ल में गाया—*तड़पे बिन बालमा मोरा जिया।* इन्होंने होली भी सुनाई—*मो पे डारो ना रंग गिरधारी रे।* रेवती के बोल बनावा का अंदाज़ आकर्षक है। तबले पर कुबेर मिश्र ने सहयोगपूर्ण अच्छी संगति की। ममता शर्मा ने भैरवी की ठुमरी से आगाज़ किया— *नाहक लाये गवनवा,* उसके बाद पीलू में एक दादरा— *लागी बयरिया मैं सो गई ननदी सैंया दुआरे से फिर गये,* और होली भी सुनाया–*आंखिन भरत गुलाल रसिया ना माने रे।*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर-बायें : गायन की प्रस्तुति मे सोमा घोष साथ में शहनाई पर कृष्णा राम चौधरी और जामिन खान

ऊपर-दायें : संबोधित करते संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष शेखर सेन

नीचे : कार्यक्रम का आनंद लेते रसिकजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर-बायें : गायन की प्रस्तुति देती मालिनी अवस्थी

ऊपर-दायें : कथक नृत्य की प्रस्तुति में मालिनी एवं कमलिनी

नीचे : ध्रुपद गायन की प्रस्तुति में ऋत्विक सान्याल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

i Memorial College Of Education Bantalab ammu

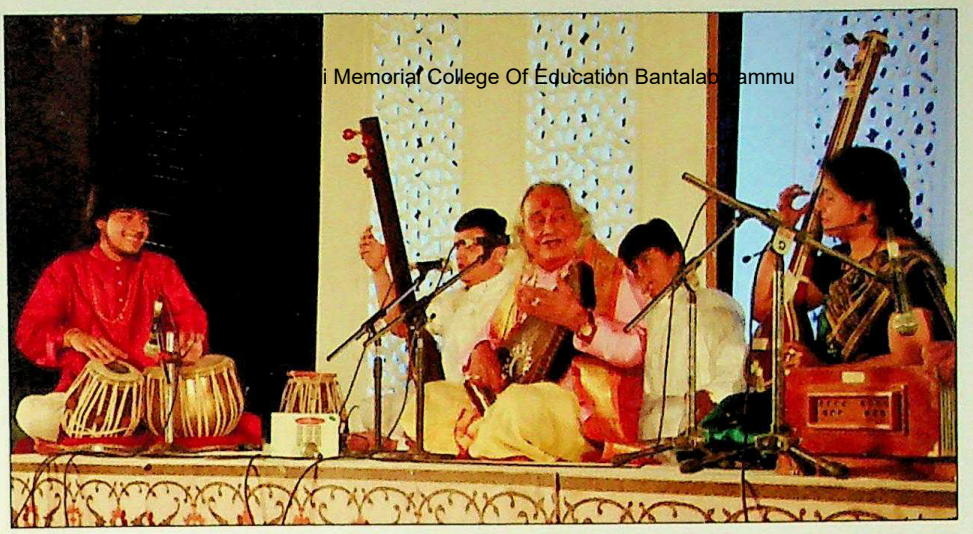

ऊपर : हिंदुस्तानी गायन की प्रस्तुति में छन्नूलाल मिश्र

मध्य : कथक की प्रस्तुति में विशाल कृष्ण

नीचे : कार्यक्रम में उपस्थित रसिकजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर : बाँसुरी वादन की प्रस्तुति देते नित्यानंद हल्दीपुर

नीचे : बाँसुरी की प्रस्तुति में हरिप्रसाद चौरसिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ममता की गायकी काफी संभावना पूर्ण है। इनके साथ तबले पर नन्द किशोर मिश्र, हारमोनियम पर आनन्द किशोर मिश्र और बाँसुरी पर अतुल शंकर ने अच्छा साथ निभया।

इस समारोह में कथक नृत्य की भी चार मनभावन प्रस्तुतियां हुईं।

बनारस घराने के नाम से कथक नृत्य की दो शाखायें हैं। एक तो जानकी प्रसाद घराना और दूसरा सुखदेव महाराज घराना। इस आयोजन में इन दोनों शाखाओं के कलाकारों का नृत्य देखने का सुयोग मिला।

विदुषी नलिनी और कमलिनी जानकी प्रसाद घरानें की प्रतिष्ठित नृत्यांगनायें है। इन दोनों बहनों ने मौसम के मिज़ाज को देखते हुए चैताल में निबद्ध एक ध्रुवपद से अपने कार्यक्रम का शुभारंभ किया— *चंद्र ललाट भोला।* इसके अंतर्गत इन बहनों ने कई शिवपरनों की रोमांचक और आकर्षक प्रस्तुति की। इसके बाद बारहमासा, होली— *मत मारो कनक पिचकारी और होली-खेले नंदलाल बिरज में-* में इन दोनों बहनों ने अभिनय की रंगीन छटायें पेश की। द्रुत त्रिताल में कथक के तकनीकी पक्ष को इन दोनों बहनों ने पूरी निपुणता के साथ पेश किया। भावपूर्ण अभिनय स्पष्ट पदाघात और सुंदर हस्तमुद्रायें इनकी विशेषता है। इनके होली के रंगों ने सबको सराबोर कर दिया।

सौरव और गौरव मिश्रा- बनारस घराने में सुखदेव महाराज घराने में उदीयमान नर्तक हैं। आजकल ये पं. बिरजू महाराज के सान्निध्य में लखनऊ घराने का नृत्य सीख रहें है। सौरव और गौरव ने भी अपने नृत्य की शुरुआत एक शिव वंदना से की। उसके बाद त्रिताल में कई चमत्कृत करती कई रचनायें प्रस्तुत की। अपने प्रथम गुरु पं. रविशंकर मिश्र द्वारा रचित साढ़े 6 मात्रा के काली ताल में भी दोनों युवा नर्तकों ने कई सुंदर रचनाओं की आकर्षक प्रस्तुति की। सौरव और गौरव युवा है अतः स्वाभाविक तौर पर उनके नृत्य में तेजी और तैयारी है। इस परंपरा के महान् कलाकार पं. गोपीकृष्ण की झलक भी इनके नृत्य में कई बार दिखाई दी। अपने नृत्य का समापन इन युवा नर्तकों ने आनंद तांडव से किया— *डिमिक डिमिक डमरु कर बाजे प्रेम मगन नाचे भोला।* इस रचना में शिव के विभिन्न रुपों में साथ साथ नंदी,आदि की मुद्राओं का सुंदर चित्रण किया। तबले पर शुभ महाराज और राम कुमार मिश्र तथा गायन पर प्रेम किशोर मिश्रा ने इनका अच्छा साथ दिया।

सुखदेव महाराज घराने के नये सितारे विशाल कृष्ण का नृत्य संभावनाओं से परिपूर्ण था। इन्होंने देवी वंदना से अपने नृत्य का शुभारंभ किया— *जय जय जगजननी देवी।* विशाल के घुंघरु का काम बहुत ही अच्छा है। इन्होंने सुखदेव महाराज,सितारा देवी, गोपीकृष्ण, मोहन कृष्ण की गई रचनाओं को पूरी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया। राधा-कृष्ण के गत भाव और मीरा भजन— *तुम बिन हमरी कौन खबर ले गोवर्धन गिरधारी* में विशाल ने सशक्त अभिनय प्रतिभा का परिचय दिया। विशाल ने थाली नृत्य को भी पूरी कुशलता से प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत उन्होंने विभिन्न बाँटों और लयकारियों का अच्छा प्रदर्शन किया। तबले पर इनके भाई कुशाल कृष्ण,गायन पर शक्ति मिश्र और सितार पर आनंद मिश्र ने इनकी अच्छी संगति की।

सितारा देवी की सुपुत्री जयंती माला-इस परंपरा की वरिष्ठ नृत्यांगाना हैं। इन्होंने कृष्ण वदंना *भजे ब्रजेक मंडलम्* पर भावपूर्ण अभिनय के साथ अपने कार्यक्रम का आगाज़ किया। धतक थुगां को जयंती ने विभिन्न अंदाजों में प्रस्तुत किया। सुखदेव महाराज और सितारा देवी सहित स्वयं जयंती माला का अपना अंदाज भी काबिल-ए-तारीफ था। गोपीकृष्ण के नायिका भेद को अपनी सृजनात्मकता का स्पर्श देते हुए जयंती ने सशक्त अंदाज में पेश किया। विदुषी जयंती माला ने इस चार दिवसीय समारोह का समापन जिस अंदाज में किया- वहा लम्बे समय तक लोगों को याद रहेगा। *जमुना बीच श्याम खेले होरी-पर* - होली नृत्य करते हुए जयंती ने विशाल कृष्ण और सौरव,गौरव को भी इस नृत्य में शामिल कर लिया। स्वाभाविक ही था इस प्रस्तुति का यादगार बन जाना।

इस सामारोह में जगदीश प्रसाद एवं समूह(शहनाई),हरी मोहन श्रीवास्तव (हिन्दुस्तानी बाँसुरी), लोकेश आनन्द (शहनाई), रुपक कुलकर्णी (हिन्दुस्तानी बाँसुरी), देवाशीष डे (हिन्दुस्तानी गायन), राकेश चौरसिया (हिन्दुस्तानी बाँसुरी), फतेह अली (शहनाई), दीपक शर्मा (हिन्दुस्तानी बाँसुरी), कृष्णा चक्रवर्ती (सितार), थिरुविया जयशंकर (नागस्वरम), सुखदेव प्रसाद मिश्र (हिन्दुस्तानी वायलिन) एवं संजीव तथा अश्वनी शंकर (शहनाई) का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

इस विशाल और भव्य आयोजन के लिए अकादेमी निश्चय ही बधाई की पात्र है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृति की यात्रा में नाट्य समागम

अकबर रिजवी

समकालीन भारतीय नाट्य प्रयोगों, परम्पराओं और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का उत्सव जिसे संगीत नाटक अकादेमी ने 'नाट्य समागम' नाम दिया था—9 जनवरी 2016 से दिल्ली में प्रारम्भ हुआ। आयोजन स्थल रवीन्द्र भवन परिसर—विशेष रूप से मेघदूत रंगशाला परिसर कुछ इस तरह सजा-संवरा था, गोया किसी परम्परागत शादी की तैयारी हो। प्रवेश द्वार पर लगभग थिरकते हुए कलाकारों का एक समूह *चेण्डा मेलम* के माध्यम से शरद ऋतु के किंचित सर्द वातावरण में उष्णता घोल रहा था। प्रवेश द्वार के ठीक सामने। 70 किलोग्राम का रावणमुखा और उसके अगल-बग़ल 50-50 किलोग्राम के विभीषण और इन्द्रजीत विराजमान थे। कहने को तो ये काठ के मुखौटे थे, लेकिन इनका वज़न और लम्बाई-चौड़ाई श्रोताओं/दर्शकों के लिए कौतूहल का कारण थे। कोई रावण का भारी-भरकम हाथ उठाकर देखने की कोशिश करता कि सचमुच हिलता-डुलता भी है या नहीं! कुछ उन कलाकारों के शारीरिक सौष्ठव की कल्पना में व्यस्त हो जाते, जो इन्हें धारण करता होगा। किसी कलाकार को यह विशाल काष्ठ-मुखौटा पहने हुए, मैं भी कम-से-कम एकबार देखना चाहता था। प्रसंगवश इस तथ्य की तरफ संकेत आवश्यक है कि ये विशाल मुखौटे बिसीपाड़ा की ऐतिहासिक लंका-पोडी जात्रा के मुख्य आकर्षण हुआ करते हैं। बिसीपाड़ा—उड़ीसा के कंधमाल ज़िले का एक गाँव, जिसकी ख्याति का बड़ा कारण 70 चरित्रों की अभिनय-परम्परा वाली यही जात्रा है। परम्परा तकरीबन दो सौ साल पुरानी है और लोग इसका श्रेय अँग्रेजों को देते हैं। आदिवासी समाज को संघटित करने के निमित्त सन् 1835 में अँग्रेजों ने यह जात्रा शुरू की थी, जो तब से अबाध रूप से अपना सफ़र तय करती रही है। बिसीपाड़ा का यह काष्ठ-मुखौटा नृत्य अपने ढब-ढाँचे में निराला है और प्राचीन यूनान में प्रचलित रही एक विशिष्ट नृत्य-परम्परा से साम्य रखता है। इस जात्रा की एक और खूबी है—इसमें राम, लक्ष्मण और सीता को छोड़ शेष सभी पात्रों के लिए काष्ठ-मुखौटा धारण करना अनिवार्य है। बहरहाल, रावणकाय मुखौटों के अलावा विभिन्न देवी-देवताओं और राक्षस आदि के छोटे-बड़े कुल 49 मुखौटों को प्रवेश द्वार के दाहिनी तरफ बड़े से पटल पर करीने से प्रदर्शित किया गया था। जबकि वाम-पक्ष में जंडियाला गुरु (अमृतसर) के ठठेरे तांबा-पीतल और कांसे के बर्तन बना रहे थे। धातुओं पर हथौड़ों की लयबद्ध थाप सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था गोया ये चेंडा-मेलम के साथ होड़ ले रहे हों! यह संगीत सचमुच अद्भुत था क्योंकि सामूहिक श्रम और सृजन की प्रक्रिया से इसकी उत्पत्ति हो रही थी। कोई धातु-पट्ट शनैः शनैः आकृति में बदल रहा था तो किसी का रूप संवारा जा रहा था। ताप और हथौड़े की ठोकरों से कुम्हलाए धातु की चमक लौटाने के उपक्रम किए जा रहे थे। सर्वांग निर्दोष होकर ठठेरों का यह अनुशासित श्रम प्रदर्शन-मंजूषा की शोभा बन रहा था। कर्मरत् ठठेरों के पास से जब-जब गुज़रा, निराला और केदारनाथ अग्रवाल याद आए—"मार हथौड़ा/कर-कर चोट!/लाल हुए काले लोहे को/जैसा चाहे वैसा मोड़!" (हथौड़े का गीत) और इस तरह अपना दिल भी इन शिल्पियों के 'गुरु हथौड़ा हाथ' का मुरीद होता गया। सम्भवतः यह पहला मौका था जब 'श्रम का संगीत' उसकी मिठास और उत्पत्ति का राज़—सबकुछ मेरे समक्ष इस अंदाज़ में प्रत्यक्ष था। यह अनुभव, जीवन का अनुभव था।

रावणमुखा के ठीक दाहिनी तरफ छोटे से मंच पर बिल्लू राम भट्ट और उनके साथी कलाकार लोकप्रिय संगीत की तान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर कठपुतली नचा रहे थे। कभी 'अंजन की सिटी पर म्हारो मन डोले' तो कभी किसी फिल्मी गीत का लोक-पूरित 'कॉकटेल' रंग-रसिकों को बरबस ही ठिठकने को मजबूर कर रहा था। गायक कोई प्रशिक्षित संगीतज्ञ नहीं था। वैसे भी राजस्थानी लोक का ठेठ अंदाज़ और लय इतना मनोहारी था कि सुर की चिंता सुनने वालों को नहीं थी। सब उस अनगढ़ (और कभी-कभी तो कर्कश भी) और अल्हड़ बोल के दीवाने थे। दुबली-पतली काठी पर लम्बोतरा चेहरा और चेहरे पर लम्बी-घनी राजस्थानी ऐंठ वाली मूँछों के स्वामी चतरू राम परम्परागत वेशभूषा (विशेष रूप से पगड़ी) में जिस तन्मयता और उछाह के साथ गाते थे, लोग बंध से जाते थे। उस छोटे से मंच के इर्द-गिर्द लोगों की भीड़ और तालियों की गड़गड़ाहटों से भी इसकी तस्दीक़ होती थी। बीच-बीच में इसी मंच से लद्दाख की लोक-गायिका सोनम सोपारी भी अपने साथियों के साथ समां बांध रही थीं। लद्दाख जैसी ठंडी जगह, जहाँ नदियाँ भी ठिठुरती हुई बहती हैं, वहाँ के गीत-संगीत में इतना पैनापन और धार, हम मैदानी इलाक़े के बाशिंदों के लिए सचमुच हैरत की बात थी। सोनम की आवाज़ में एक अलग ही क़िस्म का जादू था। गीत के बोल भले समझ में न आते हों, लेकिन वो टेर ही ऐसी थी कि महसूस होता था, मानो कोई माँ अपने बच्चे को बुला रही हो! और फिर लोग मंत्रबद्ध से खिंचे चले आते और सुर-लय के हिंडोले पर सवार हो जाते। सोनम के मुख से फूटती स्वर-लहरी में बर्फ से ढंकी पहाड़ की चोटियाँ और घाटी में ठिठकी नदी, दोनों बेहद बारीक अंतराल से आते-जाते प्रतीत होते थे। सुनने वाले के जह्नो-दिल पर एक ख़ास क़िस्म की रोमानियत हावी होने लगती और बर्फ पिघलने लगता। लोक का जादू सिर चढ़कर बोलने लगता।

दाहिनी तरफ़ एक और मंच था। यह मंच तुलनात्मक रूप से काफ़ी ऊँचा था। यह शहनाई का मंच था। सुषिर वाद्यों के शहंशाह का मंच तो ऊँचा होना ही चाहिए। मुमकिन है, एम्बियंस डिज़ाइन करते वक़्त वेद पाहुजा के ज़हन में यही बात रही हो! परम्परागत रूप से भी शहनाई का स्वर मंगल का स्वर है। मंदिर से लेकर विवाह तक; शहनाई एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में मौजूद होती है। शहनाई के बिना पूजन हो या विवाह, अधूरा ही महसूस होता है। शहनाई के शहंशाह भारत रत्न बिस्मिल्लाह खाँ ने तो बनारस के बालाजी मंदिर में ही शहनाई को साधा था। रंगकर्मियों और रंग-रसिकों के नज़रिए से देखें तो 'नाट्य समागम' भी एक क़िस्म का मांगलिक कार्य ही था। अत: शहनाई के बिना इसकी शोभा निश्चय ही प्रभावित होती और हम प्रदर्शन-परम्पराओं और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की झलक से भी बहुत हद तक महरूम ही रह जाते।

रवीन्द्र भवन लॉन के इन तमाम रंग-दृश्यों से रू-ब-रू होने के बाद आप जैसे ही मेघदूत रंगशाला परिसर में प्रवेश करते, बाँस के बड़े-बड़े टुकड़ों से बनी एक अस्थाई दर्शक दीर्घा नज़र आती। इसके ठीक सामने एक मंच बना था, जिस पर भटसिम्मर (मधुबनी, बिहार) के कलाकारों ने मोर्चा सम्भाल रखा था। ये लोग शहनाई जैसा ही एक सुषिर वाद्य 'रसनचौकी' बजा रहे थे। मिथिला में किसी भी मांगलिक कार्य का श्रीगणेश 'रसनचौकी' से ही होता है। अपनी व्याप्ति में यह शहनाई की ही तरह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधि सुषिर वाद्य है। मुहर्रम के महीने में 'रसनचौकी' यदि मुस्लिम मुहल्लों में बजती है तो दुर्गापूजा या अन्य धार्मिक आयोजनों में यह हिन्दू बस्तियों की रौनक बनती है। पहले शादी-ब्याह के मौकों पर रसनचौकी वादन आम था। लेकिन वक़्त के साथ-साथ लोगों के विचार-व्यवहार में आए बदलाव के कारण अब इन कलाकारों की पूछ पहले जैसी नहीं रही। बल्कि सच कहें तो यह विलुप्ति के कगार पर आ पहुँची है। रसनचौकी कलाकारों का गंवई संकोच और तल्लीनता सहज ही ध्यान आकर्षित करते थे। महेन्द्र राम के नेतृत्व वाली यह टोली जिस मंच से रसनचौकी बजा रही थी, उसी मंच से अंतराल के बाद कुपवाड़ा (कश्मीर) के मुश्ताक अहमद ख़्वाज़ा 'बच नग़मा' सुना रहे थे।

'बच नग़मा' वस्तुत: लोकनृत्य की ही एक विधा है, जिसमें सूफ़ियाना कलाम के साथ स्त्रीवेश में लड़के नृत्य प्रस्तुत करते हैं। बच नग़मा में जो 'बच' शब्द है, वह दरअसल 'बच्चा' को द्योतित करता है। 'बच नग़मा' का इतिहास भी बड़ा दिलचस्प है। कश्मीर में पहले 'हफ़ीज़ा नृत्य' का चलन था, जिसमें 'सूफ़ियाना कलाम' पर स्त्रियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नृत्य किया करती थीं। विशेष रूप से शादी-ब्याह के मौकों पर 'हफ़ीज़ा नृत्य' की परम्परा थी। लेकिन ऐन्द्रिकता के अतिरेक के कारण 20वीं सदी के तीसरे दशक में वहाँ के महाराजा ने इस पर पाबंदी लगा दी। तत्पश्चात 'हफ़ीज़ा' का स्थान 'बच' ने ले लिया। हालाँकि अब हफ़ीज़ा नृत्य पर पाबंदी नहीं है और कश्मीर के ये दोनों नृत्य-रूप समान रूप से लोक का हिस्सा हैं। नाट्य समागम के दौरान 'बच नगमा' की प्रस्तुति शानदार थी। मुश्ताक अहमद के नग़मे पर थिरकते 'बच' को देख दर्शकों में ऊर्जा का तीव्र गति से संचरण हो रहा था। सूफ़ी कलाम और कश्मीर के लोक-वाद्यों की जुगलबंदी में जो तरावट और ऊर्जस्विता थी, उससे नृत्य की चपलता और लास का यह अनोखा रूप बिल्कुल सहज ही प्रतीत हुआ।

मंच क्या इतने महत्वपूर्ण हैं कि सिर्फ़ उन्हीं के इर्दगिर्द संगीत और कला का ताना-बाना बुना जाए! मंच से परे भी तो एक भरी-पूरी दुनिया है! मेघदूत रंगशाला परिसर में भी मंच से परे एक ऐसी ही दुनिया थी। और यह दुनिया भी कम आकर्षक नहीं थी। पूरा परिसर रंग-इतिहास से जुड़े पोस्टरों/तस्वीरों से अटा पड़ा था। यहाँ लगी एक-एक तस्वीर भारतीय नाट्य परम्परा और रंग-प्रयोगों के ऐतिहासिक दरीचे जैसी थी, जिसकी मदद से अतीत के रंगकर्म को देखा/समझा जा सकता था। परिसर में इधर-उधर पड़े चित्रित घड़े भी कुछ कहते-से प्रतीत होते थे। वैसे इस व्यवस्थित एकरसता को खंडित करने के कई साधन थे। मसलन, रावणहत्था की धुन पर परिसर में घूम-घूमकर, झूम-झूमकर नाचती कच्चीघोड़ी, कला-संस्कृति के इतिहास में कहीं दबी पड़ी और लगभग विस्मृत एक लोक-परम्परा की आर्द्र और विस्मित करने वाली स्मृति को ताज़ा कर रही थी। धन्ना, भूरा, रोशन और बिरजू की चौकड़ी रवीन्द्र भवन परिसर को अपनी उपस्थिति से अचानक सरगर्म कर देती और इन्हें देखते ही हमारा बचपन हमारे सामने आ खड़ा होता। जब हम बहुत छोटे हुआ करते थे, तब शादी-ब्याह के मौक़े पर कच्चीघोड़ी नृत्य हुआ करता था और देखने की ललक में बारातियों की तादाद अचानक बढ़ जाया करती थी। लेकिन अब शादी-ब्याह में न तो रसनचौकी बजती है, न शहनाई बजती है और न ही कच्चीघोड़ी का नाच होता है। अब बहरूपिये भी कहाँ नज़र आते हैं! पहले तो हफ्ते-महीने किसी गाँव-चौक या बाज़ार आदि में कभी पुलिस इंस्पेक्टर तो कभी शिव तो कभी रावण या राम बना कोई-कोई बहरूपिया दिख ही जाया करता था। लेकिन अब यह इतिहास की बात है। हो भी क्यों ना, अब तो हम सब बहरूपिये हैं। अब मन का आईना तन कहाँ रहा! ख़ैर पहले ही दिन परिसर में प्रवेश के साथ ही राजस्थान से आए बहरूपियों ने चौंका दिया। हमने देखा कि शिव, नारद और राम के साथ जिन्न भी घूम रहा है। हैरत हुई। होनी भी चाहिए। धार्मिक/पौराणिक चरित्रों के बीच जिन्न को भला क्योंकर होना चाहिए! लेकिन जिन्न तो फिर भी था ही। हमने सोचा जिन्न से ही पूछ लें। पूछा तो जिन्न ने कहा कि 'जिन्न आसुरी शक्ति का प्रतीक है इसलिए।' हमने ऐतराज़ किया- 'भई शिव-नारद के साथ तो राक्षस की केमिस्ट्री ज्यादा ठीक होती!' तो जिन्न बने सलीम ने कहा कि 'अलिफ लैला में जिनी का किरदार बहुत फेमस हुआ था, इसलिए...।' सलीम अपनी बात पूरी नहीं कर पाए क्योंकि बीच में एक युवक की इंट्री हो गई, जो जिन्न के साथ सेल्फी के लिए उतावला था। नारद, शिव और राम परिसर में लगे एक गोलमेज पर बैठे आराम से चाय पीते हुए वार्तालाप में रत् थे, जबकि बेचारे जिन्न को फुरसत ही नहीं मिल पा रही थी। मुमकिन है कि उसका जो रूप-विन्यास था, उसके कारण अधिकतर युवक-युवतियाँ जिन्न की तरफ अधिक आकर्षित हो रहे थे। वह आलिफ लैला के संवाद भी बोल रहा था। प्रसंगवश बतला दें कि शिव, नारद और राम भी सलीम के ही भाई थे। पूरे 9 दिनों तक जब कभी अलग-अलग रूपों में मुझे फिरोज, शाहीन, सलीम आदि दिखे; मुझे अल्लामा इक़बाल का शेर याद आया— 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी/सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-ज़माँ हमारा'। और इस तरह यह यक़ीन और पुख़्ता होता रहा कि सियासत के नश्तरों से हिन्दुस्तान की सेहत पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ने वाला।

रोज़ाना दोपहर के वक़्त जब मुल्क के अलग-अलग ख़ित्ते से आए कलाकार, प्रेक्षक और तमाम दूसरे लोग मेघदूत परिसर में इधर-उधर भोजन कर रहे होते, तभी चंडीगढ़ से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आया गुरुशरण सिंह चन्नी का नाट्य-दल बलूनी नाक और विदूषक टोपी पहने परिसर में टेर लगाता घूमने लगता—'ढूँढ के लाओ ज़िन्दगी'। यह दरअसल मुनादी होती। आप चाहें तो ढिंढोरा पीटना भी कह सकते हैं! ख़ैर, मुनादी करता यह दल अंततः मेघदूत परिसर के लॉन में आ जुटता। (यह वही लॉन है, जिसके एक हिस्से में बने मंच पर रसनचौकी वादन और बच-नग़मा का गायन होता था।) फिर शुरू होता नुक्कड़ नाटक—'ढूँढ के लाओ ज़िन्दगी'। एक शानदार प्रहसन, जिसका मूल कथ्य प्रदूषण है लेकिन वह इस तरह अभिनीत किया गया कि उसमें व्यवस्था का भ्रष्टाचार, मुनाफ़ाख़ोर पूँजीपतियों का छल और शासन-सत्ता के कर्णधारों का स्वार्थ-पोषित अंधापन—सबका प्रत्यक्षीकरण होता था और भारतेंदु हरिश्चन्द्र की 'अंधेर नगरी' के दृश्य जीवित होने लगते थे। कलाकार तो वही होता है जो तमाम चुनौतियों और प्रतिबंधों के बीच भी अभिव्यक्ति की अक्षुण्णता बरकरार रख सके क्योंकि ''दिशा और काल में अपने संदर्भों से बंधे आदमी की छटपटाहट को, उसकी नियति को, उसके संघर्ष और यातना को यदि लेखक अभिव्यक्त कर पाता है तभी प्रासंगिक-प्रामाणिक या सार्थक हो पाता है।'' (विद्यानिधि) और इस निकष पर चन्नी का यह प्रहसन बिल्कुल खरा उतरता है। हास्य-व्यंग्य के इस अद्वितीय कॉकटेल को देखते वक़्त कई बार हँसते-हँसते रोने की इच्छा बलवती हुई तो अल्बेयर कामू का कथन याद आया—''किसी ख़ास लम्हे में जब हमारी भावना अपने चरम पर होती है तो वह एक नई भावना को जन्म देती है जो इसके ठीक विपरीत होती है।'' इस नाटक को देखते हुए मुझे लगता है कि ज्यादातर संवेदनशील दर्शकों के साथ ऐसा ही हो रहा था। कॉर्पोरेट लूट के इस दौर में राजा कभी 'झाड़ू' तो कभी 'चमचे' की सवारी में व्यस्त था। कम्पनियाँ देश की सम्पदा लूट रही थीं और कचरा फैला रही थीं। आम-आदमी की ज़िन्दगी बद-से-बदतर होती जा रही थी। ज़िन्दगी गुम हो रही थी। लोग मूर्छा के शिकार थे और यह नाटक इसी मूर्छा को तोड़ने की कोशिश थी। नाट्य समागम के दौरान जिस चीज़ की कमी शिद्दत से महसूस हो रही थी और जिसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, वह मंच पर नहीं मेघदूत लॉन के इस आभासी मचान पर थी और यक़ीनन जब तक मचान पर बैठा आदमी बोल सकने की स्थिति में है, तब तक ज़िन्दगी की उम्मीद बाक़ी है। लेकिन समस्या ये है कि पूँजी की गोद में बैठी व्यवस्था को 'बोलने वाले ज़िन्दा इंसानों' से सम्भवतः दिक़्क़त है। वह अनजान नहीं है, बल्कि जान-बूझकर अन्जान बन रही है। बकौल केदारनाथ सिंह ''क्योंकि उन्हें पता था/खाली नहीं है बरगद/कि उस पर एक मचान है/और मचान भी खाली नहीं/क्योंकि उस पर रहता है एक आदमी/और खाली नहीं आदमी भी/क्योंकि वह जिंदा है/और बोल सकता है''।(मंच और मचान) ज़िन्दा आदमी (जो बोल सकता है) कई तरीक़े जानता है—बोलने के। कभी शब्द, कभी संकेत, कभी मौन, कभी चीख़, कभी गीत, कभी संगीत तो कभी हाव-भाव के माध्यम से अभिव्यक्ति राह पाती है। विविधता से भरपूर भारत भूमि पर अभिव्यक्ति की असंख्य तद्वीरें हैं और इन तद्वीरों में सबसे जटिल और सबसे सरल नाटक ही है। जटिल इसलिए कि इसमें विविध कलाओं का समायोजन और सम्पूँजन होता है। सरल इसलिए कि विविध कलाओं/सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के समायोजन की वजह से इसमें एक क़िस्म की तरलता आती है और कथ्य का साधरणीकरण होता है। श्रोता के स्थायी भाव सहज ही विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से संयुक्त होकर रस निष्पत्ति का निमित्त बन जाते हैं और सम्प्रेषण की प्रक्रिया बिना किसी बाधा के सम्पन्न होने लगती है। यह बहुत हद तक ''बातन ही बैकुंठ समाना'' (कबीर) जैसा है। बातें केवल बातें नहीं होतीं और न ही बैकुंठ केवल वही होता है जिसको पाने के लिए ज़िन्दा आदमी ज़िन्दगी को सोचना और जीना भूल जाता है। बैकुंठ तो आत्म-तृप्ति का बोध है और मेरी निगाह में नाटक इसकी प्राप्ति का सबसे सहज मार्ग है। जो कुछ भी मंच पर होता है, वह वास्तव में मंच पर नहीं, हमारे अंदर घटित होता है।

ख़ैर, 'नाट्य समागम' अपने नाम को चरितार्थ कर रहा था। सच कहें तो यह विविध रंगाभिव्यक्तियों का समागम था। संगीत, नृत्य, चित्र, क़िस्सागोई, कथावाचन, कथोपकथन, गायन, स्वांग, सर्कस, तमाशा, नक़ल, मूकाभिनय आदि के विविध रूप और शैलियाँ सम्यक मात्रा में सम्मिश्रित होकर जिस प्रकार की कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का सृजन कर रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थीं, उसको केवल अनुभूत ही किया जा सकता था। सबके-सब अपनी समग्रता में उपस्थित थे और अपने-अपने अस्तित्व के साथ मेघदूत परिसर में सम्वेत् रूप से नाटकीय वातावरण की निर्मिति को न केवल सम्भव कर रहे थे, बल्कि उसी नाटकीय वातावरण का स्वयं को अभिन्न अंग भी सिद्ध कर रहे थे। कहना फ़िज़ूल है कि चिरकाल से ऐसे ही समागमों से आधुनिक नाटक अपना रूपाकार ग्रहण करता रहा है। यदि अपने भाषा-चातुर्य से काम लूँ तो कह सकता हूँ कि कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा अपने-आप में नाटक की विकास-कथा के विभिन्न सोपानों का परिचायक थी। बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था की दिशा में नाटक के अग्रसरण का संकेत इसी में निहित था। हर दिन, शुरुआत बच्चों के लिए तैयार नाट्य प्रस्तुतियों से होती, फिर रंग-जिज्ञासा के शमन के लिए निर्देशकों से बातचीत, उसके बाद संस्कृत रंगमंच और मूकाभिनय पर व्याख्यान और प्रदर्शन, फिर रंग-संगीत, फिर प्रमुख नाट्य परम्पराओं से साक्षात्कार, तत्पश्चात आधुनिक भारतीय रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ और अंत में आनुष्ठानिक रंगमंच की झलक। सुबह से शाम तक यह रोज़ की यात्रा थी। यह यात्रा संस्कृति की यात्रा थी। 'विविधता में एकता' का जो फलसफा सुनता-समझता आया था, उसके सादृश्य साक्षात होने की यात्रा थी। यह जीवन की यात्रा थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेघदूत के आँगन में नाट्य समागम

सुशील जैन

संगीत, नृत्य और नाट्य कलाओं के संरक्षण, संवर्धन के लिए कटिबद्ध संगीत नाटक अकादेमी ने 9 जनवरी 2016 से 17 जनवरी 2016 तक दिल्ली में स्थित मेघदूत परिसर, रवीन्द्र भवन में नाट्य समागम जैसे राष्ट्रीय उत्सव का आयोजन किया। इसी लेख के ज़रिए मैं आपको मेघदूत परिसर में आयोजित *नाट्य समागम* उत्सव से रू-ब-रू करवाने की कोशिश कर रही हूँ। आशा है, आपको यह यात्रा अवश्य पसन्द आएगी। नौ दिनों तक चलने वाले इस राष्ट्रीय उत्सव का उद्घाटन 9 जनवरी 2016 की शाम 6 बजे संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष महोदय श्री शेखर सेन ने किया। इस मौक़े पर उन्होंने कहा कि ये देश के अलग-अलग हिस्से की संस्कृति को समझने का मंच है। उन्होंने कहा कि भारत में नाटक की परम्परा बहुत पुरानी है, भारत ही इकलौता देश है जहाँ सैंकड़ों सालों से हर साल रामलीला का मंचन किया जाता है, हर बार एक ही कहानी कही जाती है पर कोई ऊबता नहीं है। नाट्य समागम माने जहाँ नाटकों का संगम हो, चर्चा-परिचर्चा हो, मेल-मिलाप हो, सम्मेलन हो, महफ़िल हो, नाटकों का विशाल समूह एकमंच पर एकजुट हो जाएँ। यही अभिकल्पना थी इस नाट्य समागम की। बहरहाल नाट्य समागम समकालीन भारतीय प्रयोगों परम्पराओं और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का भव्य उत्सव था। आपको बताते चलें कि पहला नाट्य समागम उत्तरपूर्व के रमणीय शहर अगरतला में आयोजित किया गया, जिसमें अनेक समूहों ने भाग लिया और सफलतापूर्वक इस उत्सव को सम्पन्न किया, अगरतला के रमिक जनों ने इस आयोजन का रसास्वादन कर इस उत्सव को सफल बनाया। अपनी इसी सफलता को समेटे यह नाट्य समागम दिल्ली वासियों के लिए भी सुलभ हो गया।

इस प्रकार का विशाल व भव्य नाट्य समारोह मील का पत्थर साबित हुआ। अब बात करते हैं मेघदूत परिसर की जहाँ इसका आयोजन किया गया। अतिशयोक्ति न होगी कि मेघदूत परिसर आज अपने में इंद्रधनुषी आभा लिए सब सभागारों को लजा रहा था। इसे मांगलिक बनाने के उद्देश्य से दिल्ली के सुप्रसिद्ध नफ़ीरी शहनाई वादक श्री जगदीश प्रकाश व उनके समूह को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कर्णप्रिय धुनों से दर्शकों को भावविभोर कर दिया। मेघदूत परिसर के ख़ुशनुमां माहौल को रंगमंच प्रदर्शनी-रंगप्रवाह ने और भी मुखरित कर दिया। इस रंगप्रवाह की अभिकल्पना दीपक करंजिकर ने की जिसे वेद पाहूजा जैसे कलाकार ने अपनी कल्पना शक्ति से साकार कर दिया। रंगमय बना मेघदूत सभी दर्शकों का मन मोह रहा था सभी ओर भाती प्रशंसाओं से यह परिसर एक सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर था। यहीं पर जिज्ञासु जहाँ एक ओर रंगप्रदर्शनी से ज्ञानार्जन कर रहे थे वहीं दूसरी ओर एक और प्रदर्शनी रवीन्द्र भवन परिसर में हमारा इन्तज़ार कर रही थी यह प्रदर्शनी थी— *जंडियाला गुरु दे ठठेरे*—इस प्रदर्शनी में पंजाब के ठठेरे कासें और पीतल की कलात्मक वस्तुओं को वहीं बैठ कर तैयार करते रहे थे और उनकी प्रदर्शनी भी लगा रहे थे। नौ दिन तक चलने वाले इस उत्सव में *जंडियाला गुरु दे ठठेरों* की बर्तन बनाने की प्रक्रिया निरन्तर चलती रही, कहीं पर बर्तनों को गर्म अंगारों में लाल किया जा रहा था, कहीं उन्हें आकार दिया जा रहा था, कहीं उन पर कलात्मक डिज़ाइन बनाए जा रहे थे। शहरों में लुप्त हो चुकी इस प्रक्रिया को लोग बहुत चाव से देख रहे थे, बर्तनों की खरीद फ़रोख़्त हो रही थी, कलाकारों से जिज्ञासा से भरे प्रश्नोत्तर चल रहे थे। यह प्रदर्शनी इस नाट्य समागम को अनूठी जीवन्तता प्रदान कर रही थी। इस बारे में यह बताना समीचीन होगा कि '*जंडियाला गुरु दे ठठेरे*' को यूनेस्को द्वारा भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में अंकित किया गया है। लुप्त होती जा रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस कला के संरक्षण संवर्द्धन के उद्देश्य से इस कला की अकादेमी ने अत्यन्त रोचक ढंग से जनसाधारण के लिए पेश किया, अकादेमी का यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है।

नाट्य समागम में पहले दिन मेघदूत थिएटर-1 में सायं 6.30 बजे मुम्बई की संस्था दि कम्पनी थिएटर ने शेक्सपीयर के मशहूर नाटक *ट्वेल्थ नाइट* का हिन्दी रुपान्तरण *पिया बहरुपिया* का मंचन किया। जब जब नाटकों का ज़िक्र चलता है तो शेक्सपीयर का नाम ख़ुद-ब-ख़ुद ज़ुबाँ पर आ ही जाता है, इसीलिए शेक्सपीयर के इस नाटक का हिंदी रुपांतरण पेश किया गया। इस नाटक के निर्देशक अतुल कुमार हैं। इसमें एक तरफ़ा प्रेम की तड़प अति संवेदी कविता और शेक्सपीयर के सबसे उत्कृष्ट माने जाने वाले गीत भी शामिल हैं। सांगीतिक ख़ूबियों और सम्भावनाओं से भरपूर यह नाटक दर्शकों को ख़ूब आनन्दित करता है। दो घण्टे तक चले इस नाटक के बाद वृन्दावन के आदर्श बालकृष्ण रासलीला संस्थान ने मनोहारि कृष्ण रासलीला, माखन चोरी लीला एवम् बृज की होली से रास, राग और होली के रंगों से रसिकों को सराबोर कर दिया। दर्शक गण राधा-कृष्ण मय हो झूम उठे, तालियों की गड़गड़ाहट ख़त्म होने का नाम न लेती थी। करतल ध्वनि की गूँज लिए *नाट्य समागम* का पहला दिन समाप्त हुआ। इस *नाट्य समागम* का आगाज़ ही इतना सुंदर था तो अंज़ाम का अंदाज़ा आप ख़ुद-ब-ख़ुद लगा सकते हैं।

अपनी कला की समृद्धि के लिए यह अत्यावश्यक है कि भावी पीढ़ी यानि बच्चों को भी कलाओं से जोड़ा जाए, इसी ज़िम्मेदारी को निभाते हुए अकादेमी ने इस भव्य आयोजन में प्रतिदिन बच्चों के लिए प्रेरक, उनकी समस्याओं पर चर्चा करते हुए उनकी प्रतिभा को निखारते हुए, पारंपरिक व लोक कलाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से बच्चों के मनोरंजन के लिए प्रतिदिन सुबह 10 बजे 11 बजे तक के सत्र में मेघदूत-3 में स्वामी विवेकानन्द के जीवन पर आधारित नाटक *पारसमणि* दिखाया गया। इस नाटक के निर्देशक पार्थ प्रतिभा देव ने स्वामी विवेकानन्द की प्रेरक जीवनी उनके जीवन दर्शन उनके योगदान को अपनी नाटक प्रस्तुति से देश की भावी पीढ़ी तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया। उनका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय था।

अपराह्न सत्र में दोपहर 11 बजे से एक बजे तक का सत्र प्रतिभागी निर्देशकों से मुलाक़ात का था जिसमें रंग जिज्ञासुओं ने अपनी ज्ञान पिपासा शांत की, अपना ज्ञान वर्धन किया और निर्देशकों से चर्चा, परिचर्चा, विचार-विमर्श व अपनी शंकाओं का समाधान कर भविष्य के लिए अपने रास्ते तैयार किए। 10 जनवरी से 16 जनवरी तक प्रतिदिन चले इस सत्र में निर्देशक अतुल कुमार, एच. टॉम्बा, सोहिनी सेनगुप्ता, सत्यव्रत राउत, राम प्रकाश त्रिपाठी, बिपिन कुमार, के एन पणिक्कर/मधुसूदन देववर्मा जैसी नामी गिरामी रंग हस्तियों से रंग कर्मियों, रंग-विद्यार्थियों, रंग जिज्ञासुओं को रू-ब-रू होने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ था। लाभान्वित रंगकर्मियों का जोश-उत्साह देखते बनता था। यह सत्र अत्यधिक सफल रहा।

जैसा कि मैं पहले भी ज़िक्र कर चुकी हूँ कि इस उत्सव में विविध नाट्य परम्पराओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, समकालीन भारतीय नाट्य प्रयोगों और प्रस्तुतियों का समन्वयन था। उसी क्रम में दोपहर तीन बजे के सत्र में प्रतिदिन व्याख्यान प्रदर्शन का विशेष सत्र रखा गया। 10 जनवरी 2016 अपराह्न 3 बजे से 4 बजे तक मेघदूत थियेटर 3 में प्रेमचंद होम्बल द्वारा नाट्यशास्त्रीय प्रयोग परंपरा पर एक व्याख्यान-प्रदर्शन पेश किया गया। संस्कृत नाटकों का भारतीय रंगमंच में विशिष्ट स्थान है, अत: संस्कृत नाटक शामिल किए बिना तो यह *नाट्य समागम* अधूरा ही रह जाता, फलत: सुविख्यात नाटक *मालविकाग्निमित्रम* का मंचन वाराणसी के प्रेमचंद होम्बल व समूह ने बख़ूबी किया और नाट्य शास्त्रीय प्रयोग परम्पराओं पर व्याख्यान के साथ-साथ प्रदर्शन किया एक घंटे की अवधि के इस कार्यक्रम का सभी दर्शकों ने भरपूर आनंद उठाया।

इस सृष्टि के सृजन से ही संगीत हमारे जीवन से जुड़ा है। यूँ देवी देवताओं के संबंध में भी यदि बात करें तो शिव जी का नाद ब्रह्म, डमरू, माँ सरस्वती की वीणा, नारद मुनि की वीणा, शंखनाद, घण्टाध्वनि से हम भली भाँति परिचित हैं, अत: संगीत सभी से जुड़ा है। अभी हम जब मानव जाति की बात कर रहे हैं तो यूँ कहेंगे कि राजा से रंक तक सभी के जीवन में संगीत का विशिष्ट स्थान रहा है, यही कारण था कि राजा-महाराजाओं के दरबार में संगीतज्ञों, कलाकारों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशिष्ट स्थान व सम्मान प्राप्त था। एक तरफ़ संगीत मनोरंजन का अनूठा साधन है तो दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत के द्वारा नादब्रह्म द्वारा ईश्वर से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण सोपान है। यही संगीत आज चिकित्सीय पद्धति में भी कारगर सिद्ध हुआ है। राग मल्हार की प्रकृति में भी पैठ है, अत: यह सुनिश्चित है कि संगीत हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। यही संगीत नृत्य और नाटक का भी सदैव प्रमुख अंग रहा है। नवरसों का और भावों का प्रदर्शन सदैव संगीत के ज़रिए किया जाता रहा है। नाटकों में प्रयुक्त नाट्य संगीत को एक नवीन संज्ञा-रंग संगीत-देकर एक विशिष्टता प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है। नाट्य समागम के इस विशाल आयोजन में रंग संगीत को एक विशिष्ट सत्र के अंतर्गत रख कर इसकी महत्ता को स्वीकारा गया है। अकादेमी ने प्रतिदिन सायं 4 बजे से 5 बजे तक रंग संगीत नामक सत्र में महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार में प्रयुक्त नाट्य संगीत को पेश किया गया है। 10 जनवरी की शाम चार बजे मुम्बई रंगपूर्व के आमोद भट्ट ने मनोहारी ध्वनि रंग पेश किया जिसमें रसिक जन झूम उठे।

नाट्य समागम की अभिकल्पना की अगली कड़ी के सांयकालीन सत्र में प्रमुख नाट्य परंपराओं को समुचित स्थान प्रदान किया गया। जैसा कि आप सभी जानते ही हैं कि हमारा देश अपनी विविधताओं के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। भिन्न-भिन्न राज्यों की भिन्न सुप्रसिद्ध नाट्य परंपराएँ हैं पर उन्हें एक मंच पर एक साथ प्रस्तुत करने का श्रेय अकादेमी को जाता है। 10 जनवरी शाम 5-15 बजे मेघदूत थिएटर-2 में ओडिशा की सुप्रसिद्ध नाट्य परंपरा-*प्रह्लाद* नाटक का मंचन किया गया। प्रख्यात निर्देशक गुरु कृष्ण चंद्र साहु ने इसका निर्देशन किया। इस संबंध में यह ज़िक्र करना ज़रूरी है कि अकादेमी की प्रशिक्षण योजना के तहत गंजम, ओडिशा में चल रहे *प्रह्लाद* नाटक विधा में प्रशिक्षण पा रहे कलाकारों ने इसका मंचन किया। ज़ाहिर सी बात है कि इसका कथानक भगवान विष्णु के नृसिंह अवतार पर आधारित है, ओडिशा की यह नाट्य परम्परा खुले रंगमंच में प्रदर्शित की जाती है जहाँ राजा हिरण्यकश्यप का दरबार तैयार किया जाता है और नाटक खेला जाता है। यद्यपि *प्रह्लाद* नाटक नाम से ही हम इस कथानक को जान जाते हैं परन्तु कलाकारों का सक्षम अभिनय भाषा की बाध्य को सहजता से दूर कर देता है। सभी दर्शकों ने इसकी सराहना की।

शाम 6.30 से 8.30 बजे तक का समय आधुनिक भारतीय रंगमंच के लिए तय किया गया। 10 जनवरी 2016 की शाम साढ़े छ: बजे मेघदूत थिएटर-1 में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की बहुचर्चित बाङ्ला कहानी *क्षुधित पाषाण* पर आधारित नाटक हंगरी स्टोन का मंचन मणिपुर के कला क्षेत्र ने किया। इसका निर्देशन हैस्नाम तोम्बा ने किया।

रात्रि 8.30 बजे से 9.30 बजे तक का सत्र आनुष्ठानिक रंगमंच के लिए नियत किया गया। इस बारे में मैं एकबात कहना चाहूँगी कि हम भारतवासी भले ही आधुनिकता का ढोल पीटते रहें पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागते रहें परंतु हमारी जड़ों में हमारी अपनी भारतीय संस्कृति रची बसी है तभी तो हमारे प्रवासी भारतीय परदेस में जाकर भी भारतीय संस्कृति की दुहाई देते रहते हैं। ऋषि मुनियों की तपस्थली भारत की पावन भूमि में यज्ञ-अनुष्ठान सदा से ही होते रहे हैं और होते रहेंगे। इन्हीं अनुष्ठानों का प्रभाव आम जनता पर कितना गहरा रहा इसका अनुमान आप आनुष्ठानिक रंगमंच से सहज जी लगा सकेंगे। इस विशाल व भव्य आयोजन में आनुष्ठानिक रंगमंच की प्रस्तुति भारतीय विविध संस्कृति की विविधता में एकता का सहज परिचय देती है। 10 जनवरी 2016 को रात्रि 8.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 में पूर्वोत्तर राज्य असम का *कृषाण गान* का मंचन किया गया। असम के धुबरी ज़िले के भुवन चंद्र रॉय व उनके दल ने इसका मंचन किया। इस कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा हुई। इस प्रकार नाट्य समारोह का दूसरा दिन भी तालियों की गड़गड़ाहट में संपन्न हुआ।

11 जनवरी 2016 प्रात: 10 बजे मेघदूत थिएटर-3 में बच्चों के लिए नाटक शीर्षक में आप हमारे हैं कौन नाटक का मंचन किया गया। जम्मू के नटरंग समूह के प्रख्यात रंगकर्मी श्री बलवंत कौर के निर्देशन में प्रस्तुत किया। यह नाटक आज के समाज में माता पिता द्वारा बच्चों को दिए जाने वाले दबाव पर केन्द्रित था। इसमें बच्चों की मानसिक स्थिति का सफल चित्रण किया गया। इस नाटक द्वारा आज के महत्त्वाकांक्षी अभिभावकों को एक संदेश दिया गया है कि उन्हें अपनी सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता है। वे करियर बनाने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के नाम पर उनकी इच्छाओं को कुचल देते हैं और दबाव में जी रही पीढ़ी कुंठाओं का शिकार हो जाती है। इस नाटक ने दर्शकों को पर एक अमिट छाप छोड़ी क्योंकि नाटक देखने के दौरान दर्शकों की आँखें भर आईं। बाल कलाकारों द्वारा प्रदर्शित यह नाटक अत्यधिक सराहनीय था। प्रात: 11.30 बजे के सत्र में मेघदूत थिएटर-4 में जानी-मानी निर्देशक हैस्नाम तोम्बा से दर्शकों ने मुलाक़ात की। चर्चा के दौरान अपनी-अपनी शंकाओं का निराकरण किया। अपराह्न 3 बजे मेघदूत थिएटर-3 में कोलकाता के पियाल भट्टाचार्य ने *असारितावर्धमानविधि*-नाट्यशास्त्र का चित्रपूर्वरंग, अध्याय 5 पर व्याख्यान प्रदर्शन अपने साथी कलाकारों के साथ अत्यंत ख़ूबसूरती से पेश किया। आपको बताना चाहूँगी कि असरिता वर्धमानविधि एक गायन पद्धति है जिसे महागीत भी कहते हैं और यह बीज मंत्र पर आधारित व शक्ति से भरपूर होता है। भगवान शिव को समर्पित इस प्रदर्शन में गायन, वादन और नृत्य की सभी दर्शकों ने सराहना की। शाम 4 बजे मेघदूत थिएटर-4 में परिवर्तन नाट्य समूह के जफ़र संजरी ने रंग तरंग नाम से अपना रंग संगीत प्रस्तुत किया। इसमें विविध नाट्य शैलियों जैसे पारसी, यथार्थ शैली के गीत प्रस्तुत किए गए। गीतों में सुर के साथ-साथ भावों को समाविष्ट कर कुछ कवियों और गीतकारों की रचनाओं को प्रस्तुत किया गया। सभी दर्शकों ने इसका भरपूर आनन्द लिया।

सांयकालीन प्रमुख नाट्य परंपराओं के सत्र में आज हरियाणा के सांग-जानी चोर-की बारी थी। सांग का अर्थ मोह से है जिसे निर्देशक ने मंचपर बख़ूबी प्रदर्शित किया। हिसार की नवरस स्वांग मंडली द्वारा सतीश कश्यप के निर्देशन में यह सांग बेहतरीन ढंग से मंच पर पेश किया गया। हरियाणा के सुप्रसिद्ध लोक संगीत व नृत्य के साथ हरियाणवी पोशाक पहने नवरस मंडली ने मंच पर ऐसा रस घोला कि लोग सीटों से खड़े होकर झूमने लगे। प्रमुख नाट्य परंपराओं के बाद सांय 6.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 आधुनिक भारतीय रंगमंच में कोलकाता के नांदीकार समूह ने सोहिनी सेनगुप्ता के निर्देशन में *अज़्मान* नामक नाटक पेश किया। आधुनिक प्रयोगों के साथ प्रस्तुत यह नाटक अत्यधिक सराहनीय था। रात्रि 8.30 बजे आनुष्ठानिक रंगमंच में गुवाहाटी के हफीज़ा बेगम एवं उनके समूह ने जिकिर जारी द्वारा मंच पर समाँ बाँध दिया। इस प्रकार नाट्य समागम का तीसरा दिन भी तालियों की गूँज में संपन्न हुआ।

नाट्य समागम का चौथा दिन यानी 12 जनवरी 2016 को प्रात: कालीन सत्र में (बच्चों के लिए नाटक सत्र में) सुबह 10 बजे गुवाहाटी के अनुपम कुमार व उनके समूह ने असम का *धूलिया सर्कस* पेश किया। अपनी इस प्रस्तुति में उन्होंने महाभारत, रामायण, पुराणों की कहानियों को अपनी कला द्वारा दर्शकों के समक्ष बहुत सुंदर ढंग से पेश किया। बाल कलाकारों सहित कलाकारों की सुंदर रंग-बिरंगी पोशाक व बड़े-बड़े ढोल इस पेशकश का प्रमुख अंग रहे। कलाकारों के करतब इस प्रस्तुति को प्रभावशाली बना रहे थे। दर्शकों को आकृष्ट करने वाली यह प्रस्तुति सराहनीय थी।

अकादेमी कलाओं के संरक्षण संवर्धन के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती है। प्रशिक्षण पा रहे कलाकार छात्रों द्वारा सिक्किम के लोग गीत व नृत्य भी पेश किए गए, इस कार्यक्रम के संयोजक नरेन गुरंग थे उन्होंने अपनी अत्यंत मनोहारी प्रस्तुति में *घंटू नृत्य, चंडी नृत्य, सोराथि नृत्य* व *तमंग सेलो* नृत्य दर्शकों के समक्ष पेश किए। गुरंग जाति द्वारा संरक्षित घंटू नृत्य सिक्किम का लोक नृत्य है, चंडी नृत्य सिक्किम का लोकप्रिय नृत्य है जो संसारी पूजा के अवसर पर किया जाता है। राजा जयसिंह और रानी हेमन्ती की कथा को सोरापी नृत्य पेश किया गया। तमंग सेलो नृत्य उत्साह से भरपूर होता है। री नरेन गुरंग द्वारा संयोजित इस रंगबिरंगी प्रस्तुति का सभी लोगों ने भरपूर आनंद लिया। प्रतिभागी निर्देशक से मुलाकात में आज 11.30 बजे मेघदूत थिएटर-4 में सोहिनी सेनगुप्ता से दर्शकों ने चर्चा-परिचर्या और विचार विमर्श किया। यह प्रयोग अत्यंत सफल रहा। अपराह्न तीन बजे के व्याख्यान प्रदर्शन में आज संस्कृत नाटक कूटियाट्टम के कंस वध का प्रदर्शन किया गया। त्रिशूर के कृष्णन नाम्बिसार मिषाव कलरी द्वारा प्रस्तुत एवं गुरु अम्मानुर माधव चाक्यार के निर्देशन में नवरसों का अत्यधिक रोचक ढंग से प्रस्तुतिकरण किया गया।

आपको याद दिलाना चाहूँगी कि केरल के चिरकालीन संस्कृत थिएटर-कूटियाट्टम को दस वर्षों के निरन्तर प्रयास के पश्चात् यूनेस्को ने मई 2001 में इसे मानवता की अमूर्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab.com

ऊपर : शहनाई वादन करते कलाकार

मध्य : रसम चौकी वादन

नीचे : लोक गायिका सोनम सोपारी एवं साथी, लद्दाख

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College of Education,Bantalab Jammu

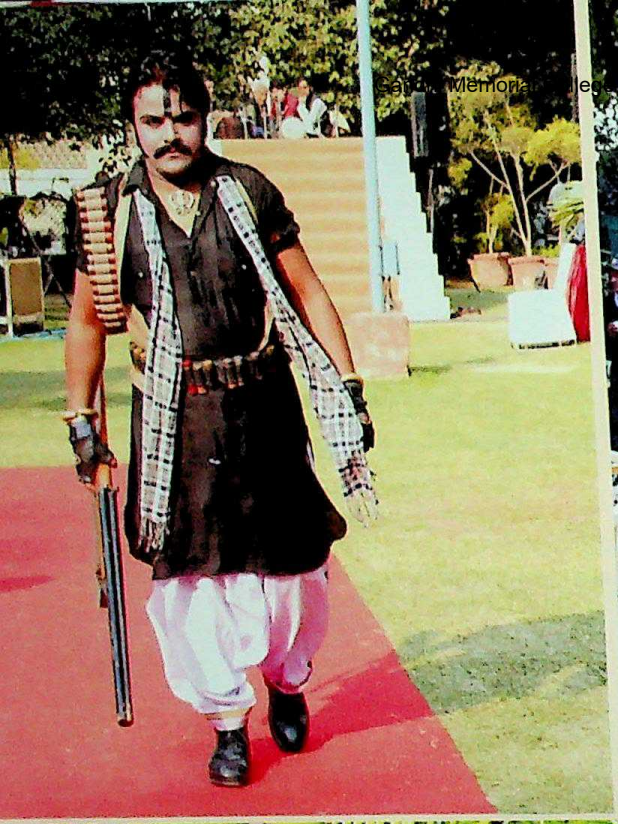

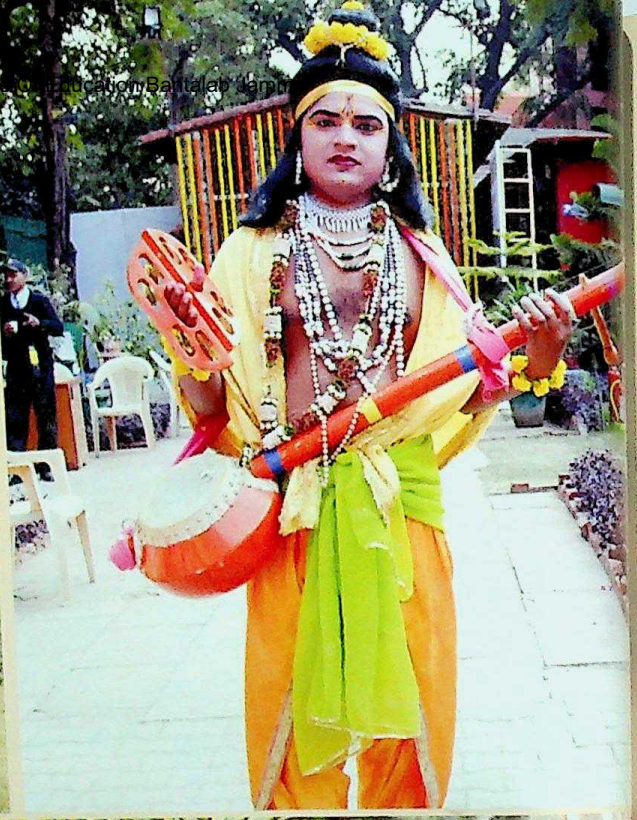

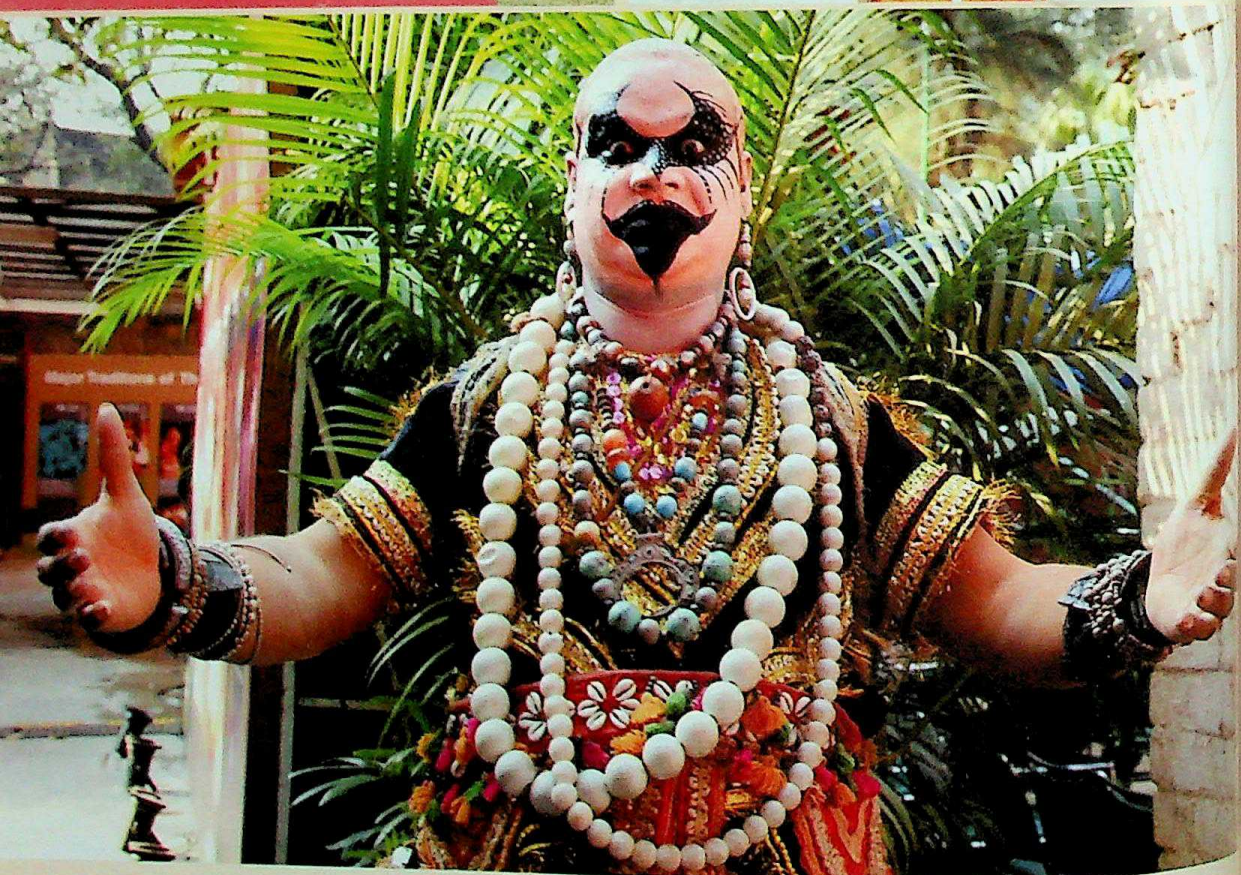

डाकू, नारद और जिन्न के वेश में बहुरुपिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

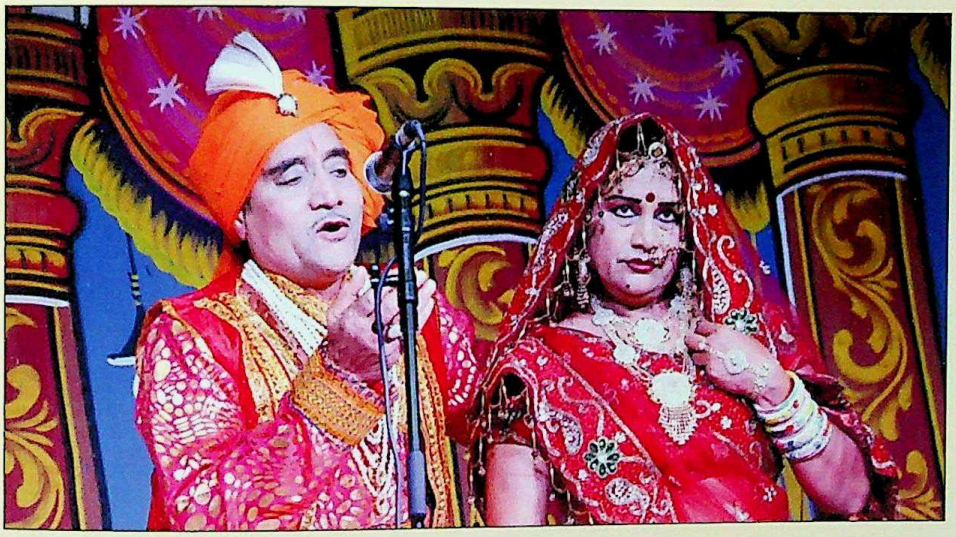

ऊपर : राजस्थान के लोकगायक चतरु राम एवं साथी

मध्य : नौटंकी की प्रस्तुति में रामदयाल शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नीचे : राजस्थान के खयाल की प्रस्तुति

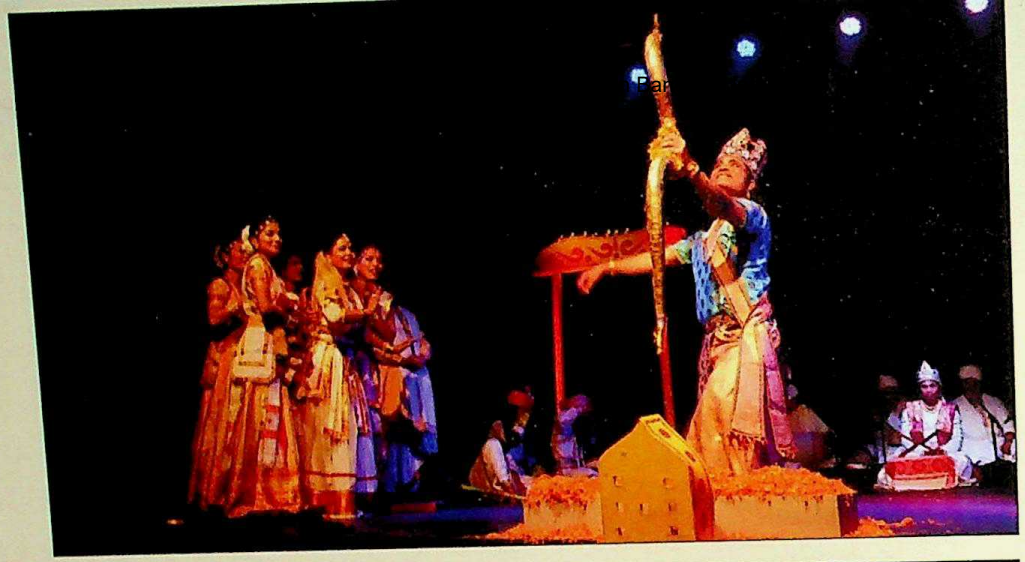

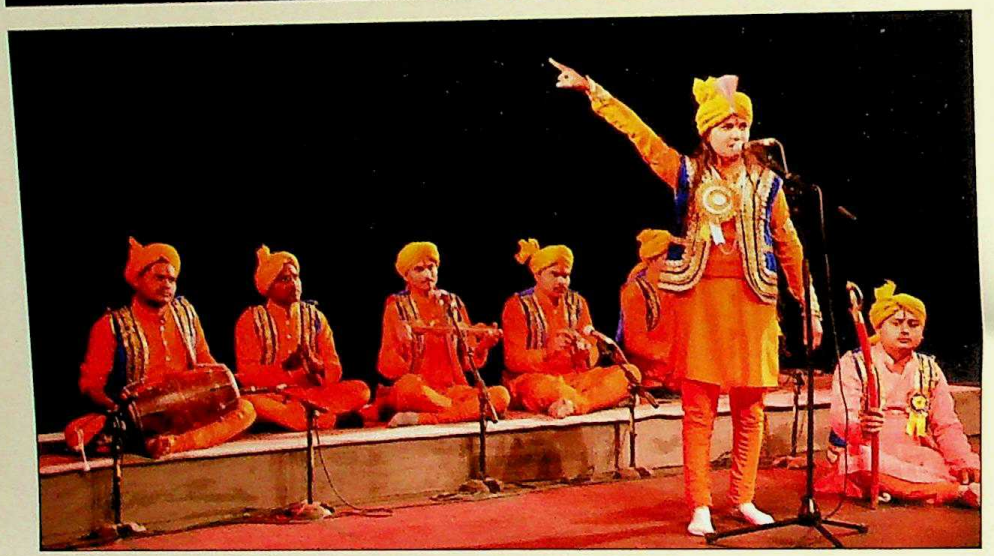

ऊपर : असम का पारंपरिक नाट्य अंकिया भाओना की प्रस्तुति

मध्य : शील सिंह राजपूत, रायबरेली द्वारा आल्हा गायन

नीचे : अरुणाचल प्रदेश का लोक नाट्य-नृत्य, आजी लामू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर-बाये से दायें : असम के धूलिया सर्कस की प्रस्तुति देते कलाकार

नीचे : बिसीपाड़ा की ऐतिहासिक लंकापोडी जात्रा के मुखौटे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

andhi M... Education Bantalab

ऊपर : पारंपरिक नाट्य - मालवी माच

मध्य : (बायें) कुटियाट्टम; (दायें) देवकीनंदन शर्मा द्वारा श्रीकृष्ण की कथा का वाचन

नीचे : रंग संगीत की प्रस्तुति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विरासत की उत्कृष्ट कलाकृति घोषित किया। अकादेमी ने इस राष्ट्रीय परियोजना को समर्थन देते हुए तिरुवनंतपुरम में 27 मई 2007 को कूटियाट्टम केन्द्र की स्थापना की। इसी क्रम में सायं 4 बजे 60 मिनट की अवधि के रंग संगीत कार्यक्रम के तहत *स्वर उल्लास* नाम से भोपाल के रंग विदूषक थिएटर ग्रुप ने अपनी प्रस्तुति दी, जिसकी पटकथा, निर्देशन व संगीत अंजना पुरी ने दिया। अंजना पुरी के निर्देशन में प्रस्तुत विविध संगीत लहरियों से नाटक की कथा के अंदर निहित विविध भावों को प्रबल बनाने में संगीत की अहम भूमिका का प्रदर्शन इस प्रस्तुति में किया गया है। शाम 5.15 अब प्रमुख नाट्य परंपरा शीर्षक के अंतर्गत आज मध्यप्रदेश, उज्जैन की प्रमुख नाट्य परम्परा मालवी *माच* से रु-ब-रु होने का अवसर मिला। मालवा का लोक नाट्य माच अपनी विशिष्ट गायकी व उन्मुक्त अभिनय के लिए जाना जाता है। 250 साल पुरानी इस परंपरा *माच* में पुरुष कलाकार ही स्त्री पात्र का भी निर्वहन करते हैं। उज्जैन के गुरु कालुराम उस्ताद माच अखाड़ा की प्रस्तुति राजा रिसालु (मालवी माच) का निर्देशन ओम प्रकाश शर्मा ने किया। गायन, वादन और अभिनय के संयोजन ने ऐसा समाँ बाँध दिया कि दर्शक इस नाट्य परंपरा के मंचन में झूम उठे। शाम 6.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 में आधुनिक भारतीय-रंगमंच में *तुम्हारा विन्सेंट* नाटक की प्रस्तुति हैदराबाद के रंगकल्प ने दी। जिसका निर्देशन सत्यव्रत राउत ने किया। विन्सेंट एक असफल प्रेम कथा है जिसमें नायक के भटकाव का चित्रण किया गया है। अशान्त असफल प्रेमी अन्ततः कूची का सहारा लेता है। यद्यपि उसकी कुछ पेंटिंग्स बहुत लोकप्रिय रहीं पर कलाकारों के आपसी मतभेद के चलते वह स्वयं जख़्मी हो जाता है, उसे पागल घोषित कर दिया जाता है। अंत में वह *ब्लीट फील्ड एण्ड द क्रोज़ नामक पेंटिंग्स* बनाता है और ख़ुद को गोली मार देता है। यद्यपि यह दुखान्त नाटक था तथापि इस नाटक की प्रस्तुति अत्यधिक भावभीनी थी, साहित्य कला परिषद, दिल्ली के मोहन राकेश सम्मान से सम्मानित नाटक की सभी दर्शकों ने बहुत प्रशंसा की। इस नाटक का विज़ुअल थिएटर अद्‌भुत रहा। रात्रि 8.30 बजे आज 12 जनवरी 2016 को आनुष्ठानिक रंगमंच में रामलीला का लोकप्रिय लक्ष्मण-परशुराम संवाद को रखा गया। हम सब इसका कथानक जानते हैं कि सीता स्वयंवर में श्री राम द्वारा शिव जी के विशाल धनुष तोड़ देने के पश्चात् ऋषि परशुराम अत्यन्त कुपित हो जाते हैं मिथिला नरेश व श्री राम के समझाने के बाद भी जब उनका क्रोध शांत नहीं होता तो लक्ष्मण जी उनसे जो संवाद करते हैं, वही इस मंच के ज़रिए दिखाया गया है, यहाँ यह बताना नितान्त आवश्यक है कि कानपुर का लक्ष्मण-परशुराम संवाद अपनी विशिष्ट शैली के लिए चर्चित है। दोनों पात्र अपने-अपने विवेक से उत्तर-प्रति उत्तर करते हैं, बीच-बीच में गीत-कवित्त का प्रयोग इसे और भी रोचक बना देता है। कानपुर की दीपांजलि समाजोत्थान समिति की इस प्रस्तुति का निर्देशन दीप कुमार शुक्ल ने किया। तर्क-वितर्क से युक्त इस अभिनय शैली को मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्धन का माध्यम भी माना जाता है।

नाट्य समागम के इस विशाल आयोजन में पुतुल नाटक को शामिल किए बिना यह समागम अधूरा रह जाता, इसीलिए 13 जनवरी प्रातःकालीन सत्र में असम के धागा पुतुल को नलबाड़ी, असम की माखुली पुतुल नाच समिति ने सीता हरण की प्रस्तुति दी, जिसका निर्देशन राधा कान्त बर्मन ने किया। इस प्रस्तुति की शुरुआत सरस्वती वंदन से हुई, ज़ाहिर सी बात है कठपुतली द्वारा यह प्रयोग दर्शकों को बेहद पसंद आया। सर्व शिक्षा अभियान को भी इसमें समाविष्ट कर समाज को सर्वशिक्षा का संदेश दिया गया, अंत में सीता हरण की अत्यंत सुंदर प्रस्तुति पेश की गई जो कि अत्यधिक सराहनीय थी। इसके बाद प्रति भागी निर्देशक से मुलाक़ात में मेघदूत थिएटर-4 में सत्यव्रत राऊत से विजुअल थिएटर पर जानकारी हासिल कर अपना ज्ञानवर्धन करते हुए सत्र को सफल बनाया। अपराह्न 3 बजे मेघदूत थिएटर-3 में व्याख्यान प्रदर्शन के तहत कर्ण-अर्जुन युद्ध की प्रस्तुति मणिपुर, इम्फाल के डब्ल्यू चिंगलेन सिंह व सगोलसेन जॉनसिंह सिंह ने दी। मणिपुर का पारंपरिक नाट्यरूप- *वारी लीवा*—यद्यपि कथा-वाचन है तथापि यह प्रचलित कथावाचन से अलग व विशिष्ट है क्योंकि मंगला-चरण और गुरु वन्दना के पश्चात रामायण, महाभारत के कथानकों से कलाकारों द्वारा कथा वाचन किया जाता रहा है। इसी कड़ी में महाभारत के ही एक अंश कर्ण और अर्जुन युद्ध को कलात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया। उनकी यह प्रस्तुति अत्यन्त सराहनीय थी। शाम चार बजे रंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगीत शीर्षक के अंतर्गत भोपाल की अर्ध्य कला समिति की वैशाली गुप्ता ने बैले नाट्यों व नाटकों के गीतों की प्रस्तुतियों में मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों, नाट्यकारों की नाट्यकृतियों, गीतों, कविताओं का प्रयोग नाटकों में किया है। उन्होंने बताया कि बी.वी. कारंत हमेशा कहा करते थे, कि नाट्य में संगीत वाचिका अभिनय है और संगीत नाट्य का जीवनाधार है। अत: अर्ध्य कला समिति अपने नाटकों का चयन करते समय यह ध्यान रखती है कि नाटकों और बैले में संगीत के प्रयोग प्रभावी बनाया जाए। अपने इस रंग संगीत कार्यक्रम से उन्होंने अपने मधुर गायन से सबका मनोरंजन किया। सांयकालीन 5.15 बजे प्रमुख-नाट्य परंपराओं के सत्र में राजस्थानी ख़याल में *हरिश्चंद्र तारामती* की प्रस्तुति नागौर के बंसीलाल खिलाड़ी व समूह ने की इसका निर्देशन नागौर, राजस्थान के बंसीलाल खिलाड़ी ने किया। राजस्थानी ख़याल एक लोकप्रिय शैली है। हरिश्चंद्र तारामती का मंचन मेघदूत थिएटर-1 में बहुत सुंदर ढंग से किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित रहे और राजस्थान की सोंधी महक से सराबोर रहे। इसके बाद आधुनिक भारतीय रंगमंच में शाम साढ़े छ: बजे भोपाल के लिटिल बैले थिएटर द्वारा *रामायण-नृत्य-नाटक* का मंचन किया गया जिसकी निर्देशक जानी मानी रंगकर्मी गुलवर्धन थीं। पुतुल शैली में बैलेट प्रस्तुत करना एक नवीन प्रयोग है, जिसमें निर्देशक को कौशल स्पष्ट झलकता है। मानव पुतुलों का भारी भरकम लकड़ी के मुखौटे धारण कर नृत्य प्रस्तुत करना वाक़ई जादुई आभास दे रहा था। सभी दर्शकों ने इस कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की। रात्रि 8.30 बजे आनुष्ठानिक रंगमंच में ओडिशा की लंकापोड़ी जात्रा के तहत *सीता हरण* व *जटायु मरण* की प्रस्तुति बेहद सुंदर थी। इसकी प्रस्तुति ओडिशा, बिसिपाड़ा के श्री श्री राम लीला नाट्य परिचालन संघ ने दी, इसके निर्देशक मन्मथ कुमार सतपथी जाने माने रंगकर्मी हैं जिन्होंने इस नाटक में लगभग 70 मुखौटों का प्रयोग किया गया। बिसिपाड़ा गाँव के निवासी ही इसके कलाकार होते हैं और दर्शक गण भी ग्रामवासी ही होते हैं। बिसिवाड़ा की ख़ुशबू लिए यह अनुष्ठानिक नाटक बहुत सराहा गया। तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पाँचवें दिन का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

14 जनवरी 2016 सुबह 10 बजे का समय बच्चों के लिए नाटक— *नमस्कार जी नमस्कार*—की प्रस्तुति पटना के किलकारी बाल भवन पटना ने दी। इस नाटक का निर्देशन विनोद राई एवं रवि भूषण कुमार ने संयुक्त रूप से किया। यह नाटक ऐसे बच्चों की परिकल्पना है, जिनकी आवाज़ आज तक सुनी ही नहीं गई। जो मूलभूत ज़रूरतों से वंचित रह जाते हैं। उनके अधिकारों को नाटक में छोटी-छोटी घटनाओं के माध्यम से दिखलाया गया। बच्चों के मौलिक अधिकारों के सैद्धान्तिक पक्ष को सरल एवं सहज रूप से जनमानस तक पहुँचाना इस नाटक का प्रमुख उद्देश्य था, यह प्रस्तुति अत्यधिक सुंदर एवं सराहनीय थी। इसके बाद का सत्र प्रतिभागी निर्देशक से मुलाक़ात का था जिसमें प्रात: 11.30 बजे मेघदूत थिएटर-4 में राम प्रकाश त्रिपाठी से चर्चा-परिचर्चा, विचार-विमर्श, शंकाओं का समाधान कर ज्ञानवर्धन किया गया। अपराह्न 3 बजे मेघदूत थिएटर-3 में गुवाहाटी की माइम एकेडेमी ने *वायस ऑफ़ साइलेंस* मूकाभिनय की प्रस्तुति दी। इसका निर्देशन जाने माने निर्देशक मोइनुल हक़ ने किया। इस नाटक की मुख्य विशेषता यह रही कि शारीरिक अंगों के स्पंदन से सांकेतिक रूप में विविध सामाजिक पहलुओं को अत्यधिक मार्मिक रूप से चित्रित किया गया। इस भावनात्मक प्रस्तुति ने सभी दर्शकों को भावविह्वल कर दिया। यही इस नाटक की सफलता का परिचायक था। सांय 4.00 बजे रंग संगीत शीर्षक के अंतर्गत मथुरा के ब्रज लोक माधुरी ने स्वांग नौटंकी की पेशकश की। इस कार्यक्रम में नौटंकियों की अलग-अलग कहानियों जैसे कि हरिश्चंद्र तारामती, अमर सिंह राठौर, स्याहपोश, इंदल हरण, भक्त पूरणमल, सुल्ताना डाकू की विविध प्रकार की धुनें बजाई गईं और गीतों से संबंधित छोटे-छोटे दृश्य भी प्रस्तुत किए गए, जिससे मेघदूत का माहौल और भी ख़ुशनुमाँ हो गया। सांयकाल के प्रमुख नाट्य परंपराओं शीर्षक के अंतर्गत असम की सुप्रसिद्ध नाट्य परंपरा— *अंकिया भाओना*— का मंचन शाम 5.15 बजे मेघदूत थिएटर-2 में किया गया। यहाँ मैं आपको इस संबंध में यह बताना नितान्त आवश्यक समझती हूँ कि अकादेमी के गुवाहाटी स्थिति सत्रिय केंद्र के कलाकारों ने दुलाल रॉय के कुशल निर्देशन में *श्री राम विजय नाटक* की प्रस्तुति दी। ज़ाहिर सी बात है कि नाटक का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कथानक भगवान श्री राम पर आधारित था। इसमें राम और लक्ष्मण का ताड़का जैसे राक्षस वर्ग से युद्ध जैसी घटनाओं को बहुत अच्छी तरह से पेश किया गया। असम की अंकिया भाओना—पारम्परिक नाट्य परम्परा का दर्शकगणों ने खुले दिन से स्वागत किया और इसका रसास्वादन किया। सायं 6.30 बजे अब आधुनिक भारतीय रंगमंच की बारी थी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सिक्किम थिएटर प्रशिक्षण केंद्र की प्रस्तुति अपने अभिनव प्रयोग को लेकर दर्शकों के समक्ष उपस्थित थी। इसके निर्देशक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक बिपिन कुमार थे। पद्मा सचदेव के हिंदी उपन्यास *अब ना बनेगी देहरी* पर आधारित उपन्यास का नाट्य रूप-तरण *हमीं नईं आफ़ई आफ़* नामक नाटक का मंचन किया गया। यह एक विधवा औरत की कहानी है जो किसी सन्त के प्रेम पाश के फँस जाती है, परन्तु समाज के डर से और धर्म के नाम पर गिरि बाबा को समाधिस्थ होने के लिए मना लेते हैं। अपनी प्रयोगधर्मिता के कारण यह नाटक दर्शकों द्वारा बहुत पसन्द किया गया। इसके तुरन्त बाद आनुष्ठानिक रंगमंच में रात्रि 8.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 में मणिपुर का सुप्रसिद्ध लाई हराओबा का मंचन हुआ। इम्फाल के परफ़ोर्मिंग आर्टिस्ट सेण्टर की प्रस्तुति को सभी दर्शकों ने सराहा। यह मितई जाति का वार्षिकोत्सव होता है जिसमें उनकी ज़िन्दगी के पारम्परिक तरीकों, उनके धर्म, विद्या और संस्कृति का ज़िक्र होता हैयह एक संगीतमय नृत्य प्रस्तुति है जिसमें पूजा के भिन्न-भिन्न रूप दर्शाए गए है। इस नृत्य के ज़रिए सृष्टि की उत्पत्ति के समय की गई गतिविधियों जैसे कुओं, तालाबों की खुदाई, गृह-निर्माण कार्य मछली पकड़ना, बुनाई तथा तलवार के साथ नृत्य आदि कार्यों को बेहतरीन तरीक़े से पेश किया जाता है। रंग बिरंगी पोशाकों से सजे कलाकारों के ख़ुशनुमां संगीत व नृत्य ने सभी रसिक जनों का मन मोह लिया और करतल ध्वनि से सभी कलाकारों की हौसला-अफ़ज़ाई करते हुए नाट्य समागम का छठा दिन भी सफलता सम्पन्न हुआ।

15 जनवरी 2016 को प्रातः 10 बजे बच्चों के लिए नाटक शीर्ष में मेघदूत के थिएटर-3 में *क़िस्सा चाँदनी चौक की अजब ग़ज़ब हस्तियों का*—दिल्ली की क़िस्सागोई से शुरू हुआ। अपने नाम के अनुरूप यह बाल नाटक मनोरंजक था। दिल्ली के टेलेंट ग्रुप की इस प्रस्तुति का निर्देशन इरशाद आलम ख़ूबी ने किया। इस साल नाटक के ज़रिए ब्रिटिश, मुग़ल सल्तनत की तहज़ीब और तौर तरीकों को रोचक ढंग से पेश कर बच्चों का ज्ञानवर्धन करना इस नाटक का मुख्य उद्देश्य रहा। पुरानी दिल्ली की क़िस्सागोई परम्परा को उन्होंने बख़ूबी पेश किया। प्रातः कालीन प्रति भागी निर्देशक के मुलाक़ात सत्र में मेघदूत थिएटर-4 में आज हमीं नई आफई माफ के निर्देशक बिपिन कुमार से चर्चा का सत्र था। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों का जमावड़ा था, उनमें एक जोश और उत्साह झलक रहा था चूँकि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक और जाने माने रंग-निर्देशक बिपिन कुमार से उनकी मुलाक़ात का सत्र था। ज़ाहिर सी बात है यह सत्र अत्यधिक सफल रहा। इसी क्रम में अपराह्न तीन बजे आल्हा गायन, ऊदल करिया संग्राम उर्फ़ बाप का बदला आल्हा गायन की शैली में ऊदल के वीरतापूर्वक व्यक्तित्व की मनोरम गाथा को प्रस्तुत किया गया जिसमें गौरव की मर्यादा का भी अति सुन्दर तरीके से निर्वाह किया जाता है। आल्हा गायन उत्तर प्रदेश की कथा गायन शैली है जिसमें वीर गाथाएँ गाई जाती हैं और आज भी यह शैली नौजवानों की रगों में अद्‌भुत जोश भर देती हैं। आल्हा छन्द में लिखी अलौकिक वीरगाथाओं का अभी तक प्रचलन है, राज़ की बात यह है कि ब्रिटिश सरकार को भी यूरोपीय महायुद्ध के दौरान अपने सैनिकों में जोश भरने के लिए इसी शैली का सहारा लेना पड़ा था। रायबरेली के वीरांगना निराला आल्हा मण्डल ने शीलू सिंह राजपूत के निर्देशन में आल्हा गायन की शैली में आल्हा-ऊदल के वीरतापूर्ण व्यक्तित्व की मनोरम गाथा कही गई। 50 मिनट की अवधि में इस पूरी कथा को गायन की प्रभावशाली प्रस्तुति को दर्शकों के समक्ष पेश किया, यह प्रस्तुति अद्‌भुत थी दर्शकों ने इसकी बहुत सराहना की। इसी कड़ी के श्याम चार बड़ों मेघदूत थिएटर-4 में पटना में निर्माण-कला मंच ने संजय उपाध्याय के निर्देशन में नांदीपाठ प्रस्तुत किया। नान्दी पाठ में बिहार की विविध लोक संगीत शैलियों-*विदेसिया, पूरबी* (भोजपुरी) *विदायत नाच* (मैथिली) *बिरसा* (नागपुरी) गीतों की सोंधी-सोंधी महक से रसिकों का मन मोह लिया। लोक संगीत तो मनुष्य की आत्मा में बसता है, उसका नाटकीय प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबने इस कार्यक्रम को सराहा। शाम 5.15 बजे मेघदूत थिएटर-2 में अब प्रमुख नाट्य परम्पराओं में अरुणाचल प्रदेश के आजी लामू (लोक नृत्य) का प्रदर्शन था। जिसे न केवल राज्य में अपितु देश-विदेश में भी सराहा गया है। अरुणाचल प्रदेश भी मोन्या जनजाति का यह रंग बिरंगा लोक रंजक प्रदर्शन जिसमें कलाकार (आजीलामू) मुखौटा पहन कर झूम झूम कर नृत्य करते हैं। अकादेमी के प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत प्रख्यात कलाकार श्रीमती संगजा वांग्मू के तहत प्रशिक्षण पा रहे कलाकारों ने इसका बेहतरीन प्रदर्शन किया। आप तो जानते ही हैं कि लोक नृत्य चूँकि शास्त्रीय नृत्य नहीं होता इसीलिए जन साधारण तक का तन मन थिरकने लगता है जो कि किसी भी प्रस्तुति की सफलता का परिचायक है। इसकी कोरियोग्राफ़ी ताशी लामू ने की। सांय 6.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 में महाकवि भास द्वारा रचित संस्कृत नाटक *उरुभंगम* की प्रस्तुति दी, जिसके निर्देशक थे कला जगत के जाने माने रंगकर्मी के *एन पणिक्कर*। सोपानम, तिरुवनंतपुरम के ग्रुप ने इसकी पेशकश की। महाभारत से उद्धृत कथानक के अंश को अत्यन्त मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया, दुर्योधन की पराजय के पश्चात उसकी मन:स्थिति के भावुक चित्रण को दर्शकों ने बहुत धैर्य से देखा और हृदय स्पर्शी दृश्यों से दर्शकगण भावविभोर हो गए। यही नाटक की सफलता है। दर्शकों के जमावड़े के बीच अब एर्णाकुलम के टी के राजीव एवं दल द्वारा मुडिएट्टु का मंचन किया गया। मुदिएट्टु केरल का धार्मिक नृत्य नाटक है जो देवी महाकाली और द्वारिका राक्षस के पौराणिक युद्ध के कथानक पर आधारित होता है, यह एक ऐसा सामुदायिक अनुष्ठान है जिसमें समूचा गाँव हिस्सा लेता है। मुदिएट्टु का प्रदर्शन करने वाले सभी व्रत-उपवास द्वारा ख़ुद को पवित्र करते हैं। परस्पर सहयोग और सामूहिक प्रदर्शन के कारण सभी को एक दूसरे से जोड़ता है। गौरतलब है कि वर्ष 2010 में मुदिएट्टु को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रमुख सूची में अंकित किया गया है जो हम सब भारतवासियों के लिए अत्यन्त गर्व का विषय है। अपने गौरव की पताका लहराते हुए नाट्य समागम का सातवाँ दिन भी सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

अकादेमी में 16 जनवरी 2016 को नाट्य समागम के आठवें दिन की शुरुआत बच्चों के लिए रखे गए नाटक में दृष्टिबाधित बच्चों द्वारा पुरस्कृत नाटक— *'चिमटा लोहे का'* मंचित किया गया, प्रस्तुति जयपुर (राजस्थान) के नाट्यकुलम की थी और निर्देशन किया भारत रत्न भार्गव ने। दृष्टिबाधित बच्चों की अद्भुत प्रस्तुति सब बच्चों व दर्शकों को भावविह्वल कर गई। यह नाटक मुंशी प्रेमचन्द की अमर कथा 'ईदगाह' पर आधारित था। प्रात: 11.30 बजे मेघदूत थिएटर-4 में प्रतिभागी निर्देशक से मुलाक़ात के तहत जानेमाने रंग निर्देशक के एन. पणिक्कर व मधुसूदन देववर्मा से वार्ता का सत्र था जिसमें भाग लेने वाले विद्यार्थियों, कलाकारों, कला-प्रेमियों, कला-जिज्ञासुओं ने अपनी जिज्ञासाएँ शान्त की। दोपहर तीन बजे व्याख्यान प्रदर्शन में मेघदूत थिएटर-3 में आख्यान गायन कथा वाचन—कृष्ण की कथा देवकीनंदन के निर्देशन में वृन्दावन के रासलीला संस्थान द्वारा पेश किया गया। कृष्ण की कथाएँ सदैव लुभाती आई हैं, 60 मिनट की अवधि में पेश इस प्रस्तुति ने सभी दर्शकों को भक्ति एवं प्रेम रस में डुबो दिया। कथा वाचक का एक मात्र उद्देश्य जनकल्याण व दर्शकों को आनंद की अनुभूति करवाना था। आप सब इसकी सफलता से भली-भाँति वाकिफ़ होंगे। इसी क्रम में सांयकाल 4 बजे मेघदूत थिएटर-4 में श्री प्रभुनाथ ठाकुर के संयोजन में भिखारी ठाकुर के नाटकों के गीत रंग संगीत भिखारीनामा की प्रस्तुति भिखारी ठाकुर रंगमंडल प्रशिक्षण एव शोध केन्द्र, छपरा द्वारा की गई। भिखारी नाम भिखारी ठाकुर द्वारा रचित नाट्य गीत-संगीत का एक कोलाज है जो नाट्य परम्परा में गीत-संगीत के महत्त्वपूर्ण स्थान को दर्शाता है। सूत्रधार के माध्यम से गीतों को नाटक के द्वारा दर्शकों के समक्ष प्रस्तुति अत्यन्त सराहनीय था। सांय 5.15 मेघदूत थिएटर-2 में प्रमुख नाट्य परम्पराओं के तहत तेलंगाना की श्री लक्ष्मीनारायण स्वामी नाटक कला मण्डली द्वारा पिलुत्ला चन्द्रमौलि के निर्देशन में दक्षिण भारत की प्रमुख नाट्य परम्परा *चिण्डु यक्षगान* में गौरी व्रतम तो आदि जाम्ब पुराण मेल्लामा देवता का मंचन किया गया। इसकी विशेषता यह है कि चिण्डु यक्षगान बिना तैयारी के दर्शकों के समक्ष खेला जाता है। जामाव पुराण में दर्शाई गई विधि के साथ इसे प्रस्तुत किया गया। रात भर चलने वाले चिण्डु यक्षगान के कलाकारों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रामीण दर्शक देवतास्वरूप मानते हैं, यह पारंपरिक नाट्य शैली मौखिक परम्परा के आधार पर कई पीढ़ियों से चली आ रही है। दक्षिण भारत की इस प्रस्तुति का दर्शकों ने खुले दिल से स्वागत किया और रसास्वादन किया। शाम 6.30 बजे मेघदूत थिएटर-1 में अगरतला के लाम्प्रा ट्रस्ट द्वारा मधु देववर्मा के कुशल निर्देशन में *घटोत्कच* नाटक प्रस्तुत किया गया। हिडिम्बा-भीम पुत्र घटोत्कच को अपनी ज़रूरत के लिए अपनाए जाने का प्रश्न सभी दर्शकों के ज़ेहन में कौंध जाता है और यही सच्ची श्रद्धांजलि ऐसे ही पितृ प्रेम से वंचित परन्तु ज़रूरत पड़ने पर अपनाए जाने वाले बच्चों को समर्पित है। ऐसे भावुक नाटक से सभी दर्शकगण भी भावुक हो गए जो इस नाटक की सफलता का रहस्य है। शनिवार 16 जनवरी रात्रि 6.30 बजे इसी स्थान पर आनुष्ठानिक रंगमंच में पंजाब का *नक्काल* दस्तक, अमृतसर द्वारा प्रस्तुत किया गया। पंजाब का *भांड मिरासी* एक लोक नाट्य है में भांड भिरासी डूम (निम्न जाति) से सम्बद्ध है जो कि शादी-ब्याह, बच्चे के जन्म के अवसर पर गाते बजाते हैं और बख्शीश पाते हैं। हास्य विनोद से भरपूर इस लोक नाट्य के प्रदर्शन से दर्शक गण हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते हैं और करतलध्वनि के शोर में नाट्य समागम का आठवाँ दिन भी बहुत ख़ूबसूरती से सम्पन्न हुआ।

आज नाट्य समागम का समापन दिवस था 17 जनवरी प्रातः 10 बजे बाल रंगमंच *चूँ चूँ चीरीमीरी सुन्दर गुन्दर उन्दर—उन्दर राजा,* का मेघदूत थिएटर-3 में मंचन किया गया। सूरत के सार्थक रंगमंच द्वारा प्रस्तुत नाटक का निर्देशन श्री विजय के सेवक ने किया। बाल कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नाटक में बच्चों का अभिनय देखते बनता था, यह नाटक चूँकि बच्चों के लिए रखा गया था, इसीलिए इसकी कथा गणेश जी और उनके चूहे चुन-चुन की थी। यह नाटक बहुत सराहनीय था।

इसी क्रम में सायंकाल दिव्यांग बच्चों का आर्केस्ट्रा-स्वरानन्दवन दर्शकों के समक्ष पेश किया गया। जिसका संगीत डॉ. भारती विकास आम्टे जी ने दिया व निर्देशन डॉ. विकास बाबा आम्टे द्वारा किया गया। प्रसिद्ध समाजसेवी बाबा आम्टे द्वारा स्थापित महारोगी सेवा समिति चन्द्रपुर, महाराष्ट्र द्वारा प्रस्तुत तीन घंटे के इस प्रदर्शन में दिव्यांग कलाकारों ने अपनी असाधारण संगीत व नृत्य प्रस्तुतियों से दर्शकों का दिल जीत लिया। दृष्टिहीन, मन्दबुद्धि व बेज़ुबान इन कलाकारों ने जो नृत्य व गीत हम सभी के समक्ष पेश किए उसकी जितनी तारीफ़ की जाए उतनी कम है। आज हमारे देश में जो किसानों द्वारा आत्महत्याएँ हो रही है इस पर आधारित एक नृत्य इन दिव्यांग बाल कलाकारों द्वारा पेश किया गया जो कि अत्यन्त प्रभावशाली था।

सायंकाल नाटक *कनसिना मने*-रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बंगला डाकघर से अनूदित की प्रस्तुति की गई। जिसका निर्देशन जगदीश आर जानी द्वारा किया गया। यह नाटक रंग प्रयोगशाला सानेहल्ली, कर्नाटक द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इस नाटक ने सभी का ख़ूब मनोरंजन किया। यह नाटक कुशल नामक एक युवा लड़के की कहानी है जो कि एक बीमारी से ग्रस्त है और उसे चहारदीवारी में रहने के लिए बाध्य किया गया है। किन्तु फिर भी उसे आशा है कि एक दिन वो एक आज़ाद पंछी की तरह खुले आसमान में उड़ेगा और पूरी दुनिया की सैर करेगा। सभी कलाकारों ने इस प्रस्तुति को बेहद ख़ूबसूरती से पेश किया।

इसी क्रम में सायंकाल नया थिएटर, भोपाल द्वारा कामदेव का अपना वसन्त ऋतु का सपना नामक नाटक की प्रस्तुति दी गई जो कि शेक्सपियर के नाटक ए मिड समर नाइट्स ड्रीम पर आधारित था, जिसका निर्देशन श्री हबीब तनवीर द्वारा किया गया। यह नाटक दो प्रेमी युगलों की प्रेम कहानी के इर्द-गिर्द घूमती है। सभी कलाकारों का अभिनय सराहनीय था, सभी ने अपने पात्र को बख़ूबी से निभाया जो कि दर्शकों को पसन्द भी आया। यह नाटक शेक्सपीयर के सर्वाधिक लोकप्रिय नाटकों में से एक है और विश्वभर में इसका मंचन हो चुका है।

इसके अतिरिक्त संगीत नाटक अकादेमी की छउ परियोजना के कलाकारों द्वारा सरायकेला छउ नृत्य और सेण्टर फॉर ऐजुकेशन एंड वेलेण्ट्री ग्रुप के निदेशक श्री जी.एस. चन्नी के नेतृत्व में नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अमूर्त धरोहर

अमित सक्सेना

'सांस्कृतिक सम्पदा' की परिभाषा पिछले दशकों से अपने निर्धारित अर्थ के परे जा बहुआयामी हो चली है। इसका प्रमुख श्रेय भारत की विविध सांस्कृतिक परम्पराओं की निरंतरता को तो जाता ही है, अधिकांश श्रेय यूनेस्को द्वारा मनोनीत कई सम्मेलनों, समझौतों और करारो को भी जाता है। भारत द्वारा पुष्टि की गई दो ऐसे समझौतों / करारों को प्रमुख माना जाता है जिनका सीधा सम्बन्ध अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा के संवर्धन से है—

1) मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा के संरक्षण का करार, 2003
2) सांस्कृतिक भाव एवं परम्पराओं के रक्षण एवं समृद्धि का करार, 2005

वर्ष 2003 के करार से जो महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए उसमें प्रमुखत: अमूर्त सम्पदा को समझने या यूँ कहें कि उसे 'मूर्त' करने की चेष्टा सम्मिलित है, और जो संस्कृति के प्रत्यक्ष पहलुओं के परे देखने की ओर इंगित करता है, जैसे-

1) मौखिक परम्पराएँ जिनमें भाषाएँ भी शामिल हैं,
2) प्रदर्शन कलाएँ
3) सामाजिक रीति-रिवाज़ और पर्व
4) पर्यावरण एवं ब्रह्माण्ड, से जुड़ा ज्ञान, और
5) पारम्परिक शिल्प कौशल

निरंकुश भूमण्डलीकरण की बढ़ती भयावही छाया में केवल एक ही दिशा-निर्देशक किरण दिखती है और वह है—आने वाली और वर्तमान पीढ़ियों को अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के रक्षण और संवर्धन के अग्निकुण्ड में आहुति-सम जुड़ना होगा। ऐसा करने के लिए प्रयासों को पुन: लक्षित करना होगा, नीतिओं को अधिक सशक्त करना होगा, और प्रमुखत: सांस्कृतिक परम्पराओं के संवाहक-सम समुदायों, कलाकारों, हित धारकों, और युवा पीढ़ी के साथ व्यापक संवाद स्थापित करना ही होगा। संगीत नाटक अकादेमी द्वारा गत 25 से 27 मार्च 2016 को आयोजित 'अमूत धरोहर पर्व' के केंद्र बिंदु में इसी संवाद स्थापना की अहम भूमिका रही।

अकादेमी के मेघदूत परिसर में इस पर्व की बिसात बिछी। सुबह का सत्र संगोष्ठी का था जिसमें तीनों दिन अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा से जुड़े विषयों पर चर्चा रही-

1) संरक्षण पद्धतियाँ
2) क्षमता संवर्धन
3) प्रलेखन

संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागी उन संस्थाओं के प्रतिनिधि थे जिन्होंने वर्ष 2015-16 के लिए संस्कृति मंत्रालय द्वारा मनोनीत-भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण की योजना के अंतर्गत अनुदान प्राप्त किया था।

इस संगोष्ठी में प्रतिभागियों को अपने-अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने का अवसर मिला। इस बात की पुन: पुष्टि हुई कि सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण का बीड़ा अब केवल उससे जुड़े समुदायों तक ही सीमित करके नहीं दिया जाना चाहिए। अपितु इन समुदायों को अपने साथ ऐसी सांस्कृतिक संस्थाओं, शिक्षण केंद्रों, महाविद्यालयों और स्व तंत्र-रूप से कार्य में संलग्न शोधकर्ताओं को भी जोड़ना चाहिए।

वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा कई ऐसी परियोजनाएँ लागू की गई हैं जिनका सीधा जुड़ाव रोजगार उपार्जन से है, जैसे-

1) 'स्किल इंडिया'
2) 'मेक इन इंडिया'

पारम्परिक शिल्प कौशल एक ऐसा मंच है जिस पर प्रदर्शित हो भारत की सांस्कृतिक सम्पदा एक अनूठा ही स्तर अर्जित किए हुए है। पुतुल-कला, मुखौटा-निर्माण की कला,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab Jammu

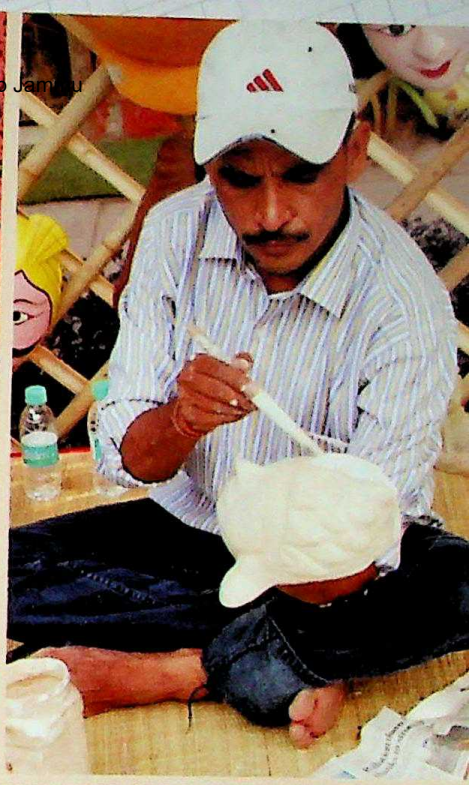

ऊपर-बाये : कठपुतली निर्माण करते राजस्थान के कलाकार

ऊपर-दाये : मुखौटा निर्माण करते कलाकार

नीचे : जंडियाला गुरु दे ठठेरे पंजाब द्वारा बर्तनों का निर्माण

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Courtesy Of ... Gantalab Jammu

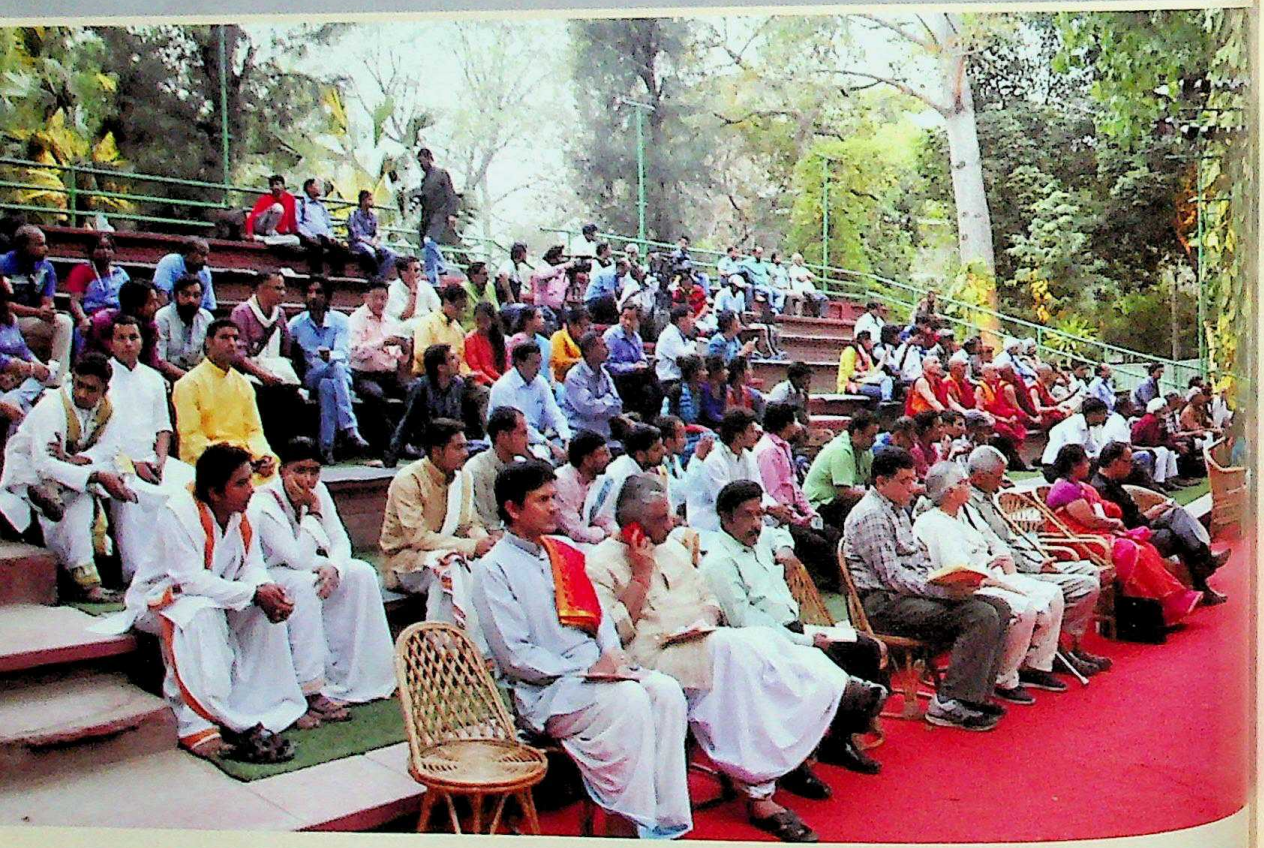

ऊपर : लद्दाख के बौद्ध सन्यासियों द्वारा मंत्रोच्चारण

नीचे : दर्शक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ılab Jammu

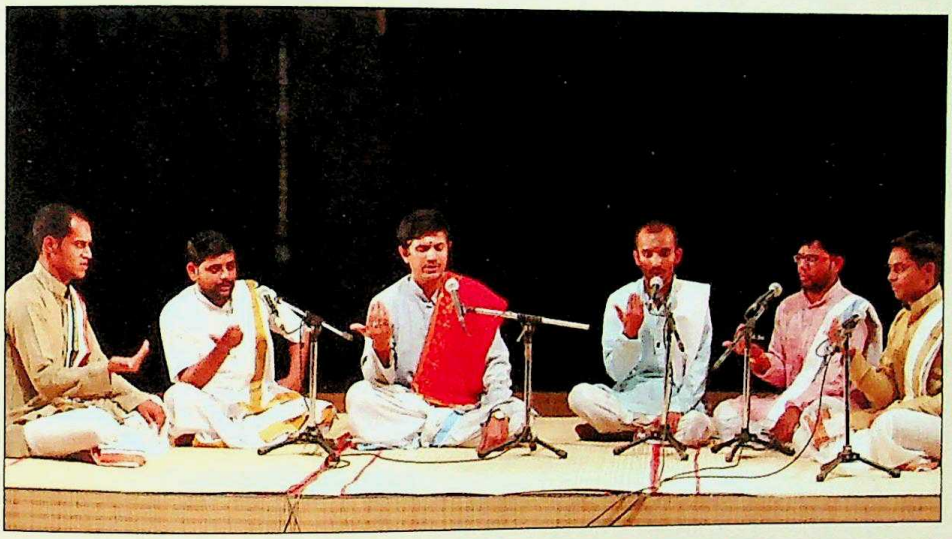

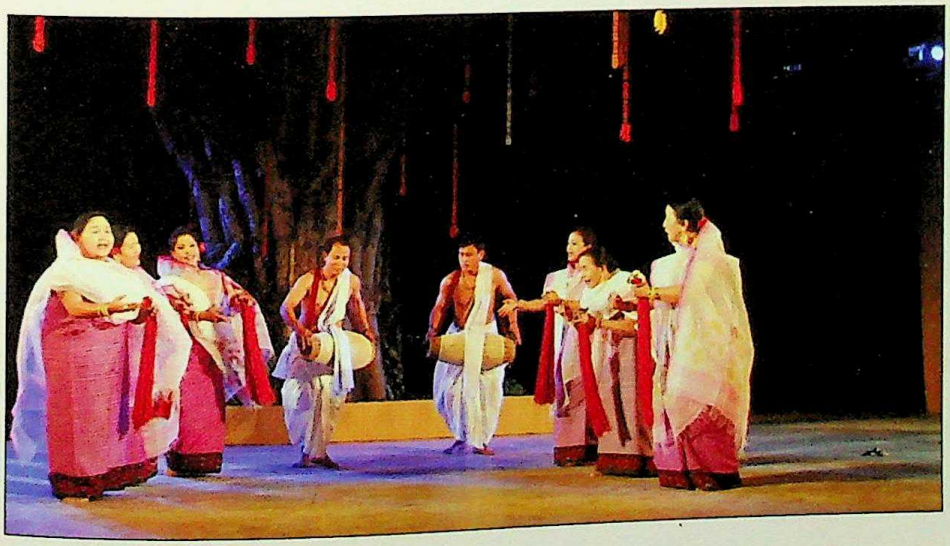

ऊपर : कूट्टियाट्म की प्रस्तुति

मध्य : वैदिक मंत्रोच्चारण की प्रस्तुति

नीचे : मणिपुर के नट संकीर्तन की प्रस्तुति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

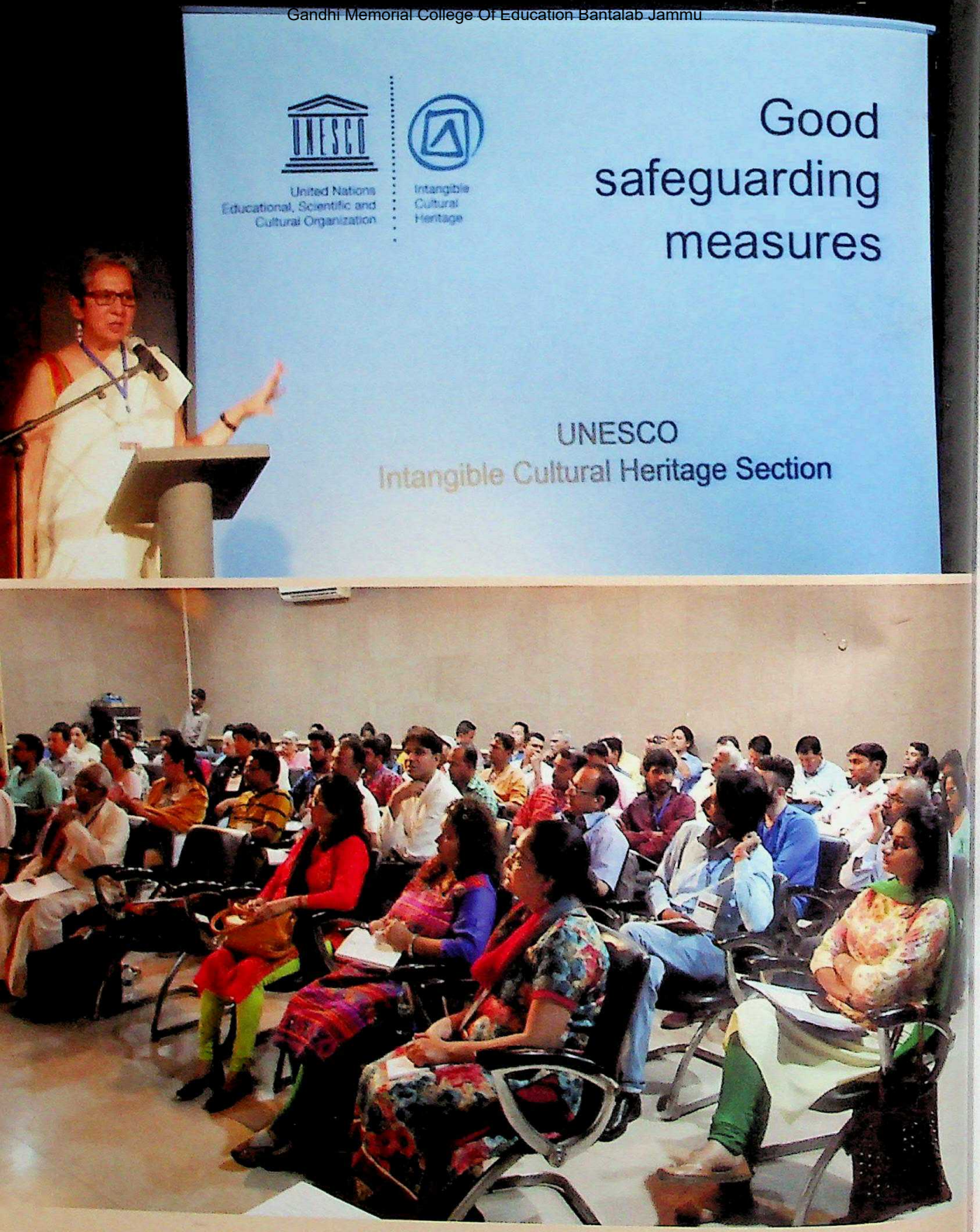

ऊपर : संगोष्ठी में डॉ० शुभा चौधरी द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत पर व्याख्यान

नीचे : श्रोता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वस्त्र-सज्जा, आभूषण बनाने की कला, शिल्प कला, मंच निर्माण, टैराकोटा, कढ़ाई-बुनाई, अल्पना-रंगोली-ऐपण, मुकुट-निर्माण कला आदि इत्यादि इसके विस्मित करते जीवन्त उदाहरण हैं। ऐसी ही एक कला है जिसे 2003 यूनेस्को करार की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर सूची में सन् 2014 को अभिलेखित किया गया है— *जंडियाला गुरु दे ठठेरे।* यह पंजाब की पीतल-तांबे के बर्तन बनाने की पारम्परिक शिल्प कला है। इस आयोजन में इस कला के संवर्धन, प्रचार-प्रसार के लिए विशेष मंच बनाया गया। साथ ही सरायकेला छउ नृत्य में प्रयोग में आने वाले मुखौटों-मुकुटों के निर्माण की हस्तकला को भी प्रदर्शित किया गया। और इस पूरे परिवेश को अपने संगीत से उल्लासित कर रहा था राजस्थानी कठपुतली निर्माण का मंच। वहाँ से उभरता लोक गायकों का स्वर, सारंगी एवं खड़ताल की सुरमयी संगत के साथ होता कुशल कठपुतली निर्माण मनोरम छठा बिखेरता रहा। दूसरी ओर से आती ठठेरा कारीगरों के हथौड़े की ध्वनि, सरायकेला प्रान्त से लाई खड़कई नदी की मिट्टी से रचे छउ-मुखौटे एक ओर जीवन्त हो रहे हैं और दूसरी और तपती भट्टी में हाथ डाल पीतल-तांबे के बर्तनों को परिपक्व किया जा रहा था—मानो अकादेमी परिसर एक लघु 'कला-कारख़ाना' नहीं अपितु कला-कारख़ाना ही बन गया हो।

अकादेमी परिसर में सम्भवत: प्रथम बार, या यूँ कहें की किसी ऐसी परम्परा को प्रदर्शित किया गया, जो अपने मूल सांस्कृतिक परिवेश से एक प्रदर्शन कला के संदर्भ में, बाहर न आई हो, वो थी उत्तराखण्ड राज्य के जोशीमठ प्रांत स्थित सलूर-डूंगरा का धार्मिक पर्व और राग अनुष्ठांनिक नाट्य परम्परा-रम्माण। बैसाखी के दिन गाँव में स्थित भूमियाल देवता के मंदिर प्रांगण में प्रत्येक वर्ष आयोजित होता है यह पर्व। बारी-बारी से गाँव का हर एक परिवार पूरे वर्ष तक देवता के प्रतीक मुखौटों को अपने घर में स्थापित कर के रखता है पूरे एक वर्ष तक वह घर मानो मंदिर ही बन जाता है, और बैसाखी के दिन, शुभ मुहूर्त अनुसार, इस घर से देवता का जुलूस बाहर आता है और पारंपरिक वाद्य-यंत्रों, जागर-गायन, देव मुखौटों और पोशाकों का एक समन्वित विस्मयकारी परिवेश सजग हो उठता है। मानो मनुष्यों के बीच साक्षात देवता ही विचर रहे हों। जैसी सहजता एक साधारण आंचलिक मनुष्य की होती है वैसी ही झलक उन देवताओं की भी होती है। यह सही है कि देवताओं का आह्वान मनुष्य की देह में ही हुआ होता है पर उस समूचे परिवेश का भाव ही आस्था की शक्ति से द्रवित हो किसी चमत्कार से भी अधिक चमत्कृत हो उठता है। ऐसे कार्यक्रम को मेघदूत परिसर के मंच पर उसके भव्य विस्तार को संक्षिप्त कर प्रदर्शन करना सरल न था और ऊपर से कलाकारों का दल कोई व्यवसायिक नहीं बल्कि गाँव के साधारण जन थे। कोई चरवाहा था तो कोई दुकानदार, कोई अध्यापक था तो कोई गाँव के विद्यालय में पढ़ने वाला छात्र। उन सभी के मन की भावना थी की उनकी सांस्कृतिक धरोहर-रम्माण-अधिकाधिक जन जानें और उन्हीं के सरीखे गर्वोनत अनुभव करें।

इस पर्व का प्रमुख उद्देश्य यह भी था कि भारत की वह अमूर्त सम्पदा जो यूनेस्को 2003 करार की सूची में अभिलेखित हुई हैं उन्हें प्रस्तुत किया जाए जैसे की कूटियाट्टम्, रामलीला, वेद-पाठ, रम्माण, नौरोज़, मुडियेट्टु, बौद्ध मंत्र पाठ, संकीर्तन एवं ठठेरा। इन प्रस्तुतियों में विशेषत: इस पक्ष को दर्शाया गया जो पुरातन हो चला है अर्थात् इन परम्पराओं से जुड़े समुदाय भी पुरानी शैलियों का संवाहन नहीं कर रहे। प्रयास यही रहा कि उपरोक्त वर्णित परम्पराओं में प्रदर्शनकारी कलाओं के पुरातन से पुरातन पक्ष का आह्वन किया गया। उदाहरण दें तो जैसे संकीर्तन जिसमें उससे जुड़ी अति दुर्लभ होता जा रहा आयाम 'बसक इशई' को प्रस्तुंत किया गया। यह नट संकीर्तन की एक पुरातन परम्परा है जिसमें नायिका के विभिन्न भावप्रोत दृष्टिकोण से भगवान कृष्ण की छवि को वर्णित किया जाता है—गीत और नृत्य के माध्यम से। जहाँ पुरातन तत्वों को पुन: जागृत करना इस अमूर्त धरोहर पर्व की एक सोची समझी मुहिम रही वही इसके ठीक विपरीत परम्परा के बदलते स्वरूप को भी देखा गया। जैसे कालबेलिया की प्रस्तुति के पल। ऐसा स्वयं हुआ उन्हीं के द्वारा जिन्हें इस जनजातीय कला को पूरे विश्व में लोकप्रिय बनाया-गुलाबो सपेरा-जिन्हें इस कला के प्रति निष्ठा और योगदान के लिए वर्ष 2016 के लिए पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया है। गुलाबो जी से हुई बातचीत से यह और स्पष्ट हो चला कि जितनी आवश्यकता पुरातन आयाम को पुन: प्रवर्तन करने की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है उतनी ही आवश्यकता वर्तमान समय में परम्परा के नए आयाम खोजने की भी है। ठीक वैसे ही जैसे किसी संचित जलाशय को निकास का रास्ता मिल ही जाता है। ऐसा ही कुछ देखने को मिला पारसी समुदाय के युवा दल द्वारा प्रस्तुत एक पारसी-गुजराती नाटक में- 'बंगला माह बंगली'। अपने समुदाय की कुछ अवधारणायों को एक व्यंग्यात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया जो सम्भवत: इस ओर इंगित करता है की परम्परा का प्रारूप और उसका जीवन्त बने रहना केवल बदलाव या परिवर्तन की धुरी पर टिका है और यही शाश्वत सत्य भी है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा आगामी 2030 के सतत विकास लक्ष्यों में से एक संस्कृति संवर्धन को भी प्रमुखत: मिली है। अमूर्त धरोहर पर्व, अगर इसे एक पहल न भी कहें, पर यह एक बड़ा प्रयास माना जा सकता है जिसमें प्रस्तुतियों के साथ-साथ देश की अमूर्त धरोहर के संरक्षण, संवर्धन, पुन: प्रवर्तन, प्रलेखन जैसे संदर्भो पर संवाद स्थापित करने की भूमिका को महत्व दिया गया। कोई भी विकास सतत या दीर्घायु तब ही हो सकता है जब तक उसके धरातल में संस्कृति संवर्धन के बीज न बोए गये हों। जैसे बरगद की शाख पुन: धरती के गर्भ में पहुँच अपने उद्गम स्त्रोत को पाती है और पुन: ही इक नए पौधे के रूप में उग आती है वैसा ही संस्कृति का स्व रूप है और जो इसे अमूर्त होते हुए भी रूप प्रदान करता है वह है मनुष्य का भाव। हमारी स्वत: की निरन्तरता पर ही यह संस्कृति वृक्ष टिका है और प्रयास, अपने मन को सींचने का, कभी क्षुब्ध न हो यही आगामी लक्ष्य रहे इस ओर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुतुल परंपरा–गंगटोक

शुभा सक्सेना

[संगीत नाटक अकादेमी प्रदर्शन कलाओं के आयोजनों को राष्ट्र के प्रत्येक राज्य में करती है और क्षेत्रीय कलाकारों को प्रदर्शन के लिए मंच उपल्बध कराती है। इसी क्रम में 29 मार्च से 2 अप्रैल 2916 तक गंगटोक, सिक्किम में पुतुल परंपरा उत्सव का आयोजन हुआ जिसमें अनेक राज्यों के पुतुलों की प्रस्तुतियाँ कलाकारों ने पेश की। गंगटोक में आयोजित इस पुतुल परंपरा उत्सव को श्रीमती शुभा सक्सेना ने हमें भेजा है—संपादक]

संगीत नाटक अकादेमी ने सांस्कृतिक मामलों और विरासत विभाग, सिक्किम सरकार के सहयोग से 5 दिवसीय पुतुल उत्सव (29 मार्च से 2 अप्रैल 2016) का गंगटोक के मनन भवन में आयोजन किया। पुतुल परंपरा उत्सव के लिए दलों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि भारतीय पुतुल कला के विभिन्न प्रकारों को गंगटोक के दर्शकों को दिखाया जाए। इस सिलसिले में यह कोशिश की गयी कि भारत के प्रख्यात पुतुल दलों को आमंत्रित किया जाए। उत्सव में, भारत के विभिन्न राज्यों से आमंत्रित पारंपरिक व समकालीन 17 पुतुल दलों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। पुतुल परंपरा उत्सव का उदघाटन सिक्किम के सांस्कृतिक मामलों एवं विरासत विभाग के मंत्री श्री जी. एम गुरुंग ने किया। उदघाटन समारोह में एंचेय मोनास्ट्री के 12 छात्रों (आयु 8 से 12 वर्ष) एवं उनके अध्यापक को आमंत्रित किया गया जिन्होंने ने 10 मिनट का बौद्ध मंत्रोचारण किया।

दिन की पहली प्रस्तुति में संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित दादी पद्मजी ने पुतुल नाटक **अनोखे वस्त्र** प्रस्तुत किया जिसे 1980 में प्रथम बार प्रस्तुत किया गया था उसके बाद यहाँ गंगटोक में प्रस्तुत किया गया। अनोखे वस्त्र प्रसिद्ध अङ्गेज़ी कहानी द एंपेरर्स न्यू क्लोद्स पर आधारित थी। दादी पदमजी ने अपने इस पुतुल नाटक में बड़े-बड़े खूबसूरत मुखौटों और रंगबिरंगी पोशाकों का प्रयोग किया था जिसे देख कर गंगटोक के दर्शकों ने दांतों तले उंगली दबा ली। नाटक को ब्राज़ीलियन संगीत की फड़कती धुनों एवं अन्य लोकप्रिय संगीत और धुनों के माध्यम से प्रस्तुत किया। दिन की दूसरी प्रस्तुति उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ पुरस्कार से सम्मानित पुतुल कलाकार मोहम्मद शमीम के आधुनिक पुतुल नाटक **पिन्नोकियो** की थी, जिसमें लकड़ी से बने पुतुल पिन्नोकियो को सच में एक लड़का बनने की प्रबल इच्छा होती है। जिज्ञासु और नटखट पुतुल अनेक शैतनियाँ करता है और हर बार पकड़ा जाता है क्यूंकि हर बार झूठ बोलने पर उसकी नाक लंबी होती चली जाती है। पुतुलों को बड़ी खूबसूरती से बुनराकु तकनीक द्वारा संचालित किया गया। मछली को नाव में तब्दील होते देख सभी दर्शक अचंभित रह गए। तीसरी प्रस्तुति भगवान राम और हनुमान युद्ध महाराष्ट्र की पारंपरिक धागा पुतुल-**कालसूत्री बाहुल्य** की थी जिसे संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित पुतुल कलाकार श्री गणपत सखाराम मास्गे ने प्रस्तुत किया। गणपत सखाराम मास्गे के पुत्र शिवदास कुमार मास्गे परंपरा में नई नई तकनीक का प्रयोग करने की कोशिश करते हैं जैसा कि उन्होने इस नाटक में भी किया था। नाटक के मध्य में हनुमान जी का पुतुल हवा में उड़ता हुआ आता है और मंच पर बैठा कलाकार उसे बड़ी चतुराई से पकड़ उसका संचालन करने लगता है। दिन की चौथी एवं अंतिम प्रस्तुति प्रोफेसर बी. कामेश द्वारा प्रस्तुत जादुई तमाशे **मैजिक शो ऑन पपेट** की थी जो कि पुतुलकला पर आधारित एक नया प्रयोग था।

30 मार्च की प्रथम प्रस्तुति उत्तर प्रदेश की दस्ताना पुतुल कला **गुलाबो-सिताबो** की थी। जिसे मिलन यादव के दल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वारा प्रस्तुत किया गया। मिलन यादव ने अनेक आधुनिक पुतुल नाटकों का भी निर्देशन किया है। ऐसा माना जाता है कि गुलाबो-सिताबो की शुरुआत सत्रहवीं शताब्दी के आसपास हुई थी। ये पुतुल कलाकार घुमंतू वर्ग के नट और बंजारे होते थे जो राजा महाराजाओं और नवाबों के दरबार में उनकी रानियों और बेगमों के मनोरंजन हेतु यह खेल प्रस्तुत किया करते थे। राजाओं और नवाबों के बाद व मनोरंजन के नए-नए साधनों के आविर्भाव से अब यह कला लगभग लुप्त होने की कागार पर है। गुलाबो-सिताबो दो स्त्री- पात्र हैं जिनका विवाह एक ही व्यक्ति से हुआ है। जहां एक ओर गुलाबो अपना प्रभुत्व जमाती है वहीं दूसरी ओर सिताबों एक दीनहीन व उपेक्षित पत्नी है। दोनों के बीच होने वाली तकरार को दर्शाया जाता है। दिन की दूसरी पुतुल प्रस्तुति मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी **सवा सेर गहूँ** पर आधारित थी। उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग द्वारा आयोजित पुतुल कार्यशालाओं में प्रशिक्षण प्राप्त कर उन्हीं के लिए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकीं दीपा मित्रा के दल -दीपा पपेट संस्थान, लखनऊ ने प्रस्तुत किया। प्रस्तुति आधुनिक छड़ और दस्ताना पुतुलों के द्वारा दर्शायी गई। तीसरी प्रस्तुति **अमरसिंह राठौर**-राजस्थान की पारंपरिक धागा पुतुल कठपुतली की थी जिसे जयपुर के पुतुल कलाकार राजेश भाट और भागीलाल भाट ने अपने दल के साथ प्रस्तुत किया। इनकी दोनों के कार्यक्रम की खासियत यह है कि दोनों आग वाली पुतलियों का भी प्रयोग करते हैं। दिन की चौथी एवं अंतिम प्रस्तुति **टेपार बाबार संसार** पश्चिम बंगाल के दस्ताना पुतुल -बेनिर पुतुल की थी जिसे गणेश घोराई और उनके दल ने प्रस्तुत किया। कहानी को बंगाली फोक गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। गीत का सार था—पिता घर गृहस्थी चलाता है, माँ घर पर रहती है पिता माँ से कहता है तुम्हें भी मेरी घर-गृहस्थी चलाने में मदद करनी पड़ेगी ताकि हम अपने बच्चों को ढंग से पाल-पोस सकें। अंत में माँ तैयार हो जाती है।

31 मार्च की प्रथम प्रस्तुति अकादेमी के टैगोर पुरस्कार से सम्मानित 85 वर्षीय श्री महीपत कवि के दल पपेट्स एंड प्लेज़, अहमदाबाद की थी जिन्होंने भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा रचित नाटक **अंधेर नगरी** प्रस्तुत किया। पुतुल नाटक में उन्होनें दस्ताना और छड़ पुतुलों का प्रयोग किया। दिन की दूसरी प्रस्तुति **वस्त्र हरण** थी जिसे उड़ीसा के दस्ताना पुतुल दल-माँ बाक्यदेवी सखी कुंढाई नृत्य संसद ने परमेश्वर सिंह के निर्देशन में प्रस्तुत किया। सखी कुंढाई प्रस्तुत करने वाले केला समूह के अहीर गौड़ घुमंतू वर्ग के होते हैं अपने इस कला द्वारा वे राधा-कृष्ण प्रेम और पूर्व समय में बंगला और उड़िया भाषायी क्षेत्रों में वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये किया करते थे। अब यह कला लुप्त होने की कगार पर है । इस समय केन्द्रपाड़ा ज़िले के मंत्रिपाड़ा गाँव में केवल दो ही दल बचे हैं। दिन की तीसरी प्रस्तुति कर्नाटक के धागा पुतुल की थी। धागा पुतुल दक्षिणी मैसूर क्षेत्र में सूत्रदा गोम्बेयट्टा और उत्तर में गोम्बेयाट्टा और कर्नाटक के तटीय जिलों में यक्षगान गोम्बेयाट्टा नाम से प्रसिद्ध है। ये विशेष रूप से अपनी विषय वस्तु प्रदर्शन की बनावट, संगीत, पहनावे और रूप सज्जा की दृष्टि से स्थानीय यक्षगान नाट्य प्रदर्शनों से काफी मिलते-जुलते हैं। केरल के कासरगोड़ के पुतुल दल श्री गोपालकृष्ण यक्षगान बोम्बेयाट्टा संघ ने **नरकासुर वध** प्रस्तुत किया। जिसे कर्नाटक और केरल राज्य पुरस्कार से सम्मानित पुतुल कलाकार के.वी रमेश के निर्देशन में तैयार किया गया था।

1 अप्रैल की प्रथम प्रस्तुति पश्चिम बंगाल के पुतुल कलाकार सुदीप गुप्ता की थी जिन्होंने आधुनिक पुतुल नाटक **नाक कटा राजा** प्रस्तुत किया। नाक कटा पुतुल नाटक में सुदीप गुप्ता ने बड़ी खूबसूरती से दस्ताना, छड़ पुतुलों के साथ-साथ नर्तकों का भी प्रयोग किया था। दूसरी प्रस्तुति असम के पारंपरिक धागा **पुतुल-पुतला** नाच की थी जिसे जिसे पुतुल नाच,पुतला भाओना, और पुतला भाओरिया नाम से भी जाना जाता है। असम के कामरूप जिले के पुतुल दल सागरिका पपेट थिएटर ने बीहू नाच व केली गोपाल प्रस्तुत किया। निर्देशक मनोरंजन रॉय ने पहले असम के प्रसिद्ध बीहू नाच को पुतुलों के माध्यम से दर्शाया और फिर केली गोपाल की कथा प्रस्तुत की। दिन की तीसरी एवं अंतिम प्रस्तुति ग्राम कल्चर पपेट तमिल नाडु की पारंपरिक धागा पुतुल **बोम्मालाट्टम** की थी जिसे श्री मुरूगन संगीत सभा के कलाकारों ने टी एन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऊपर : दीप प्रज्ज्वलित करते सिक्किम के संस्कृति एवं विरासत विभाग के मंत्री श्री जी. एम. गुरुंग

नीचे : एंचेय मठ के छात्रों द्वारा बौद्ध मंत्रोच्चारण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऊपर-बायें : केरल के कासरगोड़ के गोपालकृष्ण यक्षगान बोम्बेयाट्टा द्वारा नरकासुर वध की प्रस्तुति

ऊपर-दायें : गुलाबो सिताबो की प्रस्तुति देते मिलन यादव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नीचे : अमर सिंह राठौर की प्रस्तुति में राजस्थान की पारंपरिक धागा पुतुल

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शंकरनाथन ने निर्देशन में प्रस्तुत किया। दल ने बोम्मालाट्टम पुतुल के छोटे-छोटे मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जैसा कि वे अमूमन गाँव के कार्यक्रमों में करते हैं—गणेश पूजा, मसखरे और अम्मानाई का गेंद का नृत्य, भरतनाट्यम नृत्य, करागाट्टम-ग्रामीण लोक नृत्य और कवाडीयाट्टम और साँप का लोक नृत्य।

2 अप्रैल कि प्रथम प्रस्तुति रवीन्द्रनाथ टैगोर की साहित्यिक कृति **चंडालिका** पर आधारित थी जिसे त्रिपुरा पपेट थियेटर ने प्रभिताङ्गसु दास के निर्देशन में प्रस्तुत किया। यह नाटक छड़, छाया और बुनराकु पुतुलों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। अपने मनमोहक पुतुलों, सुंदर मंच और प्रकाश व्यवस्था, बढ़िया पुतुल संचालन से इस पुतुल नाटक ने सभी का दिल जीत लिया। दिन की दूसरी प्रस्तुति थी **रामदास पाध्ये लाइव** जिसे वेंट्रिलोकुईस्ट रामदास पाध्ये ने प्रस्तुत किया। उन्होंने दर्शकों को मंच पर से ही पुतुल कला की जानकारी देने कि कोशिश की—पुतले कितनी प्रकार के होते हैं व उन्हें कैसे बनाया चलाया जाता सकता है इत्यादि। इनके मनमोहक कार्यक्रम ने बच्चों के साथ साथ बड़ों का भी दिल जीत लिया। दिन की व उत्सव का अंतिम व सुंदर प्रस्तुति थी आंध्रप्रदेश के छाया पुतुल - **तोलू बोम्मालाट्टा** की जिसे छाया नाटक बृंदम के कलाकारों ने शिंदे चिदम्बरा राव के निर्देशन में प्रस्तुत किया। छाया पुतुल नाटक- **लंका दहनम** में मुख्य गायिका थीं संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित श्रीमती कंडे अंजनम्मा।

इस प्रकार अकादेमी ने देश भर के पुतुलों के विभिन्न स्वरूपों से गंगटोक के रसिको को परिचित कराया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिक्र उस परीवश का

डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा

एक ज़माना वह भी था जब न तो रेडियो होता था,न मोबाइल फोन और न ही सिनेमाघर, न ही टेलिविजन इत्यादि। मनोरंजन के साधन सीमित थे या यूँ कहें कि गाने सुनने का शौक शाही शौक होता था। अर्थात यह बस पैसे वालों के बस में था कि वह किस प्रकार अपना शौक पूरा करें। गाने बजाने वालों के भी स्कूल नहीं होते थे, यह तालीम तो केवल कुछ घरानों तक ही सीमित थी। इस घराने में कभी कभी किसी उत्सव पर किसी पैसे वाले के घर प्रोग्राम होता था जिसे महफिल या मुजरा कहा जाता था। वहाँ पर भी केवल वही लोग पहुँच पाते थे जो करीबी रिश्तेदार अथवा खासों खास होते थे। आज गीत संगीत सुनना तो आम बात है। हज़ारों कलाकार बाज़ार में टैलंट शो में भाग लेने का इंतज़ार कर रहे हैं।

पर यह बात तो उस समय की है जब प्रोग्राम के लिए प्रेक्षाग्रह अथवा हाल भी नहीं थे न माइक और न ऑर्केस्ट्रा केवल मुजरा और संगीत के नाम पर सारंगी और तबला। जी हाँ तवायफ के यहाँ मुजरा होता था अथवा किसी महफिल पर तवायफ का गाना और नृत्य होता था। तवायफें स्वयं गाना गाकर नृत्य भी करती थी। गीत संगीत के नाम पर कुछ कोठे मशहूर थे जिन्हे गाने वाली को बाई जी कहा जाता था। मशहूर तवायफ़ों के कोठों पर मशहूर शायरों के कलाम संगीत की धुन पर गाये जाते थे। और केवल शहर के रहीसजादे ही मुजरा सुनने का शौक रखा करते थे। अथवा शहर के जमादार कोतवाल आदि जमा होते थे सुनने के लिए।

तवायफ नाम आते ही आज हमारे ज़हन में कुछ ऐसा किरदार सामने आता है जिसे समाज में इज्ज़त की निगाह की नज़र से नहीं देखा जाता था। लेकिन तवायफ शब्द का मतलब उस औरत से होता था जो एक जगह न रहकर घूमकर खुले तौर पर गीत नृत्य का व्यापार करती थी। न कि देह व्यापार।

तवायफ़ों ने आज की संस्कृति को ज़िंदा रखा। यूँ कहें कि आज भी जो शास्त्रीय संगीत जगत में कायम है उसे तवायफ़ों ने ही पीढ़ी दर पीढ़ी चला कर जीवित रखा । उसके साथ साथ ऐसे शास्त्रीय वाद्य यंत्र जिनका समाज में कोई ऐसा अंदाज़ नहीं था । वह भी केवल कोठे मुजरे के बल पर ही जीवित रहा।

अठारहवीं शताब्दी तक मुजरे के संगतकारों को वह इज्ज़त हासिल नहीं थी यानि वह दरबारों और महफ़िलों में बैठकर नहीं अपितु खड़े होकर मुजरे के संग संगत किया करते थे। उन्हें अपने साज अपने शरीर के के संग बांध कर रखने पड़ते थे। आज गायिकी एक प्रतिष्ठित व्यवसाय बन चुकी है परंतु इसे बनाए रखने वाली तवायफ़ों की भूमिका का योगदान हम भूल जाते हैं। तवायफें हमेशा प्रेम गीत ही नहीं गातीं थी अपितु ठुमरी दादरा ख्याल और गज़ल अधिक गाया करती थीं। बड़े बड़े उस्ताद और शायर तो तवायफ़ों के घरों पर शरण पाय रहते थे क्योंकि उनके कलाम को और कोई समझ सकता था तो वो थीं तवायफें ।

तवायफें देह व्यापार में लिप्त नहीं होतीं थी। मगर गज़ल गायिकी के शौकीन उनके अंदाज़ के गुलाम बन जाते थे।

लोग आज के रेड लाइट एरिया की तुलना उन तवायफ़ों के कोठों से करने लगते हैं, जहाँ शास्त्रीय संगीत जीवित रहा। तवायफ़ों की मशूहरी एक सीमित दायरे तक ही होती थी। राजे राजवाड़ों में उनके नाम लिए जाते थे। बदनामी और गुमनामी के दौर से गुज़री तवायफ़ों का फिल्मों में गाना तथा हवाई सफर और अन्य यातायात नहीं होते थे। केवल घोड़ा गाड़ी, तांगा इत्यादि, एक रियासत से दूसरी और अंत में बहुत ही बुरा क्योंकि बहुत कम तवायफें ऐसी होती थीं जिनकी शादी अथवा निकाह होता था। बुढ़ापे का सहारा न होने के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारण वह जब रोगी बन कर खाक-ए-सुपुर्द हो जाती थीं। कोई नहीं जानता मगर बड़े बड़े कलाकार फनकार उनकी गजलें और ठुमरी गाकर नाम शोहरत हासिल करते हैं। खास बात यह भी है कि तवायफें अपने शरीर का प्रदर्शन नहीं करती थीं। वह पूरे लिबास पहन कर सुंदरता की मूरत बन अपने जौहर का प्रदर्शन करती थीं। आभूषण और वस्त्र ही उनकी खास पसंद होते थे। तोहफे के तौर पर लोग इन्हें आभूषण भेंट करते थे। यही गुजर बसर का सहारा था जो न्योछावर और भेंट के रूप में मिलता था। कोई-कोई तवायफें काफी रहीस और रुतबेदार भी होतीं थी। मगर 1952 के पश्चात रजवाड़े समाप्त हुए तो तवायफें भी समाप्त हो गईं।

मिर्ज़ापुर, लखनऊ, फ़ैज़ाबाद, कलकत्ता, बनारस शहर थे जहाँ तवायफें पनाह पातीं थी। 20 वीं शताब्दी में ऐसी ही एक नामी गज़ल गायकी हुई हैं जिनका नाम संगीत की दुनिया में बाइज्जत लिया जाता है। जिन्हें ''रूह-ए-गज़ल'' के नाम से जाना जाता है। वो बेगम अख्तर हैं। जिला फ़ैज़ाबाद 7 अक्तूबर 1914 , बड़ा दरवाज़ा, भरतकुंड की इन बाई जी ने पूरे भारत में शोहरत पायी। लगभग 15 वर्ष की आयु में इन्होंने अपनी पहली स्टेज परफॉर्मेंस दी। और उसके बाद यह सिलसिला बढ़ता गया। उस्ताद इमदाद खान से शागिर्दगी हासिल करने के बाद इनहोने पटियाला घराने के अता मोहम्मद खान साहिब से तालीम हासिल की और वाहिद खान लाहौर वाले से भी इन्होंने संगीत की बारीकियाँ सीखते हुए इन्होंने कलकत्ता के मशहूर फनकार उस्ताद झंडे खान को भी अपना गुरु माना। अनेक फिल्मों में किरदार के साथ गायिकी भी की। लेकिन जल्द ही इन्होंने केवल बतौर गायिकी अपनी वापसी कर ली। यह पहली ऐसी फिदौस रहीं जिन्होंने अपने सीमित दायरे से निकाल कर पूरे देश में गज़ल की लहर चलाई। ठुमरी और गज़ल का पहला रेकॉर्ड 1933 में बनाया जिसने काफी शोहरत हासिल की। अख़्तरी बाई नाम से मशहूर गायिका बेगम अख़्तर बनी और 1945 में इनका निकाह लखनऊ के मशहूर बैरिस्टर इश्तियाक मोहम्मद अब्बासी से हुआ। इज्ज़तदार घराने में निकाह के बाद इन्होने महफ़िलों में गाना कम कर दिया। मगर अपनी गायिकी को ज़िंदा रखा। भारतीय सिनेमा में अनेक गज़लें गायीं, लगभग 400 गायिकीयन इनके नाम हैं। आज़ाद भारत में सरकार ने इन्हे संगीत नाटक अकादेमी सम्मान, पदमश्री, पदम भूषण आदि बड़े सम्मान से देकर इनका रुतबा कायम रखा। अपनी आखिरी स्टेज परफॉर्मेंस 30 अक्टूबर 1974 को देकर वह इस संसार में अपनी छाप छोड़कर माटी की गोद में समा गईं। आज संगीत की दुनिया में उनका नाम बड़े अदब से लिया जाता है।संगीत नाटक अकादेमी ने इस वर्ष उन्हे श्रद्धांजलि देने के लिए 4 दिवसीय गज़ल महोत्सव का आयोजन किया था। इसमें देश के जाने माने गज़ल गायक और शास्त्रीय गायको ने अपनी गायिकी का अंदाज़ प्रस्तुत किया। लगभग 50 प्रस्तुतियों में फिल्म जगत के अनेकों गज़ल फनकार भी भाग ले रहे हैं। इस महोत्सव का उद्घाटन पं. बिरजू महाराज ने किया जो स्वयं एक गायक और कथक गुरु हैं। गज़ल और ठुमरी उनकी विशेषता है। ''स्वरार्पण'' नाम के इस विशेष कार्यक्रम पर संगीत नाटक अकादेमी की सचिव श्रीमती हेलेन आचार्य का कहना है कि यह अख़्तरी बाई अर्थात रूह-ए-गज़ल , जश्न-ए-बेगम अख्तर को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। क्योंकि किसी भी कलाकार को उसके फॅन के साथ याद किया जाये तो उसकी याद तरोताजा हो जाती है। इस अवसर पर संगीत नाटक अकादेमी ने बेगम अख़्तर साहिबा पर निर्मित एक डाक्यूमेंट्री भी प्रदर्शित की जिसका नाम था—जिक्र उस परीवश का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मी ने ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल को प्रतिष्ठा दिलायी

बेगम अख़्तर की शिष्या शान्ति हीरानन्द से रघुवीर की बातचीत

[छोटे-से कद की बेगम अख़्तर ग़ज़ल साम्राज्ञी थीं और एक सम्पूर्ण स्त्री भी। वे ऐसी बेटी थीं, जिन्होंने माँ मुश्तरी बेगम की मौत के सदमे में 4 माह तक गायन से दूरी बनाए रखी, तो ऐसी प्रेमिका भी, जिसने उन्हीं माँ से छुपाकर अपनी पसन्द से काकोरी के ज़मींदार घराने के बैरिस्टर इश्तियाक़ अहमद अब्बासी से शादी कर ली। पत्नी बनीं तो पति के कहने पर अपनी आत्मा में बसे संगीत को ही तिलांजलि दे दी। अपने बच्चे न होते हुए भी वे इतनी अच्छी अम्मी बनीं कि बैरिस्टर अब्बासी के परिवार के जो बच्चे उन्हें 'बाई' कहते थे, उनको भी भरपूर प्यार दिया। वे इतनी अक्खड़ भी थीं कि नमाज़-रोज़े ही छोड़ देतीं और कहतीं—'अल्लाह मियाँ से लड़ाई है', लेकिन फिर ईश्वर से ही अपने संगीत की प्रेरणा भी लेतीं। उनकी शिष्या शान्ति हीरानन्द उनके सबसे करीब रहीं, जो उनको अम्मी कहती थीं। रघुवीर के साथ सांगीतिक वार्ता में उन्होंने बेगम अख़्तर के बारे में बहुत-सी जानकारियाँ साझा कीं।—संपादक]

बेगम अख़्तर से आपकी मुलाकात कैसे हुई ?

लाहौर में काफी समय तक हमारा परिवार रहा है। घर में कोई भी नहीं गाता था। वहाँ पास में एक हॉस्टल था, जिसके वार्डन की बेटी को सिखाने एक शिक्षक आते थे। वह पूरी तरह नेत्रहीन थे। मैं भी उनसे सीखने लगी। उन्होंने मुझे रागों के बारे में बताया, स्वर-ज्ञान दिया और 5 साल मैं उनके साथ जगह-जगह जाती रही। लाहौर रेडियो स्टेशन में ऑडिशन हुआ तो मेरा सिलेक्शन हो गया। विभाजन हुआ तो हम लोग लखनऊ आ गये। लखनऊ में रामपुर के उस्ताद एजाज़ हुसैन ख़ान साहब आते थे हमारे घर, वह सिखाते थे। इधर मेरा नाम भी ट्रांसफर हो गया लखनऊ रेडियो स्टेशन। उस ज़माने में ज़्यादा ऑडिशन वगैरह तो होते नहीं थे। एक साहब थे वहाँ पर कार्यक्रम अधिशासी-अवस्थी जी, वह भी ट्रांसफर होकर लखनऊ आ गये। उनसे जान-पहचान थी, तो वह मुझसे कहने लगे कि अगर तुमको गाना है तो किसी अच्छे उस्ताद से सीखो। उन्होंने बेगम अख़्तर से सीखने का सुझाव दिया, अन्यथा मैं तो जानती भी नहीं थी उन्हें, उनका नाम तक नहीं सुना था मैंने। उसी समय बेगम अख़्तर ने फिर से गाना शुरू किया था। मैं उनके घर पहुंची तो उन्होंने बाजा (हारमोनियम) निकलवाया। उनका नौकर बब्बू बाजा लेकर आया, तो मैंने एक भजन गाया राग पीलू में- बसो मोरे नैनन में नन्दलाल...। भजन सुनकर वह बोलीं कि आवाज़ तो अच्छी है। मैंने भी कह दिया कि मुझे आपसे ही सीखना है। उनके भी मूड में जाने क्या आया कि उन्होंने कह दिया- कल से आ जाना।

तो इस तरह आपकी तालीम शुरू हुई ?

जी, उनके मियाँ जब कचहरी चले जाते थे, तब हमारा बाजा निकलता था। बाजा नहीं बजाने देती थीं। तानपुरा मैं पकड़ लेती थी और वह बाजा पकड़ लेती थीं। कभी तो 3-3, 4-4 घण्टे और कभी कहती थीं कि बिटिया आज जी नहीं है, तुम चाय पीओ।

लेकिन आप दर्शनशास्त्र से संगीत के दर्शन में आ चुकी थीं ?

हाँ, मैं संगीत के दर्शन में आ चुकी थी और उससे मुझे बहुत फायदा हुआ- सोच, ठहराव, स्वभाव- सबमें। 1952 में मैंने दर्शनशास्त्र से एम.ए. में टॉप किया था और पी-एच.डी. करने वाली थी, लेकिन तभी बेगम अख़्तर से मुलाकात हुई, तो सब छोड़ दिया।

बेगम अख़्तर पहली महिला उस्ताद थीं, जिन्होंने गण्डा बाँधकर सिखाना शुरू किया ?

मेरा गण्डा बाँधा 1957 या 58 में। दरअसल, मुम्बई की नीलम बाई आयीं और बोलीं कि तुम बिना गण्डे बँधवाये सिखा रही हो। तब गण्डा बन्धन हुआ। मुन्ने ख़ान तबलिये आये। उन्होंने गण्डा बाँधा, मुझे गुड़ व चना खिलाया और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहा कि आज से तुम इनकी शिष्या हो। अब चिल्ला बाँधने की बारी आयी तो चिल्ला बाँधने का मतलब था कि 40 दिन उस्ताद, शागिर्द के साथ रहे, कहीं बाहर भी न जाये। अब वह तो यह सब कर नहीं सकती थीं, लिहाजा वह सब नहीं हुआ।

अंजलि चटर्जी, रीता गांगुली, ममता दास, शिप्रा बोस- ये सभी आपसे जूनियर होंगी ?

अंजलि और दीप्ति का गण्डा बन्धन मेरे साथ हुआ था। बाकी सब मुझसे जूनियर हैं। अंजलि के पिताजी आईएएस थे। उन्होंने अब्बासी साहब से कहा कि मेरी बेटी को सिखवा दो। उसकी आवाज़ बहुत अच्छी थी, लेकिन फिर उसकी शादी हो गयी, तो उसका गाना छूट गया।

आपको वह कैसे सिखाती थीं ? मतलब उनके सिखाने का तरीक़ा क्या था ?

वह स्वर लगवाती थीं। सबसे पहले उन्होंने मुझे राग तिलंग के पल्टे कराये- 'नि सा ग म प नि सा' और इसको तरह-तरह से गवाया, जैसे- 'नि सा ग म प नि सा', 'प म ग सा', 'नि सा ग म प नि सा', 'नि सा नि सा नि, प नि प नि प'। सिर्फ़ पल्टे और किसी भी राग में और फिर उसी राग में ठुमरी। अब ठुमरी तो मैं बिल्कुल जानती भी नहीं थी, न पहचानती थी और न इतनी समझ थी। वह कहतीं- हमारे पीछे-पीछे गाओ और जो हम कहते हैं, वही करो। फिर उसी राग में ग़ज़ल और इतना गवाया कि समझ में आने लगा। मैं घर पर जाती और पल्टे की प्रैक्टिस करती। फिर ख़याल भी बताया। गुणकली और चन्द्रकौंस में ख़याल बताये। मुझे तो बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था रागों का। तब तक तो ऐसा था कि एजाज़ हुसैन ख़ान साहब ने गाया राग पूरिया, तो उनके पीछे-पीछे मैंने भी गा लिया।

प्यार से सिखाती थीं या सख़्ती से ?

उनकी आवाज़ पूरब की थी, मगर तालीम पटियाला घराने की थी। उन्होंने मुझे गुण की बातें बतायीं, जैसे-खटके, मुर्कियाँ। अगर गले से नहीं निकलीं तो हाथ में बाजे का पटला लेकर कहतीं- हरामज़ादी क्यों नहीं निकलता ? हाँ, ऐसे ही और कभी बुरा नहीं लगता था, क्योंकि उतना ही प्यार भी करती थीं। मुझे प्यार से शन्तो कहती थीं। हममें माँ-बेटी का एक रिश्ता बन गया था। ऐसा लगता था कि उनके आगे कोई दुनिया ही नहीं है।

हर गायक के कुछ पसन्दीदा राग होते हैं, जिन्हें वे कार्यक्रमों में या रियाज़ के समय अक्सर गाना पसन्द करते हैं। उनका ऐसा कौन-सा राग था ?

उनका ज़्यादातर काम राग तिलंग में होता था- ठुमरी भी, ग़ज़लें भी। बाकी रागों में भी होता था, लेकिन तिलंग में ज़्यादा होता था। उन्हें बहुत समझ थी। ग़ज़ल में उन्हें महारत हासिल थी। उनके शौहर भी बहुत अच्छे उर्दूदाँ थे। वह अक्सर अच्छे-अच्छे शायरों को बुलाया करते थे।

बेगम अख़्तर से आपने गायन सीखा और लम्बे समय तक उनके साथ रहीं। उन्होंने गायकी में पंजाब और पूरब अंग का जो अद्भुत समन्वय किया, उसने उनको एकदम निराला बना दिया था। क्या आपके गायन में भी इसकी छाप है ?

मैंने तो और कोई शैली गायी ही नहीं। बनारस में राजपूत राजा थे, इसलिए बनारस और मिर्ज़ापुर की जो बाइयाँ थीं, उनके गायन में वहाँ के लोक गीतों की शैली का प्रभाव था। हूक, हुकार, राधा-कृष्ण का ज़िक्र होता था। अवध में शिया नवाब थे, इसलिए यहाँ के गायन में उर्दू, मिसरे और शायरी होती थी। बेगम साहिबा फ़ैज़ाबाद की थीं तो उन पर फ़ैज़ाबाद का रंग था। पंजाब अंग में खटके, मुर्कियाँ ज़्यादा होती हैं। ठुमरी को वह जैसे स्वेदशी रूप में गाती थीं, कहलाता नहीं है कोई अंग, पर मैंने उसको कह दिया लखनऊ घराने का। मैं कोशिश करती हूँ कि नयी पीढ़ी भी इसे समझे, मगर समझ में नहीं आता उनके। लड़कियाँ साजन और सइयाँ कहते हुए इतना शरमाती हैं कि पूछो मत। कहती हैं कि कैसे कहें ? हमारी शादी नहीं हुई। भई, अगर शादी नहीं हुई तो क्या हुआ ? सइयाँ तो कुछ भी हो सकता है। साजन और पिया तो कहीं भी हो सकता है। प्रकृति हो सकती है, भगवान भी हो सकते हैं। लेकिन जब तक साजन और सइयाँ में वो भाव नहीं आएगा, तब तक कैसे समझ आएगा कि कहाँ मींड़ लेनी है ? आज ही नीमा (शिष्या) देस में ठुमरी गा रही थी— *बता दे सखी तोरे पिया कब घर आयो...। अब 'तोरे पिया कब घर आयो ?'* पूछ रही है, तो वो प्रश्नवाचक भाव तो लाना पड़ेगा न। कब घर आयो (नहीं), कबऽऽऽ घर आयो (गाकर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताती हैं), यह कैसे समझाऊँ? यह भाव तो अपने अन्दर से आएंगे। महसूस करोगे, तभी गा पाओगे।

ठुमरी, दादरा जैसी उपशास्त्रीय विधाओं में तो तानपुरे का प्रयोग होता है। क्या बेगम साहिबा ग़ज़ल में भी तानपुरे की 'प-सा-सा-सा' (पंचम-षड्ज-षड्ज-मन्द्र सप्तक षड्ज) की संगति लेती थीं?

हाँ, वह तो कहती थीं कि तानपुरा तो होना ही चाहिए।

आम तौर पर कहा जाता है कि गायकों को खटाई आदि से परहेज करना चाहिए। क्या बेगम साहिबा भी ऐसा कोई परहेज़ करती थीं?

नहीं, वह तो कहती थीं कि कभी नहीं परहेज़ करना और न कभी यह सोचना कि कोई तुमको कुछ खिला देगा। अल्लाह हाफ़िज़ है! मेरे सामने की बात है, मुम्बई में लता मिलने आयी, तो जो प्याली अम्मी को ऑफर की, उसने वो उठायी, अपने सामने की प्याली नहीं उठायी। बेगम साहिबा ने कहा कि देखा तुमने। तो परहेज़ से तो कोई मतलब ही नहीं था उन्हें। मेरी माँ उनके लिए अचार बनाकर भेजती थीं। वह बहुत शौक से खाती थीं और ठण्डा बर्फ़ और सिगरेट पीती थीं।

सुना है कि जिगर मुरादाबादी से उनकी गहरी दोस्ती थी और वह उनसे फ्लर्ट करती थीं। क्या यह सच है?

असल में जिगर मुरादाबादी के कुछ अशआर उन्हें बहुत पसन्द थे। एक दफ़ा वह गुज़र रही थीं और जिगर मुशायरे में ग़ज़ल पढ़ रहे थे, तो इन्होंने एक पर्ची लिखी और भेजी कि हम आपसे मिलना चाहते हैं। जिगर ने कहा कि ठीक है मिलिए, लेकिन अगर आप मेरी सूरत देखिएगा तो फिर मिलना नहीं चाहेंगी, लेकिन फिर तो वह उनके घर आने लगे, उनकी पत्नी भी आने लगीं। कई-कई दिन रहते थे। मुझको भी उन्होंने अपने हाथ से कई शेर लिखकर दिये।

मदनमोहन और पं. कुमार गन्धर्व जी से भी उनकी गहरी दोस्ती थी?

मदनमोहन से बहुत गहरी दोस्ती थी। उनसे कहती थीं- मैं दिल्ली आ रही हूं मदन, तू भी आ जा। बीयर चलती थी। हारमोनियम पर गाना शुरू हो जाता था। फिर कहतीं- अरे कमबख़्त, तूने मेरे दादरे की धुन चुरा ली। इस पर मदनमोहन हँस देते। कुमार साहब भी उनके घर आकर रहते थे। उनके लिए विशेष शाकाहारी भोजन मंगवाती थीं। हम लोग भी देवास गये तो उन्होंने बहुत खातिर की।

आपने एक बार कहा था कि जब भी बेगम अख़्तर बहुत खुश होती थीं तो यह ज़रूर कहती थीं- तू ही भरोसा तू ही सहारा, परवर दीगारा परवर दीगारा... ?

हाँ, वो उन्होंने मुझे सिखाया था— *तू ही भरोसा तू ही सहारा, परवर दीगारा परवर दीगारा...* / ईश्वर से उनका लगाव तो बहुत था, हालाँकि उनकी ज़िन्दगी में बहुत-सी अनहोनियाँ हुईं। उन्होंने नशा भी किया, लेकिन प्रेरणा अल्लाह से ही लेती थीं। तभी तो आप देखिए कि उनके गाने में कितना असर था?

क्या तभी कैफ़ी आज़मी ने कहा था कि ग़ज़ल के दो मायने हैं- ग़ज़ल और बेगम अख़्तर?

बिल्कुल, लेकिन उनको समझना और उनकी गायकी की नकल करना बहुत कठिन है।

लेकिन इसी प्रेरणा की वजह से तो वह ग़ज़ल का पर्याय बनीं?

हाँ। एक दफ़ा लखनऊ में जिगर साहब ने ग़ज़ल पढ़ी— *'किसका ख़्याल कौन-सी मंज़िल नज़र में है, सदियाँ गुज़र गयीं कि ज़माना सफ़र में है'*। उन्होंने कहा कि बेगम साहब इसे गा दीजिए तो उन्होंने दरबारी में इसको बाँधा। आप यक़ीन मानिए कि उसे सुनकर जिगर साहब दिल थामे रह गये।

शकील बदायूँनी की ग़ज़ल की धुन तो उन्होंने ट्रेन में सफ़र के दौरान ही बना दी थी?

शकील ने उस समय तक फ़िल्मों के लिए लिखना शुरू नहीं किया था, लेकिन उनकी शायरी बहुत अच्छी थी। मुम्बई से हम दोनों लौट रहे थे लखनऊ। जब गाड़ी खिसकने लगी तो आये शकील साहब- बेगम साहब, बेगम साहब और खिड़की से उन्होंने ग़ज़ल दे दी। उन्होंने वह बैग में रख ली। सुबह जब भोपाल आया तो चाय मंगायी। तब मुझसे बोलीं- बिटिया वो ग़ज़ल, जो शकील ने मुझे दी थी? निकाली, देखी, बाजा निकलवाया और उसकी धुन बनायी— *ऐ मुहब्बत*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरे अंजाम पे रोना आया... / उनको इतनी अच्छी लगी यह ग़ज़ल कि फ़ौरन लखनऊ रेडियो स्टेशन जाकर उसकी रिकॉर्डिंग करायी।

मैं बचपन से सुनता रहा हूँ कि एक बार बड़े गुलाम अली ख़ान ने ठुमरी गायी तो बेगम अख़्तर ने अपनी चूड़ियाँ तोड़ दी थीं। क्या यह वाक्या सच है या किंवदन्ती ?

यह कहानी मुझे नहीं मालूम, मगर होगी ज़रूर, क्योंकि बहुत असर होता था उन पर। बड़े गुलाम अली ख़ान साहब से तो मिलती-जुलती थीं मुम्बई में। आओ भई अख़्तरी आओ, चाय लाओ- पंजाबियत में बोलते थे ख़ान साहब। हाँ, यह मुझे पता है कि उनके गले में जो पत्ती पड़ती थी, बिस्मिल्लाह ख़ान कहते थे- अहा! यही पत्ती तो है, जो तुमको सबसे अलग करती है।

वो पत्ती वास्तव में थी क्या ?

आवाज़ टूटती थी उनकी।

कहाँ पर जाकर टूटती थी आवाज़ ?

जैसे स्वर लगाया, कहीं पर टूट गयी आवाज़। मसलन, निषाद लगाया और फट गयी आवाज़, मगर इतनी सुरीली फटती थी कि बुरा नहीं लगता था। संगीत में ऐब है वो, मगर बहुत अच्छा लगता था।

1945 में जब उनकी शोहरत उरूज़ पर थी, तो उन्होंने चुपके से बैरिस्टर इश्तियाक़ अहमद अब्बासी से शादी कर ली। उसके बाद 5 साल तक वह संगीत की दुनिया से दूर रहीं। क्या अब्बासी साहब ने उनके गाने पर प्रतिबन्ध लगाया था ?

अम्मी ने मुझे यही बताया था कि तुम्हारे अब्बू (बेगम अख़्तर के पति इश्तियाक़ अहमद अब्बासी) ने कहा कि तुम्हें यह सब छोड़ना पड़ेगा। एक बीवी की तरह रहना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मुझे मंजूर है, मगर उनकी रूह तो आज़ाद थी। बहुत तक़लीफ़ होने लगी। 5-6 साल बिल्कुल बन्द रहा गाना।

क्या यह उनकी इच्छा थी कि लखनऊ में माँ की क़ब्र के पास ही उन्हें दफ़नाया जाये ?

जब उनकी तबियत बिगड़ी, तब वह मेरे घर पर थीं हौज ख़ास में। 4-5 महीने से उनकी तबियत ख़राब थी। लखनऊ में डॉक्टर ने उनको मना किया, लेकिन वह मानी नहीं। दक्षिण भारत की प्रख्यात गायिका सुब्बुलक्ष्मी जी ने उन्हें सम्मान के लिए बुलाया था। दिल्ली में संगीत सम्मेलन में उनके साथ मैंने अन्तिम बार गाया— *अब कैसे कटे मोरी सूनी रैना, सइयाँ गये परदेस...* और *दादरा पपीहरा धीरे-धीरे...* / गाया नहीं जा रहा था उनसे। मैंने साथ दिया उसमें। मैं पीछे-से उनका आँचल पकड़कर बैठती थी कि कहीं कोई गलती न हो जाये। उन्होंने निषाद लगाया तो निषाद के आगे मज़ाल है कि मैं जाऊँ। आजकल तो अगर उस्ताद पंचम पर खड़ा है तो शागिर्द 'सा' पर पहुँच जाता है। ख़ैर, मुझसे बोलीं कि बहुत अच्छा गाया। मैंने कहा—अम्मी, मुम्बई मैं चलूँ आपके साथ ? कहने लगीं—नहीं बेटा, जहाँ मैं जा रही हूँ, तुम नहीं जा सकती। यहाँ से मुम्बई गयीं। वहाँ उन्होंने अरविन्द भाई को बुलाया और रात भर उनसे बातें कीं। बाद में अरविन्द भाई ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरे बारे में कहा कि एक मेरी बेटी है, जिसने मुझसे कभी कुछ नहीं मांगा, लेकिन मैं उसको बहुत दुआएँ देती हूँ। बहरहाल, वहाँ उन्होंने रात 3 बजे तक गाया। मुहम्मद अहमद तबले पर थे। आख़िरी ठुमरी उन्होंने गायी— *सोवत निंदिया जगाये...* / वहाँ भोपाल के नवाब टाइगर पटौदी आ गये तो उठकर खड़ी हो गयीं। वह कहने लगे- अरे बेगम साहब, आप बैठ जाइए। इतनी इन्तसारी थी उनमें। कहती थीं कि बेटा, जो नम्र रहता है, वही ऊँचा उठ पाता है। उसके बाद अहमदाबाद पहुँचीं। वहाँ उन्होंने कार्यक्रम किया और वहीं उनकी मृत्यु हो गयी। लखनऊ में उनका एक बाग था- पसन्द बाग, जहाँ उनकी माँ को दफ़नाया गया था। उनकी क़ब्र के पास ही उनको दफ़नाया गया। अब यह उनकी इच्छा थी या नहीं, यह तो पता नहीं, लेकिन जब मैंने उनसे कहा था कि अपने पास मेरा भी हिस्सा बनाकर जाना, तो मुझसे बोलीं- हिन्दू हो, फूँकी जाओगी। कभी ऐसा नहीं करना। जो अपना मज़हब बदलता है, वह खोखला होता है, बेटा।

बेगम अख़्तर कहती थीं कि मर्द अच्छा गाता है तो उस्ताद या पण्डित कहलाता है और औरत अच्छा गाती है तो बाई कहलाती है। इसके पीछे उनका क्या दर्द था ?

पता नहीं क्या था इसके पीछे? मगर औरतें पब्लिक में गाती नहीं थीं उस ज़माने में, यही लोग गाती थीं और उनको बाई लफ़्ज़ अंग्रेज़ों ने दिया। उन्होंने इस तबके को इतना दबाया कि वेश्या तक कह दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जबकि गायकी से तो इसका दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है?

कोई सम्बन्ध नहीं है। विभाजन से पहले गाना-बजाना सिर्फ़ मजलिसों में होता था या ज़मींदारों या रईसों के यहाँ, आम जनता तो उसे सुन नहीं पाती थी। विभाजन के बाद संगीत सम्मेलन और संगीत महोत्सव होने लगे, आम जनता सुनने लगी। अम्मी ने उस तरह के गाने, जो मजलिसों में होता था, को लाकर संगीत कॉन्फ्रेंसिस में स्थापित किया। अब देखिए, बड़े-बड़े गायक स्टेज पर ठुमरी गाते हैं। पहले नहीं गाते थे। कहते थे कि यह बाइयों का काम है। एक दफ़ा दिल्ली के विज्ञान भवन में संगीत सम्मेलन में कहा गया कि बाजा नहीं चलेगा। उन्होंने कहा कि बाजा नहीं चलेगा तो मैं नहीं गाऊंगी, बल्कि एक नहीं, दो बाजे चाहिए। एक मुझे फॉलो करे और दूसरा मेरे लिए। बड़ा हल्ला हो गया। आख़िर में मानना पड़ा और हाथ-पैर जोड़कर उन्हें मनाना पड़ा आयोजकों को। तब ठुमरी गायी उन्होंने। वह राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी ठुमरी, दादरा और ग़ज़ल गाती थीं।

कहते हैं कि बेगम अख़्तर ने ग़ज़ल को कोठे से आज़ाद कराया?

ग़ज़ल तो कोठे पर मुजरा होता था, उसमें खड़े होकर गायी जाती थी। मैं ऐसा समझती हूँ कि उन्होंने ठुमरी, दादरा और ग़ज़ल को प्रतिष्ठा दिलायी। आज स्टेज पर जो ठुमरी, दादरा गाया जाता है, वो उनकी वजह से ही सम्भव हो सका।

लोक गायिका मालिनी अवस्थी कहती हैं कि बेगम अख़्तर कठिन चीज़ें भी बहुत सहजता से गा देती थीं। इसके पीछे क्या था?

ठुमरियाँ आम रागों में गायी जाती हैं, जैसे- देस, भैरवी, काफी, झिंझोटी; लेकिन उन्होंने कौशिक ध्वनि, चन्द्रकौंस, श्याम कल्याण में ठुमरी गायी। जा रे, जा रे कागा... ठुमरी खमाज में भी गायी और शुद्ध कल्याण में भी गायी।

मतलब बहुत प्रयोगवादी थीं?

प्रयोग नहीं करती थीं, उनके मन में जो आता था, वो करती थीं और लोगों को अच्छा लगता था।

बेगम अख़्तर को केन्द्रीय और उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी सम्मानों से नवाज़ा गया था और केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी ने गत् वर्ष उनकी स्मृति में कार्यक्रम भी आयोजित किया था- 'यादें'?

हाँ, पहले केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी और उसके बाद उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार उनको मिला था। उनकी जन्म-शताब्दी पर केन्द्रीय संगीत नाटक अकादेमी ने कार्यक्रम भी कराया, तो अकादेमी की तरफ़ से तो उनको बहुत सम्मान मिला।

चलते-चलते ऐसी कोई बन्दिश सुना दीजिए, जो उनको बहुत पसन्द रही हो और आपको भी बहुत अच्छी लगती हो?

उनकी पसन्दीदाऽऽऽ *ऐ मुहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया...* ग़ज़ल या सबसे ज़्यादा *हमरी अटरिया पे, आओ सँवरिया...* दादरा। 1970 में यह सीखा था मैंने उनसे। तरह-तरह से गाया उनके साथ। मुम्बई में मधुरानी ने मुझे इसकी कहानी बतायी। मधुरानी बहुत अच्छा गाती थीं, अब नहीं गाती हैं। मधु ने बताया कि एच.एम.वी. में रिकॉर्डिंग थी, तो जोशी जी ने कहा कि बेगम साहब, कुछ नयी चीज़ गाइए। उन्होंने मधु को बुलाया कि मधु, यह हमसे कहते हैं कि कुछ नया गा दीजिए। अब हम क्या गायें? हमारे पास तो जो था, हमने गा दिया। तो मधु ने कहा कि यह एक मुखड़ा मैंने सुना है किसी से इलाहाबाद में- हमरी अटरिया पे... (शान्ति हीरानन्द गाकर बताती हैं), आप इसको बना डालिए न; और फिर उन्होंने पाकिस्तान में बहुत गाया इसे। वहाँ का एक बहुत मज़े का क़िस्सा है। हम गये तो पासपोर्ट में मेरा नाम लिखा था शान्ति हीरानन्द अख़्तर। अब वहाँ पासपोर्ट अफ़सर कहीं मुझे देखता, कभी उनको देखता, कभी पासपोर्ट को। तभी बेगम साहिबा बोलीं—क्या देख रहे हैं मियाँ। हमारे हिन्दुस्तान में ऐसा ही होता है। यह मेरी बेटी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किस्सा-ए-नौटंकी

विजय सिंह

भारत में नाटक प्रदर्शनकारी कलाओं का तूल-ओ-तवील सिलसिला मौजूद है। अगर नाम लेने बैठें तो कूटियाट्टम से शुरू होकर *अंकिया नाट, रामलीला, यक्षगान, भागवत मेला, सरायकेला छउ, पुरुलिया छउ, भवई, स्वांग, माच, तमाशा, जात्रा, नौटंकी, ख्याल, रासलीला*...जैसे कुछ नाम तो एकदम से जुबां पर आते हैं।

एडिटर साहिबा का हुक्म था कि बंदा नौटंकी पर कुछ बेसिक जानकारी पढ़ने वालों को दे, लुब्ब-ए-लुबाब यह के ज़्यादा भाषणबाजी और एकेडेमिक रूखापन नहीं चलेगा। स्वांग और भगत के मेल से बनी नौटंकी का नाम लेते ही कुछ-कुछ होता है और वो जो भी कुछ होता है तो कम-से-कम भाषण और रूखापन तो नहीं ही होता है। एक बहर-ए-तवील कूचा-ए-दिल से निकल तराना-ए-आम बन जाता है और हमारा दर्द सारे जहां का हो जाता है। बहरे-तबील, छंद, चौबोला, दुबोला, रेहता, कव्वाली जैसे छंद ही तो नौटंकी को संगीतमय बनाते हैं।

ज़िक्र उस परिवेश का और फिर बयां अपना...खैर, देखें क्या शक्ल अख़्तियार करता है हमारा यह लेख।

ऊपर जिन कलाओं का ज़िक्र-ए-अव्वल हमने किया है वो कूटियाट्टम को छोडकर लगभग बाकी सभी भारतीय उपमहाद्वीप के अलग-अलग हिस्सों में खुले आसमान तले छोटे-छोटे शहरों या गावों में पेश की जाती थीं। शाम को शुरू होकर अगली सुबह तक चलने वाली इन सभी प्रदर्शनकारी कलाओं को खुले खेतों में या चौराहों पर पेश किया जाता था। ज़्यादातर यह जगहें मंदिरों के नज़दीक होती थीं। कैसिकीनाटकम् तो केवल मंदिरों में ही प्रस्तुत किया जाता है। कूटियाट्टम की परफॉर्मेंस के लिए कूतम्बलम (जिसका मॉडल रवींद्र भवन के द्वितीय तल पर मौजूद है जिसे गोवर्धन पांचाल ने बनाया था, उनकी लिखी किताब भी अकादेमी ने छापी है जो अकादेमी की बुक शॉप पर मौजूद है) को भी मंदिर के समान समझा जाता है।

कई बार शो करने के लिए शामियाने का इंतज़ाम होता था कई बार नहीं। वैसे तो दर्शक कभी भी घर वापिस जा सकते थे लेकिन चोरों ठगों के डर से रात का सफर सेफ नहीं था (गोया जैसे आजकल बड़ा सेफ हो गया हो)। इसलिए परफॉर्मेंस रात भर चलती थी और लोग भोर होने पर खेतों-खेत अपने घर सकुशल पहुँच जाते थे। यही वजह थी कि रात को खेल देखने के लिए दर्शक अपने बिस्तर कंबल लाठी मूँगफली वगैरह भी लेकर चलते थे।

हालाँकि परफॉर्मेंस स्पेस ऐसा था कि एक्टर किसी भी तरफ को मुंह करके बोल सकता था पर आमतौर पर एक्टर सामने देखकर ही अपनी कला के जौहर पेश करता और संगतकार-गवैये उसके पीछे बैठते थे। ज़्यादातर एक्टर खुद ही गवैया होता था। इन बातों को फारले पी रिचमंड और रिचर्ड ई डुनहम के लेख परफॉर्मेंस ट्रेडीशंस इन इंडिया व्हेयर पास्ट एंड प्रेजेंट मीट में भी देखा जा सकता है।

अब से कोई 75 बरस पहले तक नौटंकी की परंपरा अपने हुस्न और नूर-ए-मुजस्सम के वलवले के साथ आमजन के दिलों में धड़कती थी। जहां शो होते दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ती और नौटंकी रात-रात भर चलती। उसके बाद से जैसे-जैसे सिनेमा सुलभ होता गया,फिल्मों की तरफ लोगों का ध्यान जाता गया और नौटंकी का जाहो-जलाल फीका पड़ता गया। अब खुद को बचाने और दर्शकों को खींचने के लिए कलाकार क्या करे! सरवाइवल की जद्दोज़हद में नौटंकी में बाजारू मिलावट आ गई और बेहूदगी और घटिया मज़ाहिया कलाम और अश्लील इशारों का इस्तेमाल कर दर्शकों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खींचने की नाकामयाब कोशिश हुई। जब बात न बनी तो कलाकारों ने भी दूसरी ओर रुख किया—कोई फिल्मों में छोटे-मोटे रोल करने निकल गया तो कोई मेहनत मजदूरी करने लगा। ऐसे में जो कलाकार तमाम झंझावातों के बावजूद नौटंकी में बने रह गए उनके पास प्रदर्शन के ज़्यादा मौके न रहे और फाकेमस्ती की हालत में वो लोग अपने दिन गुज़ारा किए। अल्ला-अल्ला करके कभी मौका ऐसा आया भी कि शो मिल जाता कोई तो अदायगी में और पेशकारी में वो रवानी न रही, कास्ट्यूम और ज्यूलरी की चमक फीकी पड़ गई। शौकिया कलाकारों में नौटंकी का वो चस्का न रहा। सिंहासन डोल गया। देखने वाले बेमज़ा होते गए और नौटंकी आम बोलचाल में एक घटिया शब्द बनकर आज भी अपनी किस्मत को कोस रही है। लोग अब नेताओंऔर दीगर झूठे लोगों की लफ्जों की उधारी कारीगरी को नौटंकी के नाम करते हैं और सिरे से खारिज कर देते हैं।

आज जो हालात-ए-नौटंकी हैं उनका सारा इल्ज़ाम फिल्मों पर लगा देना ज्यादती है क्योंकि लाइव परफॉर्मिंग आर्ट्स को चाहने-सराहने वाले हमेशा रहे हैं और रहेंगे। शायद यही वजह है कि बड़े-बड़े अभिनेता अब भी लाइव शोज करते हैं और कुछ तो थिएटर से बाकायदा अपनी जड़ों की मजबूती के साथ जुड़े हैं। कुछ हिम्मत करते और अपनी अदायगी को बदलते वक़्त के हिसाब से ढालकर ट्रेडीशनल की चाशनी में कटेंपररी थीम करते पेश और रहते कायम तो नौटंकी खरामा-खरामा चलती रहती क्यूंकि 'शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक।'

तो ऐसा नहीं कि नौटंकी और नौटंकी करने वालों का निशान ही मिट गया हो और इस लेख के बहाने मैं श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए मैं नौटंकी का फ़ौतीनामा लिख रहा होऊँ। लेकिन तमाम कोशिशों, सरकारी मदद और स्पॉन्सरशिप, डॉक्यूमेंटेशन, वर्कशॉप्स, समारोहों, इस पर होने वाली पीएचडीओं और स्कॉलरशिपों के बावजूद नौटंकी की हालत है बड़ी खस्ता, क्योंकि नौटंकी होती तो कलाकार से है और कलाकार प्रस्तुति के बल पर ज़िंदा रहता है और प्रस्तुति दर्शक के दम पर जीती और परवान चढ़ती है और दर्शक नदारद हैं। टिकट लेकर देखने वाले तो सिरे से ग़ायब हैं। कम्यूनिटी सपोर्ट नहीं है और सरकारी इमदाद और राजाश्रय की अपनी सीमाएँ होती हैं।

नौटंकी के बारे में एक परिचय लिखने को सोचा तो बात ही हमने उसकी आज की आखिरी साँसों लेती-सी हालत का पंचनामा-सा करके शुरू कर दी। आपका मुंह बेमज़ा हो गया होगा। मगर यकीन जानिए हमारा तसव्वुर वैसा न था इस लेख के बारे में। तो नौटंकी के नामकरण से बात शुरू करते हैं।

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा लखनऊ में वर्ष 2010 में आयोजित नौटंकी उत्सव पर अपनी रिपोर्ट लिखते हुए भूतपूर्व अकादेमी सचिव उषा मलिक नौटंकी पर बलवंत गार्गी साहब की किताब *फोक थिएटर ऑफ इंडिया* का हवाला देती हैं जो यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन द्वारा 1966 में प्रकाशित की गई थी। फोक थिएटर ऑफ इंडिया में नौटंकी के अध्याय में उसके नामकरण से जुड़ी कई कहानियों का उल्लेख बलवंत गार्गी करते हैं। शुरू में इसे केवल संगीत ही कहा जाता था। 19वीं शताब्दी में एक नाटक हुआ शहज़ादी नौटंकी जहाँ से इसका नाम नौटंकी पड़ गया। वैसे यह कहानी है बड़ी दिलचस्प। हमें इंटरनेट खंगालते हुए अभिव्यक्ति नाम के एक ब्लॉग पर मिल गई। कहानी पढ़िए जनाब :

कहते हैं, पंजाब में नौटंकी नाम की एक शहज़ादी थी। स्यालकोट के राजा राजो सिंह के छोटे बेटे फूल सिंह ने शिकार खेलकर लौटने पर भाभी से पीने के लिए पानी माँगा। भाभी ने पानी के बदले व्यंग्य किया- जाओ, मुलतान की राजकुमारी नौटंकी से शादी कर लो। फूलसिंह मुलतान पहुँच गया और शाही मालिन के द्वारा नौटंकी के पास एक हार भेज दिया। नौटंकी के पूछने पर मालिन ने कह दिया- मेरे भाँजे की वधू ने यह हार बनाया है। नौटंकी ने जब उसे भाँजे की वधू को भेज देने के लिए कहा, तो फूल सिंह स्त्री-वेश में नौटंकी के सोने के कमरे में पहुँच गया। रात में साथ सोने के क्रम में यह भेद खुल गया और अंततः दोनों की शादी हो गई। राजकुमारी नौटंकी की गाथा पर पं. मुरलीधर ने एक स्वांग की रचना की, जो 1901 ई. में प्रकाशित हुई। (http://www.abhivyakti-hindi.org/natak/rangmanch/2009/nautanki.htm)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी ब्लॉग में नारायण भक्त, महाकवि व नाटककार जयशंकर प्रसाद एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा इसे नाट्यशास्त्र से जोड़ने की बात भी करते हैं। प्रसाद अपने निबंध 'रंगमंच' में नौटंकी को नाटक का अपभ्रंश मानते हैं। उनके कथानुसार नौटंकी प्राचीन राग काव्य या गीतिकाव्य की ही स्मृति है। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ''नौटंकी का वर्तमान रूप चाहे जितना आधुनिक हो, उसकी जड़ें बड़ी गहरी हैं। रामबाबू सक्सेना ने अपने *''तारीख-ए-अदब-ए-उर्दू''* में लिखा है कि ''नौटंकी लोकगीतों और उर्दू कविता के मिश्रण से पनपी है।'' कालिका प्रसाद दीक्षित कुसुमाकर का कहना है कि नौटंकी का जन्म संभवत: ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में हुआ था। 13वीं शताब्दी में अमीर खुसरो के प्रयत्न से नौटंकी को आगे बढ़ने का मौका मिला। खुसरो अपनी रचनाओं में जिस भाषा का प्रयोग करते थे, वैसी ही भाषा और उन्हीं के छंदों से मिलते-जुलते छंदों का प्रयोग नौटंकी में बढ़ने लगा। हाथरस और कानपुर नौटंकी के प्रधान केंद्र है। हाथरस और कानपुर की नौटंकियों के प्रदर्शन से प्रेरित होकर राजस्थान, मध्य प्रदेश, मेरठ और बिहार में भी इसका प्रसार हुआ। मेरठ, लखनऊ, मथुरा में भी अलग-अलग शैली की नौटंकी कंपनियों की स्थापना हुई। बिहार के ग्रामीण इलाकों और छोटे शहरों में भी दशहरा-दिवाली जैसे पर्वों पर कहीं कानपुर, कहीं हाथरस की नौटंकियों को आमंत्रित किया जाता था। इन शहरों, खासतौर पर कानपुर में नौटंकी के फलने का कारण औद्योगीकरण भी था। फैक्ट्रियाँ, कारखाने इत्यादि खुलने के कारण कानपुर में एक नव-धनाढ्य वर्ग पैदा हुआ जिसने इन कलाओं को प्रश्रय दिया और एक नई ऑडियंस भी नौटंकी दलों को मिली। इस दौर से पहले लखनऊ में और दीगर जगहों पर जो राजे-रजवाड़े, नवाब इत्यादि थे उनका दौर अंग्रेजों के आने से समाप्त हो चला था।

कहते हैं कि कानपुर की नौटंकी हाथरस की नौटंकी का जवाब है। इस संबंध में एक दिलचस्प कहानी यह प्रचलित है कि एक बार नत्थाराम जी ने अपनी पूरी मंडली के साथ कानपुर में प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के अंत में उन्होंने चुनौती दी- ऐसा स्वांग कोई और नहीं कर सकता। उनकी चुनौती को बद्री खलीफ़ा ने स्वीकार करते हुए घोषणा की एक महीने के अंदर इसी जगह ऐसा स्वांग प्रस्तुत किया जाएगा, जिसमें 12 नगाड़े एक साथ बजेंगे। पूर्व निश्चित दिन स्वांग का प्रदर्शन किया गया, जिसे देखने के लिए जन-समुदाय उमड़ पड़ा। मंच के एक बीच एक विशाल नगाड़ा रखा गया और उसके चारों ओर 12 नगड़िया (छोटे नगाड़े) रखी गईं। नगड़ची मैकू उस्ताद ने नगाड़े पर चोट की, जिसकी आवाज़ से पूरा वायुमंडल गूँज उठा और नौटंकी शुरू हो गई। बाद में श्री कृष्ण पहलवान ने अपनी नौटंकी कंपनी की स्थापना की जो कानपुर शैली की सबसे बड़ी नौटंकी के रूप में विख्यात एवं लोकप्रिय हुई।

एक नाट्यकला के तौर पर नौटंकी ने न सिर्फ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में मदद की, बल्कि साथ ही मनोरंजन के बहाने नौटंकी ने दर्शकों के दिलों में वीररस, देशभक्ति, चरित्रबल जैसी विशेषताओं की भावनाओं का संचार भी किया।

नौटंकी की भाषा में हिंदी, उर्दू तथा लोकभाषा एवं क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों का प्रयोग अधिक होता है। हाथरस की नौटंकी की भाषा में ब्रज, उर्दू और खड़ी बोली का मिला-जुला रूप होता है। कानपुर शैली की नौटंकी की भाषा में कन्नौजी, उर्दू और खड़ी बोली के शब्द होते हैं। नौटंकी संवाद गद्य और पद्य दोनों में होते हैं। पात्रों तथा घटनाओं के अनुसार भाषा के रूप में कोई भिन्नता नहीं होती। भाषा लाक्षणिक नहीं, सरल और सुबोध होती है। नौटंकी में बहरेतबील, चौबोला, दोहा, लावणी, सोरठा, दौड़ आदि छंदों का विशेष रूप से प्रयोग होता है। नौटंकी में नगाड़े का प्रमुख स्थान है। इसके अलावा ढोलक, डफ और हारमोनियम का भी प्रयोग होता है।

हाथरस की नौटंकी में जिन आरंभिक कलाकारों का मुख्य तौर पर योगदान माना जाता है उनमें उस्ताद इंदरमल, वासुदेव जी बासमचिरंजीलाल, पं. नत्थाराम गौड़, हरमुख राय, नारायण दास, प्रसादी लाल, शायदी, हीरालाल जैसे नाम अब भी बुजुर्गों की जुबान पर मिल जाएंगे। कानपुर की शैली के शुरुआती कलाकारों में श्रीकृष्ण पहलवान, त्रिमोहनलाल को याद किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education,Bantalab Jammu

आरंभ में नौटंकी में महिलाएँ भाग नहीं लेती थीं। पुरुष ही स्त्री-वेश धारण कर अभिनय किया करते थे। 1930 में प्रथम महिला कलाकार गुलाब बाई ने नौटंकी में प्रवेश किया। त्रिमोहन सिंह लाल एंड कंपनी में करीब बीस वर्षों तक काम करने के बाद उन्होंने गुलाब थिएट्रिकल कंपनी के नाम से अपनी अलग कंपनी बनाई। सन 1930 ई. में ही कृष्णाबाई भी त्रिमोहन लाल की कंपनी में भर्ती हुईं। इनमें गुलाब बाई ने अखिल भारतीय ही नहीं, विदेशों में भी अपने प्रभावशाली प्रदर्शन के कारण ख्याति अर्जित की। उनमें कुछ अद्भुत गुण थे। बोल की अदाकारी के लिए वे काफी सराही जाती थीं। भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित भी किया जा चुका है। उन्हें उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार 1976 में प्रदान किया गया था और संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली ने उन्हें वर्ष1984 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया। नौटंकी के लिए वर्ष 2014 का संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार श्री राम दयाल शर्मा को प्रदान किया गया है।

नौटंकी के इन दिग्गज कलाकारों को सम्मानित करने के अलावा संगीत नाटक अकादेमी ने कई संस्थाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की है और नौटंकी की प्रस्तुतियों को अपने नाट्य समारोहों में भी जब संभव हो पाया, जगह दी है। वर्ष 2010 में लखनऊ में नौटंकी पर केन्द्रित एक नाट्य समारोह का आयोजन किया गया था और मार्च 2016 में आजमगढ़ में नौटंकी और अन्य संगीत विधाओं पर केन्द्रित *देशज* का आयोजन किया जिसमें जहां तक संभव हो सका नौटंकी के कलाकारों, विशेषज्ञों और प्रस्तुतियों को आमंत्रित किया गया। इस समारोह में रात के एक-एक बजे तक दर्शकों की उपस्थिति लोक कलाओं के प्रति आमजन के प्रेम और हिमायत की मिसाल थी।

नौटंकी फले-फूले, दिलों में उसकी जगह बरकरार रहे और इसके कलाकार मजबूर होकर कोई और वसीला न अपनाएं, सरकारी योजनाओं की अपनी जगह है पर उनकी अपनी सीमाएं भी है, नौटंकी को लोकाश्रय भी सदैव मिलता रहे इसी कामना के साथ इस लेख को यहीं विराम देता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

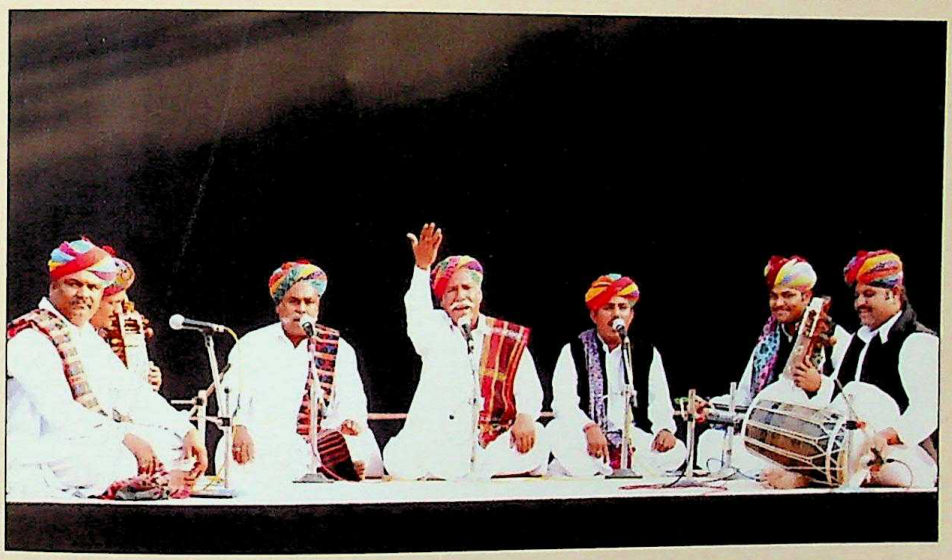

ऊपर : दीप प्रज्ज्वलित करते पद्मश्री एस . थानिल सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मध्य : लांगा मांगणियार की प्रस्तुति देते कलाकार

नीचे : गुजरात का गरबा नृत्य

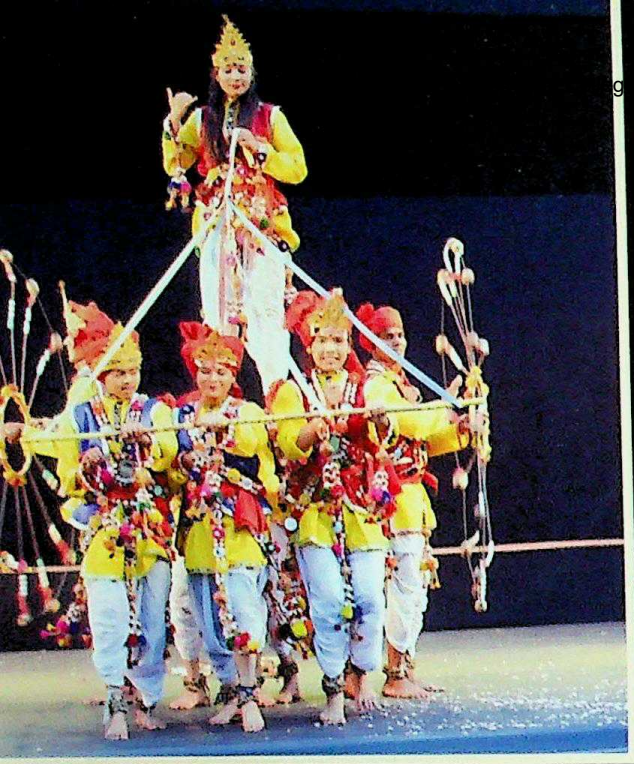

ऊपर-बायें : मध्य प्रदेश का लोक नृत्य बरेदी

ऊपर-बायें : बालक की प्रस्तुति में गजब संतुलन

नीचे : बाल कलाकारों द्वारा उड़ीसा के गोटीपुआ नृत्य की प्रस्तुति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऊपर : थांग- टा नृत्य

मध्य : नागालैंड का तेरिम नृत्य

नीचे : मणिपुर का माओ नृत्य

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऊपर : मणिपुर का कोम नृत्य

मध्य : झारखंड का करसा नृत्य

नीचे : मणिपुर का लाई हरोबा नृत्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्पर्श उत्तर पूर्व

डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा

उत्तर पूर्व में बसा छोटा सा राज्य है त्रिपुरा ओर यहाँ की राजधानी है अगरतला ऐसा शहर जहाँ लगता है कि भूमि के रास्तों से वहाँ पहुँच पाना बहुत ही कठिन कार्य है। रेल यातायात नहीं के बराबर बसों और ट्रकों के रास्ते ऊबड़ खाबड़। देश के अन्य राजमार्गों से यहाँ पहुँच पाना कठिन है परन्तु यह राज्य बिल्कुल सट्टा हुआ है बांग्लादेश की सीमा के साथ। अगर बांग्लादेश होकर यहाँ आया जाए तो आसान है। भारत बांग्लादेश सीमा पर तैनात सिपाही बताते है कि यहाँ पर बांग्लादेश का व्यापार काफी फल फूल रहा है। क्योंकि सड़कमार्ग से भारतीय वस्तुओं का पहुँचना काफी महंगा पड़ता है। इसलिए बंगला देश का समान सस्ता पड़ता है। यहाँ रोड़ी, गिट्टीबालू, सीमेंट, लकड़ी लोहा सभी कुछ बांग्लादेश से अगरतला आ रहा है। ऐसा क्यों? क्या उतर पूर्व राज्यों तक पहुँच पाना टेढ़ी खीर है? रास्ते तो बहुत है पर इनका रख-रखाव क्यों नहीं हो रहा? पेट्रोलियम पदार्थ भी कठिनाई से पहुँच पाते है। कोलकाता या गौहाटी से हवाई जहाज द्वारा ही यहाँ पर पहुँचा जा सकता है।

हवाई जहाज द्वारा यहाँ की दुर्गम पहाड़ियों का नजारा देखा जा सकता है। ऊँची पहाड़ियाँ, नदियाँ पेड़ पौधे, सुंदर दृश्य सभी कुछ सुहावना लगता है परंतु इस सुंदर वातावरण मे जीवन काफी कठिन है। दूसरे राज्यों से संपर्क का एक मात्र साधन हवाईमार्ग है। सभी हवाई कंपनियां यहाँ से उड़ान भर कर लोगों को देश के अन्यभागों तक पहुंचाती है और लाती है परंतु जब तक रेल यातायात दुरुस्त नहीं होता तब तक यहाँ पर मेक इन इंडिया का सपना पूरा नहीं होगा परंतु संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली ने इस कार्य को आसान बना दिया। रास्ते चाहे कठिन थे परंतु हौंसले बुलंद थे। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी नृत्य संरचना उत्सव का आयोजन 21 से 25 नवम्बर तक किया जिसमें देश के अन्य भागों से भी कलाकारों को भी आमंत्रित किया गया। लगभग 20 समूह आमंत्रित किए गए और प्रति दिन चार प्रस्तुतियाँ दर्शाई जाती थी। उत्सव के शुरू होने से 30 मिनट पूर्व दक्षिण भारत के केरल राज्य का *चंडा वाद्यम* प्रस्तुत किया जाता था। जिसे चंडा मेलम कहा जाता है यह समूह सभी का स्वागत करता था विभिन्न शैलियों की नृत्य संरचनाओं को एक मंच पर त्रिपुरा के सांस्कृतिक मंत्रालय और राष्ट्रीय अकादेमी संगीत नाटक अकादेमी नई दिल्ली का यह साझा कार्यक्रम है। रवीन्द्र शतवार्षिकी भवन में इसका आयोजन हुआ था जहाँ लगभग 3500 व्यक्ति एक साथ बैठ कर इस आयोजन का आनंद ले सकते हैं। इतना विशाल सभागार उस समय छोटा नज़र आता है, जब लोगों का अपार समूह इस उत्सव को देखने के लिए उमड़ पड़ता है। लोगों में देश की संस्कृति के प्रति लगाव है। बच्चे बूढ़े, जवान, औरतें, लड़कियाँ सभी में एक त्यौहार की तरह उत्सव को देखने का जोश दिखाई दे रहा है। जबकि राजधानी में दर्शकों की कमी है अथवा समय का अभाव नज़र आता है। ऐसा प्रदेश जहाँ होजगिरी जैसे आदिवासी नृत्यों से लोग परिचित हों और वहाँ पर आधुनिक नृत्य शैलियों की नृत्य संरचनाएँ सभी के लिए आकर्षण का कारण थी। संगीत नाटक अकादेमी की सचिव कहती हैं, कि आधुनिक नृत्य संरचनाएँ और शास्त्रीय नृत्य में कोरिओग्राफी को प्रस्तुत करना और उसे अगरतला में प्रस्तुत करना, हमारा काफी सफल प्रयास है। लोगों ने इसका स्वागत दिल से किया और सराहा है। इसके लिए प्रमाण है यहाँ का सभागार जो प्रतिदिन पूरा भर जाता है। श्रीमती आचार्या कहती हैं कि लोग हमसे यह अनुरोध करते हैं की यहाँ पर ऐसी गतिविधियाँ समय समय पर आयोजित करनी चाहिए। अकादेमी द्वारा राजधानी से दूर अगरतला में अकादेमी के सभी कर्मचारी अपने कार्यक्रमों को सफल बनाने में पूर्ण रूप से समर्पित थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्रिपुरा के सूचना और सांस्कृतिक विभाग ने भी इस कार्य के लिए पूरा सहयोग किया और शहर में सैकड़ों की तादाद में बड़े होर्डिंग लगवा कर लोगों को इस आयोजन की जानकारी उपलब्ध कारवाई।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही की संगीत नाटक अकादेमी इन सभी संरचनाओं का प्रलेखन (डॉक्युमेंटेशन) कर इनको भविष्य के लिए संरक्षित कर रही है। जिससे आज वाले समय में इन्हें समय-समय पर सभी को दिखाया जाय। तथा शैलियों की शुद्धता कायम रहे। साथ ही अकादेमी द्वारा सभी संरचनाओं का अपने नेटवर्क द्वारा पूरे विश्व में वेब कास्ट किया जा रहा है। ताकि दूर रह कर भी सभी संगीत नाटक अकादेमी के इन कार्यक्रमों से जुड़े रहें। और कला प्रेमी इन संरचनाओं कर आनंद ले सकें।

देश के विभिन्न भागों से यहाँ नृत्य संरचना समूह पहुँचे थे। दिल्ली से चार आधुनिक नृत्य के समूह- *आधुनिक, तनवा* तथा *अन्वेषण* थे। इसके अलावा मुंबई, कोलकाता, इंदौर, रायपुर, चेन्नई से नृत्य समूह यहाँ पहुँचे थे। सभी यहाँ आकर मौसम और यहाँ की संस्कृति से रू-ब-रू हो रहे थे।

संगीत नाटक अकादेमी जैसी स्वायत्त संस्था अगर उत्तर पूर्व के राज्यों की कला संस्कृति को देश के अन्य राज्यों में प्रस्तुत करती है। तो यह एक ऐसा सूत्र बनेगा जो सांस्कृतिक रूप से देश को एक रखेगा, भेदभाव की भावना समाप्त होकर एक देश और संस्कृति की भावना उत्पन्न होगी। क्योंकि दूरियों को पास लाने का कार्य सरकार ही कर सकती है। कलाकारों के लिए नए अवसरों का प्रावधान होगा। संस्कृति सुरक्षित रहेगी और आम आदमी का रुझान अपनी संस्कृति और कला के प्रति रहेगा। लुप्त होती कलाओं में फिर से जागरूकता होगी। कलाएँ देश की पहचान रहेंगी।

5 दिवसीय उत्सव में 20 प्रस्तुतियों को अगरतला वासियों ने काफी उत्साह और प्रेम से देखा। बहुत से लोगों से मिलने पर पता चला कि यहाँ पर दिल्ली और बड़े शहरों की भाँति कार्यक्रमों का आयोजन हो तथा संगीत नाटक अकादेमी एक ऐसा विद्यालय अथवा अकादेमी स्थापित करे जहाँ पर यहाँ के बच्चे भी सभी शास्त्रीय नृत्य और संगीत को सीख सके। और देश की इन कलाओं को अपने जीवन में उतार सके।

इन कठिन राहों को आसान बनाकर संगीत नाटक अकादेमी की टीम ने जिस प्रकार इस उत्सव का आयोजन किया, यह सभी के लिए एक उदाहरण है कि चाहे डगर कितनी भी कठिन हो, अगर हौसला बुलंद है तो मंज़िल दूर नहीं। संगीत नाटक अकादेमी सचिव हेलन आचार्या ने बताया कि अकादेमी आने वाले समय मे साल के 365 दिनों में 365 से अधिक शो करवाएगी। लोक कलाओं के संरक्षण के लिए भी अकादमी ने विशेष योजना बनाई है।

नृत्य संरचना उत्सव के माध्यम से संगीत नाटक अकादेमी ने उत्तर पूर्व को स्पर्श किया और उत्तर पूर्व ने संगीत नाटक अकादेमी का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

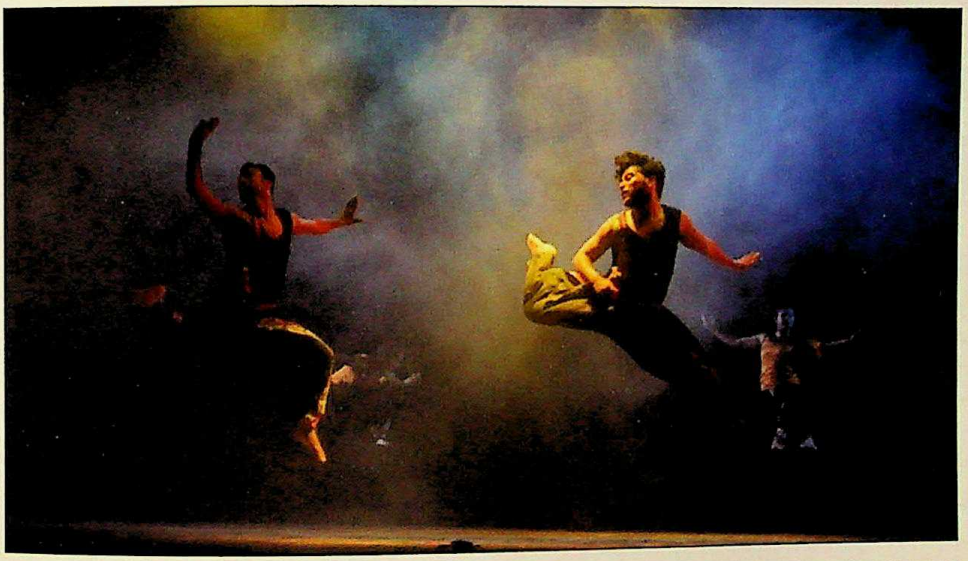

ऊपर : दीप प्रज्ज्वलित करते अकादेमी सम्मानित कलाकार थांगा डारलौंग

मध्य और नीचे : शुभाषीश डे की नृत्य संरचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Education Bantalab Jammu

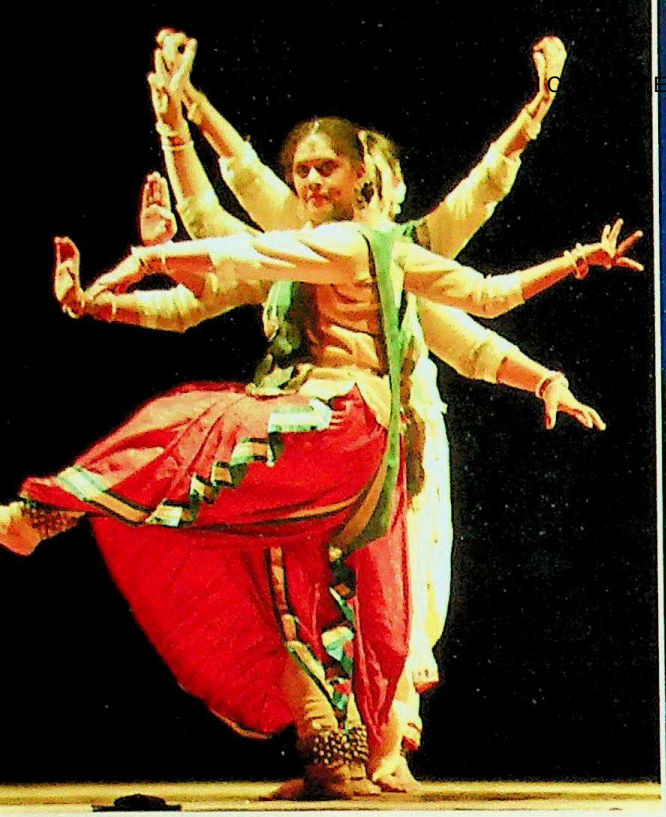

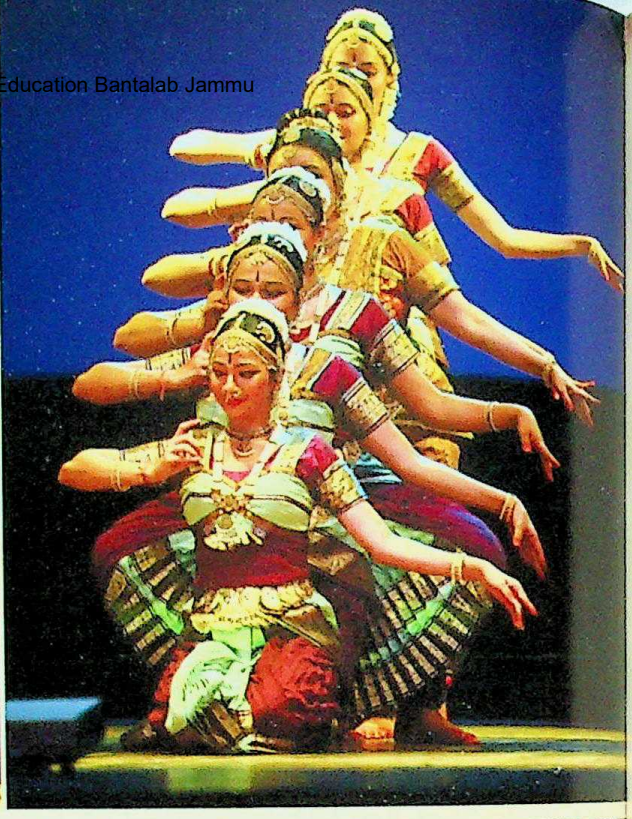

ऊपर-बायें : रोशन दात्ये की नृत्य संरचना कथक इंद्रधनु

ऊपर-दायें : संध्या की परेच्चा की नृत्य संरचना

नीचे : जयप्रभा मेनन की नृत्य संरचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

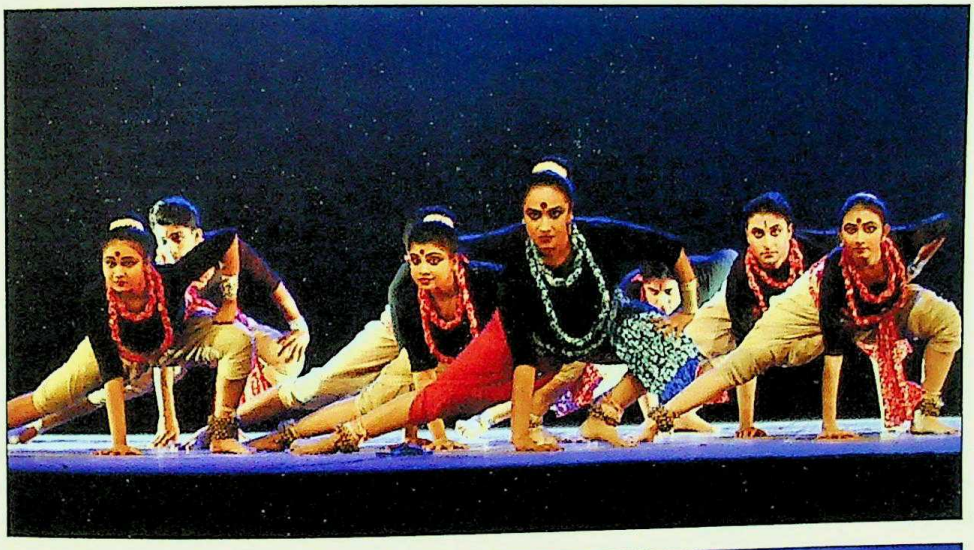

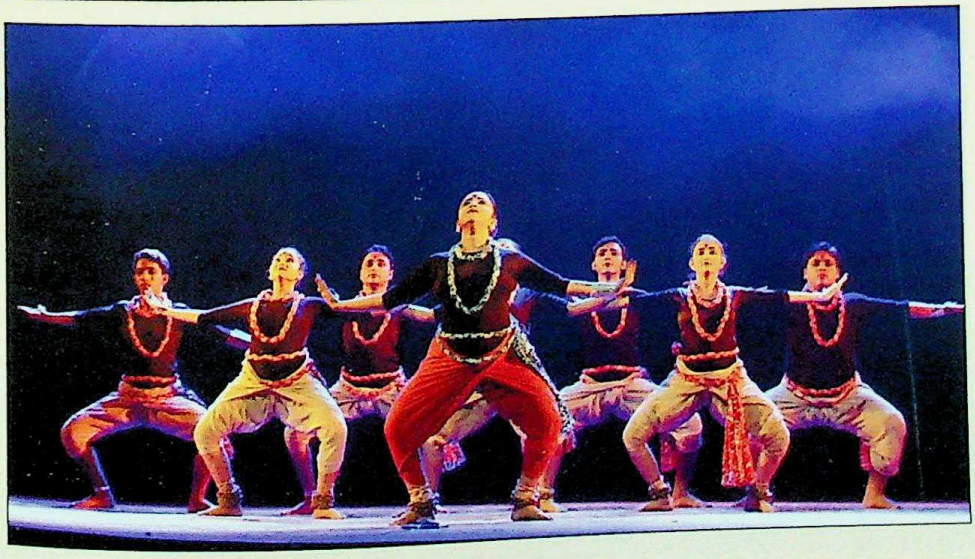

ऊपर : रतीकांत महापात्र की नृत्य संरचना

मध्य और नीचे : शर्वाणी नंदी की नृत्य संरचना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memori... e

ऊपर-बायें: श्रुति बंदोपाध्याय की नृत्य संरचना

ऊपर-दायें: मणिपुर की रासलीला

नीचे : मधु गोपीनाथ एवं वेक्कम संजीव की नृत्य संरचना जलम

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्तर पूर्व संस्कृति संगम

मोहन सिंह

भारत के उत्तर-पूर्व में सात बहनों (Seven States) के नाम से मशहूर राज्य मणिपुर सांस्कृतिक विरासत का धनी है। मणिपुर के कलाकारों ने प्रदर्शन कलाओं की बदौलत न केवल अपने राज्य बल्कि देश का नाम भी रौशन किया है। सांस्कृतिक रूप से समृद्ध मणिपुर की राजधानी इम्फाल में संगीत नाटक अकादेमी की घटक इकाई जवाहारलाल नेहरू मणिपुर डान्स एकेडमी, इम्फाल और संगीत नाटक अकादेमी ने संयुक्त रूप से उत्तर-पूर्व संस्कृति संगम का आयोजन किया था। इम्फाल में कार्यक्रम का आयोजन उस समय हुआ, जब यहाँ होली का माहौल था। मणिपुर में होली पाँच दिनों तक चलने वाला त्योहार है। पूरे पाँच दिनों तक यहाँ मौज-मस्ती का माहौल रहता है। रात-रात भर लड़के-लड़कियाँ नृत्य-गीत में डूबे रहते हैं। जब हम लोग इम्फाल पहुँचे तो पाया कि सड़कें खेल के मैदान में तब्दील थीं। कहीं युवक रेसिंग में व्यस्त थे तो कहीं युवतियाँ बैडमिंटन खेल रही थीं। यह कोई प्रायोजित आयोजन नहीं था, बल्कि हर गली-मुहल्ले के लोग सड़क पर अपने-अपने पसंद के हिसाब से खेल में व्यस्त थे। न उम्र की कोई सीमा थी और न लिंगभेद का ही कोई मसला। बाद में पता चला कि दरअसल सड़क पर खेल का मक़सद लोगों में खेल के प्रति जागरुकता पैदा करना और उनमें जोश जगाना है। होली के पाँच दिन, यहाँ दुकानें बंद रहती हैं, सिर्फ खेल और मनोरंजन ही होता है। हाँ, यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है कि मणिपुर की होली और दिल्ली की होली में फ़र्क़ साफ़ नज़र आता था। मुझे शंका थी कि यहाँ तो लोग मणिपुरी बोलते होंगे, पता नहीं हिन्दी समझ में आती होगी या नहीं, लेकिन यह मेरे लिए सुखद आश्चर्य से कम नहीं था कि लोग यहाँ अच्छी हिन्दी बोल लेते हैं।

बहरहाल, होली का त्योहार खत्म हुआ तो 28 मार्च से हम लोग अपने कार्यक्रम की तैयारियों में जुट गए। नृत्य विभाग की उपसचिव वाई. थेबादेवी, प्रलेखन विभाग के उपसचिव जोसेफ डी. राज, सहयोगी रघुनाथन पिल्लै और मणिपुरी नृत्यांगना इबीमेबी देवी के साथ हम सड़क मार्ग द्वारा इम्फाल से काकचिंग गए। काकचिंग बॉर्डर एरिया है और बर्मा की दूरी यहाँ से महज दो घंटे की है। यहाँ बाज़ार में ज़्यादातर चीज़ें बर्मा की ही बनी मिलती हैं। यहीं जनसहयोग से एक सभागार का निर्माण हुआ है, जिसका नाम है—ऑडिटोरियम ऑफ द लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन। इसी प्रेक्षागृह में दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तावित था। हमने प्रेक्षागृह का निरीक्षण किया और प्रेक्षागृह के सचिव से ज़रूरी बदलाव का अनुरोध किया। उन्होंने तमाम ज़रूरी चीज़ें मुहैया कराने का वादा किया और निस्संदेह उसको निभाया भी। हम लोग बाज़ार गए और स्टेज तथा ग्रीन-रूम के लिए तमाम ज़रूरी चीज़ों की उपलब्धता देखी। चूँकि 29 मार्च से जेएनएमडीए में तीन दिवसीय उत्तर-पूर्व संस्कृति संगम का शुभारम्भ होने वाला था। वहाँ अभी मुक्ताकाशीय मंच को अंतिम रूप देना शेष था। अत: हम दोपहर तक इम्फाल लौट आए। भोजन के बाद कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे तो पाया कि सहकर्मी लाल सिंह ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है और मुक्ताकाशीय मंच का ढांचा लगभग तैयार था। बस उसे अंतिम रूप देना शेष था।

शाम में अभी काम चल ही रहा था कि ज़ोरदार बारिश हुई। हम लोग डर गए—अगर कल भी बारिश हुई तो...! तय हुआ कि जिस तरह दर्शक दीर्घा को शेड से ढका गया है, ठीक वैसे ही मंच को भी कवर किया जाए। लेकिन प्रकाशसज्जा के लिए लगाए गए ऊँचे खम्भों की वजह से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा सम्भव नहीं हो सका। लेकिन कार्यक्रम में कोई व्यवधान न आए, यह सुनिश्चित करना बेहद ज़रूरी था, अत: हमने जेएनएमडीए के एक प्रोडक्शन हॉल को वैकल्पिक मंच के रूप में तैयार किया। इस प्रकार अब हम लोग कार्यक्रम के लिए सुनिश्चित योजना के साथ अब पूरी तरह तैयार थे।

29 मार्च को कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दीप प्रज्वलन के बाद पहली प्रस्तुति थी—राजस्थान का लोक संगीत। राजस्थानी मंगणियारों की यह प्रस्तुति दर्शकों को खूब पसंद आई और तालियों की गड़गड़ाहट से इसकी पुष्टि भी हुई। इसके बाद मध्य प्रदेश से आए कलाकारों ने बरेडी नृत्य प्रस्तुत कर वाहवाही बटोरी। मणिपुर का माओ नृत्य, उड़ीसा का गोटीपुआ, असम का बिहु, मणिपुर का कोम नृत्य तथा पुनश्च मध्यप्रदेश का बधाई नृत्य और अंत में कर्नाटक के कलाकारों द्वारा यक्षगान की प्रस्तुति—इस प्रकार पहला दिन प्रस्तुतियों के आलोक में सप्तरंगी सिद्ध हुआ। प्रसंगवश बता दूँ कि मणिपुर में अकादेमी की तरफ से यक्षगान की यह पहली प्रस्तुति थी।

बारिश तो रोज़ ही हो रही थी लेकिन संयोग अच्छा था। बारिश या तो कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से पहले या फिर कार्यक्रम समाप्त होने के बाद हो रही थी। इसलिए हम निश्चिंत थे। दूसरे दिन कार्यक्रम की शुरुआत झारखंड के करसा नृत्य से हुई। झारखंड की बालाओं ने सिर पर धान की बालियों से सजे कलश लेकर बहुत ही मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। दल नायिका ने बातचीत के दौरान कहा कि जो बच्चियाँ धरती पर खड़ी हवाई जहाज को तृषित नेत्रों से देखा करती थी, आज वायुयात्रा के रोमांच से भरी हैं। वे संगीत नाटक अकादेमी के प्रति आभार जता रही थीं। झारखंड के दूरदराज के ग्रामीण इलाकों की ये नर्तकियाँ हवाई यात्रा के आनंद से इतना परितृप्त थीं कि नृत्य लौकिकता के आडम्बर से दूर जाता दिखा। इसके बाद केरल के कलाकारों द्वारा कूटिआट्टम का प्रदर्शन भी दिलचस्प साबित हुआ। तत्पश्चात कूचिपूड़ि नृत्य का अद्भुत दृश्य उपस्थित हुआ। स्त्रीवेश में पुरुष पात्रों द्वारा जिस प्रकार का जीवंत अभिनय मंच पर नज़र आया, वह सचमुच रोमांचित करने वाला था।

दो दिनों का संयोग तीसरे यानी अंतिम दिन संयम नहीं रख सका। कार्यक्रम के प्रारम्भ की घोषणा के साथ ही इन्द्रदेव और पवनदेव ने मिलकर हमारी तैयारी और इरादों पर पानी फेर दिया। दर्शकों में निराशा थी। कलाकार भी आशंकित थे कि अब कार्यक्रम होगा भी या नहीं। संगीत नाटक अकादेमी द्वारा तैयार नृत्य संरचना नृत्यरूपा की प्रस्तुति भी होनी थी और उसको देखने के लिए हम लालायित थे। यह वही नृत्य संरचना है जिसकी देश-विदेश में कुल 60 प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं। बहरहाल, वैकल्पिक मंच अर्थात जेएनएमडीए के प्रोडक्शन हॉल में चीज़ों को दुरुस्त किया गया और फिर कार्यक्रम अपनी रौ और रफ़्तार में चल पड़ा। इम्फाल में अंतिम दिन का कार्यक्रम नृत्यरूपा के नाम रहा। नृत्य समाप्ति के बाद देर तक तालियाँ गूँजती रही। मणिपुर के ही 90 साल के बुज़ुर्ग गुरु वीरेन्द्र सिंह ने जो नृत्य देखने के बाद प्रतिक्रिया दी, वह क़ाबिले-गौर है। उन्होंने कहा कि "अगर मैं नृत्यरूपा देखने से पहले मर जाता तो मेरी आत्मा अतृप्त ही रह जाती।" यह इम्फाल में हमारी अंतिम प्रस्तुति थी। दर्शकों का हुजूम इन लाजवाब नर्तकों से मिलने को बेताब था। सभी के चेहरे नूर से भरपूर नज़र आ रहे थे।

संगीत नाटक अकादेमी की दृष्टि और कार्य-सिद्धि का अपना अलग ही अंदाज़ है। यह अंदाज़ प्रदर्शनी से लेकर स्टेज और कला-विधा के चयन तक में साफ नज़र आता है। अब हमारा अगला पड़ाव काकचिंग था, जहाँ तैयारियाँ लगभग पूरी थीं, बस अंतिम स्पर्श शेष था। हमलोग काकचिंग के लिए रवाना होने ही वाले थे कि पता चला कि कुछ अघट घट जाने के कारण मणिपुर बंद है। अब यह एक नई समस्या थी। कार्यक्रम निर्धारित था। उसमें फेरबदल मुश्किल था। अब अंतिम उम्मीद मणिपुर पुलिस थी। पुलिस पदाधिकारी से बात हुई और उन्होंने कॅन्वॉइ (रक्षदल) की सुविधा उपलब्ध करा दिया। कॅन्वॉइ (रक्षदल) को सरल भाषा में यूँ कह सकते हैं कि हमारी गाड़ियाँ बीच में थीं जबकि काफ़िले के सबसे आगे और पीछे पुलिस की टीम चल रही थी। यात्रा शुरू हुई और हम डेढ़ घंटे तक भय और ख़ुशी के मिश्रित भाव लिए काकचिंग पहुँच गए। यहाँ पहुँचते ही दूसरी समस्या मुँह बाए खड़ी नज़र आई। कार्यक्रम स्थल के इर्दगिर्द बंद के कारण सन्नाटा पसरा था। कुछ ज़रूरी चीज़ें खरीदनी थीं, लेकिन बंद दुकान से कौन सा सामान मिलता है! अब यहाँ दो-दो चिंताओं ने एक साथ हमें घेर लिया। अगर सामान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं मिला तो तैयारी कैसे मुकम्मल होगी और जो तैयारी हो भी गई तो बंद के कारण दर्शक कैसे आएँगे ? लेकिन प्रेक्षागृह के सचिव के चेहरे पर चिंता का लेशमात्र भी नहीं था। वे बिल्कुल निश्चिंत थे और उनकी निश्चिंतता देख धीरे-धीरे हमारे चेहरे पर मुस्कान लौटने लगी। दुकानदार ने हमें ज़रूरी सामान मुहैया कराने के लिए विशेष रूप से दुकानें खोलीं। हमारे कलाकारों के लिए भोजन की व्यवस्था भी सहज ही हो गई। काकचिंग का विशेष भोजन तृप्त करने वाला था। एक संतरे बेचने वाली बूढ़ी माता ने फलों का बंदोबस्त कर दिया। और तब हमें पता चला कि ममत्व का भाव वैश्विक होता है।

काकचिंग में कार्यक्रम का समय दोपहर तीन बजे से निर्धारित था। मंच तैयार था, कलाकार तैयार थे। बस दर्शकों का इंतज़ार था और ठीक पौने तीन बजे हमने देखा कि प्रेक्षागृह के बाहर बूढ़े-बच्चे-जवान सब कतार में खड़े, प्रवेश के लिए अपनी बारी का इंतज़ार कर रहे हैं। जब बाऊल गान अर्थात कार्यक्रम के शुरू होने का समय हुआ, प्रेक्षागृह दर्शकों से भर चुका था। बाऊल गान के बाद मिजोरम का चेराव नृत्य हुआ। नर्तक मंडली में एक नर्तकी ऐसी भी थीं, जिसकी उम्र थी—सत्तर साल। लेकिन ऊर्जा ऐसी कि देखने वाला दंग रह जाए। लाजवाब। चेराव के बाद गुजरात का गरबा हुआ। सच कहूँ तो काकचिंग में जो कुछ भी हुआ, वह कम-से-कम हम जैसों के लिए बिल्कुल अप्रत्याशित और आश्चर्यचकित करने वाला था। बंद के दौरान भी उत्सव का जो माहौल प्रेक्षागृह और परिसर में दृश्यगत हुआ, वह जंगल में मंगल की उक्ति को एक नया अर्थ-संदर्भ देने वाला था। हमारा कार्यक्रम मणिपुर बंद के असर से बिल्कुल बेन्याज़ अपनी लय और ताल के साथ रवां-दवां था। चेन्नई और झारखंड के लोकनृत्यों की प्रस्तुतियों को लोगों की विशेष सराहना मिली। यहाँ भी नृत्यरूपा ने अपने झंडे गाड़े। दर्शकों का जोश देखकर तो लगता था गोया वे चाहते हों कि यह नृत्य कभी खत्म ही न हो! वैसे ये चाहना गलत भी तो नहीं। और नृत्य कभी खत्म होता भी नहीं। खत्म तो कार्यक्रम होते हैं और दो अप्रैल को हमारा कार्यक्रम खत्म हो गया। हम दिल्ली लौट आए लेकिन दिल वहीं कहीं काकचिंग में अटका है। स्मृतियाँ नृत्यरत् हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बसन्त उन्माद

शशीबाला बुद्धिराजा

[कथक केन्द्र, कथक नृत्य का प्रमुख राष्ट्रीय शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान है। यह केन्द्र कथक नृत्य, गायन संगीत एवं पखावज में विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन करता है। कथक केन्द्र संगीत नाटक अकादेमी की ही घटक इकाई है। कथक नृत्य के प्रति समर्पित इस केन्द्र में बसंत पंचमी को आयोजित कार्यक्रम का विवरण श्रीमती शशीबाला बुद्धिराजा ने भेजा है—संपादक]

'आया बसन्त पाला उड़त' यह एक कहावत है। ऋतुओं में ऋतुराज बसन्त का अपना महत्व है। बसन्त के इस शुभावसर पर कथक केन्द्र के विद्यार्थियो के आग्रह पर केन्द्र निदेशक ने उन्हें स्वयं की क्षमता के आकलन का एक अवसर प्रदान किया। प्रत्येक वर्ष कथक केन्द्र में बसन्त के आगमन पर माँ सरस्वती की पूजा की जाती है। इस वर्ष बसन्त पंचमी 12 फरवरी 2016 को थी। सरस्वती पूजा बसन्त पंचमी के दिन ही की जाती है। जिसका पूर्ण दायित्व विद्यार्थियों को सौंपा गया था। विद्यार्थियों द्वारा सर्वप्रथम सुबह हवन का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के स्टाफ एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

हवन की समाप्ति पर चरणामृत एवं प्रसाद वितरण किया गया। भंडारे की भी व्यवस्था की गई थी। अपराह्न 3.00 बजे से 'बसन्ती उन्माद' कार्यक्रम का आयोजन किया जाना था, जिसकी सूचना छात्रों ने पूजा में उपस्थित सभी सदस्यों को दी तथा कार्यक्रम में उपस्थित रहने का आग्रह भी किया। जो रसिक जन पूजा में शामिल नहीं थे उन्हें एस एम एस द्वारा भी कार्यक्रम में शामिल होने का निमन्त्रण विद्यार्थियों द्वारा दिया गया। माँ सरस्वती के पूजन के उपरान्त कथक केंद्र की निदेशक सुस्मिता घोष ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

पहली प्रस्तुति पार्य मंडल की थी। इन्होंने एकल नृत्य प्रस्तुत किया। पार्य ने नृत्य का प्रारंभिक प्रशिक्षण गुरू कृष्णमोहन से प्राप्त किया। वे वर्तमान में गुरू जय किशन महाराज के शिष्य हैं। इस एकल प्रस्तुति में गायन का दायित्व ब्रजेश मिश्र ने निभाया जबकि तबले पर अखिलेश भट्ट, पखावज पर भीम सेन, सारंगी पर नासिर खान तथा सितार पर विजय शर्मा संगत कर रहे थे। पढ़ंत मयूरी विभूते की थी।

प्रारम्भ में पार्य मंडल ने बसन्त ऋतु पर आधारित गुरू जय किशन महाराज द्वारा रचित बंदिश से नृत्य शुरू किया। तत्पश्चात् कथक का पारम्परिक नृत्य (शुद्ध नृत्य) उपज से शुरू किया, फिर थाठ, उठान, परन, आमद किया। एक छोटी सी लड़ी कर तीन ताल से समाप्ति हुई। ताल अष्टकमंगल (11 मात्रा में) दो परन, तिहाई और परमेलू किया। उसके बाद तिहाई दो परन और अष्टमंगल में (11 मात्रा में)।

गत निकास तीन ताल में फिर घूंघट की गत दिखाई गई। इस गत द्वारा इन्होंने घूंघट निकालने के कई नये पुराने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तरीके बताये। दर्शकों ने इसका भरपूर आनन्द लिया। घूंघट की गत इतनी खूबसूरत थी कि हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। तत्पश्चात् इन्होंने पंडित बिन्दादीन महाराज द्वारा रचित एक ठुमरी पर नृत्य दिखाया, जिसमें होली का उल्लेख कुछ इस तरह किया गया :

का सा खेलू मैं
पिया घर नाही ...

अर्थात नायिका का का पति होली में घर पर नहीं है वह विरह में डूबी हुई है और अपनी व्यथा बता रही है। इस पंक्ति में विभिन्न मुद्राओं में बड़ी चतुराई से नृत्य प्रदर्शित किया गया। यह कथक का संचारी भाव है। एक ही विषय को विभिन्न मुद्राओं द्वारा दर्शकों तक पहुँचाना।

इसके बाद 'बसंत उन्माद' पर केंद्रित समूह नृत्य की बारी आई। इनमें संगत कलाकार थे—सितार पर विजय शर्मा, तबले पर अखिलेश भट्ट, पखावज पर भीम सेन, सारंगी पर नासिर खान, गायन समीसुल्लाह का था जबकि पढ़ंत का दायित्व, अंकिता, नेहा, हीना और हैप्पी ने निभाया। समूह नृत्य का प्रारम्भ श्लोक से हुआ—*कूलन में, कचारन में... ।* यह श्लोक विलम्बित लय में उठान, आमद, परन और तिहाई के साथ मध्यालय में किया गया, जिसे ताल बसन्त में गाया गया। फिर नृत्यांगनाओं द्वारा बसन्त उन्माद दर्शाया गया। छोटी बंदिश फिर थोड़ा विलम्बित नृत्य द्रुत लय में आ कर मध्यालय में परमेलू, परन, तिहाई इसके बाद एक बन्दिश जिसकी रचना पंडित राजेन्द्र कुमार गंगानी ने की है जिसके बोल इस प्रकार है :

नाचत गोपाल ऋतु, बसन्त आज।

समूह नृत्य की संगीत रचना श्री शमी उल्ला, गायक के सहयोग व मार्गदर्शन में छात्रों ने की थी। यह सभी छात्र पोस्ट डिप्लोमा द्वितीय वर्ष के थे। इसके बाद मानसी सक्सेना ने एकल नृत्य प्रस्तुत किया। यह कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति थी। सुश्री मानसी, सक्सेना गुरु राजेन्द्र कुमार गंगानी के सान्निध्य में कथक केन्द्र में नृत्य की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इनके साथ नृत्य में विजय शर्मा , शकील खान, भीम सेन, समीउल्ला खान, अयूब खान ने संगत दी जबकि पढ़ंत का दायित्व विद्या गौरी ने निभाया।

शुरूआत में *राग बसन्त* में बन्दिश पेश की गई। जिसके बोल थे :

फगवा ब्रज देखन को चलो री
फगवा में मिले गे कुंवर कान्हा।

यह बन्दिश फागुन और बसन्त ऋतु पर आधारित है। जिसमें कहा गया है कि आइए हम सब मिलकर फागुन के महीने में ब्रज देखने चलते है जहाँ श्रीकृष्ण की छवि मिलती है। तकनीकी पक्ष में शिखर ताल किया, जिसमें थाठ, उठान, आमद परन इत्यादि लिए थे। अन्त में मानस ने अपने नृत्य का समापन लड़ी से प्रस्तुत किया। अभिनय पक्ष में हजरत मौलाना जी की बन्दिश सूफियाना अन्दाज में की गई जिसमें श्रीकृष्ण की इबादत को सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इसी के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

सभी विद्यार्थी अत्यन्त प्रसन्न थे चूंकि उन्हें यह सुअवसर केन्द्र की ओर से प्रदान किया गया था जिसमें उन्हें नृत्य के प्रति अपने समर्पण को दिखाना था। विद्यार्थियों ने इस स्वर्णिम अवसर का बखूबी लाभ उठाया और अपनी क्षमता के अनुकूल प्रदर्शन प्रस्तुत कर अपने गुरुओं और केन्द्र को गर्वित किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरसिंगार

सरला जसवाल

हरसिंगार था नाम मेरा
सजाना था धरा को काम मेरा
मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा गिरिजाघर
वहाँ पर पहुँचना था स्वार्थ मेरा

शाम खिला सुबह गिरा
खुशबू फैलाना था काम मेरा
क्षण भंगुर था जीवन मेरा
हरसिंगार था नाम मेरा

फूलों की सफेद चादर से तुम्हें ढकना था स्वप्न मेरा
खुद को फूलों के मोह से छुड़ाना था काम मेरा
बेवजह न था प्यार मेरा
हरसिंगार था नाम मेरा

माते। मुझ पर था उपकार तेरा
तेरी मिट्टी से था अस्तित्व मेरा
बीज से वृक्ष बनाकर ऊपर उठाना था काम तेरा
लेकिन मैं जहाँ से चला था वही पर मिलना ध्येय था मेरा
हरसिंगार था नाम मेरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सच है एक

सुशांत सुप्रिय

अपने बेटे के
जन्म-दिन की ख़ुशी में
मैंने एक पौधा लगाया

बेटा बड़ा होने लगा
पौधा भी बड़ा होने लगा

मैं बेटे से प्यार करता था
मैं पौधे से भी प्यार करता था

मैं बेटे को पाल-पोस रहा था
मैं पौधे में खाद-पानी डाल रहा था

एक दिन बेटा बड़ा हो गया
एक दिन पौधा पेड़ बन गया

फिर बेटा मुझे छोड़
अपनी राह चल दिया
पेड़ अब भी मेरे पास है

बेटा अब मुझे याद भी नहीं करता
पेड़ अब मुझे छाया और फल देता है

कभी-कभी
मुझे लगता है जैसे
पेड़ के पके हुए फलों के भीतर
कहीं मेरे पिता की सुगंध है
पेड़ की जड़ों में कहीं मेरी माँ का दूध है

आप भी पेड़ लगाइए
अपनों का सुख पाइए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की कविताएं

प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली

प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली
क्यों कोयल बगिया में बोली

क्यों रंग बिरंगे सुमन खिले
क्यों भौंरे इनसे हिले मिले

क्यों गागर रंग रस की घोली
प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली

यह मस्त पवन अब क्यों डोली
क्यों फाग मनाती है टोली

लो पिचकारी रंग की छूटी
फिर लाज नयनपट की टूटी

रंगों ने क्योंकि झोली खोली
प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली

सबके मुख रंग से रंगे हुये
सब हृदय प्रेम में पगे हुये

ऐसी होली ही तो होली
प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली

मत रोली तिलक लगाओ तुम
मत आज गुलाल उड़ाओ तुम

मत बोलो होली की बोली
प्रिय साथ नहीं फिर क्या होली

गाँव के जीवन जगो रे

गाँव के जीवन जगो रे
दूर होवें आंधियाँ सब, दूर होवें व्याधियाँ सब
हृदय को निर्मल बना कर
मधुर भावों में पगो रे॥

मनों में विश्वास कर लो, पांव में भी शक्ति भर लो
कर चलो निर्माण नित नव
कर्म के पालक जगो रे ।।

भूमि का आँचल हरा हो, धान्य, धन घर में भरा हो
उल्लसित मन खूब गाओ
मधुर तम गायन जगो रे॥

पायलों की आंगनों में, लोरियों की पालनों में
गूंजती हो धुन प्रभाती
नित्य नव स्वर में जगो रे॥

देश के सर्वस्व तुम हो, राष्ट्र की दृढ़ भीत तुम हो
देश से निज डोर बांधो
प्रेम के रंग में रंगों रे॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बारिश

शुभा सक्सेना

अब की बारिश में कुछ नया किया जाये
मुस्कुराएँ औ' आँसुओं को धो दिया जाये

भीगी-हरी घास पर लेटे रहें रात भर 'औ
हाथ बढ़ा बादलों को छू लिया जाये।

उँगलियों से बादलों पर उकेरें कोई चेहरा
और उसे यूँ ही कोई नाम दे दिया जाये।

शाखों पर ठहरे पानी को चेहरे पर झाड़ें
और भीगे फूलों से मय को पिया जाये।

क्यूँ ना सियाह-आसमाँ की तनहाई में
सपनों का एक इंद्रधनुष टाँक दिया जाये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्रजभाषा के छंद

डॉ. प्रकाश द्विवेदी

[हिन्दी में भ्रमर गीत और उद्धव-शतक की सुदीर्घ परम्परा में पण्डित जगन्नाथ दास रत्नाकर और डॉ. रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' की परम्परा में फैजाबाद के ब्रजभाषा के कवि डॉ. प्रकाश द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। ब्रजभाषा में लिखा उनका प्रबंध काव्य 'पारावार ब्रज कौं' काफी चर्चित रहा। डॉ. प्रकाश द्विवेदी ने हमे कुछ घनाक्षरी छंद भेजे हैं जो यहाँ प्रस्तुत हैं—संपादक]

चुपचाप झुकि स्याम नूपुर उतारै लगे,
बोलीं ललिता-सखी! इन्हें न यों सिखाइयो
मुनि-मंडली ही मोतीमयी भई नूपुर है,
तप को प्रभाव, याहि ऐसे न घटाइयो
चरन मैं ठौर दैकै त्यागैं न कबौं ये सखि!
नयी बानि सिखै इन्हैं बात न बिगारियो
जुरे हाथ राधिका के बोलीं—मेरे घनस्याम,
भूलि अब पुर न पग से उतारियो

प्रान हौ हमारे, मान के ही रखवारे प्यारे!
आसन पुरैया हौ, प्रसासन देखैया हौ
तिहारे सहारे हम, हारे न कदापि कहूँ,
जीत हौ हमारे, प्रीति-रीति-रखवैया हौ
मख देखिबे के मिस राम स्याम ल्यावौ बेगि,
मेरी नीति नैया के तो तुमहीं खेवैया हौ
जाहु नंदगाँवें, राम-स्यामै बेगि लावौ इहाँ,
बिगरी है बात, एक तुम्हीं बनवैया हौ

वहै चटकीलो चाँद, चाँदनी वहै है चारु,
वहै है कलिंदजा, वहै तो बृन्दाबन है
वहै है कदंब, अंब, जंबु, कचनार वहै,
वहै है तमाल, बिल्व-कुल, कीर-गन है
वहै गोप-गोपी, वहै लोनी है लवंगलता,
वहै रौनरेती, रासमंडल प्रमन है
सबै तौ 'प्रकास' वहै, एक वहै कान्ह-नाहिं,
यातैं नाहिं वैसो तन, वैसो नाहिं मन है

बृंदाबन काह, महिमा है कौन याकी कहौ,
याकौ नभ लोक बेदहू मैं छबि छावै है
वस्यो यामै कौन तरु लता तौ बतावौ हमैं,
छुप छुप भेदन अभेदन रचावै है
नदी कौन याकी भूमि पावन करति कहौ,
याकैं तट-बासी कौन लोकन तें आवै हैं
सहज बिलोकै, लोकै रागनि जगावै नित,
सही बतरावौ सबै काहै ये सुहावै है

ऊधौ! मन माँहिं नाचै प्यारी ब्रज भूमि वही,
एक एक बात फूल बनि बनि छाई है
बीते द्योस केते देस-त्रान माँहिं एक एक,
कछु बनी बात औ न कछु बनि पाई है
भरन न पावत मनोरथ को रीतो घट,
विधि की या क्रूरता मैं कौन निपुनाई है
आइहैं सँजोग कबै गोकुल मैं जाइबे कौं,
ऊधौ! साध याही बस मन मैं समाई है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो रास्ता पार कराते हैं

प्रयाग शुक्ल

कोई दस साल पहले की बात है। मैं हैदराबाद विश्वविद्यालय के अतिथिगृह में ठहरा था। उस प्रवास का प्रसंग यह था कि सुपरिचित रंगकर्मी रामगोपाल बजाज वहाँ विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग के छात्र-छात्राओं के साथ तेलुगु में धर्मवीर भारती के नाटक 'अंधायुग' की प्रस्तुति करने वाले थे। तब मैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की पत्रिका 'रंग प्रसंग' का संपादक था, और उसी की ओर से प्रस्तुति देखने गया था। मैं परिसर में ही हूँ यह जानकर एक दिन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने मुझे बी.ए., एम.ए. के छात्र-छात्राओं को संबोधित करने के लिए बुला लिया। स्वागत और परिचय की औपचारिकताएँ पूरी हो जाने के बाद जब मेरे बोलने की बारी आयी तो साहित्य की सार्थकता के एक प्रसंग में मैंने चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कालजयी कहानी 'उसने कहा था' की कुछ चर्चा की, और कहा कि कोई ऐसी रचना हमें किस प्रकार एक गहरी संवेदना से भर देती है। मानवीय प्रेम की अकूत संभावनाओं से परिचित कराती है। और नि:स्वार्थ भाव से 'दूसरे' या 'दूसरों' के लिए प्राणों की बाजी लगा देने की, हमारे भीतर की क्षमता को तौलती है! जगाती है। मैंने कहानी के कुछ विवरण भी स्वभावत: छात्र-छात्राओं के सामने याद किये, जिन्हें आज यहाँ फिर प्रसंगवश प्रस्तुत कर रहा हूँ : क्योंकि मैं जो कुछ कहने चला हूँ वह बात इस कहानी की बात के बिना पूरी न होगी। तो कहानी है: यहाँ कुछ अंशों में।

''एक लड़का और एक लड़की चौक की दुकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथनों से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानदार एक परदेशी से गुथ रहा था, जो सेर भर गीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

''तेरे घर कहाँ हैं?''

''मगरे में,--और तेरे?''

''माझे में—यहाँ [यानी अमृतसर में] कहाँ रहती है?''

''अतर सिंह की बैठक में, वे मेरे मामा होते हैं।''

''मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बाज़ार में है।''

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ-साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कराकर पूछा—''तेरी कुड़माई (मंगनी) हो गयी? इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गयी और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे-तीसरे दिन सब्ज़ी वाले के यहाँ, या दूध वाले के यहाँ, अकस्मात दोनों मिल जाते। महीना भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा ''तेरी कुड़माई हो गयी?'' और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक-दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की, लड़के की संभावना के विरुद्ध बोली—''हाँ हो गई।''

''कब?''

''कल—देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू!'' लड़की भाग गयी। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन भर की कमाई खोयी, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अँधे की उपाधि पाई। तब कहीं घर पहुँचा।''

आशा करता हूँ कि किशोर या युवा दिनों में पढ़ी हुई यह कहानी अब तक आप में 'जाग' गयी होगी, पूरी तरह। पर, जिन्होंने हो सकता है पढ़ी ही न हो, या कुछ भूल गये हों,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(हालांकि 'उसने कहा था' की 'बात' तो हर इस कहानी को पढ़ने वाले को जीवन भर याद रहती है!) उनकी सुविधा के लिए पूरी कथा का स्मरण कर लेता हूँ—गुलेरी जी से क्षमा प्रार्थी होकर, क्योंकि जिस 'विधि' से यह कथा लिखी गयी है, उसका सार-संक्षेप एक 'अपराध' से कम नहीं है।...तो आगे की कथा यह है कि पच्चीस वर्ष बाद वह लड़का लहना सिंह नं. 77 रैफ्ल्स में जमादार हो गया है। और उस लड़की का पति हजारा सिंह, सूबेदार। उसका बेटा बोधा भी उनके साथ ही फौज में है। एक बार छुट्टियों में सब अपने घर आते हैं तो हजारा सिंह कहता है, लहना सिंह से, कि लौटते हुए तुम मेरे गाँव आ जाना, वहीं से साथ चलेंगे। कहानी बताती है सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे (यानी लहना सिंह को) बहुत चाहता था।'' बहरहाल, जब लहना सिंह हज़ारा सिंह के यहाँ पहुँचता है, तो घर के बाहर से निकल कर हज़ारा सिंह कहता है ''लहना, सूबेदारनी तुमको जानती हैं। बुलाती हैं। जा मिल आ।'' लहना सिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती हैं? कब से? रेजिमेंट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर जाकर 'मत्था टेकना' असीस सुनी।

लहना सिंह चुप।''

''मुझे पहचाना?''

''नहीं।''

''तेरी कुड़माई हो गई?''

सूबेदारनी कहती है, आगे ''मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया एक काम कहती हूँ।... मेरे तो भाग फूट गये... एक बेटा है। फ़ौज में भरती हुए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार हुए, पर एक भी नहीं जिया।'' सूबेदारनी रोने लगी। अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़े की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख़्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही उन दोनो को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ। ''रोती-रोती सूबेदारनी ओबरी (अंदर का कमरा) में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।''

शेष कथा यही तो है कि युद्ध में लहना सिंह बुरी तरह घायल होता है, अचानक खंदक में धोखे से किये गये जर्मनों के हमले से।...पर, वह पीछे से मदद के लिए आयी गाड़ियों में, अपनी जगह, जबरदस्ती हज़ारा सिंह, और बोधा सिंह को सूबेदारनी की सौगंध देकर भेज देता है।... कहानी की अंतिम पंक्तियां हैं : ''कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा—फ्रांस और बेलजियम—68वीं सूची—मैदान में घावों से मरा नं.77 सिख राइफ़ल्स जमादार लहना सिंह।''

उस दिन बी.ए, एम.ए. की उस 'कक्षा' के बाहर आकर सबसे विदा ली। यह मैं देख पाया था कि 'उसने कहा था' कहानी की याद ने, उसकी चर्चा ने, सब पर गहरा असर किया था। पाया कि सबसे विदा लेने के बाद भी मेरे साथ-साथ एक लड़का चला आ रहा है। कुछ संकोच के साथ उसने पूछा कि ''सर, आपको क्या लगता है कि लहना सिंह जैसा कोई हुआ होगा! क्या यह कहानी 'सच' लगती है? क्या सचमुच कोई इस तरह अपनी जान दे सकता है?'' उसके बाद उस दिन उस लड़के से जो कहा था, आज उसे ही यहाँ दुहराता हूँ : मैंने कहा था, ''देखो, मैं 65 वर्ष का हो गया हूँ। (तब यही मेरी उम्र थी) देश-दुनिया में बहुत घूमा हूँ। रात-बिरात भी। अतिथि गृहों और होटलों में ठहरा हूँ। अनजान-अपरिचित जगहों और लोगों के बीच गया हूँ। न जाने कितने लोगों ने थोड़े से आत्मीय परिचय के बाद मुझे प्रेम से रास्ता बताया है। खाना परोसा और बनाया है। देर-अबेर। प्रेम से। मेरी किसी छूटी जा रही चीज़ की याद दिलायी है। मुझे किसी आसन्न संकट से बचाया है। मसलन यही कि रफ्तार से चली आती किसी गाड़ी की तरफ़, जिसकी ओर मेरा ध्यान न था, मुझे सावधान किया है! उस वक़्त जब मैं रास्ता पार करने को था। और एक बार ढाका में मेरे बीमार पड़ने पर, 'नजरूल अकादेमी' में काम करने वाले एक कर्मचारी के परिवार ने दिन-रात जागकर अस्पताल में, बारी बारी से अपनी ड्यूटी लगायी है। सुदूर, बुदापैस्त (हंगरी) में विश्वविद्यालय के अतिथिगृह में छोटी-सी कैंटीन सँभालने वाली स्त्री, बाबेत, ने जब मैं चलने लगा तो मुझे शहद की शीशी भेंट की है [मैं शहद मिली 'काली' चाय ही तो पीता था!] और हम दोनों की आँखों में जल छलक आया है...!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या संबंध था हमारा, सिवाय इसके कि एक सुबह कैंटीन के पास मुझे मंडराता देखकर, वे ही मेरे लिए रोज सुबह, कैंटीन खुलने से पहले ही चाय बनाने लगी थीं। मैं सैर करने चला जाता था... और लौटकर उनसे कुछ बतियाता था।... न जाने कितने ऐसे ही प्रसंग हैं। समय समय पर उन पर लिखा भी है।

तो किसी के लिए प्राण दे देना तो बहुत बड़ी बात है, पर एक छोटा-मोटा उसने कहा आज हम सबके जीवन में प्राय: रोज घटित होता है।...मैंने तब उस लड़के से यही कहा था। ''बताओ भला, क्या बहुतों से मिली नि:स्वार्थ सहायता के बिना मैं पैंसठ साल पूरे कर सकता था (अब पचहत्तर का हूँ)... मैं, जो घर में कम रहा हूँ बाहर ज्यादा...!'' लद्दाख और लक्षद्वीप को छोड़कर भारत के सभी प्रदेशों में गया हूँ, पूर्वोत्तर के भी सभी प्रदेशों समेत। और दुनिया के भी बहुतेरे देशों में अकेले भी घूमा था।

वह लड़का, और मैं, कुछ देर तक साथ चलते रहे। 'उसने कहा था' कहानी की 'सचाई' पर बातें करते हुए...। सौ साल पहले लिखी गयी इस कहानी की याद किसी न किसी प्रसंग में रोज करता हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हंसकुमार तिवारी : सन्दर्भ और साधना

डॉ. वरुण कुमार तिवारी

देश की आजादी के बाद हिंदी को समृद्ध करने में जिन महापुरुषों का नाम उल्लेखनीय है उनमें एक महत्वपूर्ण नाम है पं. हंसकुमार तिवारी का। हिंदी साहित्य भंडार को अपनी रचनाओं से समृद्धतर करते हुए उन्होंने बिहार में हिंदी को सुप्रतिष्ठित करने में बहुमूल्य योगदान दिया। कवि, कथाकार, नाटककार, भाषा शिल्पी, अनुवादक, संपादक, वक्ता एवं कुशल प्रशासक हंसकुमार तिवारी के संबंध में आलोचकों का कथन है कि उन्होंने अधिकांशत: वही किया जो उन्हें नहीं करना था और जो वे कर सकते थे, जहाँ वे पहुँच सकते थे, वह सब शुरू में ही उनसे छूट गया। दरअसल, पं. हंसकुमार तिवारी की लगभग सौ कृतियाँ हैं और उनका भाषांतर का कार्य अद्वितीय है। परंतु इतना लिखने के बावजूद उनकी 'कला' शीर्षक समालोचनात्मक पुस्तक में जिस आलोचक का जन्म हुआ था वह दूसरे-दूसरे कार्यों में लगा रहा और समय की धारा बहती चली गई, बहती चली गई और हिंदी आलोचना जगत एक बहुत बड़े आलोचक के अवदान से वंचित रह गया।

वैसे तो पश्चाताप बहुत हैं। उदाहरणार्थ यदि नलिन विलोचन शर्मा कुछ और दिन जीवित रहते तो हिंदी साहित्य-संसार में कुछ और जुड़ता। यदि डॉ. लक्ष्मीनारायण सुधांशु को राजनीतिक व्यस्तता नहीं होती तो हिंदी आलोचना शास्त्र में और अधिक उल्लेखनीय कार्य हुआ होता। पं. हंसकुमार तिवारी ने स्वयं लिखा था कि 'राजनीति ने सुधांशु जी के जीवन में ऐसी व्यस्तता ला दी है, समय का ऐसा अकाल उपस्थित कर दिया है कि स्वाध्याय, मनन और गहरे चिंतन का उतना समय नहीं मिल पाता, जो वैसे ठोस ग्रंथों के प्रणयन के लिए अपेक्षित है।' अवंतिका' मासिक का संपादन, नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हिंदी साहित्य के वृहद् इतिहास के एक खंड का संपादन और कुछ फुटकल निबंध-प्रबंध, भाषण ही गिनी गिनाई उपलब्धियाँ हैं। दुख तो यह है कि जिस एक महत्वपूर्ण ग्रंथ 'काव्य योग और रस तत्व' को लिखना उन्होंने आरंभ किया था, वह अधूरा ही पड़ा है। विषय की वह सुचिंतित वैज्ञानिक समीक्षा होगी और शक नहीं कि बड़े महत्व की होगी, लेकिन कौन जाने वह ग्रंथ कब पूरा होगा। मैंने बार-बार उसके लिए अपना पूरा समय देना चाहा कि आप निर्देश देकर, लिखाकर उसे पूरा कर ही डालें किंतु अब, इस बार करते करते वह जहाँ का तहाँ पड़ा हुआ है।'' इसी तरह चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की तीन कहानियाँ हमें इस दुख से जोड़ती हैं कि वे और लिख पाते तो हिंदी में एक और बड़ा कथाकार होता।

वस्तुत: तिवारी जी कहानी, कविता, नाटक, आलोचना के लिए जितना कुछ कर सकते थे, नहीं किया अथवा नहीं कर पाए। वे अनुवाद कर्म में लगे रहे। अनुवाद क्या है? जो ध्वनित है उसे अनुगूंज में छूने की कोशिश। परंतु तिवारी जी के अनुवाद कार्य को साधारण भाषांतर नहीं समझकर 'कला आराधना' के रूप में लेना चाहिए। उन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर की कविताओं और गद्य रचनाओं का समान अधिकार के साथ भाषांतर किया। उनके भाषांतर और अनुवाद, मूल रचनाकार के साथ जुगलबंदी की तरह हैं। 'गीतांजलि' के अतिरिक्त उन्होंने रवि बाबू के सौ गीतों का मूल धुन में अनुवाद किया, इसे 1961 में सज-धज के साथ छपवाया और भारत प्रसिद्ध गायक-गायिकाओं के स्वरों में उसका आकाशवाणी से प्रसारण कराया। उन्होंने रवि बाबू के निबंधों का 'साहित्य के पथ पर' शीर्षक से अनुवाद किया। यह किताब अनुवाद में बाँग्ला दृष्टि का हिंदी में अवतरण है। रवींद्रनाथ के उपन्यास 'चोखेर वाली' का 'आँख की किरकिरी' नाम से अनुवाद किया जिसमें रवि बाबू के कथा गद्य की लय की पूर्णरूपेण रक्षा हुई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। उन्होंने शरत्चंद्र, ताराशंकर बंद्योपाध्याय, विमल मित्र, शंकर, मनोज बसु, आशापूर्णा देवी, प्रेमनाथ बिसि, निमाई भट्टाचार्य, प्रेमेंद्र मित्र, हुमायू कबीर, प्रबोध सान्याल, सत्यजीत राय, समरेश बसु, विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय और सचिन बंद्योपाध्याय के साथ अलग अलग रचनाओं की तह में उतरकर प्राय: सौ बार जुगलबंदी की। उन्होंने डॉ. गोपीनाथ कविराज की चुनी हुई रचनाओं का अनुवाद किया। महामहोपाध्याय डॉ. गोपीनाथ भारतीय संस्कृति, साधना, योग एवं तंत्र शास्त्र के आधिकारिक विद्वान थे। उनका 'अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान' भारतीय योग साधना एवं तांत्रिक वाङ्मय का अकेला दुर्लभ ग्रंथ है जिसे तिवारी जी ने बाँग्ला से हिंदी में अनुवाद कर हिंदी पाठकों के लिए सर्वसुलभ बनाया। 'अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान' नामक इस गंभीर ग्रंथ का अनुवाद इस बात का प्रमाण है कि तिवारी जी केवल कला-समीक्षक ही नहीं अपितु अध्यात्म-रहस्य-विज्ञान के गंभीर ज्ञाता भी थे। गहन साहित्यिक निष्ठा और तमाम स्पर्धाओं के बीच हिंदी पाठक की पहुँच जैसी क्षमताओं के भीतर ही इतना अधिक कार्य संभव है। यह आश्चर्य है कि अकेले उन्होंने इन विख्यात रचनाकारों की रचना-क्षमता के भीतर परकाया-प्रवेश किया और इस तरह आलोचक-चिंतक की ऊँची भूमिका से वे अनुवादक की प्रतिष्ठा के नायक बन गए। बाँग्ला उनकी मातृभाषा थी और हिंदी उनके सृजन की भाषा।

दुख के सुख बना लेना, अमृत को जहर बना लेना हंसकुमार तिवारी के लिए सहज हो गया था। फैजाबाद के डॉ. प्रकाश द्विवेदी को सन् 1968 में लिखे पत्र में उन्होंने कहा—''जिंदगी अब जिम्मेदारियों से इतनी उलझ गई है, इतनी घट गई है कि सपनों के सारे पंख अब सिमटते जा रहे हैं। शुरू में सिपाही था। ईमानदारी से लड़ा किया। युद्ध में जो हम ईमानदारी से लड़ते हैं, वे सेनापति होते है, गर्व गौरव के कई पुरस्कार पाते हैं। हम ही ऐसे अभागे हैं कि मरते दम तक सिपाही ही रहेंगे और युद्ध में लड़ने का हमारा एक ही पुरस्कार है—वह है मौत। मगर लड़ना है, लड़ रहा हूँ। पिता के योग्य पुत्र बनो—यही शुभकामना । दुख को सुख बना सको, जहर को अमृत।''

पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिला के पंचकोट राज अवस्थित 'बेलिया डांगा' ग्राम में 15 अगस्त 1918 को उनका जन्म हुआ। चंपानगर, भागलपुर में अपने नाना के पास पले, बढ़े, शिक्षित हुए। वे प्रसाद, पंत, निराला की तरह विद्याव्यसनी थे। तैंतीस वर्ष की उम्र में बिहार सरकार के मंत्रिमण्डल सचिवालय में राजभाषा के विशेष पदाधिकारी के रूप में नियुक्त होकर चौवन वर्ष की उम्र तक उन्होंने भाषा की सेवा की। उन्नीस सौ पचहत्तर में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना के निदेशक होकर कार्य किया; साथ ही 'साहित्यकार कलाकार कोष' का भी कार्य देखते रहे। लेकिन उन्होंने लिखना कब शुरू किया? शायद किशोरावस्था से ही। 18 वर्ष की उम्र में उन्होंने 'कला' पर एक निबंध लिखा और एक वर्ष बाद जब यह किताब के रूप में प्रकाशित हुआ तो किताब पढ़कर लोग आश्चर्यचकित हो गए। सोलह वर्ष बाद उन्होंने इसको अंतिम रूप दिया। 'कला' की विषय सूची से ज्ञात होता है कि उन्होंने दर्शन, साहित्य एवं प्राचीन ग्रंथों का विधिवत अध्ययन किया था। 164 पृष्ठों की इस पुस्तक में 282 व्यक्ति एवं कृति संदर्भों के 411 उद्धरण हैं, जिनमें मम्मट, अभिनव गुप्त, कालिदास, भर्तृहरि, कुन्तक, प्लेटो, अरस्तू, कांट, हेगेल, शेली, शेक्सपियर, क्रोचे एवं रवींद्रनाथ के उद्धरणों की संख्या अधिकतम है। इस तरह युवावस्था में ही तिवारी जी का सारा अध्ययन न केवल हिंदी में, बल्कि किसी भी भाषा के साहित्य-प्रेमी युवक के लिए आश्चर्य एवं ईर्ष्या का विषय हो सकता था। उनकी दूसरी पुस्तक 'बँग्ला भाषा और साहित्य' एक विलक्षण कृति है जिसमें उनके बाँग्ला भाषा साहित्य के संबंध में अद्भुत ज्ञान का परिचय मिलता है। पर्याप्त सूचनाओं से समृद्ध यह पुस्तक बाँग्ला भाषा और साहित्य के संबंध में अकेली किताब है। उन्होंने 'भारतीय सौन्दर्य' शीर्षक से एक तीसरी किताब भी लिखी थी; यदि यह किताब प्रकाशित हो गई होती तो 'कला' का विस्तृत स्वरूप हमारे समक्ष आता। तिवारीजी ने 'नागरी प्रचारिणी सभा' के हिंदी साहित्य का वृहद् इतिहास' के चौदहवें खंड के लिए 1920 तक की अवधि का 'निबंध साहित्य का इतिहास' भी लिखा था। इसमें निबंधों के चयन, संग्रह एवं टिप्पणियों से यह बोध होता है कि वे उच्च कोटि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के निबंधकार, अन्वेषक एवं इतिहासकार थे। वे कुशल वक्ता भी थे। डॉ. मृदुला शुक्ला (संपादक-मयूराक्षी, बोकारो, झारखंड) ने 'नया' (दिल्ली) पत्रिका के जुलाई 2007 के अंक में उनकी वक्तृत्व कला के बारे में लिखा है, ''सन् 1972 का समय था। मैं महिला कालेज में विद्यार्थी थी। श्रद्धेय हंस कुमार तिवारी उस समय भागलपुर विश्वविद्यालय के सीनेट में शामिल थे। कालेज में उन्हें छात्राओं के बीच व्याख्यान देने को आमंत्रित किया गया था। हिंदी के राजभाषा विभाग ने उन्हें स्पेशल ऑफिसर का पद प्रदान किया था। जिस दिन उनका भाषण चल रहा था, मैं अपनी पंक्ति में बैठी मंत्रमुग्ध सी सुन रही थी। वे दिखा रहे थे एक खुला वृहत आकाश। वे कह रहे थे-'भावों के संप्रेषण में भाषा कभी व्यवधान पैदा नहीं करती है और न भाषाओं के बीच कोई वैषम्य होता है, इतना ही नहीं अन्य भाषाओं का ज्ञान हमारे हिंदी के प्रति प्रेम को बढ़ाता है; विचारों को विस्तार देता है।' ढेरों-ढेर बातें थीं जो उस समय सभाकक्ष में अपना प्रभाव छोड़ रही थीं। अनुवाद के द्वारा भाषा और साहित्य की समृद्धि, उसकी भाषागत जटिलता, नाटकों की उपयोगिता और हिंदी की पुरजोर वकालत-वक्त लंबा खिंचता गया। तिवारी जी ने सभाकक्ष की नब्ज पकड़ ली थी।'' उन्होंने राशन की दुकान भी की; उपभोक्ताओं में पूरा पूरा बाँटा भी और जनता के बीच यश के भागी भी बने। लेकिन दुकानदारी उनके लिए आजीविका नहीं उपासना थी। उन दिनों बंगाल के अकाल के समय लोग दाने-दाने के लिए तरस रहे थे। चावल बर्मा से आता था। अत: राशन की दूकान भी उनके लिए कवि कर्म ही था।

निबंध से संबंधित उनकी तीन पुस्तकें-'साहित्यकी', 'साहित्यायन', और 'संचयन' उनके रचनात्मक ज्ञान तथा निबंध कला के प्रमाण हैं। उनका 'साहित्य और सहज भाषा' शीर्षक निबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'रसात्मक बोध के विविध रूप' शीर्षक निबंध के समतुल्य है लेकिन अलग विशेषता से संपृक्त है; साथ ही यह निबंध आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'साहित्य का मर्म' के समानांतर एक भिन्न दृष्टि लेकर भी उपस्थित है। परंतु श्रेष्ठ निबंधकार के सभी गुणों के बावजूद वे एक अनुवादक ही बनकर रह गए।

तिवारी जी की कथा साहित्य में भी अच्छी पैठ थी। उनकी कहानियों और उपन्यास को लेकर प्रेमचंद के बाद के कथा साहित्य के गौण पक्ष पर अच्छी चर्चा हो सकती है। नि:संदेह हंसकुमार तिवारी के पास एक ऐसी कथा भाषा थी जो अनुवाद में नहीं लगी होती तो लोकप्रिय कथा साहित्य के परिणाम प्राप्त होते। तिवारी जी के 'समानांतर' शीर्षक कथा संग्रह की कई कहानियाँ उन्हें आँचलिकता आंदोलन के पूर्व का एक परिपक्व कथाकार प्रमाणित करती हैं। उनकी कहानियों को पढ़ते समय हमें यशपाल, जैनेंद्र, अज्ञेय एवं पहाड़ी स्मरण आते हैं। इसी तरह उनका उपन्यास 'बदला' मोहनलाल महतो 'वियोगी' के उपन्यास 'विसर्जन' का स्मरण कराता है। उन्होंने 'पुनरावृत्ति' शीर्षक एक गीतिनाट्य तब लिखा था जब गीतिनाट्य लोकप्रिय विधा के रूप में स्वीकृत भी नहीं हुआ था। बाद में उदयशंकर भट्ट, सेठ गोविंद दास, धर्मवीर भारती आदि के गीतिनाट्य आने के बाद यह विधा हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित हुई। उनके पाँच एकांकी का संग्रह 'धारा और किनारा' भी उन्हीं दिनों लिखा गया था जो बहुत बाद में (1977 ई.) में प्रकाशित हुआ। ये पाँचों एकांकी तिवारी जी की सर्वोत्तम उपलब्धियाँ हैं। 'आधी रात का सवेरा' नाम से उनके चार नाटकों का एक अन्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ था जो परिपक्व नाटक का प्रमाण है। 'आकाश पाताल' भी उनकी एक नाट्य पुस्तिका है। यात्रा साहित्य पर भी उनकी एक पुस्तक है-'भूस्वर्ग कश्मीर'। इसमें उनका कवि मन उनके सर चढकर बोलता है। यात्राएँ तो उन्होंने बहुत की थी। पूरा देश घूमे थे और इन यात्राओं से उनका एक बहुत आकर्षक, बहुरंगी एवं अत्यंत कलापूर्ण वाग्विदग्ध व्यक्तित्व निर्मित हुआ था।

बिहार से उन दिनों बाल साहित्य की ढेरों पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ निकलती थीं। रामवृक्ष बेनीपुरी ने बाल साहित्य की 'मनु से गाँधी तक', 'लाओत्से से लेनिन तक', 'बच्चों के बापू' 'बगुला भगत' आदि तमाम पुस्तकों की रचना की थी। रामधारी सिंह 'दिनकर', कलक्टर सिंह केसरी, आरसी प्रसाद सिंह आदि ने भी पर्याप्त बाल साहित्य रचा था। पं. हंसकुमार तिवारी ने भी 'महावीर' और 'विद्यापति' नामक दो बाल साहित्य की पुस्तकें लिखीं। 'बंगाल की लोक कथा' नाम से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालोपयोगी पुस्तकें भी निकालीं। उनकी बाल साहित्य की रचनाएँ अत्यंत स्तरीय हैं। यदि वे बाल साहित्य ही लिखते रहते तो बाल साहित्यकार के रूप में उच्च स्थान प्राप्त करते।

वे एक सुरुचि संपन्न पत्रकार भी थे। 1937 से 1940 तक नौ वर्षों का समय उनके पत्रकार बनने का भी समय है। उन्होंने 1937 से 1940 तक 'बिजली' नामक साहित्यिक पत्र निकाला। भागलपुर से 'छाया' नामक पासिक पत्र भी इसी समय निकाला। इन्हीं दिनों 'किशोर' नामक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका का संपादन भी किया और जब उन्होंने गया में 'मानसरोवर' नामक अपना प्रकाशन बनाया तो वहीं से 'उषा' नामक पत्र का संपादन भी प्रारंभ किया। वे आकाशवाणी के प्रशंसा प्राप्त कलाकार भी थे और राष्ट्रीय कार्यक्रमों के प्रस्तोता के रूप में अनिवार्य व्यक्ति माने जाते थे। उन्होंने 'चित्रांगदा', 'चांडालिका', 'ताशेर देश', 'लाल कनेर', 'अमीर खुसरो', 'खून का धब्बा' एवं रवींद्रनाथ ठाकुर के सौ गीतों के अनुवाद का आकाशवाणी से प्रसारण कराया।

उनकी 'कला' शीर्षक पुस्तक अपने आरंभिक रूप में 1936-37 में और अंतिम रूप में 1953 में न केवल अध्ययन एवं गंभीर चिंतन का प्रतिनिधित्व करती है बल्कि हिंदी में इस तरह के अध्ययन का द्वार भी प्रशस्त करती है। प्रस्तावना में उन्होंने लिखा है, ''जिन साधनों का प्रयोजन है, वे मेरे लिए अवश्य ही दुर्लभ हैं फिर भी मैंने यह नयी पुस्तक लिखकर आपके सामने उपस्थित की है...जो रूप मैं इसे देना चाहता था अपनी अक्षमता, व्यस्तता और समयाभाव से संभव न हो सका।'' बावजूद पुस्तक में तीन सौ भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के चार सौ से अधिक उद्धरण केवल संदर्भ के रूप में नहीं, बल्कि सारे अध्ययन आत्मसात करने के बाद ही प्रस्तुत किए गए हैं। प्रथम परिच्छेद में रवींद्रनाथ की रसज्ञता, क्षितिमोहन सेन की अध्ययनशीलता तथा नंदलाल बोस और अवनींद्रनाथ का कला चिंतन प्रतिच्छायित है। 'कला' की परिभाषा करते हुए उन्होंने रवींद्रनाथ की कविता का आशय ही लिख लिख दिया है—''कवि बंद कमरे में सौंदर्य शास्त्र के गुरु गंभीर ग्रथों के अध्ययन में तल्लीन है। उसकी गुत्थियाँ एक पर एक उलझन पैदा करती जाती हैं। जिस सौंदर्य की खोज में यह स्वाध्याय तपस्या चल रही है, वह सौंदर्य और भी अस्पष्ट होता जाता है; कि कवि सहसा खिड़की खोलकर उसके सामने खड़ा हो जाता है। पूर्णिमा की रात। टह टह चाँदनी लावा की तरह फूट रही है। लगता है, पृथ्वी की सारी श्यामतिमा गलित रजत में अनंत पारावार में तिर उठी है। और कवि को लगता है, मैं भी क्या पागल था, ग्रंथों के ढेर में से सौंदर्य का दाना बीनने चला था। अरे! वह तो यहाँ रहा।'' यानी कला के शास्त्रीय विवेचन के समुद्र मंथन से कोई परिणाम नहीं आनेवाला। यदि कुछ रुचता है, तो वही कला है। टॉल्सटाय को उद्धृत करते हुए तिवारी जी ने लिखा है कि पुस्तकों का पहाड़ जमा करके भी यह संभव नहीं हो सका कि कला की कोई निश्चित परिभाषा दी जा सके। तिवारी जी ने क्रोचे के अभिव्यंजनावाद और फ्रायड की त्रुटियों की भी चर्चा की है। उनके अनुसार भारत में कला चिंतन की परंपरा ईसा से 600 वर्ष पूर्व ही शुरू हो गई थी और रहस्य संख्या प्रतीक की तरह स्थिर हो चुकी थी। 'ललित विस्तर' में 86 कलाओं की गणना के साथ 64 काम कलाओं की भी चर्चा है। वात्स्यायन के कामसूत्र में भी पूर्व शास्त्रों के कला चिंतन का उल्लेख है। 'शुक्रनीति प्रबंध कोश' में कलाओं की संख्या के उतार चढ़ाव और चौसठ की संख्या के स्थिर होने की चर्चा है। कला को स्त्री गुण कहा गया है। क्रमशः कला संबंधी चिंतन दर्शन के क्षेत्र में आ जाता है और शैवागमों में छत्तीस तत्त्वों में कला को एक तत्त्व मान लिया जाता है। आलोचक तिवारी जी का अभिमत है कि, ''सारी कलाएँ चाहे वह स्वर या ध्वनि से संबंधित हों, रंग या रेखा से, ईंट पत्थर से, शब्द या वाक्य से, सभी की सभी अपने रूप विधान और आंतरिक सत्य के कारण महत्वपूर्ण होती हैं। इसीलिए विष्णु दिगंबर (संगीत), अवनींद्रनाथ (चित्र) और रवींद्रनाथ (काव्य)-तीनों नमस्य हैं।...लियोनार्दो द विंची ने भी चित्र और मूर्ति दोनों विधाओं में कला की सार्थकता को देखने का प्रयास किया है। जब रवींद्रनाथ टैगोर ताजमहल को काल के गाल पर आँसू की एक बूँद कहता है तो प्रकारांतर से वे काव्यकला और वास्तु कला को एक ही बिंदु पर देखने का प्रस्ताव करते हैं।'' तिवारी जी के अनुसार जब रसों के साथ रंग जुड़ जाते हैं, राग-रागनियों के साथ रूप की कल्पना की जाती है अथवा नटराज मंदिर में 108 आसनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रतिमाएँ बनती हैं तब नृत्य, संगीत, मूर्ति जैसी कलाएँ एक ही बिंदु पर संप्रेषित होती हैं। संगीत का अर्थ ही होता है गायन, वादन और नृत्य। तीनों एक ही हैं। पुस्तक में कला के प्रयोजन पर पूरे एक अध्याय है। लेखक ने अरस्तू, बनार्ड शॉ, क्रोचे, हेगेल, फ्रायड, जुंग, एडलर आदि के मतों का उल्लेख करते हुए कला के प्रयोजन पर विचार किया है। उनकी दृष्टि में कला की जड़ मिट्टी में होती है और फूल आकाश में खिलते हैं, इसलिए यह भाव विलास नहीं जीवन की आत्मीयता है। कला का वास्तविक प्रयोजन आनंद है। नाद, आह्लाद और निवृत्ति जैसे शब्दों के माध्यम से 'ध्वन्यालोक', 'रसगंगाधर' और 'काव्य प्रकाश' में कला के प्रयोजन की चर्चा है। अंग्रेजी में प्लेजर, ज्वाय, डिलाइट, हैप्पीनेस आदि के द्वारा कला के प्रयोजन की अभिव्यक्ति होती है। मैथ्यु आर्नोल्ड, महात्मा गाँधी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और प्रेमचंद इत्यादि कला का उद्देश्य लोकहित मानते हैं। रिचर्ड तो कविता को ही कविता का लक्ष्य मानते हैं। आनंदवर्धन, मम्मट, अप्पय दीक्षित, कवि सेनापति, तुलसीदास आदि के माध्यम से लेखक यह बताना चाहते हैं कि प्रत्येक कला अपने अपने ढंग से एक ही लक्ष्य का संधान करती है। अंत में लेखक का निष्कर्ष है कि कला स्वयं में ही परिणाम है, किसी उद्देश्य से सम्बद्ध होना उसके लिए अनिवार्य नहीं है।

उनकी दूसरी महत्वपूर्ण कृति 'साहित्यायन' का दूसरा संस्करण 1954 में आया। इस पुस्तक में संग्रहीत 'साहित्य में मैं', 'साहित्य शक्ति का अपव्यय', 'साहित्य और सहज भाषा', 'साहित्य का व्यावसायिक दृष्टिकोण', 'साहित्य विचार', 'साहित्य की समस्याएँ', 'साहित्य का ज्ञानयोग' इत्यादि सभी गंभीर निबंध मनन करने के योग्य हैं और इनकी तुलना आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'साहित्य का मर्म' से की जा सकती है। 'साहित्य में मैं' शीर्षक निबंध में उन्होंने बताया कि मैं का अर्थ व्यक्ति होता है और व्यक्ति का अर्थ विशिष्ट अभिव्यक्ति होता है। उनके अनुसार यदि रचनाकार का आत्मभाव पाठक पर हो और पाठक भी यदि दूसरों के साथ ऐसा अनुभव करे तो यह रचनाकार के उद्देश्य की सफलता है यानी लेखक का व्यक्तित्व रचना की आत्मा है। रामायण की भावभूमि सर्वमानव सुलभ है लेकिन वाल्मीकि का व्यक्तित्व उन पाँतियों में सवाक है। प्रश्न है कि तिवारी जी ने व्यक्तिवाद को क्यों इतना महत्व दिया? इसलिए कि उन दिनों साहित्य में समाजवादी मार्क्सवादी साहित्य की चर्चा थी और व्यक्तिवाद की चर्चा करना अप्रासंगिक था लेकिन उन्होंने बिना किसी शिविर-संगठन के ही मार्क्सवादी मूल्यों का प्रत्याख्यान किया।

यद्यपि तिवारी जी एक गंभीर अध्येता, सफल आलोचक एवं सिद्धहस्त अनुवादक थे बावजूद वे अनवरत कवि ही बना रहना चाहते थे। वे प्रयोगवाद और प्रगतिवाद के परे उत्तर छायावाद के सपनों के रचयिता थे, छायावाद में पुनः पुनः वर्णित चाँद तारे, नदियाँ, लहरें, स्त्री रूप की रम्यता के विस्तार में उनकी कविताएँ बनती रहती थीं। कवि सम्मेलनी थे लेकिन अपने समय की भाषा भी नहीं चीन्ह सके थे। फिर भी कवि बनने में उन्हें सुख मिलता था। वह समय प्रयोग और क्रांति का था लेकिन वे 'रिमझिम', 'अनागत', नवीना', 'आग पिये मोम की मूरत' जैसी रोमानी रंग की मध्यम रुचि की कविताएँ ही लिख पाए। वे रवींद्रनाथ के रचना कानन में ही खोये रहे। काजी नजरुल इस्लाम, जीवनानंद दास तक भी नहीं उतर पाए। जब पूरा बंगाल 'सोनार माटी' के स्वप्न से निकलकर मार्क्सवादी बिगुल बजा रहा था तब वे बाउलों की मस्ती और चंडीदास की राधा की नूपुर ध्वनि को स्मरण कर रहे थे। दरअसल आकाशवाणी के कार्यक्रमों के लिए वे इतने अनिवार्य हो गए थे कि उन्हें लगता था कि कविता और साहित्य के लिए लोकरंजक आधार ही महान बनने का राजमार्ग है।

परंतु तिवारी जी कवि के रूप में शब्द चयन और गेयता के लिए सदैव याद किए जाएँगे। 'अनागत' संग्रह की 'विवृति', 'प्रतीति', 'प्रतिभाषित', 'प्रतिवाद', 'प्रतिदान', 'प्रदर्शन', 'परिभाषा', 'लालसा', 'स्वीकार', 'स्वरूप', 'सामीप्य', 'अन्वेषण', 'असमंजस', 'आपत्ति', 'जाने के बाद', 'जाने के पहले', 'मेहमान' इत्यादि सभी कविताएँ गीत के अनुबंध में लिखी हुई हैं। महादेवी वर्मा, नरेंद्र शर्मा, गोपाल सिंह नेपाली एवं बच्चन की कविताओं के साथ इनकी तुलना की जा सकती है। लेकिन जब वे 'मेरा घर' कविता लिखते हैं तो संपूर्ण ग्राम्य जीवन मुखरित हो उठता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। इसमें ग्राम्य जीवन का अभाव, आँसू-पसीना के बीच आत्म विश्वास का उजास, पारिवारिक संबंधों की ऊष्मा इत्यादि आत्मीय अनुभूतियों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। उनकी कविताओं का दूसरा पड़ाव है 'आग पिये मोम की मूरत' शीर्षक संग्रह का प्रकाशन। बत्तीस कविताओं के इस संग्रह में वे भावुक विह्वलता के केंचुल को उतार फेंकते हैं। इनमें गेयता से अधिक वाचन और भाषण हैं। यहाँ कवि जीवन की सच्चाइयों से साक्षात्कार करते हुए अपने समय से संवाद करना चाहते हैं लेकिन अपनी छायावादी रुचियों और संस्कार के कारण वे उत्तर छायावाद के नवोदित कवि नहीं बन सके। अब कविता गद्यमुखी हो चुकी थी और वे समय के नब्ज को पकड़ नहीं सके। अपने समकालीनों मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नरेश मेहता आदि की रचनाओं को शायद पढ़ा भी हो लेकिन वे रवींद्रनाथ, शरतचंद्र आदि की जुगलबंदी में ही उलझे रहे। शायद वे बाँग्ला साहित्य को ही श्रेष्ठ मानते रहे परंतु उन्हीं दिनों तो बाँग्ला में मलय राय चौधरी आदि भूखी पीढ़ी की कविताएँ लिख रहे थे। अतएव वे अपने समय के समकालीन कवि नहीं थे, पुराने कवि हो चुके थे, हाँ! आकाशवाणी के दिल्ली, बंबई, जयपुर, जम्मू, पूना, पटना, कलकत्ता, सभी केंद्रों पर कवि सम्मेलन अवश्य सँभाल रहे थे।

जहाँ तक तिवारी जी के कथा साहित्य के आकलन की बात है, उनका अनुवाद साहित्य इस बात का प्रमाण है कि वे कथा-तत्व, कथा-प्रवाह, प्रसंग, संवाद, चरित्र, दृष्टि को समझने में दक्ष थे, मूल रचनाकार की अंत:प्रेरणा को भी समझते थे। उनके द्वारा किए गए शरत्चंद्र, ताराशंकर, विमल मित्र आदि कथाकारों की रचनाओं का अनुवाद उनकी कहानी कला और भाषा क्षमता का बोध कराता है। उनके 'समानांतर' संग्रह की 'मोह का बंधन', 'आखिरी दिन', 'अनिश्चित', 'रूपांतर', 'बारिस हो रही थी', 'चिरंतन' आदि कहानियों की प्रभावित करने की क्षमता और साहित्यिक महत्ता असंदिग्ध है। लेकिन उन्होंने अपने कथाकार व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास अनुवादों में लगा दिया। उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषदों आदि प्राचीन ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया था और इन्हीं कथा प्रसंगों एवं मिथकों को आधार बनाकर पाँच एकांकियों के संग्रह 'धारा और किनारा' का निर्माण किया। इसमें संग्रहीत पाँच एकांकियों के नाम हैं-'अमृत और आँसू', 'दूब की मंजरी', 'टूटा धागा; बिखरे फूल', 'पीछा करती हुई पुकार' तथा 'धारा और किनारा'। यदि प्राचीन पुरा कथाओं का ज्ञान न हो तो ये नाटक समझ से परे जान पड़ेंगे। अभिनेयता इनमें नहीं है। ये पुरा कथा पाठकों के लिए लिखे गए हैं। नाटकों के संवाद प्राय: सांकेतिक और अमूर्त हैं। बावजूद इनमें कथा प्रवाह, चिंतना, तर्क शक्ति एवं उद्दीपन उपस्थित हैं। 'आधीरात का सबेरा' में चार एकांकियाँ—'अंधकार', 'ढलती किरण', 'अंतिम अध्याय', तथा 'आधी रात का सबेरा' संग्रहीत हैं। 'धारा और किनारा' के विपरीत ये एकांकियाँ पुरा मिथकीय नहीं हैं। दहेज समस्या, स्त्री की शुचिता, स्त्री बलिदान एवं स्त्री शोषण से संबंधित ये एकांकियाँ स्त्रीवादी, मानवतावादी एवं कलावादी सिद्ध होती हैं।

तिवारी जी ने अनुवाद में उन्हीं रचनाओं को लिया जो वृहत्तर भारत से संदर्भित होती हों। गीतांजलि के अनुवाद के पीछे विराट भारतीयता और सब के प्रति ईश्वर की कल्पना है। 'गीतांजलि' के गीत भारतीय ब्रह्मवाद की भक्तिपरक व्याख्या हैं। इसमें बाउलों की मस्ती है। कबीर का अनहद भी है। कृष्ण भक्तों के परम-पुरूषोत्तम भाव भी है। सूफ़ियों का स्वरूप भी है। यह ईसाई धर्म की परमपिता की परिकल्पना से भी संबंधित है। इसीलिए तिवारी जी ने गीतांजलि को उसकी संपूर्ण अर्थवत्ता, गेयता, छंद, तुक, गति, यति के साथ मूल ध्वनि में अनूदित करने का प्रयास किया। गीत संख्या 18 द्रष्टव्य है-'यहाँ आर्यगण और अनार्यगण/यहाँ द्राबिड़ी चीन,/हूण, मुगल, शक, पाठानी दल/एक देह से लीन/पच्छिम ने खोला दरवाजा/ले उपहार रहे सब आ जा/ले दे मिलके यहीं रहेंगे बना इसे घर/इस भारत के महामनुज के सागर तट पर।' इसी क्रम में गीत संख्या 14 भी-'अखिल भुवन में माथा तुझे नवाऊँ/सब जीवन-कर्मों में शीश झुकाऊँ/तन मन धन सब आज निछावर कर दूँ/भक्ति-धूप पावन पूजन-अर्चन में।' स्पष्ट है कि महामनुज का सागर कहना, आर्य-अनार्य, द्रविड़, हूण, मुगल, शक, पठानी सब को एक देह मानना विराट भरतीयता है। यह जाति और धर्म की सीमाओं का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतिक्रमण करती है। इसी तरह सब के लिए एक ईश्वर, सब के लिए एक देश की बात कहना विराट चिंतन है।

जिन दिनों तिवारी जी बाँग्ला साहित्य का अनुवाद कर रह थे उन दिनों हिंदी और बाँग्ला दोनों भाषाओं में मार्क्सवादी साहित्य की धूम थी परंतु सनातन मूल्यों एवं भारतीयता के पक्षधर होने के कारण उन्हें मार्क्सवादी साहित्य नहीं रुचा। उन्होंने उन्हीं बाँग्ला गद्य पुस्तकों का अनुवाद किया जो वृहत्तर हिंदी पाठक समुदाय की रुचि और साहित्यिक चिंतना के लिए आवश्यक हैं। उनके द्वारा अनूदित साहित्य की सूची इसी तथ्य की पुष्टि करती है-रवींद्रनाथ-गीतांजलि, रवींद्र की कविता, चित्रांगदा (नाटक), आँख की किरकिरी (उपन्यास), साहित्य के पथ पर (निबंध), रक्तकर्वी (नाटक,), चांडालिका, ताशेर देश, श्यामा (नृत्य नाटक); शरतचंद्र-देवदास, बड़ी दीदी, पल्ली समाज, दत्ता, गृहदाह, श्रीकान्त (चार भाग); विमल मित्र-साहब बीबी और गुलाम, दायरे के बाहर, हाजिर मुजरिम, योग-वियोग; बंकिमचंद्र-बंकिम रचनावली। उन्होंने ताराशंकर बंद्योपाध्याय की बीस रचनाओं का अनुवाद किया। उन्होंने आशापूर्णा देवी, निमाई भट्टाचार्य एवं प्रेमेन्द्र मित्र के कई कई उपन्यासों का अनुवाद किया। आशापूर्णा देवी के 'प्रथम प्रतिश्रुति' (उपन्यास) का अनुवाद उन्होंने 1972 में किया था। इस अनुवाद के कारण ही आशापूर्णा हिंदी की सम्माननीय लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। तिवारी जी के अनुवाद में मूल कृति का पूरा सौंदर्य उद्भासित हो उठता है। तिवारी जी की यह कला प्रशंसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। सन् 1980 के 24 सितंबर को अठहत्तर वर्ष की उम्र में हिंदी साहित्य का यह साधक चिर निद्रा में सो गया।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य भंडार को अपनी रचनाओं से सुपुष्ट करते हुए उन्होंने बिहार में हिंदी को प्रतिष्ठित किया। सैद्धांतिक समीक्षा के क्षेत्र में वे एक प्रमुख हस्ताक्षर थे। लेकिन उन्होंने प्रथम कर्म के रूप में अनुवाद को लिया और मूलभाषा में अनुस्यूत कथ्य को यथावत रखते हुए विलक्षण अनुवाद कला का परिचय दिया। उन्होंने अच्छी कविताएँ भी लिखी और कविता के संगीत पक्ष को अपने शब्दकर्म से सँवारा भी; लेकिन कविता तब तक गद्यमुखी हो चुकी थी। गया में 'मानसरोवर' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना की और गया देवतीर्थ के साथ साहित्य तीर्थ भी बन गया। उन्होंने कथा साहित्य, यात्रा साहित्य, लोक कथा एवं साहित्येतिहास का आलेखन किया लेकिन कला चिंतक के बाद उनका नाटककार का व्यक्तित्व सबसे बड़ा है। 'धारा और किनारा' में उन्होंने स्त्री-विमर्श के अतिआधुनिक मूल्यों को प्राचीन भारत की पुरा-कथाओं में ढूँढ़ लिया। यह शरतचंद्र के स्त्री-चिंतन जैसा ही महत्वपूर्ण कार्य है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह आम का पेड़!

हरसिंह मनराल

[दरमोली 'अल्मोड़ा' में प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा में पले-बढ़े श्री हरसिंह मनराल अपने इस लेख में अपने संस्मरणों को साझा करते हैं—संपादक]

देवभूमि (उत्तराखण्ड) में 'राम-गंगा' के निकट, पहाड़ियों के मध्य में बसे, मेरे गाँव के घर के नजदीक सब्जी के बाड़े में, हमारा आम का एक बहुत बड़ा पेड़ था। जिसकी ऊँचाई तकरीबन दस मंजिला इमारत के बराबर थी। जिस कारण उस पेड़ के कच्चे व पके हुए आम हमारे घर के आंगन के अतिरिक्त अन्य चार घरों के आंगन में भी गिरा ही करते थे। तीस बत्तीस परिवार के नन्हें से गाँव के एक तिहाई गाँव वालों को वह फ़सल के समय अकेला ही आपूर्ति किया करता था। यूँ तो गाँव में अन्य कई आम के पेड़ भी थे, जो अपने स्वाद तथा पूर्वजो के नाम से प्रसिद्ध थे। वह पेड़ मेरे परदादा के बुढ़ापे की अवस्था के समय लगाया गया था। अपनी लंबी सेवा के कारण ही वह पेड़ 'बुढडौ' के नाम से प्रसिद्ध रहा। यूँ तो मुश्किल से मुश्किल पेड़ों पर चढ़ कर आम तोड़ना गाँव वालों के लिए मुश्किल काम न था, पर, उस पेड़ की ऊंचाई तक चढ़ने की कोशिश कोई नहीं करता था, उस पेड़ में 'कौव्वे' व 'चील' के घोंसले के अतिरिक्त मधुमखियों व जहरीले 'झिमूड़' का छत्ता भी था। स्वयं मैं भी उसमे टहनियों के आधे रास्ते तक गया था। पिताजी बताते थे कि सन् 1960 के दशक में, गाँवों में हैजे जैसी संक्रामक बीमारी फैल गयी थी। नजदीक में डाक्टरों व दवाओं का साधन उपलब्ध नहीं होने के कारण हर गाँव में मातम-सा पसरा हुआ था। तकरीबन हर गाँव के चार-पाँच बुजुर्गों को काल ने अपना ग्रास बनाया था जिसमें मेरा घर भी अनछुवा नहीं रहा, जिसके चलते रोग की चपेट से बचने के लिए पिताजी ने एक सप्ताह तक दिन-रात उसी पेड़ पर एक कम्बल लेकर समय बिताया था। और खाना-पानी रस्सियों के सहारे पेड़ में भेजा जाता था।

एक प्रसंग मछली का भी है। वह कुछ इस प्रकार है कि गाँव से तकरीबन दो मील उतराई पर बहती 'राम गंगा नदी' से चील तकरीबन एक किलो के करीब ज़िंदा मच्छी पकड़ कर अपने बच्चों के लिए लाती। जब कभी हम चील को मच्छी लाते देख लेते तो, उसके घोंसले की ओर पत्थर फेंक कर, शोर मचाकर, उसको डराते जिससे कभी-कभी मच्छी नीचे हमारे 'बाड़े' में गिर जाती, तकरीबन तीन बार ऐसा हुआ, जिससे हमने उस पेड़ से ताजा मच्छी खाई। इसके अतिरिक्त हम बाड़े में पेड़ के इर्द-गिर्द गोलाईदार क्यारियाँ बना कर बेलदार सब्जियों के बीज जैसे—खीरा, तोरी, लौकी व करेले के बीज़ रोपते। अंकुरित बीज़ बेल बनने पर झाड़-झंखाड़ के सहारे तीव्रगति से उस पेड़ को अपना सहारा चुनते, जिस कारण उस पेड़ से तोरी, खीरा, लौकी, करेले, सब्जी के रूप में, हम हर वर्ष खाया व बाँटा करते थे। कुछ सागफल तो पेड़ की इतनी ऊँचाई पर जा कर लगते जिन्हें तोड़ पाना संभव नहीं होता और वह वर्ष भर सूखे की हालत में हवा चलने पर यूँ ही झूलते रहते। एक बार ऐसा भी हुआ जब तेज आँधी-तूफान में मधुमक्खियों के छत्ते का एक भाग नीचे गिर गया जिसमें शहद था, पिताजी इतना प्रसन्न हुये, मानो पेड़ से शहद नहीं, अमृत वर्षा हो। अब आम का वह पेड़ तो रहा नहीं, किन्तु पास में पहाड़ो के बीच बहती राम गंगा की हाल ही में मेरे द्वारा खीची गयी तस्वीर प्रस्तुत है, जो मन में कहीं न कहीं धरती पर स्वर्ग की एक अनुभूति पैदा करती है। यूँ भी तो उस राम गंगा ने करीबी ग्रामीण निवासी किसानों के लिए मछली पालन के रूप में एक साग की बाड़ी के रूप में अपना योगदान बखूबी दिया और आज भी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

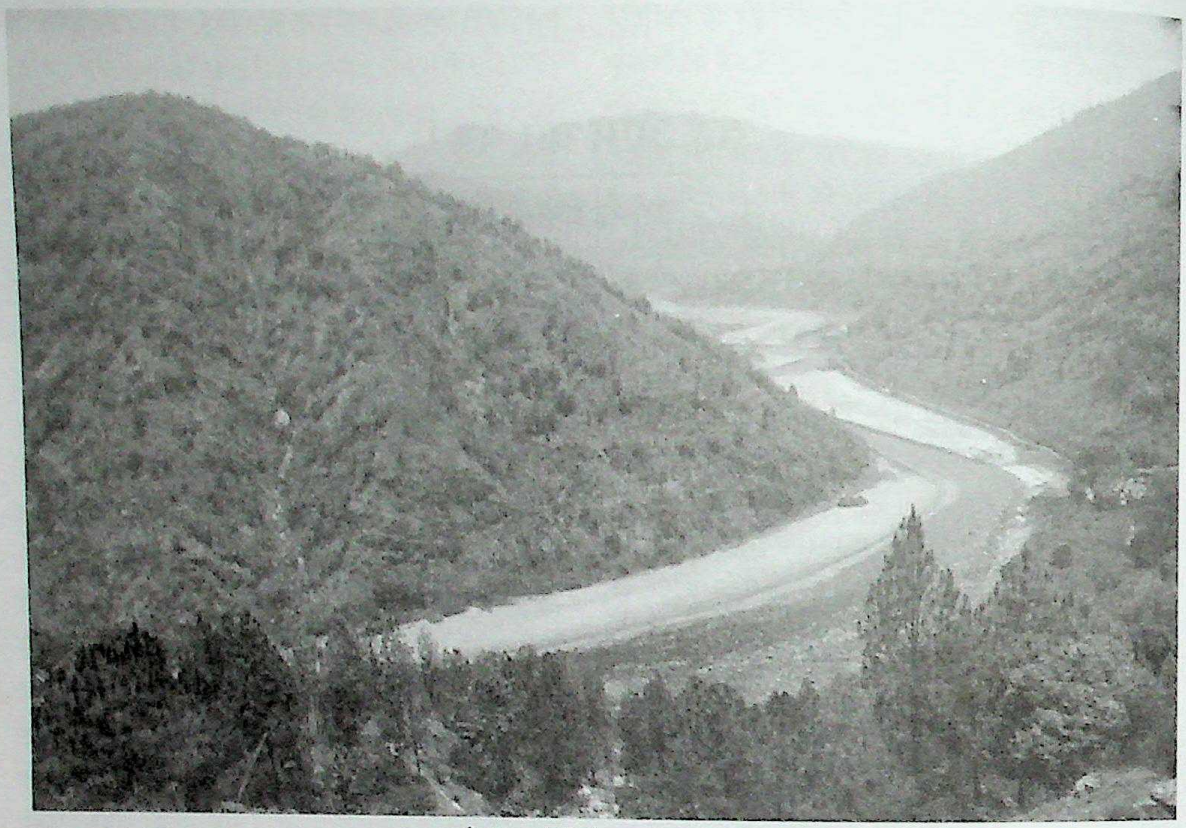

गाँव व पहाड़ो के बीच बहती रामगंगा

यूँ तो अभी तक वह पेड़ अपनी सेवाएँ देने में सामर्थ्य रखता था किन्तु उस पेड़ की बीस फुट ऊँचाई पर उसके मध्य मे एक 'खोका' था जो उसकी उम्र के साथ बढ़ता ही गया। अपने आखिरी दिनों में उसमें तकरीबन दो-चार सौ लीटर बरसाती जल जमा हो जाता था, जिससे उस पेड़ की उम्र और भी घटती गई। और न ही पेड़ के उस भाग की लकड़ी कोई काम की रही। माँ बापू को हमेशा यही डर लगा रहता, कहीं तेज आधी तूफान में इसकी कोई टहनी हमारे घर पर न गिर पड़े। धीरे-धीरे उसकी टहनियॉ तेज आँधी-तूफान में गिरती रही किन्तु घर को कभी कोई नुकसान नही पहुँचा।

एक बरस की बात है, जब मेरी उम्र दस-बारह वर्ष की थी, मैंने उस पेड़ पर जमीन से बीस फुट ऊँचे आयताकार 'खोखे' पर थैलों व रस्सियों के सहारे मिट्टी भरकर पेड़ पर ही 'क्यारी' बना डाली। और उसमें सागफल के बीज़ रोप दिये, और समय-समय पर खाद-पानी देता रहा। उनके अंकुरित होने पर, छिपकलियों से बचाने के लिए कँटीली झाड़ियों से उन्हें ढंकता रहा, लतायें बनने पर उन्हें झाड़-झँखाड़ के सहारे नीचे बाड़े की ओर दिशा निर्देशित करता, जिसमें मैं फल उगाने में सफल रहा। और हमने पेड़ पर उगे सागफल को बाड़े से तोड़कर कर्मफल प्राप्त किया। मैंने उस पूर्वज सरीखे पेड़ को तब तक एक बूढ़े के रूप में देखा जब तक मेरे ही हाथों उस आम के पेड़ की जर्जर शाखाओं ने मेरे परिवार के सभी भाई बहनों के विवाह समारोह से लेकर, अपने मां बापू की अंतिम यात्रा की क्रिया तक ईंधन के रूप में योगदान देकर हवन के रूप में अंतिम फल दिया। क्या नही दिया उस पेड़ ने हमें! आम-तोरी-खीरा-लौकी-शहद-मछली-पशुचारा-ईंधन-छाँव और न जाने क्या-क्या! जिससे इस बात की अनुभूति आज भी होती है कि जरूर वह वृक्ष हमारे किसी पूर्वज का जीवन रहा होगा। इसलिए जब तक मेरा जीवन रहेगा वह पेड़ मेरी नज़र में अमर ही रहेगा। इस संस्मरण का प्रकाशन होना तो मेरे लिए उसका पुर्नजन्म व अमरता का एक बरदान स्वरूप है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक और कथ्य उस पेड़ की जड़ से जुड़ा है, जिसमें एक काला नाग बसा करता था, जिसे कई बार मेरे परिवार व स्वयं मेरे द्वारा उस नाग को बाड़े के इर्द-गिर्द सरकते व लुप्त होते देखा गया। यूँ तो गाँव में खेतीहर किसानों द्वारा घर-बाहर, खेतों जंगलों में कई प्रजाति के सर्प देखे जाते हैं। जो कई बार गाँव वालों के लिए प्राण घातक भी हुई, यही कारण है कि साँप को देखते ही हर कोई उसे मारने के लिए आतुर रहता। बहुतेरे साँप मारे भी जाते किन्तु पिताजी ने अपने जीवन में कोई भी साँप नहीं मारा। उसका एक कारण यह भी रहा, कि वह सर्प के काटे का 'लख' (मंत्र) जानते थे जिससे उन्होंने कई मनुष्यों व पालतू पक्षुओं की जान बचायी। यही कारण था कि वे सर्प को देखने पर उसे मारते नही भगा देते थे। इसी कारण निवासी ग्रामीणों ने पिताजी का उर्फ नाम, 'नाग' रख दिया।

आज भी मैं अपने अंतरमन से जब अपने बचपन में झाँकता हूँ तो, उस आम के पेड़ को बौराते-फलते देख पाता हूँ। और उसमें सैकड़ों 'सुवा' के झुण्ड को भी, जो आम के झुक्कों पर बैठते, चौच मारते, चिर-चिराते। डाल पर आम के पकने के समय बच्चे पेड़ की ओर देखकर ध्वनिमय रूप से यह गीत गाते—*ए सू ए बीं आम, कौवा लद्धोड़िम ड्याम।* अर्थात सुवा एक दाना आम गिरा दे, कौवा तो गंदा, है। तब बच्चे यही सोचते थे कि सुवा ने हमारी बात सुन कर पका आम हमारे लिए गिराया है, लेकिन जब बड़े हो गये तो यही समझे कि, जब सुवा आम के गुच्छे पर बैठ कर चोंच मारता तो उस गुच्छे के कुछ ज्यादा पके आम गुच्छा हिलने से गिर जाते हैं, साँझ को आती वह 'पवन' भी जैसे बच्चों के आदेश पर ही चला करती हो! तब डाल के पके हुए आमों को झरने के लिए तेज पवन की आवश्यकता हुआ करती, बच्चे डाल के पके आमों का रसास्वादन के उत्सुकता हेतु पवन को ठग कर, जोर-जोर से सामूहिक-स्वर में गीत गाते—*आ..रे पवना आ-आ, तेरी माँ स्यॉपल चटकै है।* अर्थात पवन जल्दी आ तेरी माँ को साँप ने काट लिया है। तब पवन का एक तेज झोका दूर से पेड़ों से टकराकर सरसराता हुआ चला आता, कुछ पके आम गिरा कर चला जाता। बच्चे पवन के चलते ही झरते हुए पके आमों को टीपने के लिए पहले से ही सचेत हो जाते, तब बच्चे यही समझते थे की पवन की भी माँ होती है, जैसे हमारी माँ होती है। बड़े होकर जाना कि पवन की माँ तो नहीं होती पवन खुद ही सबकी माँ होती है। समय कितना अंतर समझा देता है आज और कल का! हर किसी के जीवन में। मैं दूर झरते, आमों को भाग-भाग कर टीपने में बहुत फुर्तीला था, अन्य बच्चों के समूह के बीच में गिरने वाले पके आम को टीपने में और भी अधिक फुर्तीला, तब मुझे इस बात का तरस उन पर बिलकुल नही आता था कि, उनके पास कम आम हैं और मेरे पास ज्यादा; बल्कि एक फक्र रहता, शायद उन कम फुर्तीले बच्चों के लिए एक शिक्षा के रूप में कि—गति में ही मति है, मति में है बल, इस बल के संग बढ़ता चल, होगा जीवन तेरा धन्य! और आज जब मैंने उसी फुर्ती को अपने कार्यालयी जीवन में उतारा तो कर्म-विधाता ने मेरे लिए फल का एक ऐसा टोकरा रख दिया जिससे नाना प्रकार के फलों का रसास्वादन लिया जा सके।

वृक्षों का महत्व व संबंध संपूर्ण सृष्टि से तो जुड़ा ही है। मानव जीवन के लिए फलों, औषधि, व वातावरण, समन्वय के रूप से मुख्यत: जुड़ा ही है। जिसको समझने में आज का मानव असमर्थ दिखाई पड़ रहा है। जबकि—आम, अमरूद, अनार, आँवला, केला जैसे औषधिमय फल, इन सब फलों की उत्पत्ति जंगलों से ही तो हुई, अर्थात 'जंगली फल' स्वयं मानव की उत्पत्ति भी जंगलों से ही हुई। इन सब बातों को आज का मानव भूलता ही जा रहा है, जिस कारण वह जंगलों को काटता जा रहा है, आज इनके सार्थकता को समझकर इनके संरक्षण के बारे में सोचना चाहिए। क्योंकि कल तो कभी आता ही नही है!

जैसे—'करेला' कड़वाहट के साथ-साथ औषधि गुण, व स्वादिष्ट व्यंजन की भूमिका भी निभाता ही है, उसी प्रकार 'रीठे' को औषधि रूप में तो स्वीकार किया ही जाता है, किन्तु व्यंजन के रूप मे कभी नही! शायद ही हर व्यक्ति जानता हो कि इसके काली गुठली के गर्भ मे पल रहे मोती समान स्वेत गूँदा भी, खीर में खाने के लिए मखाने के रूप में उभरता है। ठीक उसी प्रकार जैसे नारियल का वृक्ष भी अपने फल के अंदर जल, भोजन, औषधि के गुंण छुपाये रखता हैं सच में! कितने हमसफर है वृक्ष मानव जीवन के, जो बचपन से जाने जाते हैं, और अंत तक साथ निभाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकोत्सव : देशज

सुरेन्द्रसिंह रावत

*[संगीत नाटक अकादेमी देश के अनेक हिस्सों में **देशज** कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। अकादेमी का उद्देश्य है कि **देशज** में भारत की लोक एवं पारंपरिक उत्सवों को उजागर किया जाए व नयी पीढ़ी भी अपनी इस लोक संस्कृति से परिचित होती रहे। इसी शृंखला में संगीत नाटक अकादेमी ने उसे मार्च 2016 में देशज कार्यक्रम का आयोजन दरभंगा में किया। अकादेमी स्टाफ के सदस्य श्री सुरेन्द्र सिंह रावत ने इस उत्सव की झांकी तैयार कर भेजी है—संपादक]*

'देशज' विविधता में एकता का सूत्र भी है। इसके माध्यम से देश की विविध लोक एवं पारम्परिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को एक मंच पर लाना अकादेमी का मुख्य उद्देश्य है। इसके कई लाभ हैं, प्रथम तो यही कि इससे स्थानीय स्तर पर अपनी कलाओं के प्रति लोगों में उत्सुकता एवं जागरुकता पैदा होती है और द्वितीय यह कि वे देश के विविध क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशिष्टताओं से परिचय भी प्राप्त करते है।

देशज के माध्यम से भारतीय लोक संगीत, नृत्य एवं नाट्य से जनसाधारण, खास तौर से युवा पीढ़ी को रू-ब-रू होने का एक बेहतरीन मौका मिलता है और इस तरह भारतीय कलाओं के लोकपक्ष के प्रति एक सकारात्मक और रचनात्मक समझ विकसित होती है। 'देशज' का पहला और दूसरा आयोजन क्रमशः फरवरी 2013 एवं 2014 में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सहयोग से विश्व पुस्तक मेला (दिल्ली) में आयोजित किया गया था। इसी सरणि में इस सांस्कृतिक मिथिला नगरी में भारत की विविध लोक एवं पारंपरिक अभिव्यक्तियों के लोकोत्सव : *देशज* का आयोजन 3-5 मार्च 2016 को केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली एवं ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के संयुक्त तत्त्वावधान में हुआ। दरभंगा में आयोजित यह *देशज* कार्यक्रम मिथिलांचल की लोक परम्पराओं पर केन्द्रित रहा तथा इसमें देश के अन्य भागों से भी लोक कलाकारों के दल को आमंत्रित किया गया।

दरभंगा अपने गौरवशाली अतीत अद्वितीय सांस्कृतिक और बौद्धिक परम्पराओं से मिथिला संस्कृति का केंद्र बिंदु रहा है। मिथिला पेंटिंग, ध्रुपद गायन की गया शैली और संस्कृत के विद्वानों ने इस क्षेत्र को दुनिया भर में खास पहचान दी है। यहाँ की प्रसिद्ध लोक कलाओं में सुजनी (कपड़े की कई तहों पर रंगीन धागों से डिजाईन बनाना), सिक्की (खर एवं घास से बनाई गई कलात्मक डिजाईन वाली उपयोगी वस्तु) तथा लकड़ी पर नक्काशी का काम शामिल है। *सामा चकेवा एवं झिझिया* दरभंगा का लोक नृत्य है। यहाँ के लोगों के खान-पान एवं विद्या प्रेम पर मैथिली में प्रचलित एक कहावत दरभंगा की संस्कृति को अच्छी तरह बयान करता है :

पग-पग पोखर, पान मखान
सरस बोल, मुस्की मुस्कान
विद्या-वैभव शांति प्रतीक
ललित नगर दरभंगा थिक

इसी ललित नगर दरभंगा की भूमि पर देशज कार्यक्रम का उदघाटन श्री मैथिली पुत्र प्रदीप, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा के कुलपति प्रोफेसर साकेत कुशवाहा, विश्वविद्यालय संगीत एवं नाट्य विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की विभागाध्यक्ष डा. पुष्पम नारायण तथा केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली के उपसचिव (नाटक) सुमन कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस कार्यक्रम का आयोजन ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के प्रांगण में हुआ।

देशज उत्सव के तीनों दिन प्रतिदिन प्रारम्भ में प्रातः लगभग सुबह 10 बजे से (प्रथम सत्र) तथा अपराह्न 3 बजे से (द्वितीय सत्र) में कार्यक्रम स्थल पर आवाहन संगीत-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रसन चौकी वादन का प्रदर्शन होता रहा। आपको बताते चले कि प्राचीन काल से ही मिथिला कला, साहित्य व संस्कृति का प्रमुख केंद्र होने के साथ ही प्राचीन लोक सांस्कृतिक परम्पराओं का मुख्य पोषक भी रहा है। रामायण में उल्लेखित है कि सीता जब पृथ्वी से प्रगट हुई थी तो वातावरण में विशेष प्रकार का वाद्य गुंजायमान हुआ था। लोक मान्यता है कि मिथिला के धरती पर सीता के प्रकट होने पर देवताओं, ऋषि-मुनियों, गंधर्व आदि द्वारा बजाया जानेवाला वाद्य रसनचौकी था। प्राप्त प्रमाणों के अनुसार कई विद्वानों द्वारा किए गए शोध भी इसकी पुष्टि करते हैं। सीता के जन्म से शुरू हुई यह परंपरा आज भी मिथिला के समाज में पायी जाती है। रसनचौकी वादन के बिना अनुष्ठानिक कार्य सम्पूर्ण नहीं माना जाता है। इसे मिथिला में आवाहन वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। कालांतर में इसके कई रूप हुए हैं। मिथिला में पाया जानेवाला ढोल-पीपही वाद्य भी रसनचौकी का ही एक रूप है। कर्मगत जाति-व्यवस्था पर आधारित प्राचीन सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाने में रसनचौकी के योगदान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता है। इस वाद्य के वादन का अपना अलग वैज्ञानिक प्रभाव है।

देशज उत्सव के प्रथम दिन यानि 3 मार्च 2016 को प्रातकालीन सत्र का आरंभ मधुबनी, बिहार से आए श्री राधा मोहन मिश्रा व दल ने विद्यापति संगीत से की। विद्यापति संगीत परंपरा चौदहवीं सदी के पूर्वी भारत के महाकवि विद्यापति द्वारा रचित प्रेम व भक्ति के गीतों पर आधारित है। विद्यापति भारतीय साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख स्तंभो में से एक हैं। इस कार्यक्रम के पश्चात सलहेस की एक अनुष्ठानिक प्रस्तुति हुई। यह उत्तर बिहार के मिथिला क्षेत्र का प्रमुख सामाजिक उत्सव है। इस उत्सव का प्रदर्शन मधुबनी, बिहार से आए श्री यदुवीर यादव व दल ने किया। प्रथम दिन के द्वितीय सत्र का आरंभ *कारुख महराय* से हुआ। यहाँ यह बताना समीचीन होगा कि मैथिली लोकगाथा के मध्य *कारुख महराय* अपने महत्त्वपूर्ण गायन शैली के रूप विख्यात है, इस लोकगाथा मे जन साधारण की रागात्मक भावना, ग्रामीण और शोषित जनता के सुख-दुख उनके उदात्त विचार कोमल कल्पना और अदम्य साहस की सहज अभिव्यक्ति हुई है। इसका प्रदर्शन लक्ष्मी पासवान व दल ने किया। इसके पश्चात महेंद्र कुमार व दल, मधेपुरा, बिहार ने *नारदी गायन* से किया। नारदी गायन शैली परंपरागत मान्यतानुसार द्वापर युग से प्रारम्भ हुआ। नारदी भक्तिपरक नृत्य गान हैं। इसमें राधा-कृष्ण विषयक रासगीत, गीत गोविंद की पदावली, विद्यापति रचित रासगीत तथा पार्वती से जुड़े हुए प्रसंग गाये जाते है। गाने के साथ कभी-कभी अंग चालन और पदचाप नृत्य का आभास कराता है। कभी-कभी राधा कृष्ण का वेश धारण कर भावाभिनय की भी प्रस्तुति होती है। नारदी बोल प्रधान नहीं स्वर प्रधान विधा है।

दिल्ली के श्रीहरि व दल ने *महेशवानी नचारी* का प्रदर्शन किया। पटना के रविभूषण कुमार व दल ने *झरनी* का प्रदर्शन किया। *घियात हो झरनी* एक सामूहिक नृत्य शैली है। सामान्यत: मिथिलांचल और भोजपुर मे मुसलमानों के द्वारा मुहर्रम के समय यह नृत्य किया जाता है। वास्तव में यह एक शोक की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इस प्रस्तुति मे सिर्फ पुरुष ही भाग लेते है।

देशज कार्यक्रम में अजीत कुमार व दल ने भोजपुरी लोक व पारंपरिक गीत का प्रदर्शन किया। छतीसगढ़ से आमंत्रित रेखा देवार व दल ने *चदैनी* का प्रदर्शन किया। जिसमें *लोरिक चंदा* की कथाओं का समावेश था। प्रथम दिन की अंतिम प्रस्तुति *रमखेलिया* की रही। यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि लोकनाट्य *रमखेलिया* मिथिला में लोकानुरंजन हेतु मुक्त रंगमंच मे रामलीला की तरह खेला जाता था। लुप्तप्राय *रामखेलिया* का मूल आधार बांग्ला रामायण है। इसका प्रदर्शन सागर कुमार सिंह व दल, विश्वविद्यालय संगीत एवं नाट्य विभाग, दरभंगा के छात्रों ने किया। दूसरे दिन के प्रथम सत्र के कार्यक्रम मे महिला मंडली, दरभंगा द्वारा मधुश्रावणी खिस्सा की प्रस्तुति की गई आपको बताते है कि मधुश्रावणी त्यौहार मिथिला के दाम्पत्य जीवन से संबंध त्यौहारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह त्यौहार मुख्यत: नव परिणीताओं के लिए है। इंद्रावती नाट्य समिति, सीधी, मध्य प्रदेश द्वारा *अहिराई* तथा रौशनी प्रसाद व दल द्वारा *सैला* की प्रस्तुति हुई। दूसरे दिन के द्वितीय सत्र के कार्यक्रम में मलंगिया फ़ाउंडेशन द्वारा *डोमकच्छ*, शशांक शेखर व दल द्वारा *मधुसूदन यात्रा* व *झूलन* गीत, नयन प्रिया व दल द्वारा *गोदना*, पुष्पा प्रसाद द्वारा मगध व भोजपुर के लोक गीत, अजीत व दल,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मधुबनी द्वारा *डाक बचन*, शम्भू कुमार व दल, संगीत एवं नाट्य विभाग, दरभंगा के छात्रों के द्वारा सामा-चकेवा की प्रस्तुति हुई। दूसरे दिन के द्वितीय सत्र की अंतिम प्रस्तुति में दिल्ली के बारहमासा दल द्वारा अमली नाटक की प्रस्तुति हुई। इस नाटक के द्वारा रोजगार की खोज मे अपने गाँव से शहरों की तरफ भागते युवक और पीछे उनके परिवार की त्रासदी एवं शोषण का जीवंत मंचन हुआ। देशज उत्सव के तीसरे एवं अंतिम दिन के प्रथम सत्र में *सपता-बिपता खिस्सा, शीतला माता गीत, बिहूला विशहरी* गायन तथा *जट जटीन* के प्रस्तुति का आयोजन हुआ। उत्सव के अंतिम दिन के द्वितीय सत्र की प्रथम प्रस्तुति शीलू सिंह राजपूत द्वारा के *आल्हा गायन* से हुई। इस प्रस्तुति की शैली मे वीर रस की प्रधानता रही। इसके पश्चात संगीत एवं नाट्य विभाग, दरभंगा के छात्रों द्वारा मिथिला के लोक व पारंपरिक गीत की प्रस्तुति हुई। तत्पश्चात मोहम्मद इज़राईल एवं दल ने *पमरिया* की प्रस्तुति का मंचन किया। देशज कार्यक्रम के तीसरे व अंतिम दिन की समापन प्रस्तुति त्रिपुरा से आमंत्रित राजा हसन व दल ने *बाउल गायन* से की। बाउल का अर्थ है—बावड़ा, पागल। बाउल धर्म नही एक साधना है, बौद्धिक चेतना का। बौद्ध सहजिया साधना, गौड़ीय वैष्णव साधना तथा सूफी साधना का सीधा प्रभाव बाउल गायन पर परिलक्षित होता है। बाउल गायन मे विविधताए है, इसे अन्त: मन का संगीत भी कहा जाता है। बाउल गान में तन्तु वाद्य प्रमुख है। समापन समारोह मे राजा हसन का रंगारंग प्रदर्शन स्थानीय दर्शकगणो में बहुत लोकप्रिय रहा। दर्शकगण राजा हसन जी को उनकी अन्य प्रस्तुति के प्रदर्शन के लिए बार-बार आग्रह करते रहे। राजा हसन ने भी दर्शकों को निराश नहीं किया और अपनी श्रेष्ठ प्रस्तुति देते रहे। समस्त कार्यक्रम के दौरान दर्शकगणो का उत्साह बना रहा।

लोकोत्सव *देशज* में हम मिथिला के लोक से परिचित हुए, वहाँ की आबोहवा में रहे और वहाँ की लोक संस्कृति से परिचित हुए। अनेकता में एकता की अनुभूति तभी संभव है जब हम इस अनेकता को जान पाते हैं क्योंकि अनेकता में ही एकता के सूत्र हैं और ऐसे ही उत्सवों में देश के विभिन्न प्रांतों में जाने के कारण ही में राष्ट्र की इस अनेकता से परिचित हो पाया हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण

तेजस्वरूप त्रिवेदी

संगीत की जुबान सुर है लेकिन नृत्य की जुबान उसके भाव हैं, भगिमाएं हैं, चेष्टाएं हैं। भाषा भाव का माध्यम है या भाव भाषा का माध्यम है यह प्रश्न मस्तिष्क में उठता रहा जब संगीत नाटक अकादेमी में मेघदूत के विस्तृत प्रांगण में वट वृक्ष के नीचे ओडिसी, कथक, मोहिनीआट्टम और मणिपुरी नृत्य की संयुक्त प्रस्तुति हो रही थी। शांत वातावरण में गूंजती वाद्य यंत्रों की ध्वनि के बीच ..... रंजना गौहर, जयप्रभा मेनन, संजीव भट्टाचार्य, विधालाल और संगीत नाटक अकादेमी की छउ परियोजना के कलाकार आज समर्पित थे—राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति समर्पित और इस कार्यक्रम का नाम भी था *समर्पण*।

मृदुला सिन्हा साहित्य जगत में एक परिचित नाम उस सहज व्यक्तित्व को जो आज गोवा की राज्यपाल हैं। साहित्यदर्शी से राजदर्शी तक के सफर में मृदुला सिन्हा में कोई भी परिवर्तन नहीं आया। मुझे याद है भोपाल में आयोजित दसवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में एक संवाद संत्र में वह कोने में आकर श्रोताओं के बीच बैठ गयी और पूरे सूत्र को में ध्यानपूर्वक सुनती रही। सत्र की अध्यक्षता कर रही ऋता शुक्ला मंच से नीचे उतरी और उनसे सामने बैठने का अनुरोध किया। उनका वह व्यक्तित्व वास्तव में प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है। वर्ष 2015 में गोवा में समुद्र के किनारे होटल स्टर्लिंग रिसार्ट में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में कान्फ्रेंस हॉल की लाइट चली गयी ए.सी. भी बंद। समुद्र के तट पर वे इस होटल के हॉल में जब हम लोग उमस और पसीने से जब ऊब रहे थे वे पसीना पोंछती जा रही थी, संबोधित करती रहीं और अन्त में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र भी दिये। वही मृदुला सिन्हा आज इस समर्पण कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थी तो राजभाषा विभाग के मुखिया और भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह मुख्य अतिथि थे। खचाखच दर्शकों से भरा मेघदूत का प्रांगण और वट वृक्ष के नीचे कलाकारों की नृत्य संरचना को देखकर लग ही नहीं रहा था हम इस संसार में हैं।

रंजना गौहर की संस्था ओडिसी डांस अकेडमी और संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आयोजित इस समर्पण कार्यक्रम में हिंदी भाषा के प्रति हमारा जो प्रेम है वह चार भारतीय नृत्य शैलियों-ओडिसी, कथक, मोहिनीआट्टम तथा मणिपुरी नृत्यों के साथ ही युद्ध कौशल वाले नृत्य सरायकेला छउ के माध्यम से समवेत स्वर में प्रतिबिंबित होता दिखा।

वस्तुत: समर्पण नामक यह कार्यक्रम एक विशेष गीत *हिंदी भारत माँ की बिन्दी* पर केन्द्रित था। इस गीत को डॉ. मृदुला सिन्हा ने लिखा था और अब यह गीत केंद्रीय गृहमंत्रालय के राजभाषा विभाग का आधिकारिक गीत है जिसे केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह द्वारा 28 अगस्त, 2015 को जारी किया गया था।

समर्पण कार्यक्रम के माध्यम में संगीत नाटक अकादेमी और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एक दूसरे के निकट आये। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय सहित रसिकों ने इस कार्यक्रम को भूरि-भूरि प्रशंसा की। राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय ने इस नृत्य प्रस्तुति की वीडियो फुटेज अपनी वेबसाइट पर अपलोड करायी। इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर आने वाले दिनों में राजभाषा विभाग ने जब कैलेण्डर बनाया तो उसके सारे चित्र संगीत नाटक अकादेमी की फोटो लाइब्रेरी से ही लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समर्पण कार्यक्रम की झलकियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

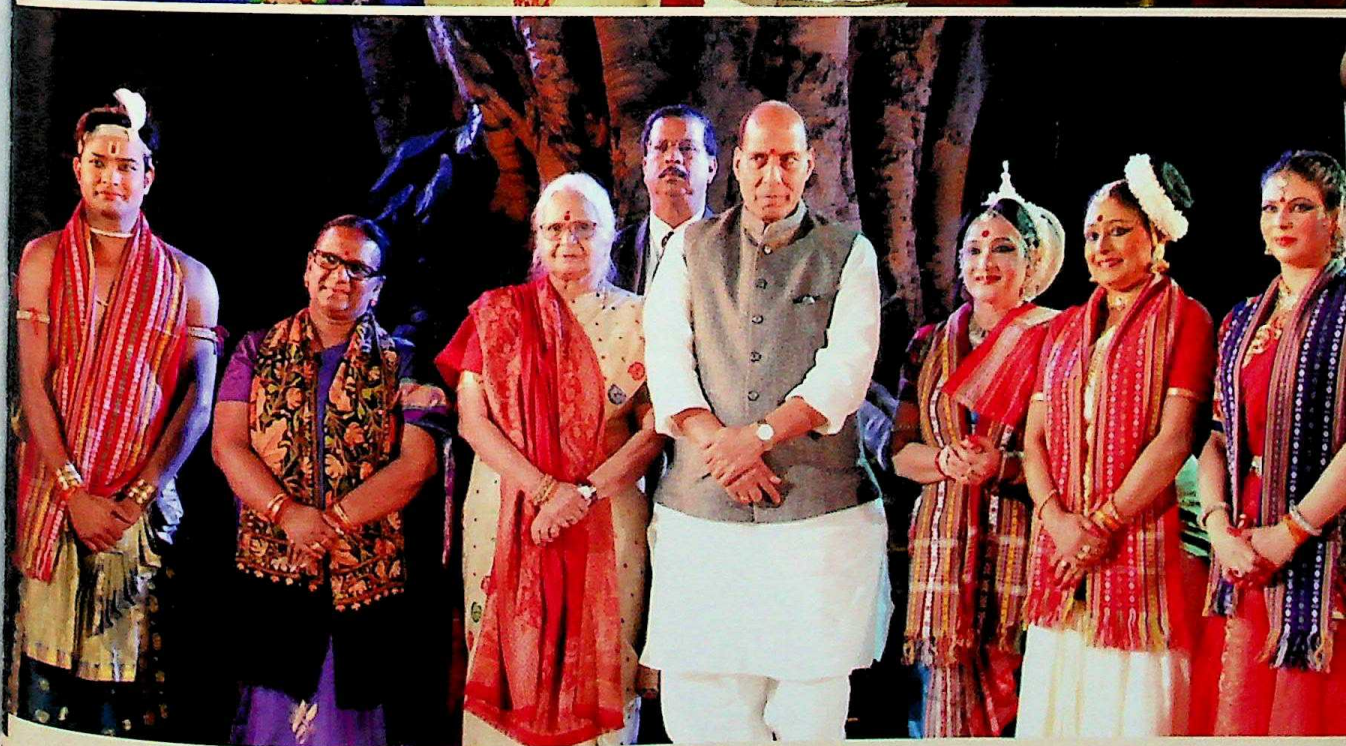

ऊपर : दीप प्रज्ज्वलित करते माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार राजनाथ सिंह और गोवा की राज्यपाल माननीया मृदुला सिन्हा साथ हैं अकादेमी की सचिव हेलेन आचार्य और राजभाषा विभाग के सचिव गिरीश शंकर

नीचे : माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार राजनाथ सिंह, गोवा की राज्यपाल माननीया मृदुला सिन्हा साथ में अकादेमी की सचिव हेलेन आचार्य, रंजना गौहर, जयप्रभा मेनन, विधा लाल

CC-0. Agamnigam Digitized by eGangotri Research Foundation, Chandigarh. Funding by JKS-MoE-2025-Grant

mmu

ऊपर : संबोधित करती गोवा की राज्यपाल माननीया मृदुला सिन्हा

नीचे : कार्यक्रम में उपस्थित दर्शक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गंगा की महिमा क्यों ?

डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त

*[गंगा सिर्फ प्राकृतिक संपदा ही नहीं हर भारतवासी की भावनात्मक आस्था का आधार भी है। यह राष्ट्र के विशाल भू-भाग को सीचती है, उपजाऊ बनाती है। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इस नदी को भारत सरकार ने वर्ष 2008 में राष्ट्रीय नदी घोषित किया तथा इलाहबाद और हल्दिया के बीच (लगभग 1600 किमी) गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया। आगरा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त ने अपने तथ्यों से यह प्रमाणित किया है कि गंगा में निहित महत्त्वपूर्ण गुण ही गंगा जल को साधारण जल से अलग करते है। सामाजिक साहित्यिक, सांस्कृतिक गुणों के अतिरिक्त गंगाजल के ये वैज्ञानिक गुण गंगा की महिमा हमें बताते हैं। **कल्याण** के गंगा अंक में प्रकाशित इस आलेख को हमे डॉ. अजय पाठक ने भेजा है।— संपादक]*

कुछ समय पूर्व की बात है, एक पत्रकार महोदय ने एक समाचार पत्र में अपने लेख में 'गंगा की महिमा' के अन्तर्गत लिखा है कि 'गंगा की पूजा करने के पीछे कोई तर्क नहीं और न ही यह विश्वास करने का आधार है कि इसके जल में रोगमुक्त करने की शक्तियाँ हैं।' इस विषय में मुझे एक कहावत याद आती है—'अज्ञानता भी कभी-कभी सुखमय होती है।' किंतु उस अज्ञानता को दूर करने के लिए यहाँ गंगाजी के जल के विषय में कुछ वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत हैं—

1. मैकग्रिल यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर ने तीन दशक पूर्व अपने प्रयोगों द्वारा यह पता लगाया था कि गंगाजल में हैजे के कीटाणु तीन-चार घंटे में स्वत: ही मर जाते हैं। यह गंगा जल के कीटनाशक गुण एवं इसकी पवित्रता तथा औषधीय गुण को दर्शाता है।

2. ब्रिटिश मासिक पत्रिका 'गुड हेल्थ' में लिखा है कि टेम्स नदी का रखा हुआ पानी जल्दी ही दूषित हो जाता है जबकि गंगाजल महीनों तक वैसा ही बना रहता है। इस गुण के कारण ही भारतवासी गंगाजल को अपने घर में रखते हैं और यह पवित्र बना रहता है।

3. यूरोपियन डॉ. हाकिन्स ने गंगाजल के अनेक दोषनाशक तत्त्वों का विवेचन किया है तथा यह प्रमाणित किया है कि गंगा में ऐसे जीवाणु और रसायन होते हैं, जो प्रदूषण और अनेक रोगकारी तत्वों को नष्ट कर देते हैं। गंगाजल में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन भी होती है, जो शरीर के स्वस्थ रहने के लिए अति लाभकारी है।

4. डॉ. एफ़ कोहिमान, फ्रांसीसी डॉ. डी. हेरेल और जर्मनी के डॉ. जे. ओलिवर आदि ने गंगाजल पर सन् 1924 ई. से 1931 ई. के बीच शोध-कार्य किए और उनके अध्ययनों का परिणाम निकला जिसके अनुसार गंगाजल अत्यन्त पवित्र तथा स्वच्छ जल है और इसमें रक्त बढ़ाने तथा कीटाणुओं को नाश करने की अद्‌भुत क्षमता है। इस जल में अनेक विटामिन आदि भी हैं।

5. डॉ. डी.एस. भार्गव (रुड़की विश्वविद्यालय) को तीन वर्षों के अध्ययन से पता चला कि गंगाजल बी.ओ.डी. (Bio-Chemical Oxygen Demand) के स्तर को दूसरे जलों की तुलना में तेज़ी से कम करता है। यह 15-20 गुना तेज़ गति से कूड़े-करकट को साफ़ कर देता है।

जानने योग्य है कि गंगाजी का जल क्यों पवित्र रहता है? इसके अनेक कारण हैं, जिनमें से कुछ निम्न हैं—

1. विज्ञान बताता है कि मुख्यत: दो गैसों—ऑक्सीजन एवं हाइड्रोजन एक निश्चित अनुपात में मिलने से पानी बनता है। इसका अर्थ हुआ कि गंगाजल में और जलों की तरह ऑक्सीजन की मात्रा होती है, जो स्वास्थ्यवर्धक होती है। वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध है कि गंगाजल में अन्य जलों की तुलना में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है तथा यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अधिक समय तक रहती है। इसको घुली ऑक्सीजन (Dissolved Oxygen) कहा जाता है, इसके कारण गंगाजल पवित्र रहता है।

2. गंगाजल निरन्तर बहते हुए भी और जलों की तुलना में वायुमण्डल से अधिक मात्रा में ऑक्सीजन गैस ग्रहण करता रहता है। इसके कारण गंगाजल में निरन्तर ऑक्सीजन की काफ़ी मात्रा बनी रहती है, जो मनुष्य के स्वास्थ्य दृष्टि से लाभप्रद होती है।

3. गंगा नदी का पानी पहाड़ों की बर्फ़ या ग्लेशियरों से निकलता है, जो समुद्र से 4000 मीटर से अधिक ऊँचे हैं। इस ऊँचाई पर वातावरण बहुत पवित्र होता है। वहाँ किसी भी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता है—न पानी का, न वायु का और न ध्वनि का। साथ ही उद्गम-स्थल पर पानी अत्यन्त ठण्डा होता है। बहुत अधिक ठण्ड में कीटाणु जीवित नहीं रह पाते हैं। अधिकांश मर जाते हैं और जो जीवित रह जाते हैं, वे मृतप्राय हो जाते हैं। फलतः गंगाजल पवित्र रहता है।

4. भागीरथी और उसकी सहायक नदियाँ, जो आगे चलकर गंगानदी कहलाती हैं, जिन पहाड़ों से निकली हैं, उन पहाड़ों की चट्टानों में ऐसे खनिज पदार्थ हैं, जो कीटनाशक हैं; जैसे—गंधक, चूना आदि। इन पहाड़ों की ये चट्टानें समय-समय पर नदियों में गिरती रहती हैं तथा पानी के प्रवाह के कारण आपस में टकराकर टूटती तथा चूरा बनती रहती हैं। गंधक के गर्म पानी के झरने जो पानी के कीटाणुओं को मारने तथा तत्वा के रोगों और पेट के रोगों को दूर करने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए बदरीनाथ नगर में ही तीन गर्म पानी (गन्धक)-के कुण्ड हैं, जो अलकनन्दा नदी में गिरते हैं। इस तरह गंगा तथा इसकी सहायक नदियों को निरन्तर कीटनाशक खनिज पदार्थ मिलते रहते हैं, जो गंगाजल को पवित्र रखते हैं।

5. भागीरथी तथा उसकी सहायक नदियाँ जिन पहाड़ों से निकली हैं, उन पर घने जंगल भी हैं। इन पेड़ों की पत्तियों, टहनियों, जड़ आदि के गुण वर्षा के पानी तथा हवा के कारण गंगाजल में पहुँचते रहते हैं और धीरे-धीरे कीटाणुओं को मारने का काम करते रहते हैं।

6. प्रत्येक पानी में विषाणु (Virus) तथा जीवाणु (Bacteria) को कोशिकाएँ (Cells) होती हैं। विषाणु कोशिकाओं (Virus cells) में स्वयं बढ़ने तथा अनेक होने के गुण नहीं होते हैं, जबकि जीवाणु-कोशिकाओं (Bacteria cells) में स्वयं बढ़ने तथा अनेक होने के गुण होते हैं। गंगा नदी के पानी की विषाणु-कोशिकाओं की तरह जीवाणु कोशिकाओं पर सवारी कर लेती हैं तथा अपना डी.एन.ए. (D.N.A.) (जन्मजात गुण) जीवाणु कोशिकाओं में इंजैक्ट करती रहती हैं। इस तरह जीवाणु कोशिकाओं के अंदर नए जीवाणुओं की संख्या बढ़ती रहती है, जिनमें दोनों के डी.एन.ए. होते हैं। फलतः पुरानी जीवाणु कोशिका का आकार बढ़ता रहता है तथा वह एक सीमा के बाद फट जाती है। इस तरह अनेक स्वतन्त्र नई कोशिकाएँ बन जाती हैं, जिन्हें बैक्टीरियोफेज्स (Bacteriophages) कहा जाता है। इस तरह अनेक स्वतन्त्र नई कोशिकाएँ बन जाती हैं, जिन्हें बैक्टीरियोफेज्स के कारण गंगाजल में अनेक बीमारियों को दूर करने के गुण आ जाते हैं, जैसे—हैजा, टाइफाइड, प्लेग, ज़ख़्म, जल जाने पर बने घाव, हेमेरेजिक सेप्टेसीमिया (Hemorrhagic Septicemia) आदि।

7. गंगाजी के बहते पानी पर जब सूर्य की सप्तरंगी किरणें काफ़ी समय तक पड़ती हैं तब सूर्य की गर्मी तथा उसकी सप्तरंगी तरंगों की विशेषताओं के कारण गंगाजल के कीटाणु मर जाते हैं तथा पानी स्वच्छ और निर्मल हो जाता है और इस जल में औषधीय गुण आ जाते हैं।

विज्ञान बताता है कि सूर्य की सप्तरंगी किरणों में अलग-अलग गुण होते हैं, जो गंगाजी के पानी को शुद्ध तथा पवित्र बनाते रहते हैं। उदाहरण के लिए लाल रंग की किरण में बहुत गर्मी होती है, जो गंगाजल को गर्मी देती है। सर्वविदित सत्य है कि गर्मी कीटाणुओं को मारती है। इसी तरह सूर्य की पीले रंग की किरण पानी को पारदर्शी बनाने में सहायक होती है। जिस स्थान में ऑपरेशन किए जाते हैं, वहाँ पीले रंग के बल्ब लगाए जाते हैं और आज-कल तो सूर्य की सात रंगों की किरणों से दवाइयाँ भी बनाई जाती हैं तथा इन किरणों के गुणों के समान बिजली की तरंगों में गुण पैदाकर मनुष्य के विभिन्न अंगों के सेंकने का कार्य किया जाता है।

8. गंगा एक बहती हुई नदी है, जिसका पानी ठहरा हुआ नहीं होता है। यह बहता पानी गंगा में फेंके गए कूड़े-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करकट को नदी के तल में बैठने नहीं देता है। यह कूड़ा गंगाजल के साथ बहता रहता है।

पानी में सूक्ष्म कीटाणु एवं जीवाणु (Micro-organs) होते हैं, वे खुली ऑक्सीजन के कारण गंगाजल में पड़े दूषित कूड़े-करकट को तोड़ते तथा नष्ट करते रहते हैं। उदाहरण के लिए गंगाजी में कोई शव बह रहा होता है तो ये सूक्ष्म कीटाणु एवं जीवाणु उस शव को खाकर उसे नष्ट कर डालते हैं। इस तरह गंगा नदी के जल में स्वयं पवित्र होते रहने की क्षमता होती है। यही कारण है कि लक्ष्मण झूले से हरिद्वार तक जो नगर तथा उद्योगों का कूड़ा गंगा में प्रवाहित किया जाता है, उससे गंगा का प्रदूषण बढ़ जाता है, पर जल के सूक्ष्म कीटाणुओं और जीवाणुओं तथा अन्य कारणों से गंगानदी स्वयं पवित्र होने लगती हैं और गढ़मुक्तेश्वर तक यह काफ़ी पवित्र बन जाती है। वैज्ञानिकों का मत है कि गंगाजल में कूड़े-करकट को नष्ट कर जल को पुन: पवित्र करते रहने की क्षमता अन्य नदियों के जल से 15 प्रतिशत से 25 प्रतिशत अधिक होती है।

9. सन् 1960 ई. में Theodore Schwent, George Adams तथा John Wilkes ने यह पता लगाया कि जल की जीवन शक्ति का रहस्य इसकी लययुक्त गति में है। गंगा नदी के जटिल भूमितल पर जिससे पानी बहता है, गुरुत्व शक्ति का खिंचाव रहता है। इस गुरुत्व शक्ति के खिंचाव के कारण गंगाजल विभिन्न दिशाओं में बहता है—कभी यह दाँए हाथ बहता है, कभी बाँए हाथ। कभी नीचे जाता है, कभी ऊपर आता है और कभी चक्राकार। इससे स्वाभाविक चक्कर (Swirling) जल-भँवर (Vortex) और कम्पन (Vibration) पैदा होते हैं।

पानी के इस प्रकार के प्रवाह से पानी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है ओर यह वैसा ही हो जाता है, जैसा कि यह अपने पहाड़ी गन्तव्य स्थान के समय था। पानी का चक्करदार बहना, भँवर और कम्पन फेफड़ों-जैसा कार्य करता हैं और इससे ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ सूक्ष्म कीटाणुओं और जीवाणुओं के द्वारा कूड़े-करकट को तोड़ने में मदद मिलती है।

10. कुछ ही समय पूर्व तक की बात है कि जब कोई श्रद्धालु जन गंगा नदी के पास से गुजरता था तब वह हाथ जोड़कर गंगा माँ को नमस्कार करता था तथा गंगा जी में पीतल का टुकड़ा या पीतल के बने सिक्के या चाँदी के टुकड़े या चाँदी के सिक्के फेंक देता था। पीतल तथा चाँदी कीटाणुओं को मारनेवाली तथा जल को शुद्ध करनेवाली धातुएँ हैं।

11. गंगा नदी में विभिन्न प्रकार की मछलियाँ, कछुए, ऊदबिलाव आदि निवास करते हैं। ये एक तरफ़ तो जलके ऑक्सीजन को कम करते हैं और दूसरी तरफ़ कीड़े-मकोड़ों को नष्ट करते रहते है। पर गंगा नदी के जलका गुण है कि वह वायुमण्डल से ऑक्सीजन ले लेता है तथा उस कमी को पूरी कर देता है।

12. गंगा नदी के तट पर हज़ारों वर्षों तक अनेक तपस्वियों ने तपस्या की है। इन पुनीत आत्माओं की तपस्या तथा श्रद्धा माँ गंगा के जल को पवित्र ही नहीं आध्यात्मिक बल भी प्रदान करती है। इसी तरह जब लाखों लोग मैया की पूजा-अर्चना करते हैं तो उनके श्रद्धासुमन गंगाजी को मिलते हैं, जिससे गंगा पवित्र तथा अधिक बलवती बन जाती हैं। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने मूर्तियों के विषय में प्रतिस्थापित किया है कि मनोभावनाओं की तरंगों का प्रभाव भी मूर्ति को पवित्र तथा फलदायक बना देता है। यही बात गंगाजल के बारे में भी कही जा सकती है।

एक जापानी विद्वान् Masara Emoto ने अध्ययन कर यह साबित किया है कि विभिन्न प्रकार की तरंगें जो प्रार्थना, शब्दों, विचारों, संगीत, घण्टों आदि की ध्वनियों से उत्पन्न होती हैं तो वे गंगाजल के पानी के परमाणुओं के ढाँचे (Molecular sturcture) को बदलकर पानी को शुद्ध करती हैं। जूलियन क्रेण्डल हौलिक ने अपनी पुस्तक 'गंगा' में वैज्ञानिक साहित्य के आधार पर गंगा की पवित्रता के कारणों को बताया है। इस प्रकार गंगा जल का स्वच्छ, पवित्र एवं उपयोगी होना मात्र धार्मिक विश्वास ही नहीं है, अपितु यह एक वैज्ञानिक सत्य भी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बैजू की धरती पर बावरा हुआ मन

रघुवीर

मध्य प्रदेश के छोटे-से शहर चन्देरी की हवा में आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वर तैरते हैं। पक्षियों के कलरव में भी रागों की ध्वनियाँ निकलती सुनायी देती हैं। यहाँ ध्रुपद पर बात करने वाले आपको आसानी-से मिल जाएंगे। ध्रुपद के व्याकरण पर सम्भव है कि उनकी चर्चा की लय बिगड़ जाये, लेकिन चन्देरी के उस कलात्मक इतिहास को जीवन्त बनाये रखने के लिए उनकी प्रशंसा में आपके कण्ठ से बोल स्वत: ही निकल जाएंगे, जिसकी वजह से यह शहर कभी सांस्कृतिक नगरी के रूप में जाना जाता था। संगीत सूर्य बैजू बावरा ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण साल यहीं गुज़ारे और वसन्त पंचमी के दिन अन्तिम साँस भी इसी शहर में ली थी। यहाँ स्थित बैजू की समाधि पर आने वाले हर शख़्स को एक अनसुनी धुन सुनायी पड़ती है। इसी अनसुनी धुन को जीवन्त करने के लिए श्री अचलेश्वर महादेव मन्दिर फ़ाउण्डेशन, सोनभद्र ने यहाँ 'प्रथम बैजू बावरा ध्रुपद उत्सव' का आयोजन किया।

रज़ा फ़ाउण्डेशन एवं नगर पालिका परिषद, चन्देरी, अशोक नगर के सहयोग से सुर-लय-ताल के इस संगम का साक्षी बना चन्देरी का सुप्त ऐतिहासिक राजा-रानी महल भी झंकृत हो उठा। ध्रुपद नक्षत्र गुन्देचा बन्धुओं-उमाकान्त व रमाकान्त गुन्देचा ने बैजू बावरा की बन्दिश 'कुंजन ने रचयो रास' से संगीत सन्ध्या का आगाज़ किया, तो कुछ देर के लिए चन्देरी बैजू के ज़माने में पहुँच गयी। राग भीमपलासी में आलाप करते समय गुन्देचा बन्धुओं की चैनदारी आध्यात्मिक सुवास प्रदान कर रही थी, तो आड़ (डेढ़ गुन), कुआड़ (सवा गुन) और बिआड़ (पौने दो गुन) की लयकारियाँ संगीत रसिकों के मन को झंकृत कर रही थीं। विभिन्न लयकारियों के बाद जब गायक बन्धु पखावज पर 12 मात्राओं की चौताल बजा रहे रोमन दास से सम पर आकर मिले, तो रसिकजनों के हाथ स्वत: ताली बजाने लगे। करीब एक घण्टे के गायन में गुन्देचा बन्धुओं ने वसन्त पंचमी के दिन जन्मे महाकवि पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना 'सखि वसन्त आया' में राग बसन्त के रंग बिखेरे। चन्देरी अब ख़ास सिल्क के वस्त्रों के लिए भी जानी जाती है। इसलिए बुनकरों की नगरी में अपने कार्यक्रम का अन्त ध्रुपद कलाकार भाइयों ने सन्त कबीर की रचना 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' से किया। 10 मात्राओं की सूरताल और राग चारुकेशी में निबद्ध इस भजन से चन्देरी वासियों के चित्त को पूरी तरह शान्त कर गुन्देचा बन्धुओं ने विदा ली। तब तक मंच के सामने बैठे ज़हीन चित्रकार देव प्रकाश चौधरी उनका ध्रुपद सुनते हुए अद्भुत कला-कृति बना चुके थे। गायन थमा तो गुन्देचा बन्धुओं को प्रथम बैजू बावरा स्मृति सम्मान से नवाज़ा गया और 11 शीर्ष संगीतज्ञों के साक्षात्कारों से आबद्ध उनकी पुस्तक 'सुनता है गुरु ज्ञानी' का विमोचन किया गया।

सांध्यकालीन संगीतमयी बेला से पूर्व दोपहर में 'विरासत का अर्थ' विषय पर संगोष्ठी हुई, जिसमें पं. उमाकान्त गुन्देचा ने कहा कि परम्परा और विरासत को सही अर्थ में समझने की ज़रूरत है। पं. रमाकान्त गुन्देचा ने सवाल किया कि घराने का गायक अगर अपने से पहली पीढ़ी के गायक को गाता है, तो वह परम्परा और बाहर का कोई व्यक्ति गाये तो नकल...ऐसा क्यों? इसलिए संगीत में 'घरानों' का कोई मूल्य नहीं है। इनकी उत्पत्ति केवल खानदानों में संगीत परंपरा के विस्तार से होती गयी। कवि एवं कलाविद अशोक वाजपेयी ने कहा कि परम्पराएँ, लोक संस्कृति की वाहक हैं। इन्हें धर्म और अन्धविश्वास से जोड़कर इनका बहुत नुकसान किया गया। हम अपनी विरासत को तब तक नहीं संभाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकते, जब तक हम प्रश्न करने को अपनी आदत में शुमार न कर लें, क्योंकि प्रश्न करना उत्तरदायित्व की भावना का ही एक रूप है। संगीत समीक्षक मंजरी सिन्हा ने भी संगीत और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने पर बल दिया। सुबह के सत्र में बच्चों एवं किशोरों को ध्रुपद विधा के कलात्मक एवं व्यावहारिक पक्ष से जोड़ने के लिए कार्यशाला में गायक संजीव झा ने उन्हें ध्रुपद का ककहरा सिखाया, तो चित्रकार मनीष पुष्कले ने कैनवस पर कूची चलाना। फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष पं. मुरली तिवारी और कला समीक्षक शिवकेश मिश्र के सान्निध्य में चले इस सफल आयोजन में मनोहारी संचालन किरण तिवारी का रहा। गांवों, कस्बों और छोटे-छोटे शहरों में आयोजनों एवं कार्यशालाओं के माध्यम से आमजन तक इन कलाओं को पहुँचाने के प्रयास में जुटे संस्था के सचिव चन्द्र प्रकाश तिवारी कहते हैं, 'इस वैदिक संगीत को अभिजात्य वर्ग से निकालकर आम लोगों तक पहुँचाना और लोगों को इससे परिचित कराना ही इस 'ध्रुपद यात्रा' का मक़सद है।' उम्मीद है, बैजू बावरा की याद को संभालते और सहेजते हुए दशकों से जारी संगीत की यह सुखद यात्रा अनवरत चलती रहेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगीत नाटक अकादेमी में विकास के पथ पर राजभाषा

तेजस्वरूप त्रिवेदी

संगीत नाटक अकादेमी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सतत रत है। राजभाषा, विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त वार्षिक कार्यक्रम 2015-16 एवं संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुसरण में अकादेमी नियमित रूप से कार्यशाला, संगोष्ठी, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन करती है। 1 सितंबर, 2015 से 31 मार्च, 2016 तक अकादेमी में राजभाषा संबंधी गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है-

संगोष्ठी

विषय - प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार

संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन नई दिल्ली में प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन एवं पत्रिका *राजभाषा रूपाम्बरा* के सातवें अंक का लोकार्पण 27 फरवरी 2016 को सम्पन्न हुआ।

अकादेमी की सचिव श्रीमती हेलेन आचार्य ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि संगीत नाटक अकादेमी प्रदर्शन कलाओं की प्रथम राष्ट्रीय अकादेमी है। इस अकादेमी का उद्घाटन देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने 28 जनवरी 1953 को संसद भवन में आयोजित एक विशेष समारोह में किया था। इस अकादेमी के प्रथम अध्यक्ष डा. पी वी राजमन्नार थे। इसी शृंखला में एक सशक्त कड़ी और जुड़ी जब पद्मश्री शेखर सेन जी ने इस राष्ट्रीय अकादेमी के अध्यक्ष पद को संभाला। श्रीमती आचार्य ने आगे कहा कि अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के मूर्त स्वरूप का ज्ञान हम पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से ही पाते हैं। लेखन भी उतना ही जरूरी हो गया है जितना कला का प्रदर्शन। अकादेमी का यह प्रयास है कि हम हिंदी भाषा में प्रदर्शन कलाओं की सामग्री को प्रकाशित करें जिससे कला सिर्फ अभिलेखागार में ही न रहे बल्कि दूर-दूर तक प्रकाशन के माध्यमों से फैले और यह काम हम पत्रिका के माध्यम से बखूबी कर सकते हैं। 4 अप्रैल 2011 को तिमाही पत्रिका 'संगना' के प्रकाशन के शुभारंभ के बाद ही सितंबर 2012 से दूसरी हिंदी पत्रिका *राजभाषा रूपाम्बरा* के माध्यम से हम यह कार्य शुरू कर चुके हैं। राजभाषा रूपाम्बरा के 'काशी अंक' के प्रकाशन के बाद यह सातवां अंक पत्रिका के प्रकाशन की सफलता का ही प्रतीक है। और यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि अध्यक्ष महोदय स्वयं पत्रिका के लोकार्पण के लिए हमारे बीच उपस्थित है।

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के निदेशक राजभाषा श्री वेद प्रकाश गौड़ ने कहा कि भाषा और कला का अन्योन्याश्रित संबंध है। राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर संगीत,नृत्य व नाटक के माध्यम से निज भाषा में प्रस्तुतियां देकर संगीत नाटक अकादेमी भाषा और संस्कृति के बीच सेतु का कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान दिल्ली के पूर्व कुलसचिव तथा दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रोफेसर बिपिन कुमार ठाकुर ने अपने सम्बोधन में कहा कि विदेशों में स्थित लगभग 50 विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा का विधिवत अध्ययन व अध्यापन चल रहा है। कलाकार अपनी अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही कर सकता हैं। इस मायने में संगीत, नृत्य एवं नाट्य कलाएं तथा भाषा का पारंपरिक संबंध अति प्रासंगिक हैं।

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष पद्मश्री शेखर सेन ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि जब व्यक्ति में मानने की अपेक्षा जानने की शक्ति जाग जाती है तभी हम किसी चीज के सच्चे स्वरूप को पहचान पाते है। उन्होंने कहा कि हमारी पहचान हमारी भाषा है और भाषा ही संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम है और अगर यह भाषा खत्म हो जाएगी तो हमारी पहचान भी खत्म हो जाएगी। उन्होंने आगे कहा कि अंग्रेजी भाषा में एक चीज के लिए एक ही शब्द बना है लेकिन हिंदी भाषा में एक चीज के लिए अनेक शब्द है जो हमारी भाषा की शक्ति को दर्शाते हैं। श्री शेखर सेन ने इस अवसर पर अपनी एक रचना के बोल भी सुनाए जो इस प्रकार हैं-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

''कुछ सीधे-साधे प्रश्न हैं जवाब दीजिए,
बस अपनी आत्मा को ही हिसाब दीजिए।''

इस अवसर पर विशेष रूप से पधारी उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब की मानस पुत्री पद्मश्री शोमा घोष ने बेग़म अख़्तर साहिबा द्वारा गायी ठुमरी के कुछ बोल सुनाए।

इस अवसर पर अकादेमी के अध्यक्ष पद्मश्री शेखर सेन द्वारा छमाही पत्रिका *राजभाषा रूपाम्बरा* के सातवें अंक का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। आयोजन में बडी संख्या में अकादेमी के अधिकारी, कर्मचारी व हिंदी सेवी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का संचालन पत्रिका के सहसंपादक श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने किया।

कार्यशाला

विषय- राजभाषा का सामान्य ज्ञान

संगीत नाटक अकादेमी में 31 मार्च, 2016 को *राजभाषा का सामान्य ज्ञान* विषय पर कार्यशाला का आयोजन मेघदूत थियेटर परिसर, रवीन्द्र भवन नई दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर अकादेमी की सचिव श्रीमती हेलेन आचार्य ने कहा कि भाषा के इन आयोजनों का उद्देश्य है कि लोग अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग करें, उनका ज्ञानवर्धन हो और उनका कौशल बढ़े। कार्यशाला में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक श्री वेद प्रकाश गौड़ ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3), भाषायी आधार पर राज्यों के वर्गीकरण, यूनिकोड, जैसे विषयों पर जानकारी दी। अकादेमी की सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती सुशील जैन ने कहा कि हमे अपनी भाषा के प्रति गर्व का भाव होना चाहिए और हिंदी लिखने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट का अनुभव नहीं करना चाहिए। कार्यशाला में आभार प्रदर्शन श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अमृतसर में आयोजित उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

दसमेश ऑडिटोरियम, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 16 अक्टूबर, 2015 को उत्तर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी जी, श्री गिरीश शंकर सचिव, राजभाषा विभाग भारत सरकार; प्रो. ए.एस.बरार, उप-कुलपति, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय; श्रीमती पूनम जुनेजा, संयुक्त सचिव, भारत सरकार, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा विभिन्न केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रशासनिक प्रधान, वरिष्ठ अधिकारी तथा अध्यक्ष नराकास एवं गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

माननीय राज्यपाल पंजाब तथा हरियाणा प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि कुछ कार्यक्रमों का संबंध शरीर से होता है, कुछ का बुद्धि से होता है और कुछ कार्यक्रमों का संबंध आत्मा से होता है। आज के कार्यक्रम का संबंध आत्मा से है। स्वतंत्रता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कुर्सी पर बैठने से स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती। स्वतंत्रता में तंत्र महत्त्वपूर्ण है। अपना तंत्र, अपना स्वदेशीपन हमारी पहचान है, हमारी अस्मिता है वह हममें होनी चाहिए। जब तक अपनी राजभाषा हिंदी को पूरी तरह नहीं अपनाया जाएगा तब तक हम स्वतंत्र नहीं होंगे।

राज्यपाल महोदय ने अपने भाषण में आगे कहा कि हमारी स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक राजभाषा हिंदी को उचित तरह से नहीं अपनाएंगे और अपना कामकाज हिंदी में नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष विविधापूर्ण देश है परंतु भावना एक है अत: इस देश की सर्वमान्य भाषा एक होनी चाहिए और वह राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़ी होनी चाहिए। हम अंग्रेजी का विरोध नहीं करते, अंग्रेजी को सीखने को मना नहीं करते परंतु हिंदी का सम्मान होना चाहिए।

सचिव, राजभाषा विभाग श्री गिरीश शंकर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषा को धर्म के साथ जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। क्षेत्रीय भाषाओं तथा बोलियों को भी बढ़ावा मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे लिए यह हर्ष और गर्व का विषय है कि माननीय राज्यपाल जी द्वारा हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक-भीष्म साहनी और जयशंकर प्रसाद की 20 प्रतिनिधि कहानियों के लिखित स्वरूप और ऑडियों रूप का राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर लोकार्पण किया गया।

सम्मेलन में अंत में निदेशक, कार्यान्वयन, श्री हरिन्द्र कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए माननीय राज्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाल महोदय को आश्वासन दिया कि आपके द्वारा किया गया मार्गदर्शन प्रेरणा का स्रोत होगा। आपके मार्गदर्शन से राजभाषा हिंदी का विकास, प्रसार-प्रसार करने के लिए तहे दिल से प्रयास करेंगे। केंद्र सरकार और राज्य सरकारें राजभाषा हिंदी को आगे ले जाए इस बात का भी प्रयास करेंगे।

श्री हरिन्द्र कुमार ने अपने बताया कि राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय-केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा 'पारंगत' नामक हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ भी किया गया है। इससे निकट भविष्य में सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे और सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि होगी। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि प्राप्त कर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वे अपने पूरे संगठन में राजभाषा हिंदी में प्रयोग-प्रसार को स्थायी रूप देकर अन्य संगठनों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करें।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में भी सरकारी कार्यालयों से आयें प्रतिभागियों से ओपन सत्र के दौरान सुझाव व समस्याएं मांगी नई जिनका समाधान भी तत्काल मंच से किया गया।

समारोह में माननीय राज्यपाल पंजाब तथा हरियाणा, प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी के कर-कमलों द्वारा पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, जम्मू व कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के कुल 57 कार्यालय प्रमुखों और अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के पुरस्कार विजेताओं को राजभाषा शील्डें और उनके राजभाषा अधिकारियों और सदस्य सचिवों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। इस सम्मेलन में संगीत नाटक अकादेमी की ओर से श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने भाग लिया।

अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन

भारतीय भाषा एवं संस्कृति केंद्र द्वारा 29 से 31 अक्टूबर 2015 तक गोवा में अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन कोंकणी एवं हिंदी भाषा के विद्वान डॉ. नागेश कर्मली जी ने किया। उद्घाटन सत्र में श्री नागेश कर्मली, प्रोफेसर रोहिताश्व, श्रीमती देवकी, निदेशक-राजभाषा, वाणिज्य मंत्रालय ने अपने उद्गार व्यक्त किये। समापन समारोह की अध्यक्षता गोवा की राज्यपाल महामहिम श्रीमती मृदुला सिन्हा ने की और गोवा शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक रियर एडमिरल (रिटायर्ड) श्री शेखर मित्तल ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर भाग लिया। महामहिम राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने अपने सम्बोधन में राजभाषा के विकास में निजी प्रयासों को अहम बताया और कुछ चुनिंदा मंत्रालयों, विभागों एवं संस्थानों को शील्ड प्रदान की। लोकसभा सचिवालय, व्यय विभाग-वित्त मंत्रालय; दूरदर्शन महानिदेशालय, एनटीपीसी लिमिटेड, दिल्ली; ओएनजीसी लिमिटेड, दिल्ली; राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल; एनएचडीसी लिमिटेड, भोपाल; आदि को शील्ड दी गयी। श्री वेदप्रकाश गौड़, निदेशक (राजभाषा), संस्कृति मंत्रालय एवं श्रीमती राजबाला सिंह, निदेशक (राजभाषा), वाणिज्य मंत्रालय ने भी समापन समारोह में अतिथि के तौर पर भाग लिया। इस सम्मेलन में श्री वेदप्रकाश गौड़, श्री आर एन शुक्ल, श्री आर सी दुबे, उपनिदेशक (राजभाषा), व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय; श्री सुनील कुमार, संयुक्त निदेशक राजभाषा, पर्यटन मंत्रालय; श्री राकेश कुमार, उपनिदेशक (राजभाषा), सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय तथा श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (राजभाषा), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने विभिन्न विषयों पर वक्तव्य दिये। इस सम्मेलन मे देश भर से भारत सरकार के शताधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में संगीत नाटक अकादेमी की ओर से श्री तेजस्वरूप त्रिवेदी ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें

संगीत नाटक अकादेमी में प्रत्येक तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन होता है। तिमाही बैठक की अध्यक्षता अकादेमी की सचिव करती हैं। बैठक में राजभाषा हिंदी के कार्यों की मानीटरिंग की जाती है। इस समयावधि में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पहली बैठक 29 दिसंबर, 2015 को आयोजित हुई और दूसरी बैठक 31 मार्च, 2016 को आयोजित हुई। अकादेमी की इन दोनों बैठकों में संस्कृति मंत्रालय की ओर से निदेशक (रा.भा.) श्री वेद प्रकाश गौड़ ने भाग लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर : संबोधित करते संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष पद्मश्री शेखर सेन

नीचे : गज़ल के बारे में बताती प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका पद्मश्री सोमा घोष

CC-0. Arya Samaj Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर : राजभाषा रूपाम्बरा के सातवें अंक का लोकर्पण करते (दायें से बायें) अकादेमी की सचिव हेलेन आचार्य, अकादेमी के अध्यक्ष शेखर सेन, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के निदेशक (रा.भा.) वेदप्रकाश गौड़, दिल्ली विश्वविद्यालय के एसोसियेट प्रोफेसर विपिन कुमार ठाकुर और तेजस्वरूप त्रिवेदी

नीचे : समारोह में उपस्थित अधिकारी, कर्मचारी और आमंत्रित जन

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊपर : (दाएं से बाएं) अकादेमी सचिव हेलेन आचार्य, संस्कृति मंत्रालय के निदेशक(रा.भा.) वेदप्रकाश गौड़, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक सुशील जैन एवं तेजस्वरूप त्रिवेदी

नीचे : कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी व कर्मचारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(दोनों चित्रों में) : सम्बोधित करते संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के निदेशक (रा.भा.) वेदप्रकाश गौड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

तेजस्वरूप त्रिवेदी

संघ का शासकीय कार्य हिंदी में करने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2015-16 में राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश इस प्रकार हैं-

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाले प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी दोनों में जारी किए जाएं। किसी प्रकार के उल्लंघन के लिए हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया जाएगा।
2. केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों तथा उनसे संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों तथा केंद्र सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि में सभी सेवाकालीन विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं में (अखिल भारतीय स्तर की परीक्षाओं सहित) अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यत: दोनों भाषाओं (हिंदी और अंग्रेजी) में तैयार कराएं जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां भी प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए)
3. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक संबंधी निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नही कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।
4. अंतर्राष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराके रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।
5. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण पर नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा इस कार्य के लिए किया जा सकता है।
6. अनुवादकों को सहायक साहित्य, मानक शब्दकोष (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियां उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अनुवाद कार्य में इनका उपयोग करें।
7. सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि अपने-अपने दायित्वों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने तथा अपने विषयों से संबंधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख अनिवार्य रूप से भाग लें।

9. कम्प्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग किया जाए।

10. यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के आठ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।

11. कम्प्यूटर, ई-मेल और वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रोद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए।

12. संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।

13. राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अच्छी तरह निभा पाएं।

14. मंत्रालय/विभाग/कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें।

15. संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए। जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए मंत्रालय/विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं।

16. मंत्रालयों/विभागों द्वारा सूचना प्रोद्योगिकी प्रणाली के विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। शत प्रतिशत कम्प्यूटरों में हिंदी में काम करने की सुविधा विकसित की जाए तथा अंतर मंत्रालयी/अंतर विभागीय पत्राचारों के साथ साथ निजी पार्टियों के साथ किए जाने वाले पत्राचारों में ई-मेल/ इलेक्ट्रॉनिक संदेशों आदि में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2015-16 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई-मेल आदि सहित)	1 क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2 क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3 क क्षेत्र ग क्षेत्र को 65% 4 क क्षेत्र क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के 100% कार्यालय/व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4 ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के 100% कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4 ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के 85% कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी टंकक एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
5.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
6.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
7.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
8.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
9.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. वेबसाइट	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
11. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)	100% (द्विभाषी)
12. (1) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों, (स.सं./.निदे/.स.उ) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(2) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(3) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
13. राजभाषा संबंधी बैठकें			
(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें (कम से कम)	
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
14. कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद		100%	

15. मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो

"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं हो, "क" क्षेत्र में कुल कार्यक्षेत्र का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

(क)	हिंदी में पत्राचार	30%
(ख)	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में 10 कार्यालों की उपस्थिति की दशा में किया जाए)	वर्ष में कम से कम बेठकें 2
(ग)	यूनिकाड समर्पित द्विभाषी कंप्यूटरों की उपलब्धता	100%
(घ)	हिंदी टंकक/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालयों में कम से कम एक
(ङ)	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और से स्थानिय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

राजभाषा प्रयोग की दृष्टि से क्षेत्र वर्गीकरण

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा—क, ख, ग, में परिभाषित किया गया है।

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखण्ड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और द्वीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, गोवा, जम्मू और कश्मीर, कर्णाटक, केरल, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैण्ड, ओड़िशा, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल राज्य तथा लक्षद्वीप और पुदुच्चेरी संघ राज्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिक्रियाएँ

सातवां अंक भी महत्त्वपूर्ण लेख के सहित यह संग्रहणीय और योग्यता के शिखर पर चढ़ा देती है।

अभिजीत बनर्जी
लेखक व संपादक
अमूल्य मैन्शन, फ्लैट नं. 02
53 श्यामाप्रसाद मुखर्जी रोड, डाक-कालीघाट
कोलकाता-700026 (बंगाल)

सातवें अंक की समस्त सामग्री विशिष्ठ एवं गरिमामयी है। ग्रंथ ज्ञान वर्धक एवं सराहनीय है।

रामकुमारी शुक्ल
पत्नी डॉ. (स्व.) सूर्यनारायण शुक्ल
1 एचआईजी, प्रियदर्शिनी नगर उन्नाव-209801
उत्तर पदेश

ऐसी ज्ञानवर्धक पत्रिका प्रकाशित करने के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ और मुझे उम्मीद है आगे भी आपके अकादेमी द्वारा इस तरह की पत्रिकाओं से हम लाभान्वित होते रहेंगे।

ए.एस. मानेकर
महानिदेशक
राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद
33, ब्लॉक-जी एन, सेक्टर-V, विधान नगर,
कोलकाता-700091 (पश्चिम बंगाल)

संगीत नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी-संगीत नाटक अकादेमी की छमाही पत्रिका राजभाषा रूपाम्बरा का सातवां अंक प्राप्त हुआ। मेरी ओर से आपको शुभकामनाएँ।

संतोष कुमार गंगवार
वस्त्र राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)
भारत सरकार
129, डी विंग, उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011

पत्रिका काफी अच्छी बनी है तथा इसकी प्रति भेजने के लिए आपका धन्यवाद।

के. श्रीनिवासराव
सचिव
साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली-110011

हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा रूपाम्बरा' का सातवां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। सभी रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

अनिल
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), दिल्ली
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट, दिल्ली-110002

जानकारियाँ स्मरण करने योग्य हैं और सभी पाठ जीवन के लिए मार्गदर्शक हैं, इसे पढ़कर मुझे नई-नई जानकारियाँ प्राप्त हुई।

अरुण श्रीवास्तव
क्षेत्रीय निदेशक
भारतीय पर्यटन, भारत सरकार
88-जनपथ, नई दिल्ली-110001

बेगम अख्तर साहिबा से बृहस्पति जी की बातचीत पढ़ी। कानपुर के एक कॉलेज में हम दोनों की नियुक्ति एक समय ही हुई थी। मैं उनके घर एक वर्ष रहा था। वे नियमित रूप से तबला बजाने का अभ्यास किया करते थे। कभी-कभी हारमोनियम पर बेगम साहिबा द्वारा गाया कोई राग भी गाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते थे। 1951 ई. में उनके घर 14-15 वर्षीय कथक कलाकार आए थे। सम्भवत: उनका नाम बिरजू महाराज था।

पत्रिका में प्रकाशित कई रचनाएँ पढ़ गया हूँ। सामग्री का चयन सूझ-बूझ के साथ किया गया है। पत्रिका स्तरीय और पठनीय है।

रमानाथ त्रिपाठी
सेवा निवृत्त आचार्य
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
26, वैशाली, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

रूपाम्बरा का 'काशी अंक' भी पूर्व में प्राप्त हुआ था। आदि देव भगवान पशुपति की नगरी काशी पर केन्द्रित वह अंक सहेज कर रखने योग्य था। काशी जीवन के यथार्थ की नगरी है। अद्वैत और अभेद की नगरी है। मायाबद्ध जीव के मोहनाश की नगरी है। काशी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक नगरी है 'रूपाम्बरा' के 'काशी अंक' में काशी के सभी रूपों का ज्ञानवर्द्धक दर्शन उपलब्ध था।

'रूपाम्बरा' साहित्यिक, सांस्कृतिक पत्रिका है। पत्रिका का यह अंक भी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक है। नट संकीर्तन की परम्परा, भारतीय छऊ नृत्य, पुतुल कला, आल्हा पर दिए गए लेख विशेष ज्ञानवर्द्धक हैं। इन्दु जी का सौरीन्द्र मोहन टैगोर जी पर लिखा लेख सुखद आश्चर्य प्रदान करने वाला है। आचार्य कृष्णचन्द्र देव बृहस्पति की बेगम अख्तर से बातचीत भी हमारे जैसे पाठकों के लिए विशेष आकर्षक है। आज जब सारा समाज आधुनिकता के नाम पर अपनी समृद्ध पारम्परिक संस्कृति को विस्मृत कर रहा है उस समय में ऐसी पत्रिकाएँ हमारी सांस्कृतिक विशेषताओं को पुनरुज्जीवित करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगी। 'राजभाषा रूपाम्बरा' इसी प्रकार निकलती रहे, हमें अपनी लोक परम्परा के सुखद दर्शन होते रहें।

रत्नर्त्तु: मिश्रा
पुत्री आचार्य सेवकवात्स्यायन
एफ-13, किदवई नगर, कानपुर-208001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi
संगीत, नृत्य एवं नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन: 23387246, 23387247, 23387248, 23382495
फैक्स: 91-11-23382659
ई-मेल: mail@sangeetnatak.gov.in
वेबसाइट: http://sangeetnatak.gov.in

संगीत नाटक अकादेमी के प्रकाशन

अंग्रेजी — मूल्य

1. रवीन्द्र नाथ टैगोर : ए ट्रिब्यूट (पुनर्मुद्रित): (सं) पुलिन बिहार सेन, क्षितिश रॉय — 495.00
2. *संगीत नाटक : सिल्वर जुबली वॉल्यूम, एच.के रंगनाथ — 100.00
3. *म्यूजिक एंड डांस इन रवीन्द्रनाथ टैगोर्ज़ एजुकेशन फिलॉसफी : शांतिदेव घोष — 20.00
4. द विंग्ड फॉर्म : एस्थेटिकल एस्सेज ऑन हिन्दुस्तानी रिदम : एस के सक्सेना — 35.00
5. रावण छाया : जीवन पाणि — 12.00
6. मालुशाही- द बैलेड ऑफ कुमाऊं : मोहन उप्रेती — 30.00
7. करयाला : फोक थियेटर आफ हिमाचल प्रदेश : एस एस एस ठाकुर — 20.00
8. *इवोल्यूशन ऑफ ख्याल : एम वी धोंड — 10.00
9. भाओना : द रिच्यूअल प्ले ऑफ असम : महेश्वर नियोग — 25.00
10. *हूज़ हू ऑफ इंडियन म्यूजिशियंस : (दूसरा संस्करण) — 50.00
11. *उस्ताद फैयाज खां : दीपाली नाग — 90.00
12. स्टेज़ म्यूजिक ऑफ महाराष्ट्र : अशोक डी रानाडे — 60.00
13. आस्पेक्ट्स ऑफ इंडियन म्यूजिक : सुमति मुटाटकर (संपादित), (पुनर्मुद्रण) — 595.00
14. कंटेम्पोरेरी इंडियन थिएटर : इंटरव्यूज विद प्लेराइटर्स एंड डायरेक्टर्स : रजिन्द्र पॉल (पुनर्मुद्रण) — 740.00
15. *मैडम मेनका : दमयंती जोशी — 150.00
16. *शारंगदेव एंड हिज संगीत - रत्नाकार : सं. प्रेमलता शर्मा, सजिल्द — 1200.00
    पेपर बैक — 800.00
17. मतंग एण्ड हिज वर्क बृहद्देसी : प्रेमलता शर्मा — 500.00
18. स्विन्गिंग सिलेबल्स एस्थेटिक्स ऑफ कथक डांस (पुर्नमुद्रण) : सुशील कुमार सक्सैना — 475.00
19. तौलपावा कूत्तु : शैडो पपेट् थियेटर ऑफ केरल (पुर्नमुद्रण) : जी वेणु — 295.00
20. तोलू बोम्मलाट्टा : शैडो पपेट्स ऑफ आंध्र प्रदेश : एम नागभूषण शर्मा — 60.00
21. कूट्टमपलम एवं कूट्टियाट्टम : गोवर्धन पंचाल — 130.00
22. *द आर्ट ऑफ तबला रिदम : एसेंशियल्स, ट्रेडिशन एंड क्रिएटिविटी : सुधीर कुमार सक्सैना — 550.00
23. इन्डियन ड्रामा इन रिट्रासपेक्ट : (इन्ट्रोडक्शन : जयन्त कस्तुआर) — 850.00
24. रवीन्द्र नाथ टैगोर - वन हन्ड्रेड साँग्स इन स्टॅफ नोटेशन : इन्दिरा देवी चौधुरानी द्वारा संकलित — 795.00
25. *क्लॉसिकल इंडियन डांस इन लिटरेचर एण्ड द आर्ट्स (तीसरा संस्करण) : कपिला वात्स्यायन — 480.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

26.	नॉलेज ट्रेडिशन : अप्रोचेज टु भरत नाट्यशास्त्र, संपादन: अमृत श्रीनिवासन	325.00
27.	हिन्दुस्तानी म्यूजिक एंड एस्थेटिक्स टुडे : एस के. सक्सेना	995.00
28.	एवेन्यूज टु ब्यूटी : एस. के. सक्सेना	580.00
29.	इंडियन सिनेमा इन रिट्रासपेक्ट (सं) आर.एम.रे	895.00
30.	हिन्दुस्तानी संगीत: सम परस्पेक्टिव, सम परफारमर्स : एस. के. सक्सेना	600.00
31.	टेम्पल म्यूजिकल इंस्ट्रूमेन्ट्स ऑफ केरल : एल एस राजगोपालन संपादन : ए पुरुषोत्तमन, ए हरिन्द्रनाथ	400.00
32.	एस्थेटिक्स : अप्रोचेज, कॉन्सेप्टस एण्ड प्रॉब्लमस: एस के सक्सेना (नया संस्करण)	1100.00
33.	द विंग्ड फॉर्म : एस्थेटिकल एस्सेज ऑन हिन्दुस्तानी रिदम : एस के सक्सेना (दूसरा संस्करण)	500.00
34.	फैलो एण्ड अवार्ड विनर ऑफ संगीत नाटक अकादेमी 1952-2010	400.00

हिन्दी

35.	संगीत कलाधर : दहियालाल शिवराम (अनुवाद) अनिल बिहारी ब्योहार एवं चेतना ज्योतिषी ब्योहार (सं) प्रेमलता शर्मा	1250.00
36.	*ओंकार नाथ ठाकुर : विनय चन्द्र मौदगल्य	2.50
37.	*सहसरस : प्रेमलता शर्मा	25.00
38.	त्यागराज कृति संग्रह	20.00
39.	रासलीला तथा रसानुकरण विकास : वसन्त यामदाग्नि	100.00
40.	मुतुस्वामी दीक्षितार-कृति संग्रह	50.00
41.	हिमाचल का लोक संगीत : केशव आनंद	70.00
42.	मृदंग वादन : नाथद्वारा परम्परा : पुरुषोत्तम दास	330.00
43.	पुष्टि संगीत प्रकाश : बी पी भट्ट	70.00
44.	हिमाचल के प्राचीनतम संगीत वाद्य: नंद लाल गर्ग	400.00
45.	नाट्य कल्पद्रुम: मणिमाधव चाक्यार (अनुवाद-पी के गोविन्दन नांबियार, सं. प्रेमलता शर्मा)	300.00
46.	भरत और उनका नाट्य शास्त्र : ब्रजवल्लभ मिश्र	500.00
47.	नाट्य दर्शन : संगीता गुंदेचा	350.00
49.	भारतीय छउनृत्य : इतिहास, संस्कृति और कला : बदरी प्रसाद	
50.	संगीत और संस्कृति : संगीत नृत्य, नाट्य पर विर्मश-लेख संग्रह : मुकुंद लाठ	
51.	तबले की कला (डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा लिखित द आर्ट आफ तबला रिदम का हिंदी संस्करण)—अनुवाद : मंजुला सक्सेना	700.00
52.	रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सौ गीतों का स्वरबद्ध संकलन (खण्ड-I)	20.00

तमिल

49.	अयोध्याकांड आफ तौलपावा कुत्तु : कृष्ण कुट्टी पुलावर	100.00

मणिपुरी

50.	रास पूर्णिमा : बाबू सिंह (*स्टॉक में नहीं)	60.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकादेमी द्वारा निर्मित फिल्म/वीडियो कार्यक्रम और ऑडियो सीडी

क्र. सं.	विषय	निर्देशन	भाषा	रंगीन/श्वेत -श्याम	अवधि	वर्ष	वी सी डी (एम.आर. पी.)	40% छूट के बाद	उपलब्धता
1.	उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ	हरी दास गुप्ता	हिंदी/अंग्रेजी	श्वेत-श्याम	29 मिनट	1965	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
2	उस्ताद अलाउद्दीन खाँ	हरी दास गुप्ता	अंग्रेजी		24 मिनट	1965	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
3	रामायण इन कूटियाट्टम एण्ड कथकलि	संगीत नाटक अकादेमी	अंग्रेजी	रंगीन	21 मिनट	1973	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
4	छायानाटक	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	20 मिनट	1977	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
5	फोक एण्ड ट्राइबल डांसिज ऑफ इंडिया	संगीत नाटक अकादेमी	अंग्रेजी	रंगीन	18 मिनट	1977	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
6	तानवर्णम	संगीत नाटक अकादेमी	संगीत	रंगीन	31 मिनट	1980	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
7	संगाई-डांसिंग डीर ऑफ मणिपुर	अरिबम स्याम सर्मा	संगीत	रंगीन	44 मिनट	1987	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
8	भूताराधना	बी.वी.कर्नाथ	संगीत	रंगीन	22 मिनट	1988	रू.295	रू.177	अनुपलब्ध
9	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी	रंगीन	20 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
10	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी	रंगीन	30 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
11	सेम्मनगुडी	भास्कर चंदावरकर	अंग्रेजी (उपविषय)	रंगीन	58 मिनट	1992	रू.295	रू.177	उपलब्ध है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12	पार्वती विरहम् मणि माधव चाक्यार एज रावण	के एन.पणिक्कर	अंग्रेजी	रंगीन	35 मिनट	1993 रू.295	रू.177 उपलब्ध है
13	कंगलाई हरोबा	अरिबम स्याम सर्मा	अंग्रेजी	रंगीन	36 मिनट	1993 रू.295	रू.177 उपलब्ध है
14	मणि माधव चाक्यार; द मास्टर एट वर्क	के एन.पणिक्कर	अंग्रेजी	रंगीन	30 मिनट	1994 रू.295	रू.177 उपलब्ध है
15	बेहदेंख्लम	सुजाता मिरि	अंग्रेजी	रंगीन	16 मिनट	1994 रू.295	रू.177 उपलब्ध है
16	अंग तरंग : मयूरभंज छऊ	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	17 मिनट	1995 रू.295	रू.177 उपलब्ध है
17	पंडनालूर सुब्रया पिल्लाई	लक्ष्मी विस्वनाथन	अंग्रेजी	रंगीन	26 मिनट	1996 रू.295	रू.177 अनुपलब्ध
18	अंग तरंग मयूरभंज छऊ	जीवन पाणि	अंग्रेजी	रंगीन	41 मिनट	1997 रू.295	रू.177 अनुपलब्ध
19	एन आक्टेव इन हार्मनी	सुस्मित बोस	अंग्रेजी	रंगीन	32 मिनट	1999 रू.295	रू.177 अनुपलब्ध
20	के.पी.किटप्पा	माना श्रीनिवासन	तमिल (उपविषय)	रंगीन	53 मिनट	2001 रू.295	रू.177 अनुपलब्ध

फिल्म एवं वीडियो कार्यक्रम की डी वी डी

क्र. सं.	*विषय*	*निर्देशन*	*भाषा*	*रंगीन/श्वेत-श्याम*	*अवधि*	*वर्ष*	*एम.आर.पी.*	*उपलब्धता*
1	आधे अधूरे	श्यामानंद जालान	हिन्दी	श्वेत-श्याम	2 घंटे और 9 मिनट	1958	रू.295	उपलब्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऑडियो सीडी

क्र. सं.	विषय	ऑडियो सी डी (एम आर पी)	40% छूट के बाद	उपलब्धता
1	विंड इंस्ट्रूमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
2	स्ट्रिंग इंस्ट्रमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
3	परकशन इंस्ट्रूमेंट ऑफ इंडिया (एस जी एम)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
4	अहमद जान थिरकवा (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
5	अमीर खाँ (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
6	बि्स्मिल्लाह खाँ (सा रे ग म)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
7	बड़े गुलाम अली खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
8	बिस्मिल्लाह खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
9	अमीर खाँ (एस एन ए)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
10	केसर बाई केरकर (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
11	इल्याज खाँ (सितार)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
12	नारायण राव व्यास (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177,	उपलब्ध है
13	राधिका मोहन मैत्रा (सरोद)पार्ट-1	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
14	राधिका मोहन मैत्रा (सरोद)पार्ट-2	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
15	शंकर कृष्ण राव पंडित (हिंदुस्तानी गायन)	रू.295	रू.177	उपलब्ध है
16	रसूलन बाई	रू.295	रू.177	उपलब्ध है

CC-0. Kangri Gurukul Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगीत नाटक अकादेमी
Sangeet Natak Akademi
संगीत, नृत्य एवं ना[illegible] की राष्ट्रीय अकादेमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001
फोनः 23387246, 23387247, 23387248, 23382495
फैक्सः 91–11–23382659
ई-मेलः mail@sangeetnatak.gov.in
वेबसाइटः http://sangeetnatak.gov.in

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant